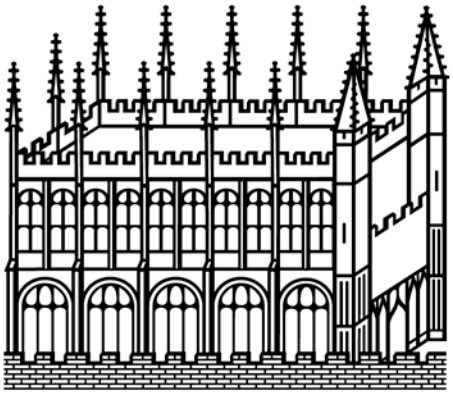


Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

13. C. 48. Hindi Puran Prem 12

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Prem-sāgar.

Prem Sagar

प्रेमसागर



जिसमें

श्रीलल्लूजीलालकविब्राह्मणागुजरातीसहस्र
अवदीचनेब्रजबासीदासकविकेदोहेचौपाइ-
योंसमेतश्रीमद्भागवत के दशमस्कन्धकीकथा,
सरलब्रजभाषामेंबर्णनकीहै

वही

सम्पूर्ण सज्जन श्रीकथा भक्तिउपासकों और विद्यानु-
रागियों केउपयोगार्थनएचित्रोंसहित

पाँचवींबार

लखनऊ
मुंशी नवलकिशोर के छापेख़ाने में छापीगई
फ़र्वरीसन १८७२ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् नवम्बर सन १८८२ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखवी हैं और उन का मोल भी बहुत किफ़ायत से घटा कर लिखवा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्यापार की इच्छा हो वह छपेरवाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषा इतिहास	महाभारत पर्व्व अलेहदा भी हैं	रामायण तुलसीकृत सटीक सय	लिंग पुराण
महाभारत	१ आदिपर्व्व	रामायण सटीक सय	विष्णु पुराण
१- पहिले हिस्सा में	२ सभा पर्व्व	मानस दीपिका कोष	ब्रह्मोत्तर खण्ड
आदि पर्व्व सभा पर्व्व	३ वनपर्व्व	आदि	सुदामा चरित्र
वनपर्व्व	४ विराट पर्व्व	तथा जिल्द बंधी	रस तरंगिणी रस चंद्रोदय
२- दूसरे हिस्सा में	५ उद्योग पर्व्व	तथा मोटे अक्षरों की	शुक्रनीति
विराट पर्व्व उद्योग पर्व्व भीष्म पर्व्व द्रोण पर्व्व	६ भीष्म पर्व्व	मयतसवीर वक्षेपक	नाटक
	७ द्रोण पर्व्व	रामायण तुलसीकृत	प्रबोध चन्द्रोदय
३- तीसरे हिस्सा में	८ कर्ण पर्व्व	सातों काण्ड	रामाभिषेक
कर्ण पर्व्व शल्य पर्व्व	९ शल्य पर्व्व गदा पर्व्व सौप्तिक पर्व्व	१ बालकाण्ड	आनन्द रघुनन्दन
गदा पर्व्व सौप्तिक पर्व्व		२ अयोध्याकाण्ड	वेदान्त
मय योशिक पर्व्व विशोक पर्व्व स्त्री पर्व्व	मय योशिक व विशोक व स्त्री पर्व्व	३ आरण्य काण्ड	योग वाशिष्ठ
	१० शान्ति पर्व्व राजधर्म व आपद धर्म व मोक्ष धर्म व दान धर्म	४ किष्किन्धा काण्ड	आनन्दामृत वर्षिणी
शान्ति पर्व्व में राजधर्म आपद धर्म मोक्ष धर्म		५ सुन्दर काण्ड	सांख्य तत्व कौमुदी
४- चौथे हिस्सा में		६ लङ्का काण्ड	काव्य
शान्ति पर्व्व दान धर्म अश्वमेध आश्रमवासिक पर्व्व व मौसल पर्व्व व वाराणप्रस्थान स्वर्गारोहन पर्व्व हरिवंश पर्व्व	११ अश्वमेध आश्रमवासिक सुशलप व महाप्रस्थान स्वर्गारोहन	७ उत्तर काण्ड	सूरसागर
		रामायण प्रश्नार्थको	कृष्ण सागर
		रामायण का इतिहास	विश्राम सागर
		रामायण मानस दीपि	प्रेम सागर
		रामायण कवितावली	ब्रजविलास बड़ा व छो
		रामायण गीतावली	कृष्ण प्रिया
		सटीक	विजय मुक्तावली
	१२ हरिवंश पर्व्व	विनयपत्रिका बा मो	अनेकार्थ
	रामायण राम विलास	विनयपत्रिका बा शि	छन्दोर्णव पिंगल

प्रेमसागर का सूचीपत्र ॥

अ.	प्रकरण	पत्र	अ.	प्रकरण	पत्र
१	पीठ़ा बन्ध	१०	२५	गोबर्द्धनपूजन	४६
२	बालक बध	१२	२६	ब्रज रक्षा	५०
३	गर्भस्तुति	१४	२७	इन्द्र स्तुति करार	५१
४	कृष्ण जन्म कन्या ग्रहण ..	१७	२८	बरुण लोक गमन	५४
५	कंस उपद्रव	१८	२९	बैकुंठ चिंच	५५
६	कृष्णजन्मोत्सव	२०	३०	रासक्रीड़ारम्भ	५८
७	पूतना बध	२२	३१	गोपी विरह बर्णन	६१
८	सकट भंजन तृणावर्त बध ..	२३	३२	गोपीजन विरह वर्णन ..	६२
९	विश्व दर्शन	२६	३३	गोपी कृष्ण सम्बाद	६३
१०	दाम बन्धन	२७	३४	पंचाध्यायी रासलीला वर्णन..	६६
११	यमलार्जुन मोक्ष	२८	३५	विद्याधरमोक्ष शंखचूड़ बध ..	६७
१२	बत्सासुर बकासुर बध ..	३०	३६	गोपी गीत बर्णन	६८
१३	अघासुर बध	३१	३७	कंस नारद सम्बाद	७२
१४	ब्रह्माबत्सहरण श्रीकृष्णमाया		३८	व्योमासुर बध	७४
	करण	३२	३९	अक्रूर बृन्दाबन गमन ..	७५
१५	ब्रह्मा स्तुतिकरण	३३	४०	अक्रूर दर्शन	७८
१६	धेनुक बध	३४	४१	अक्रूर स्तुति करण	७९
१७	काली मर्दन	३७	४२	पुरप्रवेश	८३
१८	दावाग्नि मोचन	३८	४३	कंस स्वप्न दर्शन	८५
१९	प्रलम्ब बध	३९	४४	कुबलयाबध	८८
२०	दावाग्नि मोचन	३९	४५	कंसासुर बध	९१
२१	बर्षा शरद बर्णन	४०	४६	शंखासुर बध	९९
२२	गोपी बेणुगीत .. .	४१	४७	ऊधो बृन्दाबन गमन ..	१०.
२३	चीर हरण	४४	४८	ऊधोगोपीसम्बोधन भ्रमरगीत	१०९
२४	द्विजपत्नी याचन .. .	४६	४९	कुब्जाकेलिग्रह बर्णन	१०८

अ.	प्रकरण	पत्र	अ.	प्रकरण	पत्र
५०	अक्रूरहस्तिनापुरगमन ..	११०	७१	राजायुधिष्ठिरसन्देश	२२०
५१	जरासन्ध पराजय	११५	७२	श्रीकृष्ण हस्तिनापुरगमन ..	२२२
५२	श्रीकृष्णबलरामकरके कालिय-		७३	जरासन्ध बध	२२८
	मनमरणओरमुचुकुन्दतरण .	११९	७४	सर्व भूपति हस्तिना पुर	
५३	कृष्णप्रतिरुक्मिणीसन्देश ..	१२०		गमन	२३०
५४	रुक्मिणी हरण	१३३	७५	शिशुपाल मोक्ष	२३४
५५	रुक्मिणी चरित्र .. .	१४१	७६	दुर्योधनमानमर्दन	२३५
५६	प्रद्युम्न जन्म सम्बरबध ..	१४५	७७	शाल्वदैत्य बध	२३६
५७	जाम्बवतीसत्यभामाबिवाह ..	१५१	७८	सूतबध	२४१
५८	शतधन्वा बध	१५८	७९	श्रीबलराम तीर्थ करन ..	२४३
५९	श्रीकृष्ण पञ्चबिवाह करण ..	१६५	८०	सुदामा द्वारका गमन .	२४५
६०	भौमासुर बध	१७२	८१	सुदामा दरिद्र गमन ..	२४७
६१	श्रीरुक्मिणीमानलीलाबर्णन ..	१७५	८२	श्रीकृष्णबलराम कुरुक्षेत्रगमन ..	२५१
६२	अनिरुद्ध बिवाह रुक्मबध ..	१८०	८३	स्त्रीगीत बर्णन	२५२
६३	ऊषाप्रसन्न अनिरुद्ध ग्रहण ..		८४	बसुदेव यज्ञ करण	२५४
६४	ऊषाचरित्र वर्णन	२००	८५	देवकी मृतकपुत्र जीवन ..	२५६
६५	राजानृग मोक्ष	२०५	८६	सुभद्रा हरण श्रीकृष्ण चन्द्र	
६६	बलभद्र रास वर्णन .. .	२०६		मिथिला गमन	२५६
६७	बासुदेव पौंड्रक मोक्ष ..	२१२	८७	नरनारायण नारदसम्बाद ..	२६०
६८	बलभद्रचरित्र द्विबिदकपिबध	२१३	८८	रुद्रमोक्ष बृषासुर बध ..	२६२
६९	शाम्बबिवाह कथन	२१६	८९	द्विज कुमार हरण	२६६
७०	नारदमाया दर्शन .. .	२१९	९०	द्वारकाबिहार बर्णन	२६८

इति

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

अथ प्रेमसागर ॥

लिख्यते ।

दो० । बिघनविदारणविरदवर वारणबदनबिकाश ।
वरदे वङ्ग बाढ़े बिशद बाणी बुद्धि बिलाश ॥
युगल चरणजोवत जगत जपत रैनदिनतोहि ।
जगमातासरस्वतिसुमिर उक्तियुक्तिदेमोहि ॥

एक समय व्यासदेवकृत श्रीमद्भागवत के दशमस्कन्ध की कथा चतुर्भुज मिश्रने दोहे चोपाई में ब्रजभाषा किया सो पाठशालाओंके लिये श्री महाराजाधिराज सकलगुणनिधान पुण्यवान महाजन मारकुइस वलिजलि गवर्नर जनरल प्रतापी राजमें ॥

दो० । कवि पण्डित मंडितकिये नग भषण पहिराय ।
गाहिगाहिविद्यासकलवशकीन्हीचितलाय ॥
दान रौर चङ्गं चक्र में चढ़े कविन के चित्त ।
आवत पावत लाख मणि इय हाथी बङ्गबित्त ॥

श्रीयुत गुण ग्राहक गुणियन सुखदायक जानगिल गिरिस्त महाशयकी आज्ञा से सन् १८६० ई० में श्रीलल्लूजी लालकवि ब्राह्मणगुजराती सहस्र अवदीच आगरेवाले ने उसका सारले यामिनी भाषा छोड़ दिल्ली आगरेकी खड़ी बोली में कह नाम प्रेमसागर धरा परंतु श्रीयुत जानगिलगिस्ट महाशय के जाने से बना अधबना छूपा रह गयाथा सो अब श्री महाराजेश्वर अतिदयालु कृपालु यशस्वी तेजस्वी गिलबर्ट लार्ड मिंटो प्रतापवान् के राज्य में और श्रीगुणखान सुखदान कृपानिधान भाग्यवान कप्तान जानबलियम् टेलर प्रतापी की आज्ञासे और श्रीयुत परमसुजान

दयासागर परोपकारी डाक्टर वलियम हटरन साची की सहायता से श्री श्रीनिपट प्रवीण दयायुत लिपटन अवराहमलाकटरतीवन्त के कहेसे उसी कविने सन् १८६६ ई० में पूराकर पाठ शालाओं के विद्यार्थियों के पढ़ने को छपवाया ॥

अथ कथा प्रारम्भः

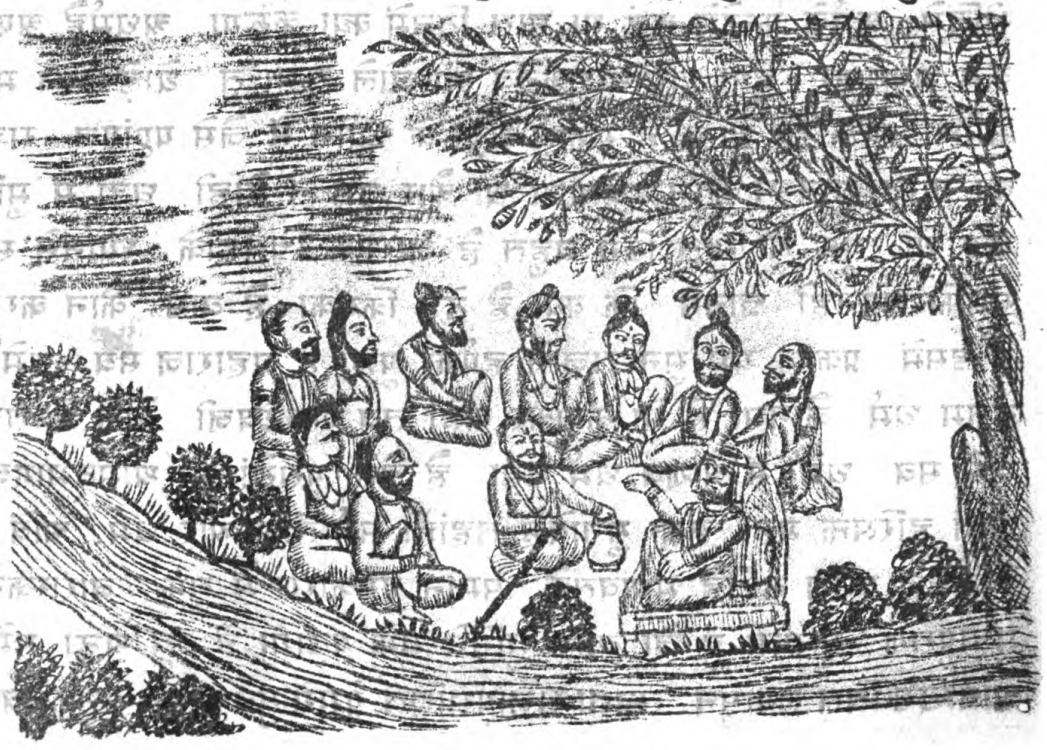
महाभारत के अंतमें जब श्रीकृष्ण अन्तर्ध्यान हुये तब पांडव तो महादुखी हो हस्तिनापुर का राज्य परीक्षितको दे हिमालय गलने गये और राजा परीक्षित सब देश जीत धर्मराज्य करनेलगे कितने एक दिन बीते राजा परीक्षित आखेटको गयेतो वहां देखा कि एकगाय और बैलदौड़े चले आते हैं तिनके पीछे मूसल हाथमें लिये एक शूद्र मारता आता है जब वहपास पहुंचे राजाने शूद्रको बुलाय दुःखपाय झुंझलाय कर कहा अरेतू कौन है अपना बखानकर जो मारता है गाय और बैल को जानकर क्या तैने अर्जुन को दूरगया जाना तिससे उसका धर्म नहीं पहचाना सुन पांडुके कुलमें ऐसा किसी को नपावेगा कि जिसके सोहीं कोई दीन को सतावेगा इतना कह राजाने खड्ग हाथमें लिया वह देख डरकर खड़ा हुआ फिर नरपति ने गाय और बैलको भी निकट बुलाय कर पूछा कि तुम कौनहो मुझेबुझाकर कहो देवता होकि ब्राह्मण और किसलिये भागे जाते हो सो निधड़क कहो मेरे रहते किसीकी इतनी सामर्थ्य नहीं जो तुम्हें दुःख दे इतनी बातसुनि तबतो बैलशिर झुकाकर बोला महाराज ये पापरूप कालाबर्ण डरावनी सूरत जो आपके सन्मुख खड़ा है सोकलि-युग है इसीके आनेसे मैं भागा जाताहूं यह गाय रूप पृथ्वीहै सोभी इसी के डरसे भाग चली और मेरा नाम धर्म है चार पांव रखता हूं तप सत दया और शौच सतयुग में मेरे चरण बीस बिश्वे थे त्रेता में सोलह द्वापर में बारह अब कलियुग में चार बिश्वे रहा इसमें कलि के बीच चल नहीं सक्ता धरती बोली धर्म्मावतार मुझसे इस युगमें रहा नहीं जाता क्योंकि शूद्र राजा हो अधिक अधर्म मेरे ऊपर करेंगे तिनका बोझ मैं नसह सकूंगी इस भयसे मैं भी भागती हूं यह सुनतेही राजा ने क्रोधकर कलियुगसे कहा मैं तुझे अभी मारताहूं वह थरथरा राजा के चरणों पर गिर गिड़ गिड़ा कर कहने लगा कि पृथ्वी नाथ अब तो मैं तुम्हारी शरण आया मुझे कहीं रहनेको ठौर बताइये क्योंकि तीन काल और चारोंयुग ब्रह्माने बनाये हैं सो किसी भांति मेटे

नहीं मिटेंगे इतना बचन सुन्ते ही राजा परीक्षित ने कलियुग से कहा कि तुम इतनी ठौर रहो जुये झूंठ मद की हाट वेश्या के घर हत्या चोरी और स्वर्णमें यह सुन कलि ने तो अपने स्थानको प्रस्थान किया और राजा ने धर्म को मन में रखलिया पृथ्वी अपने स्वरूप में मिलगई राजा फिर नगरमें आये और धर्मराज्य करने लगे—कितने एक दिन बीते राजा फिर एक समय आखेट को गये और खेलते २ प्यासे भये शिरके मुकुट में तो कलियुग रहताही था उसने अपना अवसर पा राजा को अज्ञान किया राजा प्यास के मारे कहां आतेहैं कि जहां लोमश ऋषि आसन मारे नयन मूंदे हरिका ध्यान लगाये तप कररहे थे उन्हें देख राजा परीक्षित मन में कहने लगे कि इसने अपने तपके घमंड में मुझे देख आंख मूंदली है ऐसी कुमति ठानि एक मरा सांप वहां पड़ा था सो धनुष से उठा ऋषि के गले में डाल अपने घर आया मुकुट उतारतेही राजा को ज्ञान हुआती शोच कर कहने लगा कि कंचनमें कलियुग का बासहै यह मेरे शीशपर था इससे मेरी ऐसी कुमति हुई जो मरा सर्प ले ऋषिके गलेमें डाल दिया सो मैं अब समझा कि कलि ने मुझसे पलटा लिया इस महापाप से कैसे छूटूंगा बर्ग धन जन स्त्री और राज्य सब आज मेरा क्यों न गया न जानूं किस जन्म में यह अधर्म जायगा जो मैंने ब्राह्मणको सताया है राजा परीक्षित तो यहां इस अथाह शोकसागर में डूब रहेथे और जहां लोमश ऋषि थे तहां कितने एक लड़के खेलते हुए जा निकले मरासांप उनके गले में देख अचम्भेमें रहे और घबराकर आपसमें कहने लगे कि भाई कोई इनके पुत्र से जाकर कहदे जो उपबन में कौशिकीनदी के तीर ऋषियों के बालकों में खेलताहै एक सुनतेही दौड़ा वहीं गया जहां शृङ्गी ऋषि छोकरों के साथ खेलताथा कहा बंधू तुम यहां क्या खेलते हो कोई दुष्ट मरा सांप तुम्हारे पिता के कंठ में डाल गया है सुनतेही शृङ्गीऋषि के नेत्र लाल हो आये दांत पीस २ लगा थर २ कांपने और क्रोध कर कहने लगा कि कलियुग में राजा अभिमानी उपजे हैं धन के मदसे अंधे होगये हैं दुखदाई अब मैं उस को देहुं शाप वही मीच पावेगा आप ऐसे कह शृंगी ऋषि ने कौशकी नदी का जल चुल्लू में ले राजा परीक्षित को शाप दिया कि यही सर्प सातवें दिन तुझको डसेगा इस भांति राजा को शाप दे अपने बाप के पास आ गले से सांप निकाल

कहने लगा कि हे पिता तुम अपनी देह संभालो मैंने उसे शापदिया है जिसने आप के गलेमें मरा सर्प डाला था यह बात सुनतेही लोमश ऋषिने चैतन्य हो नयन उघार अपने ज्ञान ध्यान से बिचार के कहा अरे पुत्र तूने यहक्या किया क्यों शाप राजाको दिया उसके राज्यमें थे हम सुखी कोई पशु पक्षी भी न था दुखी ऐसा धर्म राजथा कि सिंह गाय एक साथ रहते और आपस में कुछ न कहते हे पुत्र जिन के देश में हम बसे क्या हुआ तिनके हंसे मरा हुआ सांप डालाथा उसे शाप क्यों दिया तनक दोषपर ऐसा शाप तैनेदिया बड़ाही पाप किया कुछ बिचार मनमें न किया गुण छोड़ औगुण लिया साधु को चाहिये शील सुभाव से रहे आप कुछ न कहे और की सुन ले सब का गुण ले अवगुण तजे इतना कह लोमशऋषि ने एक चेले को बुलाकर कहा तुम राजा परीक्षित को जाके चिता दो जो तुम्हें शृङ्गी ऋषिने शाप दिया है भला लोग तो दोष देहींगे पर वह सुन सावधान तो हो इतना बचन गुरुका मान चेला चला वहां आया जहां राजा बैठा शोच करताथा आतेही कहा महाराज तुम्हें शृङ्गीऋषि ने यह शाप दिया है कि सातवें दिन तक्षक डसेगा अब तुम अपना कार्य्य करो जिसमें कर्म की फांसीसे छूटो राजासुनतेही प्रसन्न हो हाथ जोड़ कहने लगा कि मुझपर ऋषिने बड़ी कृपा की जो शाप दिया क्योंकि मैं माया मोह के अपार शोच सागर में पड़ा था सो निकाल बाहर किया जब मुनि का शिष्य बिदा हुआ तब राजाने आप तो बैराग लिया और जनमेजय को बुलाय राज पाट देकर कहा बेटा गो ब्राह्मण की रक्षा कीजो और प्रजा को सुखदीजो इतनाकह आये रनबास देखीं नारी सभी उदास । राजा को देखतेही रानियां पावों पर गिर रो रो कहने लगीं महाराज तुम्हारा बियोग हमअबला न सह सकेंगी इससे तुम्हारे साथ जी दें तो भला राजाबोला सुनो स्त्री को उचित है कि जिसमें अपने पति का धर्म रहे सोकरे उत्तम कार्य्यमें बाधा न डाले इतना कह धन जन कुटुम्ब और राज्यकी माया तज निर्मोही हो अपना योग साधने को गंगा के तीरजा बैठा इस को जिस ने सुना वह हाय २ कर पछताय २ बिन रोये न रहा और जब ये समाचार मुनियोंने सुना कि राजापरीक्षित शृङ्गीऋषि के शाप से मरने को गङ्गा के तीर आ बैठाहै तब व्यास वशिष्ठ भरद्वाज

कात्यायन पाराशर नारद विश्वामित्र बामदेव यमदग्नि आदि अट्ठासी सहस्र ऋषि आये और आसन बिछाय २ पांति २ बैठगये और अपने २ शास्त्र बिचार २ अनेक भांति के धर्म सुनाने लगे कि इतने में राजा की श्रद्धा देख पोथी कांख में लिये दिगम्बर भेष श्रीशुकदेवजी भी आ पहुंचे उनको देखतेही जितने मुनि थे सबके सब उठखड़े हुए और राजा परीक्षित भी हाथ बांध खड़ा हो बिनती कर कहने लगा हे कृपानिधान मुझ पर बड़ी दया की जो इस समय मेरी सुधलिया इतनी बात कही तब शुकदेव मुनि भी बैठे तो राजा ऋषियोंसे कहने लगे कि महाराजो शुकदेव व्यास जी के तो बेटे और पाराशर जीके पोते तिनको देख तुम बड़े २ मुनीश हो के उठे सो तो उचित नहीं इसका कारण कहो जो मेरे मनका सन्देह जाय तब पराशरमुनि बोले हे राजा जितने हम बड़े २ ऋषि हैं परज्ञानमें शुकदेव जी से छोटे हैं इसलिये सबने शुक का आदरमान किया किसीने इस आसपर कि ये तारण तरण हैं क्योंकि जबसे जन्म लियाहै तबहीं से उदासी हो बनबास करतेहैं और राजा तेराभी बड़ा पुण्य उदय हुआ जो शुकदेव जी आये ये सब धर्मों से उत्तम धर्म कहेंगे तिससे तू जन्म मरण से छूट भवसागर पार होगा यह बचन सुन राजा परीक्षित ने श्रीशुकदेव जी को दण्डवत् कर पूछा कि महाराज धर्म समझाय के कहो कि किस रीतिसे कर्मके फन्देसे छूटूं गा सात दिनमें क्या करूंगा अधर्महै अपार कैसे भवसागर हूंगा पार श्रीशुकदेव जी बोले राजा तू थोड़े दिन मत समझ मुक्ति तो होती है एकही घड़ी के ध्यान में जैसे षष्टांगुल राजा को नारद मुनि ने ज्ञान बताया था और उस ने दोही घड़ी में मुक्ति पाई थी तुझे तो सात दिन बहुत हैं जो एक चित्तहोके ध्यानसे सब समझो अपनेही ज्ञानसे कि क्या है देह किसका है बास कौन करता है इसमें प्रकाश यह सुन राजाने हर्षकर पूछा हे महाराज सब धर्मोंसे उत्तम धर्म कौनसा है सो कृपाकर कहो तब शुकदेवजी बोले हे राजा जैसे सब धर्मों में बैष्णव धर्म बड़ा है तैसे पुराणों में श्रीमद्भागवत् जहां हरिभक्त यह कथा सुनावेंहैं तहांहीं सर्ब तीर्थ और धर्म आवें हैं जितनेहैं पुराण नहींहैं भागवतके समान इसकारण मैं तुझे बारास्कन्ध महापुराण सुनाता हूं जो व्यास मुनिने मुझे पढ़ाया है तू श्रद्धा समेत आनन्दसे चित लगासुन तबतो राजापरीक्षित प्रेमसे सुनने और शुकदेवजी

मनसे सुनानेलगे नवमस्कन्ध की कथाजब मुनिने सुनाई तबराजाने कहा हे दीनदयाल अब दयाकर श्री कृष्णावतार की कथा कहिये क्योंकि हमारे सहायक और कुल पूज्य वही हैं शुकदेव जी बोले हे राजा तुमने मुझे बड़ा सुखदिया जो यह प्रसंग पूछा सुनो मैं प्रसन्नहो कहताहूं यदु-कुल में पहिले भजमान नाम राज थे तिनके पुचपृथु अरु पृथुके बिदू-रथ तिनके शूरसेन जिन्हों ने नौ खण्डपृथ्वी जीत के यशपाया उनकी स्त्रीका नाम मरिष्या उसके दशलड़ के और पांच लड़कियां तिनमें बड़े पुच बसुदेव जिनकी स्त्रीके आठवें गर्भमें श्रीकृष्णचन्द्र जीने जन्मलिया जब बसुदेव जी उपजे थे तब देवताओंने सुरपुर में आनन्दके बाजन बजाये और शूरसेन की पांचों पुत्रियों मेंसे सबसेबड़ी कुन्ती थी जो पांडु को ब्याहीथी जिसकी कथा महाभारतमें गाईहै और बसुदेव जी पहिले तो रोहण नरेश की बेटी रोहणी को ब्याह लाये पीछे सचह अठारह पटरानी हुईं तब मथुरामें कंसकी बहन देवकीको ब्याहा तहांआकाश बाणी हुई किइस लड़कीके आठवें गर्भमें कंसका काल उपजेगा यहसुन कंसने बहिन बहनोई को एक घरमें क़ैद किया और श्रीकृष्णने वहांहीं जन्म लिया इतनी कथा सुन्ते ही राजा परीक्षित बोले महाराज कैसे कैसे जन्म कंसने लिया किसने उसे महाबर दिया और कौन रीतिसे कृष्ण उपजेआय और किसविधिसे गोकुल पहुंचे जाय यहतुम मुझे कहो समुझाय-



श्री शुकदेवजी बोले मथुरापुरी का आहुक नाम राजा तिसके दो बेटे एक का नाम देवक दूसरा उग्रसेन कितने एकदिन पीछे उग्रसे नहीं वहां का राजा हुआ जिसकी एकही रानी उसका नाम पवन रेखा सो अति सुन्दरी और पतिव्रता थी आठों पहर स्वामी की आज्ञाही में रहे एक दिन कपड़ों से भई तो पतिकी आज्ञाले सखी सहेलियों को साथले रथ में चढ़ बनमें खेलने को गई वहां घनेघने वृक्षोंमें भांति भांतिके फूल फूले हुए सुगन्ध सनी मंद मंद ठंढी ठंढी पवन बहरही थी कोकिल कपोत कीर मोर मीठी २ मन भावनी बोलियां बोलरहे और एक पर्वतके नीचे यमुना न्यारीही लहरें लेरहीं थीं कि रानी इस समयको देख रथसे उतर कर चलीतो अचानक एकओर अकेली भूलके जानिकली वहां दुमलिक नाम राक्षस भी संयोगसे आनिकला वह इसके रूप और जोबनकी छबि को देख छकरहा और मनमें कहने लगा कि इससे भोग किया चाहिये मनमें यह ठान तुरन्त राजा उग्रसेन का स्वरूप बन रानीके सोंही जा बोला तू मुझसे मिल रानी बोली महाराज दिन को काम केलि करिये नहीं क्योंकि इससे शील और धर्म जाता है क्या तुम नहीं जानते जो ऐसी कुमति बिचारी है जब पवन रेखाने इसभांति कहा तबतो दुमलिकने रानी का हाथ पकड़ खेंच लिया औरजो मन माना सोकिया इस छलसे भोग करके जैसा था तैसा बन गया तबतो रानी अति दुखपाय पछिताय कहने लगी अरे अधर्मी पापी चांडाल तूने यक क्या अंधेर किया जो मेरा सतखो दिया धिक्कारहे तेरे माता पिता को और गुरूको जिसने तुझे ऐसी बुद्धिदीहे तुझसायूत जन्मेसेतेरी मा बांझ क्यों नहुई अरे दुष्ट जो नरदेह पाकर किसी का शत भंग करते हैं सो जन्म २ नरकमें पड़ते हैं दुमलिक बोला रानीतू शाप मतदे तुझे मैंने अपने धर्मका फल दिया मुझे तेरी कोखबन्द देखके मेरे जीको बड़ी चिन्ताथी सोगई अब तेरे पुत्र पैदाहोगा दशवें मास और मेरी देह के सुभाव से तेरा पुत्र नौ खण्ड पृथ्वी को जीत राज्य करेगा और कृष्णसे लड़ेगा मेरानाम प्रथम काल नेमथा तब बिष्णुसे युद्ध किया था अब जन्म ले दुमलिक नाम कहाया तुझको पुत्र दे चला तुम अपने मनमें किसी बात की चिंता मत करो इतनी बात कह जब काल नेम चला गया तबरानी को भी कुछ शोच समझकर धीरज भया ।

दो० । जैसी हो हो तव्यता तैसी उपजहि बुद्धि ।

होनहार हिरदै बसै बिसरजाय सब सुद्धि ॥

इतने में सब सखी सहेली आन मिलीं रानी का सिंगार बिगड़ा देख एक सहेली बोलउठी इतनी बेर तुझे कहांलगी और यहक्या गतिहुई पद्मनरेखाने कहा सुनो सहेली तुमने इस बनमें तजी अकेली एक बन्दर आया उसने मुझे अधिक सताया तिसके डरसे मैं अबतक थर २ कांपती हूं यहबात सुनकर तो सबकी सब घबराईं और रानी को झटरथ पर चढ़ा घरलाईं जब दश महीने पूजे तब पूरे दिन लड़का हुआ तिस समय एक बड़ी आंधीचली कि जिसके मारे लगी धरती डोलने अंधेरा ऐसा हुआ जो दिनकी रात होगई और लगे तारे टूट २ गिरने बादल गर्जने बिजली तड़पने ऐसे माघशुदी १३ बृहस्पति बारको कंसने जन्म लिया तब राजा उग्रसेन ने प्रसन्न हो सारेनगरके मंगला मुखियों को बुलवाया मंगलाचार करवाया और सब ब्राह्मण पंडित ज्योतिषियों को भी अति सन्मान से बुलवा भेजा वे आये राजा ने बड़ी भक्तिसे आसन देदे बैठाये तब ज्योतिषियोंने लग्न साध मुहूर्त बिचारकर कहा पृथ्वी नाथ यह लड़का कंस नाम तुम्हारे बंशमें उपजा सोअति बलवान होराहसों कोले राज करेगा और देवता हरि भक्तों को दुखदे और आप का राज ले राज्य करेगा निदान हरिके हाथ मरेगा ॥

इतनी कथा कह शुकदेवमुनि ने राजा परीक्षित से कहा हे राजा मैं उग्रसेन के भाई देवककी कथा कहताहूं कि उसके ४ बेटे और ६ बेटियां थीं सो छहों बसुदेव को व्याहदीं सातवीं देवकी हुई जिसके होने से देवताओं को प्रसन्नता हुई और उग्रसेन के भी दशपुत्र थे पर सबसे कंसही बड़ाथा जबसे जन्मा तबसे यह उपाधि करने लगा कि नगर २ जाय छोटे २ लड़कोंको पकड़ लावे और पहाड़की खोहमें मूंद मार २ डाले जो बड़ेहोंय तिनकी छाती पर चढ़ गलाघोट जी निकाले इसदुख से कोई ननिकलने पावे सब अपने लड़कोंको छिपाये प्रजाक हैं दुष्ट यह कंस उग्रसेनका नहींहै बंश कोई महापापी जन्मले आयाहै जिसने सारे नगरको सतायाहै यहबातसुन उग्रसेनने उसेबुलाकर बहुतसा समझाया परइसका कहना कंसके जीमें कुछभी नआया तब दुखपाय पछताय के कहनेलगा कि ऐसेपूत होनेसेमैं अपूतही क्यों नहुआ कहतेहैं जिससमय कुपूत घरमें आता है तिसी समय यश और धर्म जाताहै जब कंस आठ बर्ष का हुआ तब मगधदेश पर चढ़गया वहांका राजा जरासंध बड़ा योधा

था तिस्से मिल इस ने मल्लयुद्ध किया तो उसने कंस का बल लख लिया तब हार मान अपनी बेटी छोटी दो ब्याह दीं पहिले मथुरा में आया और उग्रसेन से बैर बढ़ाया एक दिन कोप कर अपने पिता से बोला कि तुम राम नाम कहना छोड़ दो और महादेव का जप करो विसने कहा मेरे तो कर्त्ता दुःख हर्त्ता वही हैं जो उन को नहीं भजूंगा तो अधर्मी हो कैसे भवसागर पार हूंगा यह सुन कंस ने खुनसाय बाप को पकड़कर सारा राज्य लेलिया और नगर में डौंड़ी फेर दी कि कोई यज्ञ दान तप धर्म और रामका नाम लेने न पावे ऐसा अधर्म बढ़ा कि गौ ब्राह्मण और हरि के भक्त दुःख पानेलगे और धरती अतिबोझ से मरने लगी जब कंस सब राजाओंका राज्यलेचुका तबएकदिन अपनादलले राजाइन्द्रपर चढ़चला तहां मंत्रीने कहा कि महाराज इन्द्रासन बिन तपकिये नहीं मिलता आप बलका गर्ब न करिये देखो गर्व ने रावण कुम्भकरण को कैसा खोदिया कि जिनके कुल में एक भी न रहा इतनी कथा कह शुकदेव जी राजा परीक्षित से कहनेलगे कि राजा जब पृथ्वी पर अति अधर्म्म होने लगा तब पृथ्वी दुःख पाय घबराय गाय का रूपबन डकारती देवलोक में गई और इन्द्र की सभा में जा शिर झुकाय उस ने अपनी सब पीर कही कि महाराज संसार में असुर अति पाप करने लगे तिन के डरसे धर्मतो उठगया यदि मुझे आज्ञा हो तो नर पुर छोड़ रसातल को जाऊं तब इन्द्र सब देवताओं को साथ ले ब्रह्मा के पास गये ब्रह्मा सुन सब को महादेव के निकट लेगये महादेव भी सुन सब को साथ ले वहां गये जहां क्षीर समुद्र में नारायण सो रहे थे उन को सोते जान ब्रह्मा रुद्र इन्द्र सब देवताओं को साथ ले खड़े हो हाथ जोड़ बिनती कर देवस्तुति करने लगे महाराजाधिराज आप की महिमा कौन कहि सके मत्स्य रूप हो वेद डूबते निकाले कच्छप रूप बन पीठ पर गिरि धारण किया बाराह बन भूमि को दांत पर रखलिया बामन होके राजा बलिको छला परशुराम अवतारले क्षत्रियों को मार पृथ्वी कश्यप मुनि कोदी रामावतार लिया तब महादुष्ट रावण का बध किया और जब २ तुम्हारे भक्तों को दैत्य दुःख देते हैं तब २ आप उनकी रक्षा करते हैं नाथ अब कंस के सताने से अति व्याकुल हो पुकार करती है उस की बेग सुध लीजे असुरों को मार साधुओं को सुख दीजे ऐसे गुणगाय देवताओं ने कहा तब आकाश बाणी हुई सो ब्रह्मा देवताओं को समझाने लगे यह जो

बाणी भई सो तुम्हें आज्ञा दी है कि तुम सब देवी देवता ब्रजमण्डल जाय मथुरा नगरीमें जन्म लो पीछे चार स्वरूप धर हरि भी अवतारलेंगे बसुदेव के घर देवकी की कोख में और बाल लीला कर नन्द यशोदा को सुख देंगे इसी रीति से ब्रह्मा ने जब बुझा के कहा तब सुर मुनि किन्नर और गन्धर्ब सब अपनी २ स्त्रियों समेत जन्म लेले ब्रजमण्डल में यदु बंशी और गोप कहाये और जो चारों वेदकी ऋचायेंथीं सो ब्रह्मा से कहने लगीं कि हम भी गोपी हो ब्रज में अवतार लें बासुदेव की सेवा करें इतना कह वे भी ब्रज में आईं और गोपी कहलाईं जब सब देवता मथुरापुरी में आचुके तब क्षीर समुद्र में हरि बिचारकरने लगे कि पहिले तो लक्ष्मण हों बलराम पीछे बासुदेवहो मेरानाम भरत प्रद्युम्न शत्रुघ्न अनिरुद्ध और सीता रुक्मिणी का अवतार लें ॥ इति श्रीलाल कृते प्रेम सागरे पीठ़ाबंध प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी ने राजा परीक्षित से कहा हे महा राज कंस तो इस अनीति से मथुरा में राज्य करने और उग्रसेन दुख भरने लगा देवक जो कंसका चाचाथा उसकी कन्या देवकी जब व्याहने योग्य हुईतब उसने जाकंस से कहा कियह लड़की किसको दें वहबोला सूरसेन के पुत्र बसुदेव को दीजिये इतनी बात सुन्तेही देवक ने एक ब्राह्मण को बुलाय शुभलग्न मुहूर्त्त ठहराय सूरसेन के घर टीका भेज दिया तब तो सूरसेन भी बड़ी धूम धाम से बरात ले सब देश देश के नरेश साथ ले मथुरा में बसुदेव को ब्याहन आये ॥

बरात नगर के निकट आई सुन उग्रसेन देवक और कंस अपनादल ले आगे बढ़ नगर में लेगये अति आदरमान से अगवानी कर जनवासा दिया खिलाय पिलाय सब बरातियों को मढ़े के नीचे ले जा बैठाया और वेद की बिधि से कंस ने बसुदेव को कन्यादान दिया तिसके यौतुक में पन्द्रह सहस्र घोड़े चार हजार हाथी अठारह सौ रथ दास दासी अनेक दे कंचन के थाल बस्त्र आभूषण रत्न जटितसे भर २ अनगिनत दिये और सब बरातियों को भी अलंकार सहित बागे पहिराय सब मिल पहुंचावने को चले तिस समय देवबाणी हुई कि अरे कंस जिसको तू पहुंचावने चला है तिसका आठवां गर्भ तेराकाल उपजेगा उस के हाथ तेरी मौत है यह सुनतेही कंस डर के मारे कांपने लगा और क्रोध कर देवकी के झोंटे पकड़ रथसे नीचे खेंच लाया और खड्ग

हाथ में ले दांत पीस२ कहने लगा कि जिस पेड़को जड़ही से उखाड़िये तिसमें फूल फल काहे को लगेगा अब इसी को मारूं तो निर्भय राज्य करूं यह देख सुन बसुदेव मनमें कहने लगे कि इस मूर्ख ने सन्ताप दिया ये पुण्य और पापनहीं जानता है जो मैं अब क्रोध करता हूं तो काज बिगड़ेगा तिससे इस समय क्षमा करनीहीं योग्य है ॥

दो० जो बैरी खैंचे तरवार । करै साधुतिसकी मनुहार ॥
समझ मूढ़ सोई पछताय । जैसे पानी आग बुझाय ॥

यह शोच समझ बसुदेव कंस के सन्मुख जा हाथ जोड़ बिनती कर कहने लगे कि सुनो पृथ्वीनाथ तुम सा बली संसार में कोई नहीं और सब तुम्हारी छांह तले बसते हैं ऐसे शूर हो स्त्री पर शस्त्र करना यह अति अनुचित है और बहिन के मारने से महापाप होता है तिस पर भी मनुष्य अधर्म तो करे जो जानें कि मैं कभी न मरूंगा इस संसार की तो यही रीति है इधर जन्मा उधर मरा करोड़ यत्नसे पाप पुण्य कर कोई इस देह को पोषै पर यह कभी अपनी न होयगी और धन यौबन राज्यभी न आवेगा काम इससे मेरा कहा मान लीजे और अपनी अबला आधीन बहिन को छोड़ दीजे इतना सुन वह अपना काल जान घबराकर और भी झुंझलाया तब बसुदेव शोचने लगे कि यह पापी तो असुर बुद्धि किये अपने हठ की टेक पर है जिससे इसके हाथ से यह बचे सो उपाय किया चाहिये ऐसे बिचार मन में कहने लगे अब तो इससे यों कह देवकी को बचाऊं कि जो पुत्र मेरे होगा सो तुम्हें दूंगा पीछे किसने देखी है लड़काही न होय के यही दुष्ट मरे यह अवसर तो टले फिर समझी जायगी इस भांति मन में ठान बसुदेव ने कंससे कहा महाराज तुम्हारी मृत्यु इसके पुत्रके हाथ न होगी क्योंकि मैंने एक बात ठहराई है कि देवकी के जितने लड़के होंगे तितने मैं तुम्हें लाटूंगा यह बचन मैंने तुमको दिया ऐसी बात जब बसुदेवने कही तब समझ के कंसने मानली और देवकी को छोड़ कहने लगे हे बसुदेव तुमने अच्छा बिचार किया जो ऐसे भारी पाप से मुझे बचा लिया इतना कह बिदा किये और वे अपने घर गये ॥

कितने एकदिन मथुरामें रहतेभये जब पहला पुत्र देवकीके हुआ तब बसुदेव ले कंस पै गये और रोता हुआ लड़का आगे धरदिया देखतेही कंस

ने कहा बसुदेव तुम बड़े सत्य वादी हा मैंने आज जाना क्योंकि तुमने मुझसे कपट न किया निर्मोहीहो अपना पुत्र लादिया इस्से मुझे कुछ डर नहीं है यह बालक मैंने तुझे दिया इतना सुन बालक ले दण्डवत् कर बसुदेव जी तो अपने घर आये और उसी समय नारद मुनिजी ने जाय कंस से कहा राजा तुम ने यह क्या किया जो बालक उलटा फेर दिया क्या तुम नहीं जानते कि बसुदेव की सेवा करनेको सब देवताओं ने ब्रजमें आय जन्म लिया है और देवकीके आठवें गर्भ में श्रीकृष्ण जन्म ले सब राक्षसों को मार भूमिका भार उतारेंगे इतना कह नारद मुनिने आठ लकीरें खैंच गिनवाईं जब आठही आठ गिनतीमें आईं तब डर कर कंस ने लड़के समेत बसुदेवजी को बुला भेजा नारद मुनि तो यों समझाय बुझाय चले गये और कंस ने बसुदेव से बालक ले मार डाला ऐसे जब पुत्र होय तब बसुदेव ले आवें और कंस मारडाले इसी रीति से छः बालक मारे तब सातवें गर्भमें जोशेष रूप श्रीभगवान् हैं तिन्होंने आ बास लिया यह कथा सुन राजा परीक्षित ने शुकदेव मुनि से पूछा महाराज नारदमुनिजी ने जो अधिक पाप करवाया तिसका ब्यौरा समझा कर कहो जिस्से मेरे मनका संदेहजाय श्रीशुकदेव जी बोले राजा नारद जीनेतो अच्छा बिचारा कि यह अधिक २ पाप करें तो श्रीभगवान् शीघ्र-ही प्रकट होवें ॥ इति श्रीलालकृते प्रेमसागरे देवकी बिवाह बालक बधोनाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

फिर शुकदेव जी राजापरीक्षित से कहने लगे कि राजा जैसे गर्भ में हरि आये और ब्रह्मादिक देवतों ने गर्भ स्तुति करी और देवी जिस भांति बलदेवजी को गोकुल लेगई तिसी रीतिसे कथा कहता हूं एक दिन राजा कंस अपनी सभा में आय बैठा और जितने दैत्य उसके थे उनको बुलाकर कहा सुनों सब देवता पृथ्वी में जन्म ले आये हैं तिन्हीं में कृष्ण भी अवतार लेगा यह भेद मुझ से नारद मुनि समझाय के कह गये हैं इस्से अब उचित यही है कि तुम जाकर सब यदुबंशियों का ऐसा नाश करो जो एक भी जीता न बचे ॥

यह आज्ञा पा सबकेसब दण्डवत्कर चले नगरमें ढूंढ़२ पकड़ पकड़ लगे बांधने खाते पीते खड़े बैठे सोते जागते चलते फिरते जिसे पाया तिसे न छोड़ा घेरके एक ठौर लाये औ जला २ डुबो २ पकड़ २ दुःख दे २ सब को मारडाला इसीरीति से छोटे बड़े भयावने भांति २ के भेष बनाये

नगर २ गांव गांव गली गली घरघर खोज खोज लगे मारने और यदुबंशी दुःख पाय पाय देश छोड़ २ जी लेले भागने ॥

उसी समय बसुदेवकी जो और स्त्रियांथीं सोभी रोहिणी समेत मथुरा से गोकुलमें आईं जहां बसुदेवजीके परममित्र नन्दजी रहते थे उन्हों ने अतिहितसे आशा भरोसा दे रक्खा वे आनन्दसे रहनेलगीं जबकंस देवताओं को यों सताने और अतिपाप करनेलगा तब विष्णु ने अपनी आंखोंसे एक माया उपजाई सोहाथ बांध सन्मुख आई उससे कहा तू अभी संसार में जा मथुरापुरी के बीच अवतारले जहां दुष्टकंस मेरेभक्तोंको दुःख देता है औरकश्यप अदिति जो बसुदेव देवकीहो ब्रजमें गयेहैं तिनको मूंद रक्खा है छःबालक तो उनके कंसने मारडाले अब सातवें गर्भमें लक्ष्मण जी हैं उनको देवकी की कोखसे निकाल गोकुलमें लेजाकर इस रीतिसे रोहिणी के पेटमें रखदीजो कि कोई दुष्ट न जाने और सब वहांके लोगतेरा यशबखाने॥

इसभांति मायाको समझाय श्रीनारायण बोले कि तू तो पहले जाकर यह कार्य्य करके नन्दके घरमें जन्मले पीछे बसुदेवके यहां अवतारले मैं भी नन्दके घरआताहूं इतना सुनतेही माया झट मथुरामेंआई औ मोहिनी का रूप बन बसुदेवके गेह में पैठगई ॥

चौ०जोक्छिपायगर्भहरलिया। जायरोहिणीकोसोदिया॥
जानेसब पहला आधान। भये रोहिणी के भगवान ॥

इसी रीतिसे श्रावण शुदी चौदस बुधबार को बलदेवजी ने गोकुल में जन्मलिया और मायाने बसुदेव देवकीको जा स्वप्न दिया कि मैंनेतुम्हारा पुत्र गर्भसे लेजाय रोहिणी को दिया है सो किसी बातकी चिन्ता मतकी जो सुनतेही बसुदेव देवकी जागपड़े और आपसमें कहनेलगे कि यहतो भगवान्ने भला किया पर कंसको इसीसमय जताया चाहिये नहींतो क्या जानिये पीछे क्या दुःखदे यों शोच समझ रखवालों से बुलाकर कहा तिन्होंने कंसको जा सुनाया कि महाराज देवकी का गर्भ अधूरागया बालक कुछी न पूराभया सुनतेही कंस घबराकर बोला कि तुम अबकी बेर चौकसी करियो क्योंकि मुझे आठवेंई गर्भका डरहै जो आकाशबाणी कहगई है ॥

इतनी कथाकह श्रीशुकदेवजी बोले हेराजन् बलदेवजी तो योंप्रगटे और जब श्रीकृष्ण देवकीके गर्भमें आये तभी मायाने जा नन्दकी रानी यशोदा के पेटमें बासलिया दोनेंगर्भसेथीं कि एकपर्व में देवकी यमुना न्हानेगई

वहां संयोग से यशोदा भी आन मिली तो आपसमें दुःखकी चर्चा चली निदान यशोदा ने देवकी को बचन दे कहा कि तेरा बालक मैं रक्खूंगी अपना तुझेदूंगी ऐसे बचन दे यह अपने घरआई और वह अपने गई जद कंसने जाना कि देवकी का आठवां गर्भरहा तदजा बसुदेव का घर घेरा चारों ओर दैत्यों की चौकी बैठादी और बसुदेव को बुलाकर कहा कि अबतुम मुझसे कपट मतकीजो अपना लड़का ला दीजो तबतो मैंने तुम्हाराही कहना मान लिया था ॥

ऐसे कह बसुदेव देवकी के बेड़ी और हथकड़ी पहिराय एक कोठे में मूंदकर ताले पर ताले दे निज मन्दिर में आ मारे डरके उपास कर सोरहा फिर भोर होतेही वहीं गया जहां बसुदेव देवकी थे गर्भ का प्रकाशदेख कहने लगा कि इसी यमगुफ़ा में मेराकाल है मारतो डालूं पर अपयश से डरताहूं क्योंकि अति बलवानहो स्त्री को हनना योग्य नहीं भला इसके पुत्रहीको मारूंगा यों कह बाहर आ गज सिंह श्वान और अपने बड़े २ योद्धा वहां चौकीको रखाये और आपभी नित्य चौकसी कर आवे पर एक पलभी कल न पड़े जहां देखे तहां आठ पहर चौंसठघड़ी कृष्ण रूप कालही दृष्टि आवे तिस के भयसे रात दिन चिन्ता में गंवावे ॥

इधर कंसकी तो यह दशाथी उधर बसुदेव और देवकीपूरे दिनों महाकष्ट में श्रीकृष्णहीं को मनाते थे कि इसी बीच भगवान्ने आ उन्हें स्वप्न दिया और इतना कह उन के मन का शोच दूर किया जो हम बेगही जन्म ले तुम्हारी चिन्ता मेटते हैं तुम अब मत पछिताओ यह सुन बसुदेव देवकी जाग पड़े तो इतने में ब्रह्मा रुद्र इन्द्रादिक सब देवता अपने २ विमान अधर में छोड़ अलख रूप बन बसुदेवके गृह में आये और हाथ जोड़ २ वेद गाय २ गर्भस्तुति करने लगे तिस समय उन को तो किसी ने न देखा पर वेदकी धुनि सबने सुनी यह आश्चर्य्य देख सब रखवाले अचंभे रहे और बसुदेव देवकी को निश्चय हुआ कि भगवान् बेगही हमारी पीर हरेंगे ॥ इति श्रीलालकृतेगर्भस्तुति नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

श्रीशुकदेवजी बोले राजा जिस समय श्री कृष्णचन्द्र जन्म लेने लगे तिसकाल सबही के जीमें ऐसा आनन्द उपजा कि दुःखनाम को भी न रहा हर्षसे बन उपबन हरे हो हो फलने फूलने नदी नाले सरोवर भरने

तिनपर भांति २ के पक्षी कलोलें करने और नगर २ गांव २ घर २ मंगलाचार होने ब्राह्मण यज्ञ रचने दशो दिशाके दिग्पाल हर्षने बादल ब्रज मण्डल पर फिरने देवता अपने २ बिमानों में बैठे आकाश से फूल बरसाने बिद्याधर गन्धर्व चारण ढोल दमा में भेर बजाय २ गुण गाने और एक ओर उर्बशी आदि सब अप्सरा नाच रहींथीं कि ऐसा समय भादों बदी अष्टमी बुधवार रोहिणी नक्षत्र में आधी रात को श्रीकृष्ण ने जन्म लिया और मेघबर्ण चन्द्रमुख कमल नयनही पीताम्बर काछे मुकुटधारे बैजयन्ती माला और रत्नजटित आभूषण पहरे चतुर्भुज रूप किये शङ्ख चक्र गदा पद्म लिये बसुदेव देवकी को दर्शन दिया देखतेही अचंभे हो उन दोनों ने ज्ञान से बिचारा तो आदि पुरुष को जाना तब हाथ जोड़ बिनती कर कहा हमारे बड़े भाग्य जो आपने दर्शन दिया और जन्म मरण का निबेड़ा किया॥

इतना कह पहिली कथा सब सुनाई जैसे जैसे कंस ने दुःख दिया था तहां श्रीकृष्णचन्द्र बोले तुम अब किसी बातकी चिन्ता मनमें मतकरो क्योंकि मैंने तुम्हारे दुःख के टूरकरनेही को अवतारलिया है पर इस समय मुझे गोकुल पहुंचादो औरइसी बिरियां यशोदाके लड़की हुईहै सो कंसको लादो अपने जानेका कारण कहताहूं सो सुनो॥

दो० नन्द यशोदा तप कियो मोहीं सों मन लाय।
देख्यो चाहत बालसुख रहों कछू दिन जाय॥

फिर कंसको मार आन मिलूंगा तुमअपने मनमें धीर्य्यधरो ऐसे बसुदेव देवकी को समझा श्रीकृष्ण बालकबन रोनेलगे और अपनी माया फैलादी तब तो बसुदेव देवकी का ज्ञानगया और जाना कि हमारेपुत्र भया यह समझ दश सहस्र गाय मनमें संकल्पकर लड़के को गोदमें उठा छाती से लगा लिया उसका मुख देख देख दोनों लम्बी सांसें भरभर आपस में कहने लगे जो किसी रीति से इस लड़के को भगादीजे तो कंस पापी के हाथसे बचे बसुदेव बोले॥

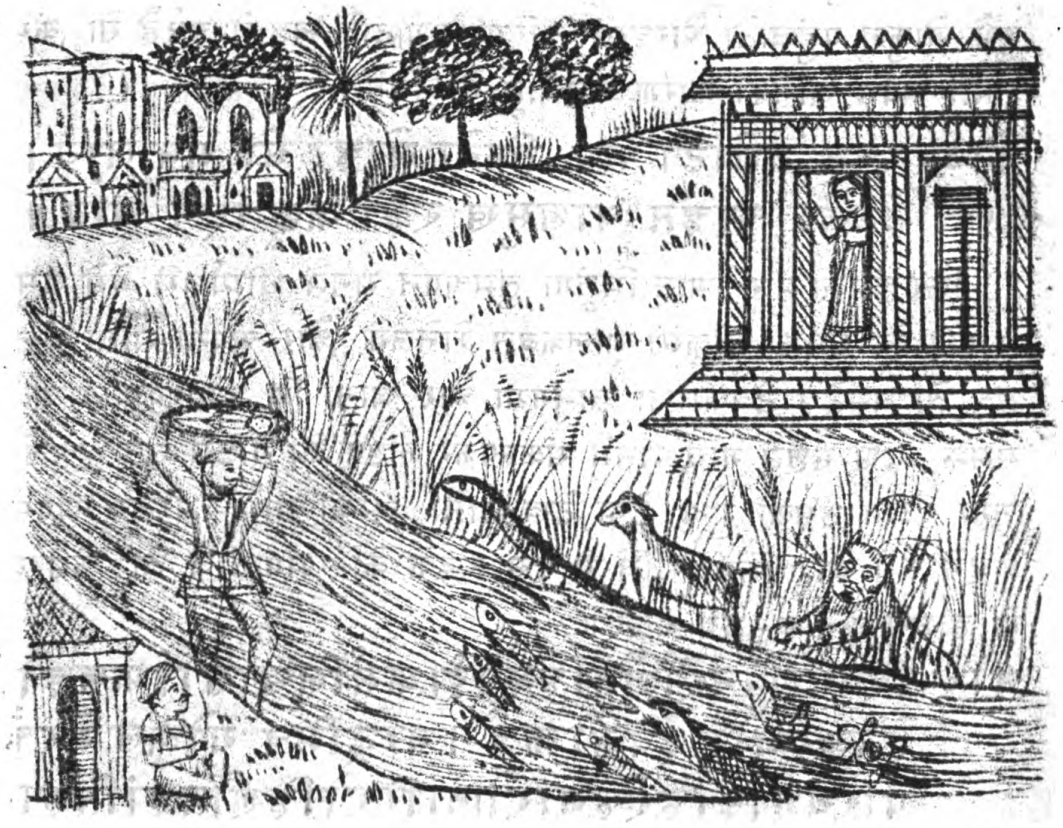
चौ० बिधनाजिनराखैनहिंकोई। कर्मलिखासोईफलहोई॥
तबकरजोर देवकी कहै। नन्दभवन गोकुल मेंरहै॥
पीरयशोदाहरेहमारी।नारिरोहिणीतहांतिहारी

इस बालक को वहां ले जाओ यों सुन बसुदेव अकुला कर कहने

लगे कि इस कठिन बन्धनसे छूट कैसे ले जाऊं जो इतनी बात कही तो सब बेड़ी हथकड़ी खुल पड़ीं चारों ओरके किवाड़ खुल लगये पहरुये अचेत नींदबश भये तब तो बसुदेव जी ने श्री कृष्ण को सूपमें रख शिर पर धर लिया और झटपटही गोकुल को प्रस्थान किया ॥

सो० ऊपर बर्षै देव । पीछे सिंह जुगुञ्जरै ॥
शोचत हैं बसुदेव । यमुना देखि प्रबाह अति ॥

नदी तीर खड़े हो बसुदेव बिचारने लगे कि पीछे तो सिंह बोलता है और आगे अथाह यमुना बह रही हैं अब क्या करूं ऐसा कह भगवान् का ध्यान धर यमुना में पैठे ज्यों ज्यों आगे जाते थे त्यों त्यों नदी बढ़तीथी जब नाक तक पानी आया तब तो ये निपट घबराये इनको ब्याकुल जान श्रीकृष्णने अपना पांव बढ़ाय हुंकार दिया चरण छूतेही यमुना थाह हुई बसुदेव पार हो नन्द की पौर पर जा पहुंचे वहां किवाड़ खुले पाये भीतर धसके देखें तो सब सोये पड़े हैं देवी ने ऐसी मोहनी डालीथी कि यशोदा को लड़की के होने की भी सुधि



न थी बसुदेव जीने कृष्ण को तो यशोदा के निकट सुला दिया और

कन्या को ले चट अपना पन्थ लिया नदी उतर फिर आये जहां बैठी देवकी शोचती थी तहां कन्या दे वहां की कुशल कही सुनतेही देवकी प्रसन्न हो बोली हे स्वामी हमें कंस अब मार डाले तौ भी कुछ चिन्ता नहीं क्योंकि इस दुष्ट के हाथ से पुत्र तो बचा ॥

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेवजी राजा परीक्षित से कहने लगे कि जब बसुदेव लड़की को ले आये तब किवाड़ ज्यों के त्यों भिड़ गये और दोनों ने हथकड़ियां बेड़ियां पहर लीं कन्या रो उठी रोने की धुनि सुन पहरुये जागे तो अपने २ शस्त्र ले २ सावधान हो लगे तुपक छोड़ने तिनका शब्द सुन लगे हाथी चिघाड़ने सिंह दहाड़ने और कुत्ते भोंकने तिसी समय अंधेरी रात के बीच बर्षते में एक रखवाले ने हाथ जोड़ के कंस से कहा महाराज तुम्हारा बैरी उपजा यह सुन कंस मूर्छित हो गिरा ॥ इति श्रीलालकृते प्रेमसागरे कृष्णजन्म कन्या ग्रहणो नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

बालक का जन्म सुनतेही कंस डरता कांपता उठ खड़ा हुआ और खड्ग हाथ में ले गिरता पड़ता दौड़ा छूटे बालों पसीने में डूबा धुकुड़ पुकुड़ करता जा बहिन के पास पहुंचा जबउसके हाथसे लड़की छीनली तब वह हाथजोड़ बोली ऐभैया यह कन्यातेरी भानजीहै इसे मत मार यह मेरी पेट पोंछनी है तूने जो बालक मारेहैं तिनका दुःख मुझेअति सताताहै बिनकाज कन्याको मार क्यों पाप बढ़ाता है कंसबोला जीती लड़की तुझेनदूंगा जो इसे ब्याहेगा सो मुझे मारेगा इतना कह बाहर आ ज्योंही चाहे कि फिराय कर पत्थर पर पटके त्योंही हाथ से छूट कन्या आकाश को गई और पुकार के यह कह गई अरे कंस मेरे पटकने से क्या हुआ तेरा बैरी कहीं जन्म ले चुका अबतू जीता न बचेगा ॥

यह सुन कंस अछता पछता वहां आया जहां बसुदेव देवकी थे आतेही उन के हाथ पांव की हथकड़ी बेड़ी काटदी और हाथ जोड़ कर कहने लगा कि मैंने बड़ा पाप किया जो तुम्हारे पुत्र मारे यह कलङ्क कैसे छूटेगा किस जन्म में मेरी गति होगी तुम्हारे देवता झूंठे हुए जिन्हों ने कहा था कि देवकी के आठवें गर्भ में लड़का होगा सो न हुआ लड़की हुई वह भी हाथ से छूट स्वर्ग को गई अब दया कर मेरा दोष जी में मत रक्खो क्योंकि कर्म का लिखा कोई मेट नहीं सक्ता इस संसार में आये से जीना मरना संयोग बियोग मनुष्य का नहीं

छूटता जो ज्ञानी हैं सो मरना जीना समानही जानते हैं और अभिमानी मित्र शत्रु कर मानते हैं तुम तो बड़े साधु सत्यवादी हो जो हमारे हेतु अपने पुत्र ले आये ॥

ऐसे कह जब कंस बार २ हाथ जोड़ने लगा तब बसुदेवजी बोले महाराज तुम सच्च कहते हो इस में तुम्हारा कुछ दोष नहीं बिधाता ने यही हमारे कर्म में लिखा था यों सुन कंस प्रसन्न हो अति हित से बसुदेव देवकी को अपने घर ले आया भोजन करवाय बस्त्र पहराय बड़े आदर भाव से दोनों को फेर वहीं पहुंचाय दिया और मंची को बुला के कहा कि देवी कह गई है तेरा बैरी जग में जन्मा इससे अब देवताओं को जहां पाओ तहां मारो क्योंकि उन्होंने मुझ से झूठी बात कही थी कि आठवें गर्भ में तेरा शत्रु होगा मंची बोला महाराज उनका मारना क्या बड़ी बात है वे तो जन्म के भिखारी हैं जब आप कोपियेगा तभी वे भाग जांयगे उनकी क्या सामर्थ्य है जो तुम्हारे सम्मुख हों ब्रह्मा आठ पहर ज्ञान ध्यान में रहता महादेव भांग धतूरा खाय इन्द्र का कछु तुम पर न बसाय रहा नारायण तो संग्राम नहीं जानता लक्ष्मी के साथ रहताहै सुख माने ॥

कन्स बोला नारायण को कहां पावें और किस विधि जीतें सो कहो मंची ने कहा महाराज जो नरायण को जीता चाहते हो तो जिनके घर में आठ पहर उन का बास है तिनहीं का अब बिनाश करो ब्राह्मण वैष्णव योगी यती तपस्वी संन्यासी बैरागी आदि जितने हरि के भक्त हैं तिन में लड़के से ले बूढ़े तक एक भी जीता न रहे यह सुन कन्स ने प्रधान से कहा तुम सब को जा मारो आज्ञा पाकर मंची अनेक राक्षस साथ ले बिदा हो नगर में जा गौ ब्राम्हण बालक और हरि भक्तों को छल बल कर ढूंढ़ ढूंढ़ मारने लगा ॥ इति श्रीलालकृतेप्रेमसागरे कन्स उपद्रवकरणोनाम पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी बोले राजा एक समय नन्द यशोदा ने पुत्र के लिये बड़ा तप किया तहां श्रीनारायण ने आय बर दिया कि तुम्हारे यहां जन्म लेंगे जब भादों बदी अष्टमी बुधबार को आधी रात के समय श्रीकृष्ण आये तब यशोदा ने जागतेही पुत्र का मुख देख नन्द को बुला अति आनन्द माना और अपना जीवन सफल जाना भोर होते ही उठके नन्दजी ने पण्डित और ज्योतिषियों

को बुला भेजा वे अपनी २ पोथी पत्रे ले आये तिनको आसन दे आदर मान से बैठाया उन्होंने शास्त्र की बिधि से संवत् महीना तिथि दिन नक्षत्र योग करण ठहराय लग्न बिचार मुहूर्त्त साध के कहा महाराज हमारे शास्त्र के बिचारमें तो ऐसा आता है कि यह लड़का दूसरा बिधाता हो सब असुरों को मार ब्रज का भार उतार गोपी नाथ कहावेगा सारा संसार इसीका यश गावेगा ॥

यह सुन नन्दजीने कञ्चन के शृङ्ग रूपेके खुर तांबे की पीठसमेतदो लाख गौ पाटम्बर उढ़ाय संकल्प कीं और अनेक दान ब्राह्मणों को दे अशीश ले २ बिदाकिया तब नगरके सब मंगला मुखियेंको बुलाया वे आय २ अपना अपना गुण प्रकाश करनेलगे बाजंची बजाने नर्त्तक नाचने गायक गाने ढाढ़ी ढाढ़िन यश बखानने और जितने गोकुलके गोप ग्वाल थे वे भी अपनी रानियों के शिरपर दहेड़ियां लिवाये भांति २ के भेष बनाये नाचते गाते नन्द को बधाई देने आये आतेही ऐसा दधिकांदो किया कि सारे गोकुल में दही २ करदिया जब दधिकांदो खेलचुके तब नन्दजी ने सब को खिलाय पिलाय बस्त्र पहराय तिलक कर पानदे बिदाकिया ॥

इसी रीतिसे कई दिनतक बधाई रही इसबीच नन्दजीसे जिसने जो २ आय आय मांगा सो सो पाया बधाई से निश्चिन्त हो नन्दजी ने सब ग्वालों को बुलायके कहा भाइयो हमने सुना है कि कंस बालक पकड़ मंगवाता है न जानिये कोई दुष्ट कुछ बात लगा दे इससे उचित है कि सब मिल भेंट लेचलें और बर्षौड़ी देआवें यह बचन मान सब अपने २ घरसे दूध दही माखन और रुपये लाये गाड़ियों में लाद२ नन्दके साथ हो गोकुल से चल मथुरा आये कंससे भेंटकर भेंटदी कौड़ी २ चुकाय बिदा हो अपनी बाट ली ॥

ज्योंहीं यमुना तीरपै आये त्योंही समाचार सुन बसुदेवजी आ पहुंचे नन्दजी से मिल कुशलक्षेम पूंछ कहने लगे तुमसा सगा और मित्र हमारा संसार में कोई नहीं क्योंकि जब हमें भारी बिपत्ति भई तब गर्भवती रोहिणी तुम्हारे यहां भेजदी उसके लड़का हुआ सो तुमने पाल बड़ा किया हम तुम्हारा गुण कहां तक बखानें इतना कह फेर पूंछा कहो राम कृष्ण और यशोदा रानी आनन्दसे हैं नन्दजी बोले आपकी कृपा से सब भले हैं औरहमारे जीवन मूल तुम्हारे बलदेवजी भी कुशल से हैं कि जिनके होते तुम्हारे पुण्य प्रतापसे हमारे पुत्र हुआ पर एक तुम्हारेही

दुख से हम दुखी हैं बसुदेव कहने लगे मिच बिधाता से कुछ न बश आवे कर्म की रेखा किसी से मेटी न जाय इस्से संसार में आय दुःख पीर पाय कौन पछताये ऐसा ज्ञान जताय के कहा ॥

चौ० । तुमघर जाउ बेगआपने । कीन्हें कंस उपद्रवघने ॥
बालक ढूंढ़मंगावेनीच । उईसाधुपरजा कीमीच ॥

तुम तो सब यहां चलेआये हो और कंस के दूत ढूंढ़ते फिरते हैं न जानिये कोई दुष्ट जाय गोकुल में उपाधि मचावे यह सुनतेही नन्द जी अकुला कर सबको साथ लिये शोचते मथुरा से गोकुल को चले ॥

इति श्रीलालकृते प्रेमसागरे कृष्णजन्मोत्सवे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

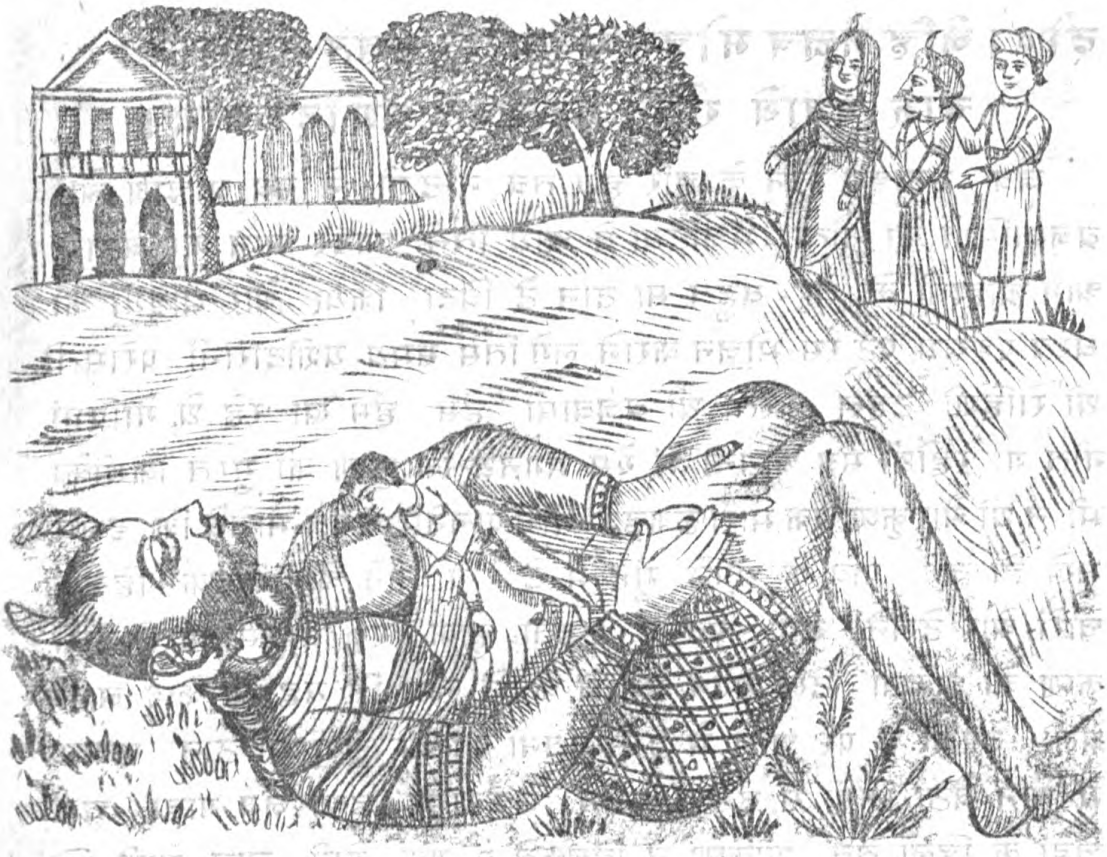
श्रीशुकदेवजी बोले हे राजा कंस का मंत्री तो अनेक राक्षस साथ लिये मारता फिरताही था कि कंस ने पूतना नाम राक्षसी को बुला कर कहा तू जा यदुबंशियों के जितने बालक पावे तितने मार यह सुन वह प्रसन्न हो दण्डवत् कर चली तो अपने जीमें कहने लगी ॥

दो० भये पूत हैं नन्द के सुने गोकुल गांउ ।
छलकर अबहींआनिहौं गोपीचूकै जांउ ॥

यह कह सोलह शृङ्गार बारह आभूषण कर कुच में बिष लगाय मोहनी रूप बन कपट किये कमल का फूल हाथमें लिये बन ठनके ऐसे चली कि जैसे शृङ्गार किये लक्ष्मी अपने कंत पै जाती हो गोकुल में पहुंच हंसती २ नन्दके मन्दिर बीच गई इसे देख सबकी सब मोहित हो भूलीसी रहीं यह जाय यशोदाके पास बैठी और कुशल पूंछ अशीश दी कि बहिन तेरा कान्ह जीवे कोटि बरष ऐसे प्रीति बढ़ाय लड़के को यशोदा के हाथ से ले गोद में रख जो दूध पिलावने लगी तो श्रीकृष्ण दोनों हाथों से चूची पकड़ मुंह लगाय लगे प्राण समेत दुग्ध पीने तब तो अति व्याकुल हो पूतना पुकारी कैसा यशोदा तेरा पुत्र मनुष्य नहीं यह है यमदूत रस्सी जान मैंने सांप पकड़ा जो इसके हाथ से बच जीती जाऊंगी तो फेर गोकुल में कभी न आऊंगी यों कह भाग गांव के बाहर आई पर कृष्णने न छोड़ा निदान उसका जी लिया वह पछाड़ खाय ऐसे गिरी जैसे आकाश से बज्र गिरे अति शब्द सुन रोहिणी और यशोदा रोती पीटती वहीं आईं जहां पूतना दो कोस में मरी पड़ी थी और उन के पीछे सब गोप उठधाये देखा तो कृष्ण उसकी छाती पर

चढ़े दुग्ध पी रहे हैं झट पट उठाय मुख चूंब हृदय से लगाय घर लेआई गुणियोंको बुलाय झाड़ फूंक कराने लगीं और पूतना के पास गोपी ग्वाल खड़े आपस में कह रहे थे कि भाई इसके गिरने का धमाका सुन हम ऐसे डरे हैं जो छाती अब तक धड़कती है न जानिये बालक की क्या गति हुई होगी ॥

इतने में मथुरा से नन्द जी आये तो देखते क्या हैं कि एक राक्षसी मरी पड़ी है और ब्रजबासियों की भीड़ घेरे खड़ी है पूंछा यह उपाधि



कैसे हुई वे कहनेलगे महाराज पहले तो यह अति सुन्दरी हो तुम्हारे घर आशीश देती गई इसे देख सब ब्रजनारी भूल रहीं यह कृष्ण को ले दूध पिलाने लगी पीछे हम नहीं जानते क्या गति हुई इतनासुन नन्दजी बोले बड़ी कुशल भई जो बालक बचा और यह गोकुल पर न गिरी नहीं तो एक भी जीता न रहता सब इस के नीचे दब मरते यों कह नन्दजीतो घरआये दान पुण्य करने लगे और ग्वालों ने फरसे फावड़े कुदाल कुल्हाड़ों से काट २ पूतनाके हाथ गोड़ तोड़ गढ़े खोद २ गाड़ दिये और मांस चाम इकट्ठा कर फूंक दिया उस के जलने से एक

ऐसी सुगन्ध फैली कि जिस ने सारे संसार को सुगन्धसे भरदिया ॥

इतनी कथा सुन राजा परीक्षित ने शुकदेवजी से पूछा महाराज यह राक्षसी महामलीन मद मांस खानेवाली उस के शरीर से सुगन्ध कैसे निकली सो कृपा कर कहो मुनि बोले राजा श्री कृष्णचन्द्र ने दूधपी उसे मुक्तिदी इसकारण सुगन्ध निकली ॥ इतिश्रीलालकृते प्रेमसागरे पूतना बधोनाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

श्रीशुकदेवमुनि बोले

दो०। जेहि नक्षत्र मोहन भये परयो नखत सो आय।
चारु बधाये रीति सब करत यशोदा माय॥

जब सत्ताइस दिन के हरि हुये तब नन्दजी ने सब ब्राह्मण और ब्रजबासियों को नौता भेजदिया वे आये तिन्हें आदर मान कर बैठाया आगे ब्राह्मणों को तो बहुत सा दान दे बिदा किया और भाइयों को बस्त्र पहराय षट् रस भोजन कराने लगे तिस समय यशोदारानी परोसती थी रोहिणी टहल करती थी ब्रजबासी हंस हंस खा रहे थे गोपियां गीत गा रहींथीं सब आनन्द में ऐसे मगनथे कि कृष्ण की सुरत किसीको भी न थी और कृष्ण एक भारी छकड़के नीचे पालनेमें अचेत सोतेथे कि इसमें भूखे हो जगे पांव के अंगूठे मुंह में दे रोने लगे और हिलक हिलक चारों ओर देखने उसी अवसर उड़ता हुआ एक राक्षस आ निकला कृष्ण को अकेला देख अपने मन में कहने लगा कि यह तो कोई बड़ा बली उपजा है पर आज मैं इस्से पूतना का बैर लूंगा यों ठान शकट में आन बैठा तिसी से उसका नाम शकटासुर हुआ जब गाड़ा चढ़ चढ़ा के हिला तब श्रीकृष्ण ने बिलकते २ एक ऐसी लात मारी कि वह मरगया और छकड़ा टूक २ हो गिरा तो जितने बासन दूध दही के थे सब फूट चूर हुये और गोरस की नदी सी बह निकली गाड़े के टूटने और भांड़ों के फूटने का शब्द सुन सब गोपी ग्वाल दौड़े आये आतेही यशोदा ने कृष्ण को उठाय मुंह चूम छातीसे लगा लिया यह आश्चर्य्य देख सब आपस में कहने लगे आज बिधाता ने बड़ो कुशल की जो बालक बच रहा और शकटही टूट गया ॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी बोले हे राजा जब हरि पांच महीने के हुये तब कंस ने तृणावर्त्त को पठाया वह बगुला हो गोकुल

में आया नन्दरानी कृष्ण को गोद में लिये आंगन में बैठी थी कि ए-का एकी कान्ह ऐसे भारी हुये जो यशोदा ने मारे बोझ के गोद से नीचे उतारे इतने में एक ऐसी आंधी आई कि दिनकी रात हो गई और पेड़ उखड़ २ गिरने छप्पर उड़ने लगे तब व्याकुल हो यशोदाजी श्रीकृष्ण को उठाने लगीं पर वे न उठे ज्योंहीं उन के शरीर से इनका हाथ अलग हुआ त्योंहीं तृणावर्त्त आकाश को ले उड़ा और मन में कहने लगा कि आज इसे बिन मारे न रहूंगा ॥

वहतो कृष्ण को लिये वहां यह बिचार करता था यहां यशोदा जी ने जब आगे न पाया तबरोरो कृष्ण कृष्णकर पुकारने लगीं उनका शब्द सुन सब गोपी ग्वाल साथ ही ढूंढ़ने को धाये अंधेरे में अटकल से ट-टोल २ चलते थे तिस पर भी ठोकरें खाय गिर गिर पड़ते थे ॥

चौ०। ब्रजबनगोपीढूंढ़तडोलैं।इतरोहिणीयशोदाबोलैं
नन्दमेघधुनिकरैंपुकार। टेरैं गोपी गोप अपार॥

जद श्रीकृष्ण ने नन्द यशोदा समेत सब ब्रजबासी अति दुखित देखे तद तृणावर्त्त को फिराय आंगन में ला शिला परधर पटका कि उस काजी देह सेनिकल सटका आंधी थम गई उजाला हुआ सब भूले भटके घर आये देखैं तो राक्षस आंगन में मरा पड़ा है श्रीकृष्ण छाती पर खेल रहे हैं आतेही यशोदा ने उठाय कण्ठ से लगाय लिया और बहुत सा दान ब्राह्मणों को दिया ॥ इति श्रीलाल कृते प्रेमसागरे तृणावर्त्त बधो नाम अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

श्री शुकदेव जी बोले हे राजा एक दिन बसुदेव जी ने गर्ग मुनि को जो बड़े ज्योतिषी और यदुबंशियों के पुरोहित थे बुलाकर कहा कि तुम गोकुल जा लड़के का नाम रख आओ ॥

दो०। गई रोहिणी गर्भ सों भयो पूत है ताहि।
कितीआयु कैसा बली कहानाम ताआहि॥

और नन्दजी के पुत्र हुआ है सो भी तुम्हें बुलाय गयेहैं सुनते ही गर्गमुनि प्रसन्नहोचले और गोकुल के निकट जा पहुंचे तिसी समय किसी ने नन्दजी से आकहा कि यदुबंशियों के पुरोहित गर्गमुनि जी आते हैं यह सुनि नन्दजी आनन्दसे ग्वाल बाल संग कर भेंट ले उठ धाये और पाटम्बर के पांवड़े डालते बाजे गाजेसे लेआये पूजा कर आसन पर बैठाय चरणामृत ले स्त्री पुरुष हाथ जोड़ कहने लगे महाराज बड़े

भाग्य हमारे जो आपने दया कर दर्शन दे घर पवित्र किया तुम्हारे प्रतापसे दोपुचहुयेहैं एकरोहिणीके एक हमारे कृपाकर तिनकानाम धरिये गर्ग मुनि बोले ऐसे नाम रखना उचित नहीं क्योंकि जो यह बात फैले कि गर्ग मुनि गोकुल में लड़कों के नाम धरने गये हैं औ कंस सुन पावै तो वह यह जानेगा कि देवकी के पुत्र को बसुदेव के मित्र के यहां कोई पहुंचाय आया है इसीलिये गर्ग पुरोहित गया है यह समझ मुझे पकड़ मंगावेगा और न जानिये तुम पर भी क्या उपाधि लावै इससे तुम फैलाव कुछ मत करो चुप चाप घरमें नाम धरवालो ॥

नन्द बोले गर्गजी तुमने सच्च कहा इतना कह घरके भीतर ले जाय बैठाया तब गर्ग मुनि ने नन्दजी से दोनों की जन्म तिथि औ समय लग्न साध नाम ठहराय कहा सुनों नन्द जो बसुदेव की नारी रोहिणी के पुत्र के तो इतने नाम होयंगे संकर्षण रेवती रमण बलदाऊ बलराम कालिन्दीभेदन हलधर बलबीर और कृष्ण रूप जो तुम्हारा लड़का है उसके नाम तो अगणित हैं पर किसी समय बसुदेव के यहां जन्मा इससे बासुदेव नाम हुआ और मेरे बिचार में आया है कि ये दोनों बालक तुम्हारे चारों युगों में जन्में हैं तब साथही जन्मेहैं ॥

नन्दजी बोले इनके गुण कहो गर्ग मुनि ने उत्तर दिया ये दूसरे विधाता हैं इनकी गति कुछ जानी नहीं जाती पर मैं यह जानता हूं कि कंस को मार भूमि का भार उतारैंगे ऐसे कह गर्ग मुनि चुप चुपाते चले गये और बसुदेव से जा सब समाचार कहे ॥

आगे दोनों बालक गोकुल में दिन २ बढ़नेलगे और बाललीला करकर नन्द यशोदा को सुख देने लगे नीले पीले झंगुले पहने माथे पर छोटी २ लटुरियां बिखरी हुई यंच गंडे बांधे कठले गलेमें डाले खिलौने हाथों में लिये खेलते आंगन के बीच घुटनों के बल गिर २ पड और तोतली २ बातें करें रोहिणी और यशोदा पीछे लागी फिरें इसलिये कि कहीं लड़के किसी से डर ठोकर खा न गिरें जब छोटे २ बछड़ों और बछियाओंकी पूछ पकड़ २ उठें और गिर २ पड़ें तबयशोदा औ रोहिणी अति प्यार से उठाय छाती से लगाय दूध पिलाय भांति २ के लाड़ लड़ावैं ॥

जद श्रीकृष्ण बड़े भये तो एक दिन ग्वाल बाल साथ ले ब्रज में दधि माखन की चोरी को गये ॥

चौ० सूने घर में ढूंढ़ै जाय। जो पावैं सो देयं लुटाय ॥

जिन्हें घरमें सोते पावें तिनकी धरी ढकी दहेंड़ी उठा लावें जहां छीके पर रक्खा देखें तहां पीढ़े पर पटरा पटरे पै उलूखल धर साथी को खड़ाकर उसके ऊपर चढ़ उतार लें कुछ खावें लुढ़ावें और लुटाय दें ऐसे गोपियों के घर २ नित्य चोरी कर आवें ॥

एक दिन सबने मता किया और गेह में मोहन को आने दिया ज्यों घर भीतर पैठ चाहैं कि माखन दही चुरावें तो जाय पकड़ कर कहा दिन २ आतेथे निशि भोर अब कहां जाओगे माखन चोर यों कह जब सब गोपी मिल कन्हैया को लिये यशोदा के पास उलहना देने चलीं तब श्रीकृष्ण ने ऐसा छल किया कि उसके लड़के का हाथ उसे पकड़ा दिया और आप दौड़ अपने ग्वालबालों का संगलिया वे चलीं २ नन्दरानी के निकट आय पावों पड़ बोलीं जो तुम बुरा न मानो तो हम कहैं जैसी कुछ उपाधि कृष्ण ने ठानी है ॥

दो० दूध दह्यो माखन मह्यो। बचै नहीं ब्रज मांझ ॥
ऐसी चोरी करत हैं। फिरत भोर अरु सांझ ॥

जहां कहींधरा पाते हैं तहां से निधड़क उठा लाते हैं कुछ खाते हैं और कुछलुटातेहैं जोकोई इनके मुखमें दहीलगा बतावे उसे उलटकर कहते हैं तूनेई तो लगायाहे इसभांति नित चोरीकर आते थे आज हमने पकड़ पाया सो तुम्हें दिखाने लाईहैं यशोदा बोलीं बहिन तुम किसका लड़का पकड़ लाई कल से तोमेरा कुंवर कन्हाई घरसे बाहर भी नहीं निकला ऐसाही सच बोलती हो यह सुन और अपनाही बालक हाथमें देख वह हंसकर लजाय रही तहां यशोदाजी ने कृष्ण को बुलाय के कहा पुच तुम किसू के यहां मत जाओ जो चाहिये सो घरमें से ले आओ ॥

चौ० सुनकेकान्हकहततुतराय। मतमैयातूइन्हेपत्याय ॥
झूंठी गोपी झूंठो बोलैं। मेरे पीछे लागी डोलैं ॥

कहींदोहनी बछड़ा पकड़वाती हैं कभी घरकी टहल कराती हैं मुझे द्वारे रखवाली बैठाय अपने काज को जाती हैं झूंठ मूंठ आय तुम से बातें लगाती हैं यों सुन गोपी हरि मुख देख देख मुसकरा कर चली गईं ॥

आगे एकदिन कृष्ण बलराम सखाओं के संग घरमें खेलते थे कि जो कान्ह ने मट्टी खाई तो एक सखा ने यशोदा से जा लगाई वह क्रोधकर

हाथमें छड़ी ले उठधाईं माको रिस भरी आती देख मुंह पोंछकर डरकर खड़े होरहे इन्हों ने जातेही कहा क्यों रे तूने माटी क्यों खाई कृष्ण डरते कांपते बोले मा तुझसे किसने कहा ये बोलीं तेरे सखा ने तब मोहन ने कोप कर सखा से पूछा क्यों रे मैंने मट्टी कब खाई है वह भय कर बोला भैया मैं तेरी बात कुछ नहीं जानता क्या कहूंगा जो कान्ह सखा से बतराने लगे तो यशोदा ने उन्हें जो पकड़ा तब कृष्ण कहने लगे मैया तू मत रिसाय कहीं मनुष्य भी मट्टी खाते हैं वह बोली मैं तेरी अटपटी बात नहीं सुनती जो तू सच्चा है तो अपना मुख दिखा ज्योंहीं श्रीकृष्ण ने मुख खोला तो उसमें तीनलोक दृष्टि आये तद यशोदा को ज्ञान हुआ तो मन में कहने लगी कि मैं बड़ी मूर्ख हूं जो त्रिलोकी के नाथ को अपना सुत कर मानती हूं ॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेव राजा परीक्षित से बोले हे राजा जब नन्दरानी ने ऐसा जाना तब हरि ने अपनी माया फैलाई इतने में मोहनको यशोदा प्यार कर कंठ लगाय घर ले आईं ॥ इति श्रीलालकृते प्रेमसागरे विश्वदर्शनो नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

एक दिन दही मथने की बिरियां जान भोरही नन्दरानी उठीं और सब गोपियोंको जगाय बुलाया वे आय घर झाड़ बहार लीप पोत अपनी२ मथनिया ले ले दही मथने लगीं तहां नन्द महर भी एक बड़ासा कोरा चरुआ ले एडुये पर रख चौकी बिछनैती रई मंगाय टटकी २ दहेड़ियां बाछ २ राम कृष्ण के लिये बिलोवन बैठीं तिस समय नन्द के घर में ऐसा शब्द दही मथने का हो रहा था कि जैसे मेघ गर्जता हो इतनेमें कृष्ण जागे तो रो रो मा मा कर पुकारने लगे उनका पुकारना किसी ने न सुना तब आपही यशोदाके निकट आये औ आखें डब डबाय अनमने हो ठुसक ठुसक तुतलाय २ कहने लगे कि मा तुझे को बेर बुलाया पर मुझे कलेऊ देने न आई तेरा काज अब तक नहीं निबड़ा इतना कह मचल पड़े रई चरुयेसे निकाल दोनों हाथ डाल लगे माखन काढ़ काढ़ फेंकने आंगन लथेड़ने और पांव पटक पटक आंचल खेंच खेंच रोने तब नन्दरानी घबराय झुंझलाय के बोली बेटा यह क्या चाल निकाली है ॥

चौ० चलउठ तुझे कलेऊ दूं । कृष्ण कहै अब मैं नहिंलूं ॥
पहिलेक्योंनहिंदीन्होमाया अबतोमेरीलेयबलाय ॥

निदान यशोदा ने फुसलाय प्यार से मुंह चूंब गोद में उठालिया और दधि माखन रोटी लिये कि मत किसी की दीठ लगे ॥

इस बीच एक गोपीने आ कहा कि तुमतो यहां बैठी हो वहां चूल्हे परसे सब दूध उफन गया यह सुनतेही झट कृष्ण को गोद से उतार उठ धाई और जाके दूध बचाया यहां कान्ह दही मही के भाजन फोड़ रई तोड़ माखन भरी कमोरी ले ग्वाल बालोंमें आये एक उलूखल औंधा धरा पाया तिस पर जा बैठे और चारोंओर सखाओंको बैठाय लगे आपस में हंस २ बांट २ माखन खाने इस में यशोदा दूध उतार आय देखें तो आंगन और तिवारे में दही मही की कीच हो रही है तो शोच समझ हाथमें छड़ी ले निकलीं और ढूंढ़ती २ वहां आईं जहां श्रीकृष्ण मण्डली बनाये माखन खाय खिलाय रहेथे जातेही पीछेसे जो कर धरा तो हरि माको देखतेही रोकर हा हा खाय लगे कहने कि मा गोरस किसने लुटाया मैं नहीं जानूं मुझे छोड़ दे ऐसे दीन बचन सुन यशोदा हंसकर हाथ से छड़ी डाल और आनन्द में मगन हो रिस के मिस कंठ लगाय घरलाय कृष्ण को ऊखलसे बांधने लगीं तब श्रीकृष्ण ने ऐसाकिया कि जिस रस्सी से बांधे वही छोटी होय यशोदा ने सारे घरकी रस्सियां मगाईं तौभी बांधे न गये निदान माको दुखित जान आपही बंधाई दिये नन्दरानी बांध गोपियोंको खोलने को सौंहदे फिर घरकी टहल करने लगीं ॥ इति श्रीलालकृते प्रेमसागरे श्रीकृष्ण दामबन्धनो नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

श्रीशुकदेवजी बोले हे राजा श्रीकृष्णचन्द्र को पूर्व्वजन्मकी सुधि आई कि कुवेर के बेटों को नारद जीने शाप दिया है तिनका उद्धार किया चाहिये यह सुन राजापरीक्षित ने शुकदेव जी से पूछा महाराज कुबेर के पुत्रों को नारद मुनिने कैसे शाप दिया था सो समझा कर कहो शुकदेव मुनि बोले कि नल कूबर नाम कुवेर के दो लड़के कैलाशमें रहे सो शिव की सेवा कर २ अति धनवान हुये एकदिन स्त्रियां साथले ये बन बिहार को गये वहां जायकर मद पी मदमाते भये तब नारियों समेत नंगेहो गङ्गा में न्हाने लगे और गल बहियां डाल २ अनेक अनेक भांति की कलोल करने कि इतने में तहां नारद मुनि आ निकले उन्हें देखतेही नारियों ने तो निकल कपड़े पहने और वे मतवारे वहांहीं खड़े रहे उन की दशा देख नारद जी मन में कहने लगे कि इनको धनका गर्ब हुआ है इसी से मदमाते हैं काम क्रोध को सुखकर मानते हैं निधन मनुष्य

को अहंकार नहीं होता और धनवान को धर्म अधर्म का बिचार कहांहै कि मूर्ख झूंठी देह पर भूले सम्पति कुटुम्ब देखते फूले और साधुन धन मद मनमें अनेक सम्पति बिपत्ति एक सम माने इतना कह नारद मुनि ने उन्हें शाप दिया कि इस पापसे तुम गोकुलमें जा बृक्ष होओ जब श्रीकृष्ण अवतार लेंगे तब तुम्हें मुक्ति देंगे ऐसे नारद मुनि ने उन्हें शापा था तिसीसे वे गोकुल में आ रूख हुये तब उनका नाम यमलार्जुन हुआ ॥

इसी बात की सुरति कर श्रीकृष्ण ओखली को घसीटे वहां लेगये जहां यमलार्जुन पेड़थे जातेही वे दो तरवर के बीच उलूखल को आड़ा डाल एक ऐसा झटका मारा कि वे दोनों जड़ से उखड़ पड़े औ उनमें से दो पुरुष अति सुन्दर निकल हाथ जोड़ स्तुति कर कहने लगे हे नाथ तुम बिन हम से पापियों की सुधि कौन ले श्रीकृष्ण बोले सुनो नारद मुनिने तुम पर बड़ी दया की जो गोकुल में मुक्ति दी उन्हीं की कृपा से तुमने मुझे पाया अब बर मांगो जो तुम्हारे मन में हो ॥

यमलार्जुन बोले दीनानाथ यह नारदजी की ही कृपा है जो आपके चरण परसे और दर्शन किया अब हमें किसी बस्तु की इच्छा नहीं पर इतनाही दीजे जो सदा तुम्हारी भक्ति हृदय में रहे यह सुन वर दे हंस कर श्रीकृष्णचन्द्र ने तिन्हें बिदा किया ॥ इतिश्री लालकृते प्रेमसागरे यमलार्जुन मोक्षो नाम एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

श्री शुकदेद मुनि बोले राजा जब वे दोनों तरु गिरे तब तिनका शब्द सुन नन्दरानी घबराकर दौड़ी वहां आई जहां कृष्ण को उलूखल से बांध गईं थी और उनके पाछे सब गोपी ग्वाल भी आये जब कृष्णको वहां न पाया तब ब्याकुल हो यशोदा मोहन मोहन पुकारती और कहती चलीं कहां गया बांधाथा भाई कहीं किसीने देखा मेरा कुंवर कन्हाई इतनेमें सोहींसे आ एक बोली ब्रजनारी कि दोपेड़ गिरे तहां बचे मुरारी यहसुन सब आगे जायदेखें तो सचहो बृक्ष उखड़े पड़ेहैं औ कृष्ण तिनके बीच ओखलीमें बंधे मुकड़े बैठे हैं जातेही नन्द महरिने उलूखल से खोल कृष्णको रोकर गले लगालिया और सब गोपियां डरा जाम लगीं चुटकी ताली दे२हंसाने नन्द उपनन्द आपसमें कहनेलगे कि ये युगायुगके जमे हुये रूख कैसे उखड़पड़े यह अचम्भा जीमें आताहै कुछ भेद इनकासमझा नहीं जाता इतना सुनके एक लड़केने गिरने का ब्यौरा ज्योंका त्यों कहा पर किसीके जीमें न आया एक बोला ये बालक इस भेदको क्या समझें दूसरे

ने कहा कदाचित् यही हो हरिकी गति कौन जाने ऐसे अनेक अनेकभांति की बातेंकर श्रीकृष्ण को लिये सब आनन्दसे गोकुलमें आये तब नन्द जीने बहुत दान पुण्य किया ॥

कितने एकदिन बीते कृष्ण का जन्मदिन आया तो यशोदा रानीने सब कुटुम्बको न्योत बुलाया और मंगलाचार कर बर्षगांठ बांधी जब सब मिल जेवन बैठे तब नन्दराय बोले सुनो भाइयो अबइस गोकुल में रहना कैसे बने दिन २ उपद्रव होनेलगे चलो कहींऐसी ठौर जावें जहां तृण जलका सुख पावें उपनन्द बोले बृन्दाबन जाय बसिये तो आनन्द से रहिये यह बचन सुन नन्दजी ने सबको खिलाय पिलाय पानदे बैठाय एक ज्योतिषी को बुलाय याचाका मूहूर्त्त पूछा उसने बिचारके कहा इसी दिशाकी याचा को कलका दिन अति उत्तम है बायें योगिनी पीछे दिशाशूल औ सन्मुख चन्द्रमा है आप निस्सन्देह भोरही प्रस्थान कीजे ॥

यह सुन तिसी समय सब गोपी ग्वाल अपने २ घरगये पर सबेरेही अपनी२ बस्तु गाड़ियों पै लाद २ आ इकट्ठे भये तब कुटुम्ब समेत नन्दजी भी साथ होलिये और चले २ नदी उत्तर सांझ समय जा पहुंचे बृन्दा देवी को मनाय बृन्दाबन बसाय तहां सबसुख चैनसे रहने लगे ॥

जब श्रीकृष्ण पांचबर्ष के हुए तब मा से कहने लगे कि मैं बछड़े चरावने जाऊंगा तू बलदाऊ से कहदे जो मुझे बनमें अकेला नछोड़ें वह बोलीपूत बछड़े चरावने वाले दास तुम्हारे बहुतहैं तुम मत पल ओटहो मेरेनयन आगेसे प्यारे कान्ह बोले जोमैं बनमें खेलने जाऊंगा तो खानेको खाऊंगा नहीं तो नहीं यहसुन यशोदाने ग्वाल बालों को बुलाय कृष्ण बलरामको सौंप कर कहा कि तुम बछड़े चरावने दूरमत जाइयो औरसांझ नहोते दोनोंको संगले घर आइयो बनमें इन्हें अकेला मत छोड़ियो साथही साथ रहियो तुम इनके रखवाले हो ऐसेकह कलेजदे राम कृष्णको उनके संगकरदिया ॥

वे जाय यमुना के तीर बछड़े चराने लगे और ग्वाल बालोंमें खेलने कि इतनेमें कंसका पठाया कपटरूप किये बत्सासुर आया उसे देखतेही सब बछड़े डर जिधर तिधर भागे तब श्रीकृष्णने बलदेवजी को सैनसे जताया कि भाईयह कोई राक्षस आया आगे जो वह चरता २ घात करनेको निकट पहुंचा तो श्रीकृष्णने पांव पकड़ फिरायकर ऐसा पटका कि उसका जी घटसे निकल सटका ॥

बत्सासुर का मरना सुन कंसने बकासुर को भेजा वह बृन्दाबनमें आय

अपनी घात लगाय यमुनाके तीर पर्बत सम जा बैठा उसे देख मारे भयके ग्वालबाल कृष्णसे कहने लगे किभैया यहतो कोई राक्षस बगुला बन आया है इसके हाथ से कैसे बचेंगे ॥

यहतो इधर कृष्णसे ऐसे कहते और उधर वह जीमें यह बिचारता था कि आज इसे बिनामारे न जाऊंगा इतनेमें जो श्रीकृष्ण उसके निकट गये तो उसने इन्हें चोंचसे उठा मुखमूंद लिया ग्वालबाल ब्याकुलहो चारोंओर देख २ रो २ पुकार २ कहने लगे हाय २ यहांतो हलधर भी नहींहैं हम यशोदासे क्या जाय कहेंगे इनको अति दुखित देख श्रीकृष्ण ऐसेतत्ते हुए कि वह मुखमें रख न सका जोउसने इन्हें उगला तो उन्होंने उसे चोंच पकड़ पांवतले दबाय चीर डाला और बछड़े घेर सखाओं को साथले हंसते खेलते घरआये ॥ इति श्रीलाल कृते प्रेमसागरे बत्सासुर बकासुर बधोनाम द्वादशोऽध्यायः १२ ॥

श्रीशुकदेव जी बोले सुनों महाराज प्रात होतेही एकदिन श्रीकृष्ण बछड़े चरावन बनको चले तिनकेसाथ सब ग्वाल बालभी अपने२ घरसे छाक ले २ होलिये और बनमें जाय छाक धर बछरू चरानेको छोड़ लगे खडिया गेरू से तन चीत२ बनके फल फूलोंके गहने बनाय बनाय पहन पहन खेलने और पशु पक्षियोंकी बोली बोल २ भांति २ के कुतूहल करकर नाचने गाने ॥

इतनेमें कंस का पठाया अघासुर नाम राक्षस आय अतिबड़ा अजगरहो मुख पसार बैठा औरसब सखा समेत श्रीकृष्णभी खेलते २ वहीं जानिकले जहां वह घात लगाये मुंह खोले बैठाथा दूरसे उसेदेख ग्वालबाल आपस में लगे कहने किभाई यहतो कोईबड़ा महाड़है कि जिसकी कन्दराइतनी बड़ीहै ऐसे कहते बछड़े चराते उसके पास पहुंचे तबएक लड़का उसका मुख खुलादेख बोला भाई यहतो कोई अति भयावनी गुफाहै इसके भीतर न जावेंगे देखतेही भय लगताहै फिर तोख नाम सखा बोला चलो इसमें धस चलें कृष्णसंग रहते हम क्योंडरें जो कोई असुर होगा तो बकासुरकी रीति मारा जायगा ॥

यों सबसखा खड़े बातें करतेहीथे कि उसने एक ऐसी लम्बी स्वासखैंची जो बछड़ों समेत ग्वालबाल सब उड़के उसके मुखमें जापड़े बिषभरी भाफ जो लगी तोलगे ब्याकुलहो बछड़े रांभने औसखा पुकारने कि हेकृष्णप्यारे बेग सुधिलेव नहींतो सब जल मरतेहैं उनकी पुकार सुनतेही आतुर हो श्रीकृष्णभी उसके मुखमें पड़गये उसने प्रसन्नहो मुंहमूंद लिया तब श्रीकृष्णने अपना शरीर इतना बढ़ाया कि उसका पेट फटगया सब बछरू औ

ग्वालबाल निकल पड़े तिससमय आनन्द कर देवताओंने फूल औ अमृत बर्षाय सबकी तपन हरली तब ग्वालबाल श्रीकृष्ण से कहने लगेकि भैया इस असुर को मार आज तो तूने भलेबचाये नहींसब मरचुकेथे ॥ इति श्री लालकृते प्रेमसागरे अघासुर बधो नाम चयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

श्रीशुकदेवजी बोले हेराजा ऐसे अघासुर को मार श्रीकृष्णचन्द्र बछड़े घेर सखाओं को साथले आगेचले कितनी एकदूर जायकदमकी छांह में खड़े हो बंशी बजाय सबग्वाल बालों को बुलाय कहा भैया यहभलीठौरहै इसे छोड़ कहांजायं बैठो यहीं छाक खायं सुनतही उन्होंने बछड़े तो चरनेको हांकदिये और आक ढाक बड़ कदम कमलके पात लाय पत्तल दोने बनाय झाड़ बहार श्रीकृष्ण के चारों ओर पांतिकी पांति बैठगये और अपनी २ छाकें खोल खोल लगे आपस में परोसने ॥

जब परोस चुके तब श्रीकृष्णचन्द्र ने सबके बीच खड़े हो पहिले आप कौर उठाय खानेको आज्ञादी वे खानेलगे तिनमें मोरमुकुट धरे बनमाल गरे लकुटि लिये त्रिभंगी छबि किये पीताम्बर पहने पीतपट ओढ़े हंसहंस श्रीकृष्ण भी अपनी छाकसे सबको खिलाते थे और एक २ के पनवारेसे उठाय २ चाख चाख खट्टे मीठे तीखे चरपरका स्वाद कहते जातेथे और उस मण्डली में ऐसे सुहावने लगते थे कि जैसे तारों में चन्द्रमा तिस समय ब्रह्मा आदि सब देवता अपने अपने विमानों में बैठे आकाश से ग्वाल मण्डली का सुख देख रहे थे तिनमें से आय ब्रह्मा सब बछड़े चुराय लेगया और यहां ग्वाल बालोंने खाते २ चिन्ता कर श्रीकृष्णसे कहा भैया हमतो निश्चिन्ताई से बैठे खाय रहेहैं न जानिये बछड़े कहां निकल गये होंगे ॥

चौ०तबग्वालनसोकहतकन्हाई। तुमसबजेंवतरहियोभाई॥
जिनकोऊ उठकर अवसेर। सबके बछड़ लाऊं घेर॥

ऐसे कह कितनी एक दूर बनमें जाय जब जाना कि यहां से बछड़े ब्रह्मा हरलेगया तब श्रीकृष्ण वैसेही और बनाय लाये यहां आय देखें तो ग्वाल बालों को भी उठाय लेगया है फिर इन्होंने वेभी जैसे थे तैसेही बनाये और सांझ हुई जान सबको साथले वृन्दाबन आय ग्वाल बाल अपने अपने घर गये पर किसीने यह भेद न जाना कि ये हमारे बालक औ बछड़े नहीं बरन और दिन दिन माया बढ़ती चली ॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी बोले महाराज वहां ब्रह्मा ग्वाल बाल बछड़ों को लेजाय एक पर्व्वत की कन्दरा में भर उसके मुंहपर पत्थर की शिला धर भूलगया और यहां श्रीकृष्ण चन्द्र नित नई नई लीला करते थे इसमें एक बर्ष बीतगया तब ब्रह्माको सुध हुई तो मनमें कहने लगा कि मेरा तो एक पल भी नहीं हुआ पर मनुष्य का बर्ष होगया इसमें अब चल देखा चाहिये कि ब्रजमें ग्वाल बाल बछड़ों बिन क्या गतिभई ॥

यह विचार उठकर वहां आया जहां कन्दरा में सबको मूंद गया था शिला उठाय देखे तो लड़के औ बछड़े घोर निद्रामें सोये पड़ेहैं वहांसे चल बृन्दा बनमें आय बालक औ बछरू सब ज्योंके त्यों देख अचम्भे हो कहने लगा कैसे ग्वाल बच्छ यहांआये कैसे नये कृष्ण उपजाये इतनाकह फिर कन्दरा को देखने गया जितने में वहांसे देखकर आवे तितने बीच यहां श्रीकृष्ण चन्द्र ने ऐसी माया करी कि जितने ग्वालबाल बछड़े थे सब चतुर्भुज होगये और एकएकके आगे ब्रह्मा रुद्र इन्द्र हाथजोड़े खड़े हैं ॥

चौ० देखि बिरञ्चि चित्त को भयो। भूल्यो ज्ञान ध्यान सब गयो ॥
जनु पषान देवी चौमुखी। भई भक्ति पूजा बिनदुखी ॥

औ डरकर नयन मूंद लगा थरथर कांपने जब अन्तर्य्यामी श्रीकृष्णचन्द्र ने जाना कि ब्रह्मा अति व्याकुल है तब सब का अंश हर लिया और आप अकेलेही रहगये ऐसे कि जैसेभिन्न भिन्न बादल एक होजाय ॥ इति श्रीलाल कृते प्रेमसागरे ब्रह्मा बच्छ हरणो श्रीकृष्ण माया करणो नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

श्रीशुकदेव जी बोले हेराजा जद श्रीकृष्ण ने अपनी माया उठाली तद ब्रह्माको अपने शरीर का ज्ञान हुआ तो ध्यानकर भगवान् के पास आ अति गिड़ गिड़ाय पावों पड़ बिनती कर हाथ बांध खड़ा हो कहने लगा कि हेनाथ तुमने बड़ी कृपाकरी जो मेरा गर्ब दूर किया इसीसे अन्धा होरहाथा ऐसी बुद्धि किसकीहै जोबिन दया तुम्हारी तुम्हारे चरित्रों को जाने माया तुम्हारी ने सबको मोहाहै ऐसा कौन जो तुम्हें मोहे तुम सबके कर्त्ताहो तुम्हारे रोम रोम में मुझ से ब्रह्मा अनेक पड़े हैं मैं किस गिनतीमें हूं दीन दयाल अब दयाकर अपराध क्षमा कीजे मेरा दोष चित्त में नलीजे ॥

इतना सुन श्रीकृष्णचन्द्र मुसकराये तद ब्रह्माने सब ग्वालबाल बछड़े

सोतेके सोते ला दिये और लज्जित हो स्तुति कर अपने स्थान को गया जैसी मंडली आगेथी तैसीही बनगई बर्षदिन बीता औ किसीने न जाना जो ग्वाल बालों की नींद गईतो कृष्ण बछरू घेर लाये तब तिनसे लड़के बोले भैया तूतो बछड़े बेग ले आया हम भोजन करने भी न पाये ॥

चौ० सुनतबचनहंसकहतबिहारी मोकोंचिन्ताभईतिहारी
निकट चरत इकठौरी पाये अब घरचलो भोरकेआये

ऐसे आपस में बतराय बछरू ले सब हंसते खेलते अपने घरकोआये ॥

इति श्रीलालकृते प्रेमसागरे ब्रह्मास्तुतिकरनोनाम पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

श्रीशुकदेव जी बोले महाराज जब श्रीकृष्ण आठ बर्ष के हुये तब एक दिन उन्होंने यशोदा से कहा कि मा मैं गाय चरावन जाऊंगा तू बाबा से समझाय कर कह दीजो मुझे ग्वालों के साथ करदें सुनतेही यशोदा ने नन्दजी से कहा उन्हों ने शुभ मुहूर्त ठहराय ग्वाल बालों को बुला कार्तिक शुदी अष्टमी को रामकृष्ण से खरक पुजवाय बिनती कर ग्वालों से कहा कि भाइयो आजसे गौ चरावन अपने साथ रामकृष्ण को भी ले जाया करो पर इनके पासही रहियो बन में अकेला न छोड़ियो ऐसे कह छाक दे कृष्ण बलराम को दहीका तिलक कर सबके संग बिदा किया वे मगन हो ग्वाल बालों समेत गायें लिये बन में पहुंचे तहां बन की छबि देख कृष्ण बलदेव जी से कहने लगे दाऊ यह तो अति भावती सुहावनी ठौर है देखो कैसे वृक्ष झुक २ रहे हैं औ भांति २ के पशु पक्षी कलोलें करते हैं ऐसे कह एक ऊंचे टीले पर जा चढ़े और लगे डुपट्टा फिराय २ कारी गोरी धौरी धोरी धूमरी भूरी नीली कह २ पुकारने सुनतेही सब गायें रांभती हूंकती दौड़ आईं तिस समय ऐसी शोभा हो रही थी कि मानो चारों ओर से बरण २ की घटा घिर आई होय ॥

फिर कृष्णचन्द्र गौ चराने को हांक भाई के साथ छाक खाय कदम्ब की छांह में एक सखा की जांघ पै शिर धर सोये कितनी बेरमें जो जागे तो बलरामजी से कहा दाऊ सुनो खेल यह करें न्यारो कटक बांधके लरें इतना कह आधी २ गायें औ ग्वाल बाल बांट लिये तब बनके फल फूल तोड़ झोलियोंमें भर २ लगे तुरही भेर भोंपू डफ ढोल दमामें मुखहीं से बजाय २ लड़ने और मार २ पुकारने ऐसे कितनी एक बेर तक लड़े फिर अपनी अपनी टोली निकाल कर गायें चराने लगे ॥

इस बीच बलदाऊजी से सखाने कहा महाराज यहांसे थोड़ीसी दूर पर एक तालबन है तिसमें अमृत समान फल लगे हैं तहां गधे के रूप एक राक्षस रखवाली करता है इतनी बात सुनतेही बलरामजी ग्वाल बालों समेत उस बन में गये और ईंट पत्थर ढेले लाठियां मार २ फल झाड़ने लगे शब्द सुनकर धेनुक नाम खर रेंकता आया उसने आतेही फिरकर बलरामजी की छातीमें एक दुलत्ती मारी तब इन्होंने उसे उठा कर दे पटका फिर वह लोट पोटके उठा और धरती खूंद २ कान दबाय हट २ दुलत्तियां झाड़ने लगा ऐसे बड़ी बेर लग लड़ता रहा निदान बलरामजी ने उसकी दोनों पिछली टांगे पकड़ फिराय कर एक ऊंचे पेड़ पर फेंका सो गिरतेही मरगया और साथ उसके वह रूख भी टूट पड़ा दोनों के गिरने से अति शब्द हुआ कि सारे बन के वृक्ष हिल उठे ॥

चौ० देखदूरसों कहतमुरारी । हालेरूखशब्दभयोभारी ॥
तबहिंसखाहलधरकेआये । चलऊकृष्णातुमबेगबुलाये ॥

एक असुर मारा है सो पड़ा है इतनी बात सुनतेही कृष्ण भी बलरामजी के पास जा पहुंचे तब धेनुकके साथी जितने राक्षसथे सब चढ़ आये तिन्हें श्रीकृष्णजी ने सहजही मार गिराया तब तो ग्वालबालोंने प्रसन्न हो निधड़क फल तोड़ मनमानी झोलियां भरलीं और गायें घेर लाये श्रीकृष्ण ने बलदेव जी से कहा महाराज बड़ी बेरसे आये हैं अब घरको चलिये इतना बचन सुनतेही दोनों भाई गायें लिये ग्वालबालों समेत हंसते खेलते सांझको घर आये और जो फल लाये थे सो सारे बृन्दाबन में बटवाये सबको बिदादे आप सोये फिर भोरके लड़के उठते ही कृष्ण ग्वालबालों को बुलाय कलेऊ करगायें ले बन को गये और गौ चराते२ कालीदह में जा पहुंचे वहीं ग्वालों ने गायोंको यमुना में पानी पिलाया और आप भी पिया जो जल पी ऊपर उठे तो गायों समेत सारे बिष के सब लोट गये तब कृष्णजी ने अमृत की दृष्टि से देख सबों को जिलाया ॥ इति श्रीलाल कृते प्रेमसागरे धेनुकबधो नाम षोड़सो ऽध्यायः ॥ १६ ॥

शुकदेवजी बोले महाराज ऐसे सब रक्षाकर कृष्ण ग्वाल बालोंको साथ ले गेंदतड़ी खेलने लगे और जहां काली था तहां चार कोस तक यमुना का जल उस के विषसे खौलता था कोई पशु पक्षी वहां न जा सक्ता जो भूल कर जाता सो लपट से झुलस दहमें गिर पड़ता औ तीर में कोई

रूखभी न उपजता एक अविनाशी कदम्ब तटपर था सोई था राजाने पूछा महाराज वह कदम्ब कैसे बचा मुनि बोले किसी समय अमृत चोंचमें लिये गरुड़ पेड़पर आ बैठा था तिसके मुंह से एक बूंद गिराथा इसलिये वह रूख बचा ॥

इतनी कथा सुनाय शुकदेवजी ने राजासे कहा महाराज कृष्णचन्द्रजी कालीका मारना जीमें ठान गेंदखेलते २ कदम्ब पर जा चढ़े औ जोनीचे से सखानें गेंद चलाया तो यमुना में गिरा उसके साथ कृष्णभी कूदे इनके कूदने का शब्द कानसे सुनकर वह बिष उगलने लगा औ अग्नि समफुंकारें मार कहने कि यह ऐसा कोनहे जो अब लग दहमें जीताहे कहीं अक्षय वृक्ष तो मेरा तेज न सहिके टूटपड़ा कि कोई बड़ा पशु पक्षी आया है जो अबतक जलमें शब्द होताहै ॥

यों कह वह एकसौ दशों फनोंसे बिष उगलता था औ कृष्ण फेरते फिरतेथे तिस समय सखा रो२ हाथ पसार पसार पुकारते थे गायें मुंहबाये चारों ओर रांभती हूंकती फिरतीं थीं ग्वाल न्यारेहो कहते थे श्याम बेग निकल आइये नहीं तुम बिन घरजा हम क्या उत्तर देंगे ये तो यहां दुःखितहो यों कह रहे थे इसमें किसी ने वृन्दाबन मेंजा सुनाया कि कृष्ण कालीदह में कूद पड़े यहसुन रोहिणी यशोदा औ नन्द गोपी गोप समेत रोते पीटते उठ धाये और सबके सब गिरते पड़ते कालीदह आये तहां कृष्ण को न देख व्याकुल हो नन्दरानी पानीमें गिरने चलीं तब गोपियों ने बीचही जा पकड़ा औ ग्वाल बाल नन्दजी को थांभे ऐसे कह रहे थे ॥

चौ० छाड़महाबनयाबनआये। तौछंदैत्यन अधिकसताये ॥
बज्रतकुशल असुरनतेंपरी। अबक्योंदहतेंनिकसैंहरी ॥

कि इतने में पीछे से बलदेवजी भी वहां आये औ सब ब्रजबासियों को समझाकर बोले अभीआवेंगे कृष्णअविनाशीतुम काहेको लातेहो उदासी ॥

चौ०आजसाथआयों मैंनाहीं। मोबिनहरिपैठे दहमांहीं ॥

इतनी कथा कह श्री शुकदेवजी राजा परीक्षित से कहनेलगे कि महाराज इधर तो बलरामजी सबको यों आशा भरोसा देतेथे और उधर कृष्णजी फेरकर उस के पास गये तो वह आ इन के सारे शरीर से लिपट गया तब कृष्ण ऐसे मोटे हुये कि उसे छोड़ते ही बन आया फिरज्यों २ वह फुंकारे मार २ इनपर फन चलाता था त्यों २ ये अपनेको बचाते थे

निदान ब्रजबासियों को अति दुखित जान कृष्ण उधर एकाएकी उसके शिरपर चढ़े ॥

दो० तीनलोककोबोझ ले । भारीभयेमुरारि ॥
फन २ परनाचतफिरैं । बाजै पग पटतारि ॥

तब तो मारे बोझके काली मरने लगा और फन पटक पटक उसने जीभें निकालदीं तिनसे लोहूकी धारें बह चलीं तद बिष औ बलका गर्व गया तद उस ने मन में जाना कि आदिपुरुष ने अवतार लिया नहीं इतनी किस में सामर्थ्य है जो मेरे बिषसे बचे यह समझ जीवकी आश तज शिथिल हो रहा तब नागपत्नी ने आय हाथ जोड़ शिर नवाय बिनतीकर कृष्णचन्द्र से कहा महाराज आपने भला किया जो इस दुःख-दाई अति अभिमानी का गर्व दूर किया अब इसके भाग जागे जो तुम्हारा दर्शन पाया जिन चरणों को ब्रह्मादि सब देवता जप तप कर ध्यावते हैं सोई पद काली के शीश पर बिराजते हैं ॥

इतना कह फिर बोली महाराज मुझ पर दयाकर इसे छोड़ दीजे नहीं तो इसके साथ मेरा भी बध कीजे क्योंकि स्वामी बिन स्त्री को मरनाहीं भला है औ बिचारिये तो इसका भी कुछ दोष नहीं यह जातिस्वभाव है कि दूध पिलाइये बिष बढ़े ॥

इतनी बात नागपत्नी से सुन श्रीकृष्णचन्द्र उस पर से उतर पड़े तब प्रणाम कर हाथ जोड़ काली बोला नाथ मेरा अपराध क्षमाकरो मैंने अन जान आप पर फन चलाये हम अधम जाति सर्प हमें इतना ज्ञान कहां जो तुम्हें पहचानें श्रीकृष्ण बोले भला जो हुआ सो हुआ पर अब तुम यहां न रहो कुटुम्ब समेत रमणक द्वीप में जा बसो ॥

यह सुन काली ने डरते कांपते कहा कृपानाथ वहां जाऊं तो पर गरुड़ मुझे खा जायगा उसी के भयसे मैं यहां भाग आया हूं कृष्ण बोले अब तू निर्भय चलाजा हमारे पदके चिन्ह तेरे शिर पर देख तुझसे कोई न बोलेगा ऐसे कह श्रीकृष्णचन्द्र ने तिसी समय गरुड़को बुलाय कालीके मनका भय मिटाय दिया तब काली नें धूप दीप नैवेद्य समेत बिधि से पूजाकर बहुत सी भेट कृष्ण के आगे धर हाथ जोड़ बिनती कर बिदा होय कहा ॥

चौ० चारघरीनाचेमोंमाथा । यहमनप्रीतिराखियोनाथा ॥

येां कह दण्डवत् कर कालो तो कुटुम्ब समेत रमणक द्वीप को गया और कृष्णचन्द्र जल से बाहर आये ॥

इति श्री लालकृते प्रेमसागरे कालीमर्दनोनाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

इतनी कथा सुन राजा परीक्षित ने शुकदेवजी से पूछा महाराज रमणक द्वीप तो भली ठौरथी कालो वहांसे क्यों आया और किसलिये यमुना में रहा यह मुझे समुझाकर कहो जो मेरे मनका संदेह जाय शुकदेवजी बोले राजा रमणक द्वीप में हरि का बाहन गरुड़ रहता है सो अति बलवन्त है तिससे वहां के बड़े २ सर्पोंने हार मान उसे एक सर्प नित्य देने कहा एक वृक्ष पर धर आवे वह आवे और खा जाय एक दिन कद्रू नागिनी का पुत्र कालो अपने बिषका घमण्ड कर गरुड़ का भक्ष्य खाने गया इतने में वहां गरुड़आया औदोनोंमें अति युद्धहुआ निदान हारमान कालो अपने मनमें कहने लगा कि अब इसके हाथसे कैसे बचूं और कहां जाऊं इतना कह सोचा कि वृन्दाबन में यमुना के तीर जा रहूं तो बचूं क्योंकि यह वहां नहीं जा सक्ता ऐसे बिचार कालो वहां गया फिर राजा परीक्षित ने शुकदेवजीसे पूछा महाराज वह वहां क्यों नहीं जा सक्ता था सो भेद कहो शुकदेवजी बोले राजा किसी समय यमुनाके तट सौभरि ऋषि बैठे तप करतेथे तहां गरुड़ने जाय एक मछली मार खाई तब ऋषिने क्रोध कर उसे यह शाप दिया कि तू जो इस ठौर फिर आवेगा तो जीता न रहेगा इस कारण वहां न जा सक्ताथा और जबसे कालो वहां गया तभी से उस स्थान का नाम कालीदह हुआ ॥

इतनी कथा सुनाय शुकदेव जी बोले कि हे राजा जब श्रीकृष्णचन्द्र निकले तब नन्द यशोदा ने आनन्द कर बहुत सा दान पुण्य किया पुत्रका मुख देख नयनों को सुख दिया और सब ब्रजबासियों के जीमें जो आया इस बीच सांझ हुई तोआपसमें कहने लगे कि अब दिन भरके हारे थके भूखे प्यासे घर कहां जायंगे रातकी रातयहीं काटें भोरहुये वृन्दाबन चलेंगे यह कह सब सोय रहे ॥

चौ० । आधीरात आयजब गई । भारीकारी आंधीभई ॥
दावाअग्निलगीचहुंओरा अतिभरबरष्टचबनढोर ॥

आग लगतेही सब चौंक पड़े और घबराकर चारों ओर देख २ हाथ पसार २ पुकारने लगे कि हेकृष्ण हेकृष्ण इस अग्निसे बेग बचाओ नहींतो

यह क्षण भरमें सबको जलाय भस्म करती है जब नन्द यशोदा समेत ब्रजबासियों ने ऐसे पुकार की तब श्रीकृष्णचन्द्रजी ने उठते ही वह आग पलमें पी सबके मनकी चिन्ता दूरकी भोर होते ही सब वृन्दाबन आये घर घर आनन्द मंगल हुये ॥ इति श्रीलाल कृते प्रेमसागरे दावाग्नि मोचनो नामअष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

इतनी कथा कह शुकदेवजी बोले महाराज अब मैं ऋतु बर्णन करताहूं कि जैसे श्रीकृष्णचन्द्र ने तिनमें लीलाकरी सो चित्तदे सुनो प्रथम ग्रीष्म ऋतु आई तिसने आतेही सब संसारका सुख ले लिया और धरती आकाश को तपाय अग्नि सम किया पर कृष्णके प्रतापसे वृन्दाबन में सदा बसन्तही रहे जहां घनी २ लतायं कुञ्जोंके वृक्षोंपर लह लहा रहीं बरन २ के फूल फूले हुये तिन पर भोरों के झुंडके झुंड गूंज रहे आंबों की डालियों पै कोयल कुहुक रही ठंडी २ छांहीमें मोर माच रहे सुगन्ध लिये मीठी२ पवन बह रही और एक ओर बनके यमुना न्यारी ही शोभा दे रही थी तहां कृष्ण बलराम गायें छोड़ सब सखा समेत आपस में अनूठे २ खेल खेल रहेथे कि इतनेमें कंसका पठाया ग्वाल का रूप बनाय प्रलम्ब नाम राक्षस आया उसे देखते ही कृष्णचन्द्र ने बलरामजी से सैनसे कहा ॥

चौ० । अपनोसखानहींबलबीर । कपटरूपयहअसुरशरीर ॥
याकेबधकोकरो उपाय । ग्वालरूपमारोनहिंजाय ॥
जबयहराखै रूपआपनो । तबतुमयाहितत्तछणहनो ॥

इतनी बात बलदेवजी को जताय कृष्णजी ने प्रलम्बको हंसकर पास बुलाय हाथ पकड़ के कहा ॥

चौ०सबतेनीकोभेषतिहारो । भलोकपटनितमिलहमारो ॥

यों कह उसे साथले आधे ग्वाल बाल बांट लिये और आधे बलराम जी को दे दो लड़कों को चढ़ाय लगे फल फूलों का नाम पूंछने और बताने इस में बताते २ कृष्ण हारे बलदेव जीते तब कृष्ण को औरवाले बलदेव के साथियों को कांधे पर चढ़ाय ले चले तहां प्रलम्ब बलरामजी को सबके आगे ले भागा और बनमें जाय उसने अपनी देह बढ़ाई तिस समय उस काले २ पहाड़ से राक्षस पर बलदेवजी ऐसे शोभायमान थे जैसे श्यामघटा पै चन्द्रमा और कुण्डल की दमक बिजली सी चमकती थी पसीना मेहसा बरसता था शुकदेवजी ने राजा परीक्षित से कहा कि

महाराज तोहीं अकेला गाय रूप बलरामजी को मारने को हुआ तोहीं उन्होंने मारे घूसोंके उसे मार गिराया॥ इति श्रीलाल कृते प्रेमसागरे प्रलम्बासुरबधो नाम एकोनविंशोऽध्यायः॥ १६॥

शुकदेवजी बोले हे राजा जब प्रलम्ब को मारके बलरामजी चले तभी सोहीं से सखाओं समेत घनश्याम आनि मिले और जो ग्वाल बाल बनमें गायें चराते थे वे भी असुर मरा सुन गायें छोड़ उधर देखने को गये तोलों इधर गायें चरती डाभ कांश से निकल मूंज बनमें बढ़ गई वहां से आय दोनों भाई यहां देखें तो एकभी गाय नहीं॥

चौ०। बिछुरीं गैयां बिछुरे ग्वाल। भूले फिरें मंजबनताल॥
डूखन चढ़े परस्पर टेरैं। लैलै नाम पिछौरीफेरैं॥

इसमें किसी सखाने हाथ जोड़ कृष्णसे कहा महाराज गायें सबमूंज बन में पैठ गईं तिनके पीछे ग्वाल बाल ढूंढते भटकते फिरतेहैं इतनी बातके सुनतेही कृष्णने कदम्बपर चढ़ ऊंचेसुर से जो बंशी बजाई तो सुन ग्वाल बाल औ सबगायें मूंजबनको फाड़कर ऐसेआनि मिलीं जैसेसावन भादों की नदी तुंगतरंग को क्षीरसमुद्रमें जामिलें इसबीच देखते क्याहैं किबन चारों ओरसे दहड़ दहड़ जलता चला आताहै यहदेख ग्वालबाल औ सखाअति घबराय भय खायकर पुकारे हे कृष्ण २ इस अग्निसे बेग बचाओ नहीं तो अभी छणमें सब जल मरतेहैं कृष्ण बोले तुम सब अपनी आंख मूंदो जद उन्होंने नयन मूंदे तद कृष्णजीने प्रल भरमें अग्नि बुझाय और एक माया करी कि गायों समेत सब ग्वालबालों को भांडीर बनमें आय कहा कि अब आंखे खोल दो॥

चौ०ग्वालखोलिदृगकहैंनिहारिकहांगईवहअग्निमुरारि
कब आये फिरवन भांडीर। होत अचंभौ यह बलबीर॥

ऐसे कह गायें ले सब मिल कृष्ण बलराम के साथ वृन्दाबन आये और सबोंने अपने २ घर जाय कहा कि आज बनमें बलरामजी ने प्रलम्ब नाम राक्षस को मारा और मूंज बनमें आग लगीथी सोभी हरिके प्रतासे बुझगई॥

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेवजी ने कहा हेराजा ग्वालबालों के मुख से यहबातसुन सब ब्रजबासी देखने कोतो गये पर उन्होंने कृष्ण लीलका कुछ भेद न पाया॥ इति श्रीलालकृते प्रेमसागरे दावाग्निमोचनो नाम विंशोऽध्यायः॥ २०॥

श्रीशुकदेव मुनि बोले कि महाराज ग्रीष्म की अति अनीति देख नृप पावस प्रचण्ड पृथ्वीके पशु पक्षी जीव जन्तुओं की दया विचार चारों ओर से दल बादल साथले लड़ने को चढ़ आया तिस समय घनजो गर्जता था सोई तो धौंसा बाजता था और बरण बरणकी घटाजो घिर आई थी सोई शूरबीर रावत थे तिनके बीच बिजली की दमक शस्त्र कीसी चमकथी बग पांति ठौरठौर ध्वजा सीफहराय रहीथी दादुर मोर कड़खेतों की भांतियश बखानते थे औ बड़ीबड़ी बूंटोंकी झड़ी बाणोंकी सी झड़ी लगी इस धूमधाम से पावस को आते देखग्रीष्म खेत छोड़ अपना जी ले भागा तब मेघ पिया ने बर्षाय पृथ्वी को सुखदिया उसने जो आठ महीने पतिके वियोगमें योग किया था तिसका भोग भर लिया कुछ गिर शीतलहुये औगर्भरहा उसमें से अठारह भार पुच उपजे सोभी फल फूल भेंटले २ पियाको प्रणाम करनेलगे उसकाल वृन्दाबन की भूमि ऐसी सुहावनी लगती थी किजैसे शृंगार किये कामिनी और जहां तहां नदी नाले सरोवर भरे हुए तिन पर हंस सारस शोभा देरहे ऊंचे २ रूखोंकी डालियां झूम रहीं उनमें पिक चातक कपोत कीर बैठे कोलाहल कररहे थे और ठांव २ सूहे कुसुंभे जोड़े पहरे गोपी ग्वाल झूलों पै झूलझूल ऊंचे सुरोंसे मलारें गाते थे उनके निकट जाय २ श्रीकृष्ण बलराम भी बाल लीला कर २ अधिक सुख दिखातेथे इसआनन्दसे बर्षा ऋतु बीती तब श्रीकृष्ण ग्वालबालों से कहने लगे कि भैया अब तो सुखदाई शरदऋतु आई ॥

चौ० सबकोसुखभारीअबजान्यौ।स्वादसुगंधरूपपहिचान्यौ
निशिनक्षचउज्ज्वलआकाश।मानजुंनिर्गुणब्रह्मप्रकाश॥

चारिमास जो बिरमेगेह। भये शरद तिनतजे सनेह ॥
अपने अपने काजन धाये। भूप चढ़े तकि देश पराये ॥

इति श्रीलालकृते प्रेमसागरे बर्षा शरद ऋतुबर्णनो नामैकविंशोध्यायः २१ ॥

श्रीशुकदेवजी बोले किहे महाराज इतनी बात कह श्रीकृष्णचन्द्र फिर ग्वाल बाल साथ ले लीला करने लगे और जबलग कृष्ण वनमें धेनु चरावें तबलग सब गोपी घरमें बैठी हरिका यश गावें एकदिन श्रीकृष्णने बनमें बेणु बजाई तो बंशी की धुनिसुनि सारी ब्रजयुवती हड़बड़ाय उठ धाईं और एकठौर मिलकर बाटमें आबैठीं तहां आपसमें कहने लगीं कि हमारे लोचन सुफल तब हैंगे जब कृष्णके दर्शन पावेंगी अभीतो कान्ह गयेकि

साथ बनमें नाचते गाते फिरतेहैं सांझ समय इधर आवेंगे तब हमें दर्शन मिलेंगे यों सुन एक गोपी बोली ॥

चौ० सुनौसखी वहबेणु बजाई । बांस बंशदेखौ अधिकाई ॥

इसमें इतना क्या गुणहै जो दिन भर कृष्णके मुंह लगी रहतीहै और अधरामृत पी आनन्द वर्ष घनसी जाती है क्या हमसे भी यह प्यारीहै जो निशिदिन लिये रहते हैं ॥

चौ० । मेरे आगेकी यहगढ़ी । अब मय सौत बदन परचढ़ी॥

जब श्रीकृष्ण इसे पीताम्बर से पोंछ बजातेहैं तब सुर मुनि किन्नर और गन्धर्व अपनी २ स्त्रियों को साथ ले विमानों पर बैठ २ हर्ष कर सुनने को आतेहैं और सुनकर मोहित हो जहांके तहां चित्र से रह जाते हैं ऐसा इसने क्या तप किया है जो सब इसके आधीन होते हैं इतनी बात सुन एक गोपी ने उत्तर दिया कि पहिले तो इसने बांस के बंश में उपज हरि का स्मरण किया पीछे घाम शीत जल ऊपर लिया निदान टूक २ हो देह जलाय धुंआपिया ॥

चौ० इसमें तप करतेहैं कैसा । सिद्ध ह्वई पाया फल ऐसा ॥

यह सुन कोई ब्रजनागरी बोली कि हम को बेन क्यों न रची ब्रजनाथ जो निशि दिन हरि के साथ रहती है इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेवजी राजा परीक्षितसे कहने लगे कि महाराज जब तक श्रीकृष्ण धेनु चराय बन से न आवें तब तक नित गोपी हरि गुण गावें ॥

इतिश्रीलालकृते प्रेमसागरे गोपीवेणुगीत वर्णनोनाम द्वाविंशोऽध्यायः ॥२२ ॥

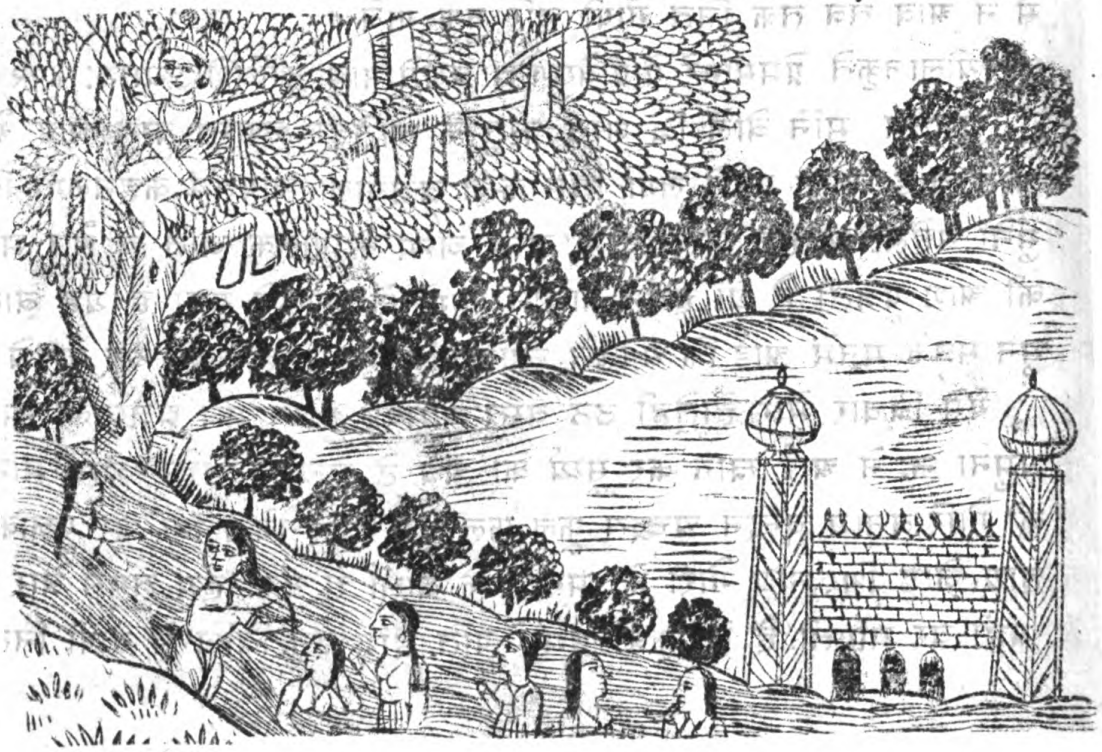
शुकदेव मुनि बोले कि शरद ऋतु के जातेही हेमन्त ऋतु आई और अति जाड़ा पाला पड़ने लगा तिस काल ब्रजबाला आपसमें कहनेलगीं कि सुनो सहेली अगहन के स्नान से जन्म जन्म के पातक जाते हैं और मन की आश पूजती है यों हमने प्राचीन लोगों के मुख से सुना है यह बात सुन सबके मनमें आई कि अगहन न्हाइये तो निःसन्देह कृष्ण बर पाइये ॥

ऐसे बिचार भोर होतेही उठ वस्त्र आभूषण पहन सब ब्रजबाला मिल यमुना न्हाने आईं स्नान कर सूर्य्य को अर्घ दे जल से बाहर आय माटी की गौरि बनाय चन्दन अच्छत फूल फल धूप दीप नैवेद्यआगे धर पूजाकर हाथ जोड़ शिर नाय गौरी को मनाय के बोलीं हे देवी हम तुमसे बार २ यही वर मांगती हैं कि कृष्ण हमारे पति होंय इस बिधि से गोपी नित्य

न्हावें दिन भर व्रतकर सांझको दही भातखा भूमि पर सोवें इसलिये कि हमारे व्रत का फल शीघ्र मिले ॥

एक दिन सब व्रजबाला मिल स्नानको औघट घाट गईं औ वहां जाय चीर उतार तीर पर धर नग्नहो नीरमेंपैठ लगीं हरिके गुण गाय २ जलक्रीड़ा करने तिसी समय कृष्णभी बंशीबटकी छांहमेंबैठे धेनु चरावतेथे वेभीइनके गाने का शब्द सुन चुप चाप चलेआये और छिपकर देखने लगे निदान देखते २ जो कुछ उनके जी में आई तो सब बस्त्र चुराय कदम्बपर जा चढ़े और गठरी बांध आगे धरली इतनेमें गोपी जो देख तोतीरपै चीर नहीं तब घबरा कर चारों ओर उठ २ देखने औ आपस में कहने लगीं कि अभी तो यहां एक चिड़िया भी नहीं आई बसन कौन हर लेगया इस बीच एक गोपी ने देखा कि शिरपर मुकुट हाथ में लकुट केशर तिलक दिये बनमाल हिये पीताम्बर पहिरे कपड़ों की गठरी बांधे मौन साधे श्रीकृष्ण कदम्बपै चढ़े छिपेहुये बैठेहैं वह देखतेही पुकारी सखी वे देखो हमारे चित चोर चीर चोर कदम्ब पर पीठ लिये बिराजतेहैं यह बचन सुन औ सब युवती कृष्णको देख लजाय पानी में पैठ हाथ जोड़ शिर नाय बिनती कर हा हा खाय कर बोलीं ॥

चौ० दीनदयालहरणदुखप्यारे। दीजैमोहनचीरहमारे ॥
ऐसेसुनकेकहेकन्हाई । योंनहिंदूंगानन्ददुहाई ॥
एकएककरबाहरआओ। तोतुमअपनेकपड़ेपाओ ॥



ब्रजबाला रिसाय के बोलीं यह तुम भली सीख सीखे हो जो हमसे कहतेहो नंगी बाहर आओ अभी अपने पिता बंधु से जायकहें तो वे तुम्हें चोर चोर कर आयगहें औ नन्द यशोदा को जा सुनावें तो वेभी तुमको सीख भलीभांति से सिखावें हम करतीहें किसी की कान तुमने मेटी सब पहचान ॥

इतनी बात के सुनतेही क्रोधकर श्रीकृष्णजी ने कहा कि अब चीर तभी पावोगी जब विनको लिवा लावोगी नहीं तो नहीं यह सुन डरकर गोपियां बोलीं दीनदयाल हमारी सुधिके लिवैया पतिके रखैया तो आप हैं हम किसे लायेंगी तुम्हारेही हेतु नेमकर मार्गशिर मास न्हाती हैं श्रीकृष्ण बोले जो तुम मन लगाय मेरे लिये अगहन न्हाती हो तो लाज औ कपट तज आप अपने चीरलो जब श्रीकृष्णचन्द्र ने ऐसे कहा तब गोपी आपसमें शोच बिचार कर कहने लगीं कि चलो जो मोहन कहते हैं सोई मानें क्योंकि ये हमारे तन मन की सब जानते हैं इनसे लाज क्या यों आपस में ठान कृष्ण की बातें मान हाथसे कुच देह दुराय सब युवती नीर से निकल शिर नवाय जब सन्मुख तीरजा खड़ी हुईं तब कृष्ण हंसके बोले कि अब तुम हाथजोड़ आगेआओ तो मैं बस्त्र टूंगा गोपी बोलीं ॥

चौ० काहेकपट करत नँदलाल । हमसबी भोरी ब्रजबाल ॥
परीठगोरी सुधिबधिगई । ऐसी तुमहरि लीलाठई ॥
मनसँवारिकैकरिहैंलाज । अबतुमकछूकरोब्रजराज ॥

इतनी बात कह जब गोपियों ने हाथ जोड़े तो श्रीकृष्णचन्द्र जी ने बस्त्र दे उनके पास आय कहा कि तुम अपने मनमें कुछ इस बातका बिलग मत मानो यह मैंने तुम्हें सीख दीहे क्योंकि जलमें बरुण देवता का बास हे इससे जो कोई नग्न हो जल में न्हाता है उसका सब धर्म बह जाताहे तुम्हारे मन की लगन देख मगन हो मैंने यह भेद तुमसे कहा अब अपने घर जाओ फिर कार्त्तिक महीने में आय मेरे साथ रास कीजियो ॥

श्री शुकदेव मुनि बोले कि महाराज इतना बचन सुन प्रसन्नहो सन्तोष कर गोपी तो अपने घरों को गईं और श्रीकृष्ण वंशी बटमें आय गोपगाय ग्वाल बाल सखाओं को संगले आगे चले तिस समय चारों ओर सघनबन

देख २ वृक्षोंकी बड़ाई करने लगे कि देखो ये संसार में आ अपने ऊपर कितना दुःख सह लोगों को सुख देतेहैं जगत में ऐसेही पर कारियों का आना सुफल है यों कह आगे बढ़ यमुना निकट जा पहुंचे ॥ इति श्रीलालकृते प्रेमसागरे चीर हरणो नाम चर्यविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

शुकदेव जी बोले कि जब कृष्ण यमुना के पास पहुंचे रूखनले लाठी टेक खड़े हुये तब सब ग्वाल बाल औ सखाओं ने आय हाथ जोड़ कहा कि महाराज हमें इस समय बड़ी भूख लगी है और जो कुछ छाक लाये थे सो खाई पर भूख न गई कृष्ण बोले देखो वह जो धुआं दिखाई देता है मथुरिये कंस के डरसे छिप के यज्ञ करते हैं उन के पासजा हमारा नामले दण्डवत कर हाथबांध खड़ेहो दूरसे भोजन ऐसेदीनहो मांगियो जैसे भिखारी आधीन हो मांगता हो ॥

यह बात सुन ग्वाल चले २ वहां गये जहां माथुर बैठे यज्ञ कर रहे थे जातेही उन्होंने प्रणाम कर निपट आधीनता से कर जोड़ के कहा महाराज आपको दण्डवत कर हमारे हाथ कृष्णचंद्रजी ने यह कहला भेजाहै कि हमको अति भूख लगीहै कुछ कृपाकर भोजन भेजदीजै इतनी बात ग्वालोंके मुखसेसुन मथुरिये क्रोधकर बोले तुमतो बड़ेमूर्खहो जोहमसे अभी यहबात कहते हो बिनहोम होचुके किसीको कुछ न देंगे सुनोजब यज्ञ कर लेंगे और कुछ बचेगा सो बांट देंगे फिर ग्वालों ने उनसे गिड़गिड़ाय के बहुतेरा कहा कि महाराज घर आये भूखे को भोजन करवाने से बड़ा पुण्य होताहै पर वे इनके कहने को कुछ ध्यानमें न लाये बरन इनकी ओर से मुंह फेर आपस में कहने लगे ॥

चौ० । बड़ेमूढ़पशुपालकनीच । मांगतभात होमकेबीच ॥

तब ये वहां से निराश हो अछताय पछताय श्रीकृष्ण के पास आय बोले महाराज भीख मांग मान महत गवांया तौभी खाने को कुछ हाथ न आया अब क्या करें श्रीकृष्ण ने कहा कि अब तुम तिन की स्त्रियों से जा मांगो वे बड़ी दयावन्त धर्म्मात्मा हैं उनकी भक्ति देखियो वे तुम्हें देखतेही आदर मान से भोजन देंगी यों सुन फिर वहां गये जहां वे बैठी रसोई करती थीं जातेही उनसे कहा कि बनमें श्रीकृष्णको धेनुचराते क्षुधा भईहै सो हमें तुम्हारे पास पठायाहै कुछ खाने को होतो दो इतना बचन ग्वालों के मुखसे सुनतेही वे सब प्रसन्न हो कंचन के थालोंमें षट्-रस भोजन भर ले २ उठ धाईं औ किसीको रोकी न रुकीं एक मथुरानी

जो पतिमे जो न जानेदिया तो वह ध्यान कर देह छोड़ सबसे पहिले ऐसे जा मिली कि जैसे जल जलमें जामिले औ पीछेसे सब चली २ वहां आई जहां कृष्णचंद्र ग्वाल बाल समेत वृक्षकी छांहमें सखाके कांधे पर हाथ दिये त्रिभङ्गी छबि किये कमलका फूल करलिये खड़े थे आतेही थाल आगे धर दंडवत कर हरि मुख देख २ आपसमें कहने लगीं कि सखी नन्द किशोर यहहैं जिनका नाम सुनरकर ध्यान धरतीथीं अब चंद्रमुख देख लोचन सुफल कीजे और जीवनका फल लीजे ऐसेवत-राय हाथ जोड़ बिनती कर कृष्णसे कहने लगीं कि कृपानाथ आपकी कृपा बिना तुम्हारा दर्शन कब किसीको होताहै आज धन्यभाग हमारे जो दर्शन पाया औ जन्म २ का पाप गवांया॥

चौ०मरखबिप्रछपणअभिमानी।श्रीमदलोममोहमतिसानी
ईश्वरकोमानुषकरमानै।माया अन्धकहा पहिचानै॥
जपतपयज्ञजासुहितकीजै। ताकोकहानभोजनदीजै॥

महाराज वही धन्यहे धन तन लाज जो आवे तुम्हारे काज औ सोई जप तप ज्ञान जिसमें आवे तुम्हारा नाम इतनी बात सुन श्रीकृष्णचंद्र उनकी क्षेम कुशल पूंछ कहनेलगे कि॥

चौ०। मततुममुझकोकरौप्रणाम। मैंहूंनन्दमहरसुतश्याम॥

जो ब्राह्मण की स्त्री से आपको पुजावते हैं सो क्या संसार में कुछ बड़ाई पातेहैं तुमने हमें भूखे जान दयाकर बनमें आन सुधि ली अब हम यहां तुम्हारी क्या पहुनाई करें॥

चौ०वृन्दाबनघरदूरहमारा।किसबिधिआदरकरैंतुम्हारा

जो वहां होते तो कुछ फूल फल ला आगे धरते तुम हमारे कारण दुःख पाय जंगलमें आई और यहां हमसे तुम्हारी टहल कुछ न बनआई इस बात का पछतावही रहा ऐसे शिष्टाचार कर फिर बोले तुम्हें आयेबड़ी बेर भई अब घरको सिधारिये क्योंकि ब्राह्मण तुम्हारे तुम्हारी बाट देखते होंगे इस लिये कि स्त्री बिन यज्ञ सुफल नहीं यह बचन श्रीकृष्ण से सुन वे हाथ जोड़ बोलीं महाराज हमने आपके चरण कमलसे नेहकर कुटुम्ब की माया सब छोड़ी क्योंकि जिनका कहा न मान हम उठधाईं तिनके यहां अब कैसे जांय जो वे घरमें न आने दें तो फिर कहां बसें इससे आपकी शरणमें रहें सो भला औ नाथ एक नारि हमारे साथस

तुम्हारे दर्शन की अभिलाषा किये आवती थी उसके पतिने रोक रक्खा तब उस स्त्रीने अकुलाकर अपना जीव दिया इस बातको सुनतेही हंस कर कृष्णचंद्र ने उसे दिखाया जो देह छोड़ आई थी कहा कि सुनो जो हरिसे हित करता है तिसका बिनाश कभी नहीं होता ये तुमसे पहिले आ मिली हैं इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज उसको देखतेही तो एकबार सब अचंभे में रहीं पीछे ज्ञान हुआ तब हरि गुण गानेलगीं इस बीच श्रीकृष्णचंद्र ने भोजन कर उनसे कहा कि अब स्थानको प्रस्थान कीजे तुम्हारे प्रति कुछ न कहेंगे जब श्रीकृष्णने उन्हें ऐसे बुझाय के कहा तब वे बिदाहो दंडवत कर अपने घर गईं औ उनके स्वामी शोच बिचार के पछताय २ कह रहे थे कि हमने कथा पुराण में सुनाहै जो किसी समय नन्दयशोदा ने पुत्र के निमित्त बड़ातप कियाथा तहां भगवान ने आ उन्हें यह बर दिया कि हम यदुकुल में अवतार ले तुम्हारे यहां जायंगे वेई जन्म ले आयेहैं उन्होंने ग्वालबालों के हाथ भोजन मगवाय भेजा था हमने यह क्या किया जो आदि पुरुष ने मांगा औ भोजन न दिया॥

चौ०। यज्ञधर्म्मजाकारणठये । तिनकेसन्मुख आजनभये॥
आदिपुरुषहममानुषजान्यौं। नहींबचनग्वालनकोमान्यौं
हममरखपापीअभिमानी।कीन्हीदयानहरिगतिजानी॥

धिक्कारहै हमारी मति और इसयज्ञ करने को जो भगवानको पहचान सेवा न करी हमसे नारीही भलीं कि जिन्होंने जप तप यज्ञ बिन किये साहस कर जा श्रीकृष्णके दर्शनकिये औ अपने हाथोंसे उन्हें भोजनदिया ऐसे पछताय मथुरियों ने अपनी स्त्रियों के सन्मुख हाथ जोड़ कहा कि धन्य भाग तुम्हारे जो हरिका दर्शन कर आईं तुम्हाराही जीवन सुफलहै

इति श्रीलालकृते प्रेमसागरे द्विजपत्नी याचनोनाम चतुर्विंशोऽध्यायः॥ २४

श्री शुकदेवजी बोले कि हेराजा जैसे श्रीकृष्णचंद्र ने गिरि गोबर्द्धन उठाया औ इंद्रका गर्भ हरा अब सोई कथा कहताहूं तुम चित्त दे सुनो कि सब ब्रजबासी बरसवें दिन कार्त्तिक बदी चौदश को स्नान धोयकेशर चन्दन से चौक पुराय भांति २ की मिठाई औ पकवान धर धूप दीपकर इंद्रकी पूजा किया करें यह रीति उनके यहां परम्परा से चली आतीथी जिस समय वहो दिवस आया तब नन्दजी ने बहुत सी खानेकी सामा

बनवाई औ सब ब्रजबासियों के भी घरपर सामग्री भोजन की होगही थी तहां श्रीकृष्ण ने आ मा से पूछा कि मा जी आज घर २ में पकवान मिठाई जो हो रही है सो क्याहै इसका भेद मुझे समुझाकर कहो जो मेरे मनकी दुबिधा जाय यशोदा बोलीं कि बेटा इससमय मुझे बातकहने का अवकाश नहीं तुम अपने पितासे जा पूछो वे बुझायकर कहेंगे यह सुन नन्द उपनन्द के पास आय श्रीकृष्णने कहा कि पिता आज किस देवता के पूजने की ऐसी धूमधाम है कि जिनके लिये घर २ पकवान मिठाई हो रहीहै वे कैसे भक्ति मुक्ति बरके दाताहैं उनका नाम और गुण कहो जो मेरे मनका सन्देह जाय॥

नन्दमहर बोले कि पुत्र यह भेद तूने अब तक नहीं समझा कि मेघों के पति जोहैं सुरपति तिनकी पूजाहै जिनकी कृपा से संसार में वृद्धि सिद्धि मिलती है औ तृण जल अन्न होता है बन उपबन फूलते फलते हैं उनसे सब जीव जन्तु पशु पक्षी आनन्द में रहते हैं यह इंद्र पूजाकी रीति हमारे यहां पुरुषाओं के आगे से चली आतीहै कुछ आजही नई नहीं निकली नन्दजी से इतनी बात सुन श्रीकृष्णचंद्र बोले हे पिता जो हमारे बड़ोंने जाने अनजाने इंद्रकी पूजा की तो की पर अब तुम जान बूझकर धर्म्मका पन्थ छोड़ ऊबट बाट क्यों चलते हो इंद्रके माननेसे कुछनहीं होता क्यों कि वह भक्ति मुक्तिका दाता नहीं औ उससे वृद्धि सिद्धि किसने पाईहै यह तुमहीं कहो उसने किसे बर दिया है॥

हां एक बात यह कि तप यज्ञ करनेसे देवताओं ने अपना राजा बनाय इंद्रासन दे रक्खा है इससे कुछ परमेश्वर नहीं होसक्ता सुनोजब असुरोंसे बार२ हारताहै तब भागके कहींजाछिपकर अपने दिन काटताहै ऐसे कायरको क्यों मानोंअपनाधर्म किसलिये नहीं पहिचानो इंद्रका किया कुछ नहींहोसक्ता जो कर्ममें लिखाहै सोई होताहै सुख सम्पत्ति दाता भाई बंधु ये भी सब अपने धर्म कर्मसे मिलतेहैं औ आठ मास जो सूर्य्य जलसो-खताहै सोई चार महीने बर्षताहै तिससे पृथ्वीमें तृण जल अन्न होताहै औ ब्रह्माने जो चारो वर्ण बनाये हैं ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र तिन के पीछे भी एक २ कर्म लगा दियाहै कि ब्राह्मण तो वेद विद्या पढ़े क्षत्री सबकी रक्षाकरें वैश्य खेती बाणिज औ शूद्र इन तीनोंकी सेवामें रहें॥

पिता हम वैश्य हैं गायें बढ़ीं इससे गोकुल हुआ तिसी से नाम गोप पड़ गया हमारा यही कर्महै कि खेती बाणिज करें और गौ ब्राह्मण की

सेवा में रहें वेद की आज्ञा है कि अपनी कुल रीति न छोड़िये जो लोग अपना धर्म तज औरों का धर्म पालते हैं सो ऐसे हैं जैसे कुल बधू हो पर पुरुषसे प्रीति करै इस से अब इंद्रकी पूजा छोड़ दीजे औ बन पर्बत की पूजा कीजे क्योंकि हम बन बासी हैं हमारे राजा वेई हैं जिनके राजमें हम सुख से रहते हैं तिन्हें छोड़ और को पूजना हमें उचित नहीं इससे अब सब पकवान मिठाई अन्न ले चलो और गोवर्द्धन की पूजा करो॥

इतनी बात सुनतेही नन्द उपनन्द उठकर वहां गये जहां बड़े २ गोप अथाई पर बैठे थे इन्होंने जातेही सब श्रीकृष्ण की कही बातेंउन्हें सुनाई वे सुनतेही बोले कि कृष्ण सच कहता है तुम बालक जान उस की बात मत टालो भला तुमहीं बिचारो कि इंद्र कौन है और हमकिस लिये उसे मानते हैं जो पालता है उसकी तो पूजाही भुलाई॥

चौ० हमैंकहासुरपतिसोंकाज। पजेंबनसरितागिरिराज॥

ऐसे कह फिर सब गोपोंने कहा॥

दो० भलो मतो कान्हर कियो तजिये सिगरे देव॥
गोबर्द्धन पर्बत बड़ो ताकी कीजै सेव॥

यह बचन सुनतेही नन्दजीने प्रसन्न हो गांवमें ढंढोरा फिरवाय दिया कि कल हम सारे ब्रजबासी चलकर गोबर्द्धन की पूजा करेंगे जिस जिस के घरमें इन्द्रकी पूजाके लिये पकवान मिठाई बनीहै सोसब लेले भोरहीं गोबर्द्धन पै जाइयो यह बात सुन सकलब्रजबासी दूसरे दिन भोरके तड़केहीं उठ स्नान ध्यान कर सब सामग्री कानों परातों थालों डालों हण्डों चरुओं में भर गाड़ों बहिंगियों पर खवायर कर गोबर्द्धन को चले तिसी समय नन्द उपनन्द भी कुटुम्ब समेत सामाले सबके साथ होलिये और बाजे गाजेसे चलेचले सबमिल मिल गोबर्द्धन पहुंचे॥

वहां जाय पर्बतके चारों ओर झाड़ बुहार जल छिड़क घेवर बावर जलेबी लड्डू खुरमें इमृती फेने पेड़े बरफी खाजे मूंगे मठरी सीरा पूरी कचौरी आदि पकवान और भांतिभांति के भोजन ब्यंजन संघाने चुनचुन रखदिये इतने कि जिनसे पर्बत छिपगया और ऊपर फूलोंकी माला पहराय बरण बरणके पाटम्बर तान दिये॥

तिस समयकी शोभा बरनी नहीं जाती गिरि ऐसा सुहावन लगताथा जैसे किसीने गहने कपड़े पहराय नखसिख से सिंगार होय और नन्दजी

ने पुरोहित बुलाय सब ग्वालबालों को साथले रोली अक्षत पुष्प चढ़ाय धूपदीप नैवेद्य कर पान सुपारी दक्षिणा धर वेदकी बिधिसे पूजा की तब श्रीकृष्णने कहा कि अब तुम शुद्धमन से गिरिराज का ध्यान करो तो वे आय दर्शन दे भोजन करें ॥

श्रीकृष्ण से यों सुनतेही नन्द यशोदा समेत सब गोपी गोप कर जोड़ नयन मूंद ध्यान लगाय खड़े हुये तिस काल नन्दलाल उधर तो अति मोटी भारी दूसरी देह धर बड़े २ हाथ पांव कर कमल नयन चन्द्रमुख मुकुटधरे बनमालगरे पीतबसन औ रत्न जटित आभूषण पहिरे मुंहपसारे चुपचाप पर्वत के बीचसे निकले और इधर आपही अपने दूसरे रूप को देख सबसे पुकारके कहा देखो गिरिराज ने प्रकट होय दर्शन दिया जिसकी पूजा तुमने जी लगाय करी है इतना बचन सुनाय श्रीकृष्णचंद्र जीने गिरिराज को दण्डवत् की उनकी देखा देखी सब गोपी गोप प्रणाम कर आपसमें कहने लगे कि इसभांति इंद्रने कब दर्शन दियाथा हमवृथा उसकी पूजा किया किये और क्या जानि ये पुरुषाओं ने ऐसे प्रत्यक्षदेवकी छोड़ क्यों इंद्रको माना था यहबात समझी नहीं जाती ॥

योंसब बतराय रहे थे कि श्रीकृष्ण बोले अबदेखते क्याहो जो भोजन लायेहो सो खिलाओ इतना बचन सुनतेही गोपी गोप षट्रस भोजनथाल परातों में भर २ उठाय २ देने और गोबर्द्धन नाथ हाथ बढ़ाय २ ले २ भोजन करने लगे निदान जितनी सामग्री नन्द समेत सब ब्रजबासी ले गयेथे सो खाई तबवह मूर्ति पर्वतमें समाई इसभांति अद्भुत लीलाकर श्रीकृष्णचंद्र सबको साथ ले पर्वत की परिक्रमा दे दूसरे दिन गोबर्द्धन से खेलते बृन्दाबन आये तिस कालघर २ आनन्द मंगल बधाये होने लगे और ग्वालबाल सब गाय बछड़ों को रंगरंग उनके गले में गंडे घंटालियां घुंघरू बांध २ न्यारेही कुतूहल कर रहे थे ॥ इतिश्रीलालकृते प्रेमसागरे गोबर्द्धन पूजनोनाम पञ्चविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेवमुनि बोले ॥

दो० सुरपति की पूजा तजी । कर पर्वत की सेव ।
तबहिं इन्द्र मनकोपिके । सबै बुलाये देव ॥

जब सारे देवता इन्द्रके पास गये तब वह उनसे पूछने लगा कितुम मुझे समझा कर कहो कल ब्रज में पूजा किसकी थी इस बीच नारदजी

आय पहुंचे तो इंद्रसे कहने लगे कि सुनो महाराज तुम्हें सबकोई मानताहै पर एक ब्रजबासी नहीं मानते क्योंकि नन्द के एक बेटा हुआ है तिसका कहा सब करते हैं उन्होंने तुम्हारी पूजा मेट कल सबसे पर्बत पुजवाया इतनी बात के सुनतेही इंद्र क्रोधकर बोला कि ब्रजबासियों के धन बढ़ाहै इसीसे उन्हें अति गर्बहुआ है ॥

चौ० जपतपयज्ञतज्योदूनमेरो।काल दरिद्रबुलायोनेरो॥
मानुष कृष्णदेवकै मानै। ताकी बातें सांची जानै॥
वहबालकमूरखअज्ञान। बहुबादीराखैअभिमान॥
अबउनकोगबैमैंहरिहौं।पशुखोऊंलक्ष्मीबिनकरिहौं॥

ऐसे बक झक खिजलाय कर सुरपति ने मेघपतिको बुलाय भेजा वह सुनतेही डरता कांपता हाथजोड़ सम्मुख आखड़हुआ उसे देखतेही इंद्र तेह करबोला कि तुम अभी अपना सब दल साथ लेजाओ और गोबर्द्धन पर्बत समेत ब्रजमंडल को बर्षाय बहाओ ऐसा कि कहीं गिरिका चिन्ह और ब्रजबासियों का नाम नरहे ॥

इतनी आज्ञा पाय मेघपति दण्डवत् कर राजाइंद्र से बिदा हुआ और उसने अपने स्थान पर आय बड़े मेघोंको बुलाय के कहा सुनो महाराज की आज्ञाहै कि तुम अभी जाय ब्रजमण्डल को बरषके बहादो यह बचन सुन सबमेघ अपने २ दल बादल ले २ मेघपति के साथ होलिये उसने आतेही ब्रजमण्डल को घेर लिया और गर्ज गर्ज बड़ी बड़ी बूंदोंसे लगा मूशलाधार जल बर्षावने और उंगली से गिरिको बतावने ॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी ने राजा परिक्षित से कहा कि महाराज जब ऐसे चहुंओर से घनघोर घटा अखण्ड जल बर्षाने लगीं तब नन्द यशोदा समेत सबगोपी ग्वालबाल भय खाय भागते थर २ कांपते श्रीकृष्ण के पास जाय पुकारे कि हेकृष्ण इस महा प्रलयके जलसे कैसे बचेंगे तबतो तुमने इंद्रकी पूजा मेट पर्बत पुजवाया अब बेग उसको बुलाइये जो आय रक्षाकरे नहींतो क्षणभर में नगर समेत सब बूड़े मरतेहैं इतनी बात सुन और सबको भयातुर देख कृष्णचंद्र बोले कि तुम अपने जीमें किसी बातकी चिन्ता मतकरो गिरिराज अभी आय तुम्हारी रक्षा करतेहैं यों कहि गोबर्द्धनको तेजसे तपाय अग्नि सम किया और बायें हाथकी छुंगली पर उठा लिया उसकाल सब ब्रजबासी अपने ढोटों समेत आ

उसके नीचे खड़ेहुए और कृष्णचंद्र को देख देख अचरज कर आपस में कहने लगे ॥

चौ० कैकोऽआदिपुरुषअवतारी। देवनहूंकोदेवमुरारी॥
मोहनमानुषकैसोभाई। अंगुरीपरक्योंगिरिठहराई॥

इतनी कथा कह शुकदेव मुनिराजापरीक्षित से कहने लगे कि उधर तो मेघपति अपना दलबल लिये क्रोधकर मुशलाधार जलबरसाताथा और इधर पर्वत पै गिरि छनाक तवेकी बूंद होजाता था यह समाचार सुन इंद्रभी कोप कर आप चढ़ आया और लगातार उसी भांति सात दिन बर्षा पर ब्रजमें हरिप्रतापसे एक बूंदभी न पड़ी जबसब जल निबड़ा तब मेघोंनेआ हाथजोड़ कहाकि हेनाथ जितना महाप्रलय काजलथा सबका सब होचुका अब क्या करें यों सुन इंद्रने अपने ज्ञान ध्यानसे बिचारा कि आदिपुरुष ने अवतार लिया नहीं तो किस में इतनी सामर्थ्य थी जो गिरि धारण कर ब्रजकी रक्षा करता ऐसे शोच समझ पछता पछता मेघों समेत इंद्र अपने स्थान को गया और बादल उघड़ २ प्रकाश हुआ तब सब ब्रज-बासियों ने प्रसन्न हो कृष्णचंद्र से कहा महाराज अब गिरि उतार धरिये मेघ जाता रहा यह बचन सुनतेही कृष्णचंद्र ने पर्बत जहां का तहां रख दिया ॥ इति श्रीलालकृते प्रेमसागरे ब्रजरक्षणो नाम षट्त्रिंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥



शुकदेवजी बोले कि जद हरिने गिरि करसे उतार धरा तिस समय

सब बड़े २ गोप तो इस अद्भुत चरित्र देख योंकह रहे थे कि जिस की शक्तिने इस महाप्रलय से आज ब्रज मंडल बचाया तिसे हम नन्द-सुत कैसे कहेंगे हां किसी समय नन्द यशोदा ने महातप किया था इसी से भगवान् ने आ इनके घर जन्म लिया है और ग्वालबाल आय २ कृष्णके गले मिल२ पूछने लगे कि भैया तूने इस कोमल कमल से हाथपर कैसे ऐसे भारी पर्ब्बतका बोझ संभाला और नन्द यशोदा करुणा कर पुत्रको हृदय लगाय हाथ दाब अंगुली चटकाय कहने लगे कि सात दिन गिरि करपर रक्खा हाथ दुखता होगा और गोपी यशोदा के पास पिछली सब कृष्ण लीला आय कहने लगीं ॥

चौ० यहजोबालकपूततिहारो। चिरञ्जीवब्रजकोरखवारो
दानवदैत्यअसुरसंहारे। कहांकहांब्रज जनन उबारे ॥
जैसीकहीगर्गऋषिराई। सोइसोइबातहोतिहैआई ॥

इतिश्रीलालकृतेप्रेमसागरेसप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥



शुकदेव मुनि बोले कि महाराज भोर होते ही सब गाय और ग्वाल बालोंका संगकर अपनी २ छाकले कृष्ण बलराम बेणु बजाते और मधुर २

पुरसे गाते जो धेनु चरावन बनको चले तो राजाइंद्र सकल देवताओं को साथ लिये कामधेनु को आगे किये ऐरावत हाथी पर चढ़ा सुरलोक से चला २ वृन्दाबन में आय बनकी बाट रोक खड़ा हुआ जद कृष्णचंद्र उसे दूरसे दिखाई दिये तद गजसे उतर कर नगे पाओं गलेमें कंपड़ा डाले थर २ कांपता आ श्रीकृष्णके चरणोंपर गिरा और पछताय पछताय रोरो कहने लगा कि हेब्रजनाथ मुझपर दया करो ॥

चौ० मैंअभिमानगर्बअतिकिया। राजसतामसमेंमनदिया॥
धनमदकरसम्पतिसुखमाना। भेदनकछूतुम्हाराजाना
तुमपरमेश्वर सबके ईश। और दूसरो कोजगदीश॥
ब्रह्मारुद्र आदि वरदाई। तुम्हरीदईसम्पदापाई॥
जगतपितातुमनिगमनिवासीसेवततुमकमलाभइदासी
जगके हेत लेत अवतार। तबतब हरत भूमिको भार॥
दरकरोसबचकहमारी। अभिमानी मूरख हौंभारी॥

जबऐसे दीनहो स्तुति करी तब कृष्णचंद्र दयाल हो बोले कि अबतो तू कामधेनु के साथ आया इससे तेरा अपराध क्षमा किया पर फिर गर्व मत कीजो क्योंकि गर्व करने से ज्ञान जाता है और कुमति बढ़तीहै उसी से अपमान होता है ॥

इतनी बात कृष्णके मुखसे सुनतेही इन्द्रने उठके वेदकी बिधिसे पूजा की और गोबिन्द नामधर चरणामृत ले परिक्रमा करी तिस समय गन्धर्ब भांति २ के बाजे बजा कृष्णका यश गानेलगे और देवता अपने बिमानों में बैठे आकाश से फूल बर्षावने उसकाल ऐसा सामा हुआ कि मानोफेर कृष्णने जन्मलिया जब पूजासे निश्चिन्त हो इंद्र हाथजोड़ सम्मुख खड़ा हुआ तब कृष्णने आज्ञा दी कि अबतुम कामधेनु समेत अपने पुरजाओ आज्ञा पातेही कामधेनु औइंद्र बिदा होय दण्डवत्कर इंद्र लोकको गये और कृष्णचंद्र गौ चराय सांझहुए सब ग्वाल बालोंको लिये वृन्दाबनआये उन्होंने अपने २ घर जायजाय कहा आज हमने हरि प्रताप से इंद्र का दर्शन बनमें किया ॥

इतनी कथा सुनाय शुकदेवजीने राजा परीक्षित से कहा राजा यह जो गोबिन्द कथा मैंने तुम्हें सुनाई इसके सुनने औसुनानेसे संसारमें धर्म

अर्थ काम मोक्ष चारों पदार्थ मिलते हैं ॥ इतिश्री लालकृते प्रेमसागरे इंद्र स्तुति करणोनाम अष्टविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥

शुकदेवजी बोले कि महाराज एकादिन नन्दजीने संयमकर एकादशी व्रतकिया दिनतो स्नान ध्यान भजन जप पूजामें काटा और रात्रि जागरण में बिताई जब छःघड़ी रातरही औ द्वादशी भईतब उठके देह शुद्धकर भोर हुआ जान धोती अगोछा झारीले यमुना न्हान चले तिनके पीछे कई एक ग्वालभी होलिये तीरपर जाय प्रणाम कर कपड़े उतार नन्दजी जो नीरमें पैठे तो वरुणके सेवक जो जलकी चौकी देतेथे किकोई रात को न्हाने न पावे उन्होंने जा वरुणसे कहा कि महाराज कोई इस समय यमुना में न्हाय रहाहै हमें क्या आज्ञा होती है वरुण बोला उसे अभी पकड़ लाओ आज्ञा पातेही सेवक फिर वहां आये जहां नन्दजी स्नानकर जलमें खड़े जप करतेथे आतेही अचानक नागफांस डाल नन्दजी को वरुण के पास लेगये तब नन्दजीके साथ जो ग्वाल गये थे उन्हों ने आय कृष्णसे कहाकि महाराज नन्दराय जीको वरुणकेगण यमुना तीरसे पकड़ वरुण लोकको ले गये इतनी बातके सुनतेही श्री गोबिन्द क्रोधकर उठधाये औ पल भरमें वरुण के पास जा पहुंचे इन्हें देखतेही वह उठखड़ा हुआ और हाथ जोड़ बिनती कर बोला ॥

चौ० सुफलजन्महैआजहमारोपायोयदुपतिदरशतुम्हारो
कीजै दोष दूर सब मेरे । नन्द पिता इसकारण घेरे ॥
तुमकोसबकेपिताबखाने । तुम्हरेपितानहींहमजाने ॥

रात को नहाते देख अनजाने गण पकड़ लाये भला इसी मिस मैंने दर्शन आपका पाया अब दयाकीजे मेरादोष चित्तमें नलीजेऐसे अति दीनताकर बहुतसी भेटलाय नन्द औ कृष्णके आगेधर चट वरुण हाथजोड़ शिरनाय सम्मुख खड़ा हुआ तद कृष्ण भेटले पिताको साथ कर वहां से चल वृन्दाबन आये इनको देखतेही सब व्रजबासी आय मिले तिस समय बड़े २ गोपोंने नन्दरायसे पूछा कि तुम्हें वरुण के सेवक कहां लेगये थे नन्दजी बोले सुनो जोवे यहांसे पकड़ मुझे वरुणके पास लेगये त्योंही यहांसे कृष्ण पहुंचे इन्हें देखतेही वह सिंहासन से उतर पावों पर गिर बिनतीकर कहने लगा नाथ मेरा अपराध क्षमा कीजे मुझसे अनजाने यह दोष हुआ सो चित्तमें नलीजे इतनी बात नन्दजीके मुखसे सुनतेही गोप

आपसमें कहने लगे कि भाई हमने तो यह तभी जानाथा जब कृष्णचंद्र ने गोवर्द्धन धारण कर ब्रजकी रक्षा करी कि नन्दमहर के घरमें आदि पुरुष ने आ अवतार लिया है ॥

ऐसे आपसमें बतराय फिरसब गोपोंने हाथ जोड़ कृष्ण से कहा कि महाराज आपने हमें बहुत दिन भरमाया पर अबसब तुम्हारा भेदपाया तुम्हीं जगत्के कर्ता दुख हरता हो त्रिलोकी नाथ दया कर अब हमें वैकुण्ठ दिखाइये इतना वचन सुन कृष्णजीने क्षणभर में वैकुण्ठ रचउन्हें ब्रजही में दिखाया देखतेही ब्रजबासियों को ज्ञानहुआ तो करजोड़ शिर झुकायके बोले हेनाथ तुम्हारी महिमा अपरम्पार है हम नहीं कह सक्ते पर आपकी कृपासे आज हमने यह जाना कि तुम नारायण हो भूमिका भार उतारने को संसारमें जन्म ले आये हो शुकदेव जी बोले कि महाराज जब ब्रजबासियों ने इतनी बात कही तभी कृष्णचंद्र ने सबको मोहित कर जो बैकुण्ठ की रचना रचीथी सो उठायली औ अपनी माया फैलादी तो सब गोपोंने अपना सा जान और नन्दजीने भी मायाके बश हो कृष्णको अपना पुचही कर माना ॥ इति श्रीलालकृते प्रेमसागरे बरुणालोक गमन वैकुंठ चरित्रो नामैकोनत्रिंशोऽध्यायः २९ ॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी बोले ॥

दो० जैसे हरि गोपिन सहित कीन्ह्यो रास बिलास।
अब पंचा ध्यायी कहौं जैसो बुद्धि प्रकाश ॥

जब श्रीकृष्णजीने चीरहरे थे तब गोपियों को यह बचन दियाथा कि हम कार्त्तिक महीने में तुम्हारे साथ रास करेंगे तभी से गोपी रासकी आश किये मनमें उदास रहें औ नित उठ कार्त्तिक मासही को मनाया करें देवी उनके मनाते २ सुखदायी शरद ऋतु आई ॥

चौ० लाग्योजबतेकार्तिकमास। घाम शीतबर्षाको नाश॥
निर्मल जल सरवरभर रहे। फूले कंज होंय डहडहे॥
कुमुदचकोरकन्तकामिनी।फूलेहिंदेखचन्द्रयामिनी॥
चकईमलिनकमलकुम्हिलानेजेनिजमिचभानुकोमाने

ऐसेकह श्रीशुकदेवमुनि फिर बोले कि पृथ्वीनाथ एक दिन श्रीकृष्ण चंद्र कार्त्तिक पूनेकी रातको घरसे निकल बाहर आये देखें तो निर्मल आकाश में तारे छिटक रहेहैं चांदनी दशों दिशा में फैल रहीहै शीतल

सुगन्ध सहित मन्दगति पवन बहरही है और सघन बनकी छबि अधिक हो शोभा देरही है ऐसा समय देखतेही उनके मनमें आया कि हमने गोपियों को यह बचन दियाहै जो शरद ऋतुमें तुम्हारे साथ रास करेंगे सो पूरा किया चाहिये यह बिचार बनमें जाय कृष्णने बांसुरी बजाई बंशी की धुनि सुनि सब ब्रजयुवती बिरहकी मारी कामातुर होय अति घबराई निदान कुटुम्ब की माया छोड़ कुल कान पटक गृह काज तज हड़ बड़ाय उलटा पुलटा शृङ्गार कर उठ धाई एक गोपी जो अपने पतिके पास उठ चली तो उसके पति ने बाट में जा रोका और फेर कर घर ले आया जाने न दियो तब वह हरि का ध्यान कर देह छोड़ सबसे पहले जा मिली उसके चितकी प्रीति देख कृष्णचंद्र ने तुरन्त मुक्ति गति दी॥

इतनी कथा सुन राजा परीक्षित ने शुकदेव जी से कहा कि कृपानाथ गोपियोंने कृष्ण जीको ईश्वर जानके तो नहीं माना केवल बिषय की बासना कर भजा वे कैसे मुक्त हुईं सो मुझे समझा के कहो जो मेरे मनका सन्देह जाय श्रीशुकदेव मुनि बोले धर्मावतार जो जन कृष्णचंद्रकी महिमा अनजाने भी गुण गातेहैं सोभी निस्सन्देह भक्ति मुक्ति पातेहैं जैसे कोईबिन जाने अमृत पियेगा वहभी अमर होजायगा व जानकर पियेगा उसे भी वही गुणहोगा यह सब जानते हैं कि पदार्थ का गुण औ फल बिन हुये रहता नहीं ऐसेही हरि भजन का प्रताप है कोई किसी भावसे भजेमुक्त होजायगा कहाहै॥

दो०। जप माला छापा तिलक। सरै न एकौ काम।
मन काचे नाचे वृथा। सांचे राचे राम॥

औ सुनो जिनने जैसे भावसे श्रीकृष्ण को मानके मुक्तिपाई सो कहता हूं कि नन्द यशोदा ने तो पुत्र कर भजा गोपियों ने पति जान कर समझा कंसने भय कर भजा ग्वाल बालोंने मित्र कर जपा पांडवों ने प्रीतम कर जाना शिशुपाल ने शत्रुकर माना यदुबंशियों ने अपना कर ठाना और योगी यती मुनियों ने ईश्वर कर ध्याया पर अन्तमें मुक्ति पदार्थ सबही ने पाया जो एक गोपी प्रभुका ध्यानकर तरी तो क्या अचरज हुआ॥

यह सुन राजा परीक्षित ने श्रीशुकदेव मुनि से कहा कि कृपानाथ मेरे मनका सन्देह गया अब कृपाकर आगे कथा कहिये श्रीशुकदेवजी

बोले कि महाराज जिस काल सब गोपियां अपने अपने झुंडलिये श्रीकृष्ण चंद्र जगत् उजागर रूपसागर से धायकर जाय मिलीं कि जैसे चौमासेकी नदियां बहकर समुद्रको जाय मिलें उस समय के बनावकी शोभा बिहारी लालकी कुछ बर्णी नहीं जाती कि वह शृङ्गार करे नटवर भेष धरे ऐसे मन भावने सुन्दर सुहावने लगते थे कि ब्रजयुवती हरि छबि देखतेही छकरहीं तब मोहन उनकी क्षेम कुशल पूछ रूखेहो बोले कहो रातसमय भूत प्रेतकी बिरियां भयावनी बाट काट उलटे पुलटे बस्त्र आभूषण पहने अति घबराई कुटुम्बकी माया तज इस महा बनमें तुम कैसे आईं ऐसा साहस करना नारीको उचित नहीं स्त्रीको कहाहै कि कायर कुमति कूढ़ कपटी कुरूप कोढ़ी काना अन्धा लूला लंगड़ा दरिद्री कैसाही पतिहो पर इसे उसकी सेवा करनी योग्यहै इसी में उसका कल्याण है और जगत्में बड़ाई है कुलवन्ती पतिव्रता का धर्म्महै कि पतिको क्षणभर न छोड़े और जो स्त्री अपने पुरुषको छोड़ पर पुरुषके पास जातीहै सोजन्म जन्म नरक पातीहै ऐसे कह फिर बोले कि सुनो तुमने आय सघन बन निर्मल चांदनी औ यमुना तीर की शोभा देखी अब घर जाय मन लगाय कन्तकी सेवा करो इसीमें तुम्हारा सब भांति भलाहै इतना बचन श्रीकृष्णके मुख से सुनतेही सबगोपी एकबारतो अचेतहो अपार शोच सागरमें पड़ींपीछे ॥

चौ० । नीचे चितैउसासें लईं । पदनखते भू खोदतभईं ॥
योंद्दगसोंछूटीजलधारा । मानोटूटे मोतीहारा ॥

निदान दुःख से घबराय रो २ कहने लगीं कि अहो कृष्ण तुम बड़े ठग हो पहले तो बंशी बजायअचानक हमारा ज्ञान ध्यान मन धन हरलिया अब निर्दय होय कपट कर कर्कश बचन कह प्राण लिया चाहते हो यों सुनाय पुनि बोलीं ॥

दो० । लोगकुटुंबधरपतितजे तजीलोक कीलाज ॥
हैं अनाथ कोऊ नहीं राखिशरणब्रजराज ॥

और जो जन तुहारे चरणों में रहते हैं सो धन तन लाज बड़ाई नहीं चाहते उन के तो तुम्ही हो जन्म २ के कन्त हे प्राणरूप भगवन्त ॥

चौ० करिहैं कहाजायहमगेह । अरुझे प्राण तुम्हारे नेह ॥

इतनी बात के सुनतेही श्रीकृष्णचंद्र ने मुसकराय सब गोपियों को निकट बुलाय कहा जो तुम राची हो इस रंग तो खेलो रास हमारे संग

यह बचन सुन दुःख तज गोपी प्रसन्नतासे चारों ओर घिरआईं औ हरि मुख निरख २ लोचन सुफल करने लगीं ॥

दो० ठाढ़े बीचजुश्याम घन । दुहिछबि कामिनिकेलि ॥
मनऊं नील गिरितरे तें । उलही कंचन बेलि ॥

और श्रीकृष्णजी ने अपनी माया को आज्ञा की कि हम रास करेंगे उस के लिये तू एक अच्छा स्थान रच और यहां खड़ी रह जो २ जिस२ बस्तु की आज्ञा करे सो २ ला दीजो महाराज उसने सुनतेही यमुना तीर जाय एक कंचन का मंडलाकार बड़ा चौतरा बनाय मोती हीरेजड़ उसके चारों ओर सपल्लव केले के खंभ लगा तिनमें बन्दनवार भांति २ के फूलों की माला बांध आ श्रीकृष्णचंद्र से कहा ये सुनतेही प्रसन्न हो सब ब्रज युवतियों को साथ ले यमुना तीर को चले वहां जाय देखते। चंद्रमंडलसे रासमंडल के चौतरे की चमक चौगुनी शोभा देरही है उस के चारों ओर रेती चांदिनीसी फैल रही है सुगन्ध समेत शीतल मीठी२ पवन चल रही है और एक ओर सघन बनकी हरियाली उजियाली रात में अधिक छबि लेरही है ॥

इस समय को देखतेही सब गोपी मगन हो उसी स्थान के निकट मानसरोवर नाम एक सरोवर था तिस के तीर जाय मन मनाते सुथरे बस्त्र आभूषण पहन नखशिख से शृङ्गार कर अच्छे बाजे बीन पखावज आदि सुर बांध ले आईं औ लगीं प्रेम मदमाती हो शोच संकोच तज श्रीकृष्णके साथ मिल बजाने गाने नाचने उससमय श्रीगोबिन्द गोपियों की मंडली के मध्य ऐसे सुहावने लगते थे जैसे तारामंडल में चंद्रमा ॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले सुनो महाराज जब गोपियों ने ज्ञान विवेक छोड़ रास में हरि को बिषयी पतिकर माना औ अपने आधीन जाना तब कृष्णचंद्र ने मन में बिचारा कि ॥

अबमोहिंइनअपनेबसजान्यो।पतिबिषयीसममनमेंआन्यो
भईअज्ञान लाज तजिदेह । लपटैं पकरैं कन्त सनेह ॥
ज्ञानध्यानमिलकेबिसरायो। छांड़जाउंइनगर्बबढ़ायो

देखूं मुझबिन पीछेबनमें क्या करतीहै और कैसे रहती हैं ऐसे बिचार राधिका को साथ ले श्रीकृष्णचंद्र अन्तर्द्धानहुये ॥ इति श्रीलालकृते प्रेमसागरे रासक्रीड़ा बर्णनो नाम त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥

शुकदेव मुनिबोले कि महाराज एकां एकी कृष्णचंद्र को न देखतेहा गोपियों की आखों आगे अंधेरा होगया औ अतिदुःख पाय ऐसे अकुलाई जैसे मणि खोय सर्प घबराता है इस में एक गोपी कहने लगी ॥

दो० कहो सखी मोहन कहां । गये हमें छिटकाय ।
मेरे गरे भुजा धरे । रहे हते उर लाय ॥

अभीतो हमारेसंग मिले० रासबिलास कररहेथे इतनेही में कहां गये तुम मेंसे किसी ने भी जाते न देखा यह बचन सुन सब गोपी बिरहकी मारी निपट उदास हो हाय मार बोलीं ॥

दो० कहां जांय कैसो करैं । कासों कहैं पुकारि ।
हैं कितकछुनहिंजानिये । क्यों करमिलैं मुरारि ॥

ऐसे कह हरिमदमाती होय सब गोपी लगीं चारों ओर ढूंढ़ २ गुण गाय २ रो २ यों पुकारने ॥

चौ० हमकोक्योंछोड़ीब्रजनाथ । सरबसदियातुम्हारेसाथ

जब वहां न पाया तब आगे जाय आपसमें बोलीं सखा यहां तो हम किसी को नहीं देखतीं किस से पूछें कि हरि किधरगये योंसुन एक गोपी ने कहा सुनोआली एकबात मेरेजीमें आईहै कि ये जितने इस बनमें पशु पक्षी औ वृक्ष हैं सो सब ऋषि मुनिहैं ये कृष्णलीला देखनेको अवतार ले आयेहैं इन्हींसे पूछो ये यहां खड़े देखतेहैं जिधर हरि गयेहोंगे तिधर बतादेंगे इतना बचन सुनतेही सब गोपी बिरहसे ब्याकुल हो क्या जड़ क्या चैतन्य लगीं एक एकसे पूछने ॥

चौ० हेबड़ पीपल पाकड़बीर । लही पुण्यकर उच्चशरीर ॥
परउपकारी तुमहींभये । वृक्ष रूप पृथ्वी पर लये ॥
घामशीत बर्षा दुख सहो । काज परायें ठाढ़े रहो ॥
बकलाफूल मूलफल डार । तिनसोंकरतपराई सार ॥
सबकामनबनेहरनंदलाल । गयेइधरक्योंकहोदयाल ॥
हेकदम्ब अम्बकचनारी । तुमकछुदेखे जातमुरारी ॥
हे अशोक चम्पा करबीर । जात लखे तुमने बलबीर ॥
हेतुलसीअतिहरिकीप्यारी तनतेंकछुनराखतन्यारी
फलीआजमिलेहरिआय । हमछुंको किनदेतबताय ॥
जातीजुहीमालतीमाई । इतहैनिकसे कुंवरकन्हाई ॥

मृगमिपुकारिकहैंब्रजनारी। इतनुमजातलखेवनवारी

इतनाकह श्राशुकदेवजी बोले कि महाराज इसीरीतिसे गोपीपशुपक्षी बेलि से पूछती २ श्रीकृष्ण मयहो लगीं पूतना वधआदि सब श्रीकृष्णकी करीहुई बाललीला करने श्रो ढूंढ़ने निदान ढूंढ़ते २ कितनीएक दूरजाय देखेंतो श्रीकृष्णचन्द्रके चरण चिन्ह कमल बज्रध्वज अंकुश समेत रेतपर जगमगाय रहेहैं देखतेही ब्रजयुवती जिस रजको सुर नर मुनि खोजतेहैं तिसरजको दण्डवत्कर शिरचढ़ाय हरिके मिलनेकी आस धर वहांसे बढ़ीं तो देखा उन चरण चिन्होंके पास २ एक नारी के भी पांव पड़े हुयेहैं उन्हें देख अचरज कर आगे जाय देखेंतो एकठौर कोमल पातके बिछौनेपर सुन्दर बड़ाऊ दर्पण पड़ाहै ॥

लगीं उससे पूछने जब बिरहभरा वहभी न बोला तबउन्होंने आपस में पूछा कहोआली यह क्योंकर लियो उसी समय जो पियाप्यारी के मनकी जानतीथी उसने उत्तरदिया कि सखी जद पीतम प्यारी की चोटी गूथन बैठे श्रोर सुन्दरबदन बिलोकनेमें अन्तरहुआ तिसबिरियां प्यारीने दर्पण हाथमें ले पियाको दिखाया तद श्रीमुखका प्रतिबिम्ब सम्मुख आया यह बातसुन गोपियां कुछ न कोपियां बरन कहनेलगीं कि उसने शिव पार्वती को अच्छीरीतिसे पूजाहै श्रो बड़ा तपकियाहै जो प्राणपतिके साथ एकान्त में निधड़क बिहार करतीहै महाराज सब गोपीतो इधर उधर मदमाती बक्र २ झक २ ढूंढ़तो फिरतीहाथीं कि उधर श्रीराधिकाजी हरिके साथ अधिक सुखमान प्रीतमको अपनेबश जान आपको सबसे बड़ाठान मनमें अभिमान आन बोली प्यारे अब मुझसे चलानहीं जाता कांधे चढ़ाय ले चलिये इतनी बात के सुनतेही गर्बप्रहारी अन्तर्य्यामी श्रीकृष्णचन्द्र ने मुसुकुराय बैठकर कहा आइये हमारे कांधे चढ़लीजिये जब वह हाथ बढ़ाय चढ़ने को हुई तद श्रीकृष्ण अन्तर्द्धान हुये जो हाथ बढ़ाये थे तो हाथ पसारे खड़ी रहगई ऐसे कि जैसे घनसे मानकर दामिनी बिछुड़रही होके चन्द्रसे चन्द्रिकारूप पीछे रहगई कहो श्रोर गोरेतनकी ज्योति छूटि छितिपर छाय यों छबि देरहीथी कि मानो सुन्दर कंचनकी भूमिपै खड़ी है नयनोंसे जलकीधार बहरहीहै श्रो सुबासके बश जे मुखपास भँवर आय २ बैठेथे उन्हेंभी उड़ाय न सक्तीथी श्रो हाय हायकर बनमें बिरहकी मारी इसभांति रोरहीथी अकेली कि जिसके रोनेकी धुनिसुनि सब रोतेथे पशु पक्षी श्रो द्रुमबेली श्रोर यों कह रहीथी ॥

हाहानाथपरमहितकारी। कहांगयेखच्छंदविहारी॥
चरणशरण दासीमैंतेरी। कृपासिंधुलीजै सुधि मेरी॥

कि इतनेमें सब गोपीभी ढूंढ़ती २ उसके पास जा पहुंचीं औ उसके गलेलग २ सभोंने मिल मिल ऐसासुख माना कि जैसे कोई महाधन खोय आधाधन पाय सुखमाने निदान सबगोपीभी उसे अतिदुखित जान साथ ले महा बनमें पैठीं औ जहां लग चांदनी देखी तहांलग गोपियोंने बन में कृष्णचन्द्र को ढूंढ़ा जब सघन बनके अंधेरेमें बाट न पाई तब वेसब वहां से फिर धीरज धर मिलनेकी आशकर यमुनाके उसीतीर पर आय बैठीं जहां कृष्णचन्द्रने अधिक सुखदियाथा॥ इति श्रीलालकृते प्रेमसागरे गोपीविरह वर्णनो नामैकत्रिंशोऽध्यायः॥ ३१॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज सबगोपी यमुना तीर पर बैठ प्रेम मदमातीहो हरिके चरित्र और गुणगानेलगीं कि प्रीतम जबसे तुम ब्रजमें आयेतबसे नयेनये सुख यहां आनकर छाये लक्ष्मीने कर तुम्हारे चरणकी आस कियाहै अचल आयके बास हम गोपीहैं दासी तुम्हारी सुध लीजे दयाकर हमारी जदसे सुन्दर सांवली सलोनी मूर्त्ति है हेरी तदसे हुईहैं बिन मोलकी चेरी तुम्हारे नयन बाणोंने हतेहैं हिय हमारे सो प्यारेलखे बिन तुम्हारे जीव जातेहैं हमारे अब करुणा कीजे तजकर कठोरता बेग दर्शन दीजे जो तुम्हें मारनाही था तो हमको विष धर आग और जल से किस लिये बचाया तभी मरने क्यों न दिया तुम केवल यशोदा सुत नहींहो तुम्हें ब्रह्मा रुद्र इन्द्रादि सब देवता बिनती कर लायेहैं संसार की रक्षा के लिये॥

हे प्राण नाथ हमें एक अचरज बड़ा है जो अपनी ही को मारोगे तो रखवाली किसकी करोगे प्रीतम तुम अन्तर्य्यामी होय हमारे दुखहर मन की क्यों आश नहीं पूरी करते क्या अबलाओं पर शूरता धारीहै हे प्यारे जब तुम्हारी मन्द मुसक्यान युत प्यार भरी चितवन औ भृकुटीकी मरोर नयनों की मटक ग्रीवा की लटक और बातों की चटक हमारे जीमें आतीहै तब क्याक्या दुःख पातीहैं और जिसमसय तुम गो चरावन जाते थे बनमें तिस समय तुम्हारे कोमल चरणों का ध्यान करनेसे बनके कंकर कांटे आ सकते थे हमारे मनमें भोर के गये सांझको फिर आतेथे तिस पर भी हमें चार पहर चार युगसे जनाते थे जद सम्मुख बैठ सुन्दर

बदन निहारती थीं तद अपने जीमें बिचारती थीं कि ब्रह्मा कोई बड़ा मूर्ख है जो पलक बनाईहै हमारे इस टक देखनेमें बाधा डालने को ॥

इतनी कथा कह शुकदेव जी बोले कि महाराज इसी रीति से सब गोपी बिरह की मारी कृष्णचन्द्र केगुण औ चरित्र अनेक २ प्रकारसे गाय गाय हारी तिसपर भी न आये बिहरी तबतो निपट निराश हो मिलने की आशकर जाने का भरोसा छोड़ अति अधीरता से अचेत हो गिरकर ऐसे रोय पुकारी कि सुनकर चर अचर भी दुखित भये भारी ॥ इति श्री लालकृते प्रेमसागरे गोपी जन बिरह कथनो नाम द्वात्रिंशोऽध्यायः ३२ ॥

शुकदेव जी बोले कि महाराज जद श्री कृष्णचन्द्र अन्तर्यामी ने जाना जो अब ये गोपियां मुझ बिना जीती न रहेंगी ॥

छप्पै० । तब तिनहीं में प्रगट भये नन्द नन्दन यों ।
दृष्टि बन्धकर छिपेफेरि प्रगटे नटवर ज्यों ॥
आये हरि देखे जबै उठीं सबै यों चेत ।
प्राणपरे ज्योंमृतक में इन्द्री जगें अचेत ॥
बिन देखे सबको मन व्याकुल ह्वो भयो ।
मानो मन्मथ भुवंग सबनिडसिकैगयो ॥
पीर खरी प्रियजान पहुंचे आय कै ।
अमृत बेलनि सींच लई सब ज्याय कै ॥
दो० । मनऊं कंजनिशिमलिनहै ऐसेही ब्रजबाल ॥
बृन्दलखबिछुबिछेखिकै फूले नयन बिशाल ॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज श्रीकृष्णचन्द्र आनन्द कन्दको देखतेही सब गोपियां एकाएकी बिरह सागरसे निकल उनके पास जाय ऐसे प्रसन्न हुईं कि जैसे कोई अथाह समुद्र से डूब थाहपाय प्रसन्नहोय और चारों ओरसे घेर कर खड़ी भईं तब श्रीकृष्ण उन्हें साथ लिये वहां आये जहां पहले रास बिलास किया था जातेही एक गोपीने अपनी ओढ़नी उतारके श्रीकृष्ण के बैठने को बिछादी जोवे उसपर बैठे तो कई एक गोपी क्रोधकर बोलीं कि महाराज तुम बड़े कपटी बिराना मन धनलेजानते हो पर किसीका गुण कुछनहीं मानते इतना कह आपसमें कहनेलगीं ॥

दो० । गुणछांड़े औगुण गहे रहै कपट मनभाय ॥
देखोसखी बिचारिकै तासोंकहाबिसाय ॥

यह सुन एक इनमें से बोली कि सखी तुम बरजी रहो अपने कहे कुछ शोभा नहीं पाती देखो मैं कृष्णहीसे कहाती हूं यों कह उसने मुसकरायके श्रीकृष्णसे पूछा कि महाराज एक बिन गुण किये गुणमान ले दूसरा किये गुणका पलटा दे तीसरा गुणके पलटे औगुण करे चौथा किसीके किये गुण को भी मनमें न धरे इन चारोंमें कौन भलाहै औ कौन बुरा यह तुमहमें समझा के कहो श्री कृष्णचंद्र बोले कि तुम सब मनदे सुनो भला औ बुरा मैं बुझाकर कहता हूं उत्तम तो वहहै जो बिन किये करे जैसे पितापुत्र को चाहता है और कियेपर करने से कुछ पुण्य नहीं सो ऐसेहैं जैसे बांट के हेतु गौदूध देतीहै औगुण को औगुण माने तिसे शुचु जानिये सब से बड़ा कृतघ्न जो कियेको मेटै॥

इतना बचन सुनतेही जब गोपियां आपसमें एक एकका मुंहदेख हंसने लगीं तबतो श्री कृष्णचंद्र घबराकर बोले कि सुनो मैं इन चारकी गिनती में नहीं जोतुम जानके हंसतीहो बरन मेरी तो यहरीति है कि जो मुझसे जिस बातकी इच्छा रखताहै तिसके मनकी बांछा पूरी करताहूं कदाचित् तुमकहो कि जोतुम्हारी यह चालहै तोहमें बनमें ऐसे क्यों छोड़गये इसका कारण यहहै कि मैंने तुम्हारी प्रीतिकी परीक्षा ली इस बातका मत बुरा मानो मेराकहा सचहीं जानो॥

चौ० अबहम परचो लियोतुम्हारो।
कीनो सुमिरन ध्यान हमारो॥
मोहीसोंतुमप्रीतिबढ़ाई। निर्धनमनोसम्पदापाई॥
ऐसे आईं मेरे काज। तजिकै लोक बेदकी लाज॥
ज्यों बैरागी छांड़े गेह। मनदे हरिसों करै सनेह॥
कहातिहारीकरौंबड़ाई। हमपैपलटोदियोनजाई॥

जोब्रह्मा केसौ बर्ष जियें तौभी हम तुम्हारे ऋण से उरिण न होंयगे इतिश्रीलालकृते प्रेमसागरे गोपी कृष्ण सम्वादे त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः॥ ३३॥

श्रीशुकदेव मुनि बोले राजा जब श्री कृष्णचंद्र ने इस ढब से रस के बचन कहे तबतो सब गोपियां रिसछोड़ प्रसन्नहो उठ हरिसे मिलभांतिर सुखमान आनन्द मगन हो कुतूहल करने लगीं तिस समय॥

दो०। कृष्ण योग माया ठई भये अंश बहु देह॥
सबकोसुखचाहतदियो लीलापरमसनेह॥

जितनी गोपियां थीं तितनेही शरीर कृष्णचन्द्र ने धर उसी रासमण्डल के चौंतरे पर सब को साथ ले फिर रास बिलास का आरंभ किया ॥

चौ० दुदुगोपी जोरैंहाथा । तिनके बीच बीच हरि साथा ॥
अपनी २ ढिग सब जानें । नहीं दूसरे की पहिचानें ॥
अंगुरिनमेंअंगुरिकरदिये । प्रमुदितफिरैं संगहरिलिये ॥
बिचगोपीबिचनन्दकिशोर।सघनघटादामिनचहुंओर ॥
श्यामश्यामगोरीब्रजबाला।मानहुंकनकनीलमणिमाला ॥

महाराज इसी रीतिसे खड़े होय गोपी और कृष्ण लगे अनेक २ प्रकार के यंत्रों के सुर मिलाय २ कठिन २ राग अलाप अलाप बजाय २ गाने औ तीखी चोखी आड़ी गौड़ी दुगुन तिगुन की तानें उपजैं ले २ बोल बताय २ नाचने औ आनन्द में ऐसे मगन हुये कि उनको तब मन की भी सुधिनथी कहीं इनका अंचल उघड़ जाताथा कहीं उनका मुकुट खिसल इधर मोतियों के हार टूट २ गिरते थे उधर बनमाल पसीने की बूंदें माथों पर मोतियों की लड़ीसी चमकती थीं औ गोपियों के गोरे २ मुखड़ों पर अलकें यों बिखर रही थीं कि जैसे अमृत के लोभसे सपोलिये उड़कर चांद को जा लगे होंय कभी कोई गोपी कृष्ण की मुरली के साथ मिलकर झील में गाती थी कभी कोई अपनी तान अलगही ले जाती थी औ जो कोई बंशी को छेक उसकी तान समूची ज्यों की त्यों गलेसे निकालती थी तब हरिऐसे भूल रहते थे कि ज्यों बालक दर्पण में अपना प्रतिबिम्ब देखभूलरहे ॥

इसी ढब से गाय २ नाच २ अनेक २ प्रकार के हाव भाव कटाक्ष कर २ सुख लेतेथे औ परस्पर रीझ २ हंस २ कंठ लगाय २ बस्त्र आभूषण निछावर कर रहे थे उस काल ब्रह्मा रुद्र इन्द्र आदि सब देवता औ गन्धर्ब अपनी २ स्त्रियों समेत बिमानों में बैठ रासमण्डली का सुख देख २ आनन्द से फूल बरसावते थे और उनकी स्त्रियां वह सुख लख हंसकर मन में कहती थीं कि जो जन्म ले ब्रज में जातीं तो हम भी हरि के साथ रास बिलास करतीं और राग रागनियों का ऐसा समा बँधा हुआ था कि जिसे सुनके पवन पानी भी न बहता था औ तारामंडल समेत चन्द्रमा थकित हो किरणों से अमृत बरसाता था इस में रात बढ़ी तो छः महीने बीत गये और किसी ने न जाना तभी से उस रैन का नाम ब्रह्मरात्रि हुआ ॥

इतनी कथा सुनाय शुकदेवजी बोले पृथ्वीनाथ रासलीला करते २ जो

कुछ श्रीकृष्णचन्द्र के मन में तरंग आई तो गोपियों को लिये यमुना तीर पै जाय नीरमें पैठ जलकर श्रम मिटाय बाहर आय सबके मनोरथ पूरे कर बोले कि अब चारघड़ी रात रहीहै तुम सब अपने२ घर जाओ इतना बचन सुन उदास हो गोपियों ने कहा आपके चरण कमल छोड़ के घर कैसे जांय हमारा लालची मन तो कहा मानताही नहीं कृष्णचन्द्र बोले कि सुनो जैसे योगीजन मेरा ध्यान धरते हैं तैसे तुमभी ध्यान कीजियो मैं तुम्हारे पास जहां रहोगी तहां रहूंगा इतनी बातके सुनतेही सन्तोष कर सब बिदा हो अपने२ घर गईं औ यह भेद उनके घरवालों में से किसी ने न जाना कि ये यहां न थीं ॥

इतनी कथा सुन राजा परीक्षितने शुकदेवमुनिसे पूंछा कि दीनदयाल यह मुझेतुम समझाकर कहो जो कृष्णचन्द्र तो असुरोंकोमार पृथ्वी का भार उतारने औ साधु सन्तों को सुख दे धर्म्म का पंथ चलाने के लिये अवतार ले आये थे उन्होंने पराई स्त्रियों के साथ रास बिलास क्यों किया यह तो कुछ लम्पट का कर्म्म है जो बिरानी नारी से भोग करें शुकदेव जी बोले ॥

चौ० सुनराजायहभेदनजान्यो।मानुषसमपरमेश्वरमान्यो॥
जिनकेसुमिरेपातकजात। तेजवन्त पावन हैंगात ॥
जैसेअग्नि मांझ ककुपरै। सोऊअग्निहोयकैजरै ॥

सामर्थी क्या नहीं करते क्योंकि वे तो करके कर्मकी हानि करते हैं जैसे शिवजी ने विषलिया औ खाके कंठको भूषण दिया और काले सांप का किया हार कौन जाने उनका व्यवहार वे तो अपने लिये कुछभी नहीं करते जो उनका भजन स्मरण कर कोई बर मांगता है तैसाही उस को देतेहैं ॥

उनकी तो यह रीति है कि सबसे मिले दृष्टि आतेहैं औ ध्यान कर देखिये तो सबहीसे अलग जताते हैं जैसे जलमें कमलका पात और गोपियोंकी उत्पत्ति तो मैं तुम्हें पहलेही सुना चुका हूं कि देव औ वेद की ऋचायें हरिका दर्श परश करने को ब्रजमें जन्मले आईहैं और इसीभांति श्रीराधिका भी ब्रह्मा से वर पाय श्री कृष्णचन्द्र की सेवा करने को जन्म ले आईं और प्रभुकी सेवामें रहीं ॥

इतना कह श्रीशुकदेवजी बोले महाराज कहा है कि हरि के चरित्र

मान लीजे पर उनके करने में मन न दीजे जो कोई गोपीनाथ का यश गाताहै सो निर्भय अटल परमपद पाताहै औ जैसा फल होताहै अड़सठ तीर्थके न्हानेमें तैसाही फल मिलताहै श्रीकृष्ण यश गानेमें ॥ इतिश्रीलाल कृते प्रेमसागरे पञ्चाध्याई रास लीला नाम चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३४ ॥

श्रीशुकदेव मुनि कहने लगे कि राजा जैसे श्रीकृष्णजी ने विद्याधर को तारा और शंखचूड़ को मारा सो प्रसंग कहता हूं तुम जी लगाय सुनो एक दिन नन्दजीने सब गोप ग्वालों को बुलाय के कहा कि भाइयों जब कृष्णका जन्म हुआ था तब मैंने कुलदेवी अम्बिकाकी यह मानता करी थी कि जिस दिन कृष्ण बारह बर्षका होयगा तिस दिन नगर समेतबाजे गाजे से जाकर पूजा करूंगा सो दिन उसकी कृपासे आज देखा अबचल कर पूजा किया चाहिये ॥

इतना बचन नन्दजी के मुखसे सुनतेही सब गोप ग्वाल उठ धाये औ झट पटही अपने २ घरोंसे पूजा की सामग्री ले आये तदतो नन्दराय पुजापा औ दूध दही माखन छकड़ों बहंगियों पर रखवाय कुटुम्ब समेत उनके साथ होलिये औ चले २ अम्बिका के मन्दिर पहुंचे वहांजाय सरस्वती नदी में न्हाय नन्दजीने पुरोहित बुलाय सब को साथले देवी के मन्दिरमें जाय शास्त्रकी रीतिसे पूजाकी और जो पदार्थ चढ़ानेको लेगयेसो आगे धर परिक्रमा दे हाथजोड़ बिनती कर कहा कि मां आपकी कृपा से कान्ह बारह बर्षका हुआ ॥

ऐसे कह दंडवत्कर मन्दिरके बाहर आय सहस्र ब्राह्मण जिवांये इस में अबेर जो हुई तो सब ब्रजबासियों समेत नन्दजी तीर्थ ब्रतकर वहांही रहे रातको सोतेथे कि एक अजगरने आय नन्दरायका पांव पकड़ा और लगा निगलने तबतो वे देखतेही भयखाय घबराय के पुकारने लगे हेकृष्ण हेकृष्ण बेग सुधले नहींतो यह मुझे निगले जाताहै उनका शब्द सुनतेही सारे ब्रजबासी स्त्री पुरुष नींदसे चौंक नन्दजीके निकट जाय उजालाकर देखें तो एक अजगर उनका पांव पकड़े पड़ाहै इतने में श्रीकृष्णचन्द्र जी ने पहुंच सबके देखतेही ज्यों उसकी पीठमें चरण लगाया त्योंही वह अपनी देह छोड़ सुन्दर पुरुष हो प्रणाम कर सम्मुख हाथ जोड़ खड़ा हुआ तब श्रीकृष्ण ने उस से पूछा कि तू कौन है औ किस पापसे अजगर हुआ था सोकह वह शिर झुकाय बिनती कर बोला अन्तर्य्यामी तुम सब जानते हो मेरी उत्पति कि मैं सुदर्शन नाम बिद्याधर हूं सुर

पुरमें रहताथा औ अपने रूप गुणके आगे गर्बसे किसीको कुछ न गिनताथा॥

एक दिन बिमान में बैठ फिरने को निकला तो जहां अंगिरा ऋषि बैठे तप करतेथे तिनके ऊपरहो सौबेर आया गया जहां उन्होंने बिमान की परछाहीं देखी तो ऊपरदेख क्रोधकर मुझे शापदिया कि रे अभिमानी तू अजगर सांपहो॥

इतना बचन सुनके मुखसे निकला कि मैं अजगरहो नीचे गिरा तिस समय ऋषि ने कहाथा कि तेरी मुक्ति श्रीकृष्णचन्द्र के हाथ होगी इसी लिये मैंने नन्दरायजीके चरण आय पकड़े थे जो आप आय मुझे मुक्त करें सो कृपानाथ आपने आय कृपाकर मुझेमुक्तिदी ऐसेकह विद्याधर तो परिक्रमा दे हरिसे आज्ञाले दण्डवत्कर बिदाहो बिमानपर चढ़ सुरलोक को गया और यह चरितदेख सब ब्रजबासियों को अचरज हुआ निदान भोर होतेही देवीका दर्शन कर सबमिल वृन्दाबन आये॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेव मुनि बोले कि पृथ्वीनाथ एक दिन हलधर औ गोबिन्द गोपियों समेत चांदनी रातको आनन्द से बनमें गाय रहेथे कि इसबीच कुबेरका सेवक शंखचूड़ नाम यक्ष जिसके शीशमें मणि औ अति बलवानथा सो आ निकला देखे तो एकओर सब गोपियां कुतूहल कररही हैं और एकओर कृष्ण बलदेव मगनहो मत्तवत् गायरहे हैं कुछ इसके जीमेंजो आई तो सब ब्रजयुवतियों को घेर आगेधर लेचला तिससमय भयखाय पुकारीं ब्रजनाथ रक्षा करो॥

इतना बचन गोपियों के मुखसे निकलतेही सुनकर दोनों भाई रूख उखाड़ हाथों से ले यों दौड़आये कि मानों गज माते सिंह पर उठधाये और वहां जाय गोपियों से कहा कि तुम किसी से मत डरो हम आन पहुंचे इनको काल समान देखतेही यक्ष भयमान गोपियोंको छोड़ अपना प्राण ले भागा उसकाल नन्दलाल ने बलदेवजीको तो गोपियोंके पासछोड़ औ आप जाय उसके ढोंढ़ेपकड़ पछाड़ा निदान तिरछाहाथ कर उसका शिर काट मणिले बलराम जी को दिया॥ इति श्रीलालकृते प्रेम सागरे विद्याधर मोक्ष शंखचूड़ वधोनाम पंचचिंशतमोऽध्यायः॥ ३५॥

शुकदेवमुनि बोले राजा जबतक हरि बनमें धेनु चरावें तबतक सब ब्रजयुवतियां नन्दरानी के पास आय बैठकर प्रभुका यशगावें जो लीला कृष्णचन्द्र बनमें करें सो गोपियां घरबैठे उच्चरें॥

चौ० सुनो सखी बाजत है बैन। पशु पक्षी पावत हैं चैन॥

मित्रसगासेवकहितकारी। करैकपटसोपापीभारी ॥
दो० मुख मीठा मन बिषभरा रहै कपट के हेत।
आप काज पर द्रोहिया उससे भला जो प्रेत ॥

ऐसे बक झक फिर कंसने नारद जी कहने लगा कि महाराज कुछ इसके मनकाभेद हमने न पाया लड़काहुआ और कन्याको लादिखाया जिसे कहा अधूरागया सोई जा गोकुल में बलदेव भया इतना कह क्रोधकर होंठ चबाय उठाय ज्योंचाहा कि बसुदेवको मारूं तो नारद मुनिने हाथ पकड़कर कहा राजा बसुदेवको तोतू आज रख औ जिसमें कृष्ण बलदेव आवें सो काजकर ऐसे समझाय बुझाय जब नारद मुनि चलेगये तब कंसने बसुदेव देवकी को तो एक कोठरी में मूंददिया औ आप भयातुर हो केशी नाम राक्षस को बुलाके बोला ॥

चौ० महाबली तूसाथीमेरा बड़ाभरोसा मुझको तेरा ॥
एक बार तूब्रज में जा राम कृष्णहति मुझे दिखा ॥

इतना बचन सुनतेही केशी तो आज्ञापा बिदाहो दण्डवत्कर वृन्दाबनको गया और कंसने शल तोशल चाणूर अरिष्ट व्योमासुर आदि जितने मंची थे सब को बुलाय भेजा वे आय तिन्हें समझाकर कहने लगा कि मेरा बैरी पासआय बसा है तुमअपने जीमें शोच बिचार करके मेरे मनका शूलजो खटकताहै निकालो मंची बोले पृथ्वीनाथ आप महाबली हो किससे डरतेहो राम कृष्ण का मारना क्या बड़ी बातहै कुछ चिन्ता मत करो जिस छल बल से वे यहां आवें सोई हम मता बतावें ॥

पहिले तो यहां भलीभांति से एक ऐसी सुदर रंग भूमि बनवावें कि जिसकी शोभा सुनतेही देखने को नगर२ गांव२ के लोग उठधावें पीछे महादेवका यज्ञ करवाओ होमके लिये बकरे भैंसे मंगवाओ यह समाचार सुन सब ब्रजबासी भेट लावेंगे तिन के साथ राम कृष्ण भी आवेंगे तभी कोई मल्ल पछाड़ेगा कै कोई औरही बली पैरपै मारडालेगा इतनी बात के सुनतेही ॥

सो० कहै कंस मन लाय भलो मतो मंची दियो ॥
लीने मल्ल बुलाय आदर कर बीरा दियो ॥

फिर सभा कर अपनेबड़े बड़े राक्षसोंसे कहनेलगा कि जबहमारे भानजे राम कृष्ण यहां आवें तब तुममेंसे कोई उन्हें मारडालियो जो मेरेजीका

खटका जाय उन्हें यों समझाय पुनि महावत को बुलाय के बोला कि तेरे बश में मतवाला हाथीहै तू द्वारपर लिये खड़ा रहना जद वे दोनों आवें द्वार में पांवदें तद तू हाथी से चिरवाडालियो किसी भांति भागने न पावें जो बिन दोनों को मारेगा सो मुंह मांगा धन पावेगा ॥

ऐसे सबको सुनाय समझाय बुझाय कार्त्तिक बदी चौदस को शिवका यज्ञ ठहराय कंस ने सांझसमय अक्रूरको बुलाय अति आव भक्तिकर घर भीतर लेजाय एक सिंहासनपर अपनेपास बैठाय हाथपकड़ अति प्यारसे कहा कि तुम यदुकुल में सबसे बड़े ज्ञानी धर्मात्मा धीर हो इसलिये तुम्हें सब जानते मानतेहैं ऐसा कोई नहीं जो तुम्हें देख सुखी न होय इससे जैसे इन्द्र का काज बामन ने जा किया जो छलकर बलिका सारा राजले दिया औ राजा बलिको पाताल पठाया तैसे तुम हमारा काम करो तो एकबेरबृन्दाबन जाओ और देवकीके दोनोंलड़कोंको ज्योंबने त्यों छलबलकर यहां ले आओ कहाहै जो बड़े हैं सो आप दुःख सह पराया काज करतेहैं तिसमें तुम्हें तो सब बातकी लाज हमारी है अधिक क्या कहें जैसे बने तैसे उन्हें ले आओ तो यहां सहजही में मारे जायेंगे कै तो चाणूर पछाड़ेगा कै कुबलया पीड़ गज पकड़ चीरडालेगा नहींतो मैंही उठ मारूंगा अपना काज अपने हाथ संवारूंगा और उन दोनों को मार पीछे उग्रसेन को हनूंगा क्योंकि वह बड़ा कपटी है मेरा मरना चाहता है फिर देवकी के पिता देवक को आग से जलाय पानी में डुबोऊंगा साथही उसके बसुदेव को मार हरिभक्तोंको जड़से खोऊंगा तबनिष्कंटक राजकर जरासन्ध जो मेरा प्रचण्ड मितहै उसके त्रास से नवखण्ड कांपते हैं औ नरकासुर बाणासुर आदि बड़े २ महाबली राक्षस जिसके सेवकहैं तिनसे जा मिलूंगा जो तुम राम कृष्ण को ले आओ ॥

इतनी बातें कहकर कंस फिर अक्रूर को समझानेलगा कि तुमवृन्दा-बनमें जाय नन्दके यहां कहियो कि शिवका यज्ञ है धनुष धराहै औ अनेक २ प्रकार के कुतूहल वहां होंयगे यह सुन नन्द उपनन्द गोपों समेत बकरे भैंसे ले भेट देने आवेंगे तिनके साथ देखनेको कृष्ण बलदेव भी आवेंगे यहतो मैंने तुम्हें उनके लावने का उपाय बताय दिया आगे तुम सज्ञान हो जो और उचित बनि आवे सो करि कहियो अधिक तुम से क्या कहें कहा है ॥

सो० होय बिचिच बसीठ जाहि बुद्धि बल आपनो।

पर कारज पर ढीठ करहि भरोसो तातनो ॥

इतनी बात के सुनतेही पहिले तो अक्रूरने अपने जीमें बिचारा कि जो मैं अब इसे कुछभली बात कहूंगा तोयह न मानेगा इस्से उत्तमयही है कि इस समय इसके मन भाती सुहाती बात कहूं ऐसे औरभी ठौर कहाहै कि वही कहिये जो जिसे सुहाय योंशोच बिचार अक्रूर हाथजोड़ शिर झुकाय बोला महाराज तुमने भला मता किया यह बचन हमनेभी शिर चढ़ाय मानलिया होनहार पर कुछ बश नहीं चलता मनुष्य अनेक मनोरथ कर धावताहै पर कर्मका लिखाही फल पावताहै शोचते कुछ हैं और होता कुछहै और किसीके मनका चीता होता नहीं आगम बांध तुमने यह बात बिचारी है न जानिये कैसी होय मैंने तुम्हारी बातमान ली कल भोर को जाऊंगा और राम कृष्णको लेआऊंगा ऐसे कह कंस से बिदा हो अक्रूर अपने घर आया ॥ इति श्री लाल कृतेप्रेमसागरे कंस नारद संवादे नाम सप्तचिंशतमोऽध्यायः ॥ २७ ॥

श्री शुकदेवजी बोले कि महाराज ज्यों श्रीकृष्णचंद्र ने केशी को मारा और नारद ने जाय स्तुति करी पुनि हरिने व्योमासुर को हना तो सब चरित्र कहता हूं तुम चित्तदे सुनो कि भोर होतेही केशी अति ऊंचा भयानक घोड़ा बन वृन्दाबन में आया और लगा लाल २ आंखेंकर नथुने चढ़ाय कान पूंछ उठाय टाप २ भूं खोदने औहिंस २ कांधा कम्पाय २ लातें चलाने ॥

उसे देखतेही ग्वाल बालोंने भयखाय भाग कृष्णसे जा कहा वे सुनके वहां आये जहां वहथा औ उसे देख लड़नेको फेंट बांध ताल ठोंकसिंह की भांति गरजकर बोले अरे जो तू कंसका बड़ा प्रीतमहै और घोड़ाबन आयाहै तो औरके पीछे क्योंफिरताहै आ मुझसेलड़ जो तेराबल देखूं दीप पतंग की भांति कबतक फिरेगा तेरी मृत्यु तो निकट आन पहुंची है यह बचन सुन केशी ने कोपकर अपने मनमें कहा कि आज इसका बल देखूंगा औ पकड़ ईखकी भांति चबाय कंस का कारज कर जाऊंगा ॥

इतना कह मुंह बाय के ऐसा दौड़ा कि मानो सारे संसार को खा जायगा आतेही पहले ज्यों उसने कृष्ण पर मुंह चलाया त्यों उन्होंने एक बेरतो ढकेल कर पीछेको हटाया अब दूसरी बेर वहफिर संभल के मुख फैलाय धाया तब श्री कृष्णने अपना हाथ उसके मुंहमें डाल लोह लाट साकर ऐसा बढ़ाया कि जिसने उसके दशों द्वार जा रोके तबतोकेशी घबराकर

जीमें कहने लगा कि अब देह फटतीहै यह कैसीभई अपनीमृत्यु आपमुंह में ली जैसे मछली वंशीको निगल प्राणदेती तैसेमैंने भी अपना जीवखोया॥

इतनाकह उसने बहुतेरे उपाय हाथ काढ़ने को किये पर एकभीकाम न आया निदान सांसरुककर पेट फट गया तो पछाड़ खाकर गिरा तब उसके शरीरसे लोहू नदी की भांति बहनिकला तिस समय ग्वाल बाल आय२ देखने लगे औ श्रीकृष्णचन्द्र आगे जाय बनमें एक कदम्ब कीछांह में खड़ेहुये ॥

इस बीच बीणा हाथमें लिये नारदमुनिजी आन पहुंचे प्रणाम करखड़े होय बीणा बजाय भगवान् की भूत भविष्य सब लीला औ चरित्र गाय के बोले कि कृपानाथ तुम्हारी लीला अपरम्पार है इतनी किसमें समर्थ्य है जो आपके चरित्रों को बखाने पर तुम्हारी दया से मैं इतना जानता हूं कि आप भक्तों को सुख देने के अर्थ औ साधुओं की रक्षा के निमित्त औ दुष्ट असुरों के नाश करने के हेतु बार बार अवतारले संसारमें प्रकट हो भूमि का भार उतारते हो ॥

इतना बचन सुनतेही प्रभु ने नारदमुनि को तो बिदा दी वे दंडवत् कर सिधारे औ आप सब ग्वाल बाल सखाओं को साथ लिये वड़के तले बैठ पहले तो किसी को मंत्री प्रधान किसी को सेनापति बनाय आप राजा हो राजनीति से खेल खेलने औ पीछे आंखि मिचौली इतनी कथा कह श्रीशुकदेवमुनि बोले कि पृथ्वीनाथ ॥

दो० मारो केशी भोरहीं सुनी कंस यह बात ।
व्योमासुर सों कहतहै भांकत कम्पत गात ॥

चौ० अरिकंदनव्योमासुरबली । तेरीजगमेंकीरतिभली ॥
ज्यों राम के पवन को पत । त्योंहीं मेरो तु यमदूत ॥
बसुदेवके पतहतिल्यावो । आज काजमेरोकरिआवो ॥

यहसुन हाथजोड़ व्योमासुर बोला महाराज जो बसायगी सो करूंगा आज मेरी देह है आपही के काज जो जीके लोभी हैं तिन्हें स्वामीके अर्थ जीदेते आती है लाज सेवक औ स्त्रीको तो इसीमें यशधर्महै जो स्वामी के निमित्त प्राणदें ऐसेकह श्रीकृष्ण बलदेव पर बीड़ा उठाय कंसकोप्रणाम कर व्योमासुर वृन्दाबनको चला बाटमें जाय ग्वाल का भेष बनाय चला चला वहां पहुंचा जहां हरि ग्वाल बाल सखाओं के साथ आंख मिचौली

शुकदेवजी बोले कि पृथ्वीनाथ जब नन्दजी बातें करचुके तब अक्रूर को कृष्ण बलराम सेन से बुलाय अलग ले गये ॥

चौ० आदरकरपूछीकुशलात । कहौकंसमथुराकीबात ॥
हैंबसुदेवदेवकी नीके । राजा बैर परयो तिनहीं के ॥
अति पापीहै मामाकंस । जिनखोयो सगरो यदुबंश ॥

कोई यदुकुल का महा रोग जन्मले आया है तिसीने सब यदुबंशियों को सताया है और सच पूंछोतो बसुदेव देवकी हमारे लिये इतना दुःखपाते हैं जो हमें नछिपाते तो वे इतना दुःख न पाते यों कह कृष्णफिरबोले ॥

चौ०तुमसोंकहाचलतउनकह्यो।तिनकोसदाऋणीहौंरह्यो
करतहौंयगेसुरतहमारी।संकटमें पावत दुखभारी ॥

यह सुन अक्रूरजी बोले कि कृपानाथ तुम सब जानते हो क्या कहूंगा कंसकी अनीति विसकी किसीसे नहींहै प्रीति बसुदेव और उग्रसेनकोनित मारने का बिचार किया करता है पर वे आज तक अपने प्रारब्धसे बच रहेहैं और जबसे नारद मुनि आय आपके होने का सबसमाचार बुझयके कह गये हैं तबसे बसुदेव जीकोबेड़ी हथकड़ी दे महादुःखमें रक्खाहै और कल उसके यहां महादेव का यज्ञहै और धनुष धराहै सबकोई देखनेको आवेंगे सो तुम्हें बुलानेको मुझेभेजाहै यह कहकर कि तुमजाय रामकृष्ण समेत नन्दराय को यज्ञकी भेट समेत लिवाय लाओ सो मैंतुम्हें लेनेको आयाहूं इतनी बात अक्रूरजी से सुन रामकृष्ण ने आनन्दसे कहा ॥

चौ० । कंस बुलायोहै सुनतात । कहिअक्रूर कथायहबात ॥
गोरस भेड़ छेरी लेऊ । धनुष यज्ञहै ताकोदेऊ ॥
सबमिलिचलोसाथआपने । राजा बोलेरहत नबने ॥

जब ऐसे समझाय बुझाय कर श्रीकृष्णचंद्र जीने कहातब नन्दरायजी ने उसी समय ढंढोरिये को बुलवाय सारे नगरमेंयों कह डोंड़ी फिरवादी कि कल सबेरेही सब मिल मथुरा को जायंगे राजाने बुलायाहै इस बातके सुने से भोरहोतेही भेट लेले सकल ब्रजबासी आन पहुंचे और नन्दजीभी दूध दही माखन मेढ़े बकरे भैंसेले सगरे जुतवाय उनके साथ होलिये और कृष्ण बलदेवभी अपने ग्वाल बाल सखाओं को साथले रथपर चढ़े ॥

चौ०। आगेभये नन्द उपनन्द । सबपाछेहलधर गोबिन्द ॥

श्री शुकदेवजी बोले कि पृथ्वीनाथ एका एकी श्रीकृष्णचंद्र का चलन

सुन सब ब्रजकी गोपियां अति घबराय व्याकुल हो घर छोड़ हड़बड़ाय उठ धाईं और कुढ़ती झकती गिरती पड़ती वहां आईं जहां श्रीकृष्णचंद्र का रथ था आतेही रथके चारों ओर खड़ी हो हाथ जोड़ बिनती कर कहने लगीं हमें किसलिये छोड़ते हो ब्रजनाथ सर्बस दिया तुम्हारे हाथ साधुकी तो प्रीति घटती नहीं कर कीसी रेखा सदा रहती है और मूढ़की प्रीति नहीं ठहरती है जैसे बालूकी भीति ऐसा तुम्हारा क्या अपराध कियाहै जो हमें पीठदिये जाते हो यों श्रीकृष्णचंद्रको सुनाय फिर गोपियां अक्रूरकी ओर देख बोलीं॥

चौ०। यह अक्रूरक्रूर है भारी। जानीकछुन पीर हमारी॥
जाबिनक्षणसबहोइँअनाथ।तेहिलैचेल्योआपनेसाथ॥
कपटीक्रूरकठिनमनभयो।वृथाअक्रूरनामकिनदयो॥
हेअक्रूरे कुटिलमतिहीन।क्योंदाहेतअबलाआधीन॥

ऐसे कड़ी २ बातें सुनाय सोच संकोच छोड़ हरिका रथ पकड़ आपस में कहने लगीं मथुराकी नारियां अति चंचल चतुर रूपगुण भरीहैं उनसे प्रीत कर गुण औ रस के बश हो वहांहीं रहेंगे बिहारी तब काहे को करेंगे सुरत हमारी उन्हींके बड़े भाग हैं जो प्रीतम संगरहेंगी हमारे जप तप करने में क्या ऐसी चूक पड़ी थी जिससे श्रीकृष्णचंद्र बिछुड़ते हैं यों आपस में कह फिर हरिसे कहने लगीं कि तुम्हारा तो नामहै गोपीनाथ किसलिये नहीं लेचलते हमें अपने साथ॥

चौ०। तुमबिनु क्षणक्षणकैसेकटै। पलकओटभयेछातीफटै॥
हितलगायक्योंकरतबिछोहा।निठुरनिर्दयीधरतनमोहा॥
ऐसे तहां जपें सुन्दरी। शोचें दुःख समुद्र में परी॥
चाहिरहींइकटकहरिओर। ठगीमृगीसीचन्द्रचकोर॥
परहिं नयन ते आंसू टूट। रहींबिथुर लट मुखपर छूट॥

श्रीशुकदेव मुनि बोले राजा उस समय गोपियोंकी तो यह दशा थी जो मैंनेकही और यशोदा रानी ममता कर पुचको कण्ठ लगाय रोरो अति प्यारसे कहती थीं कि बेटा जैदिन में तुम वहां से फिर आओ तैदिनके लिये कलेजा ले जाओ तहां जाय किसीसे प्रीति मत कीजो बेग आय अपनी जननी को दर्शन दीजो इतनी बात सुन श्रीकृष्ण रथसे उतर सबको समझाय बुझाय मा से बिदा होय दंडवत् कर अशीष ले फिर रथपर चढ़

चले तिस काल इधरसे तो गोपियों समेत यशोदा जी अति अकुलाय रो रो कृष्ण २ कर पुकारती थीं और उधरसे श्रीकृष्ण रथपर खड़े पुकारपुकार कहते जातेथे कि तुम घरजाओ किसी बातकी चिन्ता मत करो हम पांच चार दिनमें हो फिर कर आतेहैं ॥

ऐसे कहते २ औ देखते २ जब रथ दूर निकल गया और धूलि आकाश तक छाई तिसमें रथकी ध्वजाभी न दिखाईदी तब निरासहो एक बेर तो सबकी सब नीर बिन मीनकी भांति तड़फड़ाय मूर्च्छा खाय गिरीं पीछे कितनी एक बेरको चेतकर उठीं और अवधिकी आश मनमें धरधैर्य्य कर इधर यशोदाजी तो सब गोपियोंको ले बृन्दाबन को गईं और उधर श्रीकृष्णचंद्र सब समेत चले २ यमुना तीर आ पहुंचे तहां ग्वाल बालोंने जल पिया औ हरिने भी एक बड़की छांहमें रथ खड़ा किया जद अक्रूर जी न्हानेका बिचार कर रथसे उतरे तद कृष्णचंद्रने नन्दरायसे कहाकि आप सब ग्वाल बालोंको ले आगे चलिये चचा अक्रूर स्नान करलेंतो पीछे से हमभी आ मिलते हैं ॥

यह सुन सबको ले नन्दजी आगे बढ़े औ अक्रूरजी कपड़े खोलहाथ पांव धोय आचमन कर तीरपर जाय नीरमें पैठ डुबकीले पूजा तर्पण जप ध्यान कर फिर डुबकी मार आंख खोल जलमें देखेंतो वहां रथ समेत श्रीकृष्ण दृष्टि आये ॥

चौ० । पुनिउनदेख्योशीषउठाय । तिहिठां बैठेहैंयदुराय ॥
करैअचम्भो हिये बिचार । वेरथऊपर दूरमुरारि ॥
बैठे दोऊ बड़की छांह । तिनहींकोदेखौंजलमांह ॥
बाहरभीतरभेदनलहौं । सांचोरूप कौनकोकहौं ॥

महाराज अक्रूरजी तो एकही मूर्त्ति बाहर भीतर देख देख शोचते थे कि इस बीच पहलेतो श्रीकृष्णचन्द्रजीने चतुर्भुज हो शंख चक्र गदापद्म धारण कर सुर मुनि किन्नर गन्धर्ब आदि सब भक्तों समेत जलमें दर्शन दिया औ पीछे शेष शायी हो तो अक्रूर देख और भी भूलरहा ॥ इति श्रीलाल कृते प्रेमसागरे अक्रूरदर्शनो नाम चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४० ॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज पानीमें खड़े अक्रूरको कितनी एक बेरमें प्रभुका ध्यान करनेसे ज्ञान हुआ तो हाथ जोड़ प्रणाम कर कहने लगा कि कर्त्ता हर्त्ता तुम्हीहो भगवन्त भक्तोंके हेतु संसार में आय धरते

हैभेष अनन्त और सुर नर मुनि तुम्हारे अंशहैं तुम्हीसे प्रगटहो तुम्हीमें ऐसे समाते हैं जैसे जल सागर से निकल सागर में समाता है तुम्हारी महिमा है अनूप कौन कह सके सदा रहते हो बिराट स्वरूप शिर स्वर्ग पृथ्वीपांव समुद्रपेट नाभिआकाश बादलकेश वृक्षरोम अग्निमुख दशोंदिशा कान नयनचंद्र औ भानु इंद्र भुजा बुद्धिब्रह्मा अहंकार रुद्र गरजन बचन प्राण पवन जल बीर्य्य पलक लगाना रात दिन इसरूपसे सदा बिराजतेहो तुम्हें कौन पहचान सके इसभांति स्तुतिकर अक्रूरने प्रभुकेचरणका ध्यान धर कहा कृपानाथ मुझेअपनी शरणामें रक्खो ॥ इति श्री लालकृते प्रेम सागरे अक्रूर स्तुति करनेनाम एक चत्वारिंशोऽध्यायः ४१ ॥

श्री शुकदेवजी बोले कि महाराज जद श्रीकृष्णचंद्र ने नट माया की भांति जलमें अनेक रूप दिखाय हरलिये तद अक्रूरजी ने नीरसे निकल तीर पर आ हरि को प्रणाम किया तिसकाल नन्दलाल ने अक्रूर से पूछा कि कका शीत समय जलके बीच इतनी बेरक्यों लगी हमें यह अतिचिन्ता थी तुम्हारी कि चचाने किसलिये बाट चलने की सुधि बिसारी क्या कुछअचरज जाकर तो नहीं देखा यह समझायके कहो जोहमारे मनकी द्विबिधाजाय ॥

चौ० सुनिअक्रूरकहजोरेहाथ। तुमसबजानतहौब्रजनाथ॥
भलोदरशदीनोजलमाहींकृष्णचरितकोअचरजनाहीं
मोहिंभरोसोभयोतिहारो। बेगनाथमथुरापगधारो॥

अब यहां बिलम्ब न करिये शीघ्र चल कारज कीजे इतनी बातके सुनतेही हरि झट रथपर बैठ अक्रूर को साथ ले चलखड़े हुये औ नन्द आदि जो सब गोप ग्वाल आगे गयेथे उन्होंने जा मथुरा के बाहर डेरे किये औ कृष्ण बलदेव की बाट देख २ अति चिन्ताकर आपस में कहने लगे इतनी अबेर न्हाते क्यों लगी औ किसलिये अबतक नहीं आये हरी कि इस बीच चले २ आनन्द कन्द श्रीकृष्णचन्द्र जाय मिले उस समय हाथजोड़ शिरझुकाय बिनती कर अक्रूरजी बोले कि ब्रजराज अब चलके मेरा घर पबित्र कीजे औ अपने भक्तोंको दर्श दिखाय सुख दीजे इतनी बात सुनतेही हरिने अक्रूर से कहा ॥

चौ० पहलेसोधकंसकोदेऊ। तबअपनोदिखराओगेऊ॥
सबकीबिनतीकरोजुजाय। सुनिअक्रूरचलेगिरिनाय॥

चले चले कितनी एक बेरमें रथसे उतर कर वहां पहुंचे जहां कंस

सभा किये बैठाथा इनको देखतेही सिंहासन से उठ नीचे आय अति हितकर मिला औ बड़े आदर मान से हाथ पकड़ लेजाय सिंहासन पर अपने पास बैठाय इनकी कुशलक्षेम पूछबोला जहां गयेथे वहांकी बातकहो॥

चौ० सुनिअक्रूरकहैसमझाय। ब्रजकीमहिमाकहीनजाय॥
कहानन्दकीकरौंबड़ाई। बाततुम्हारीशीशचढ़ाई॥
रामकृष्ण दोऊहैं आये। भेंटसबै ब्रजबासी लाये॥
डेरा कियेनदी केतीर। उतरे गाड़ा भारी भीर॥

यहसुन कंस प्रसन्न होबोला अक्रूरजी तुमने आज हमारा बड़ा काज क या जो रामकृष्ण को ले आये अब घर जाय बिश्राम करो॥

इतनी कथाकह शुकदेव जीने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज कंसकी आज्ञा पाय अक्रूर जीतो अपने घरगये वह शोच बिचार करने लगा और जहां नन्द उपनन्द बैठेथे तहां उनसे हलधर औ गोबिन्द ने पूछा जो हम आपकी आज्ञा पावें तो नगर देखआवें यह सुनि पहिलेतो नन्दराय जीने कुछ खाने को मिठाई निकाल दी उन दोनों भाइयों ने मिलकर खायली पीछेबोले अच्छाजाओ देखआओ परविलम्ब मतकीजो॥

इतना बचन नन्द महर के मुख से निकलतेही आनन्द कर दोनों भाई अपने ग्वालबाल सखाओं को साथले नगर देखने चले आगे बढ़देखें तो नगरके बाहर चारों ओर बन उपबन फूल फल रहेहैं तिन पर पक्षी बैठे अनेक अनेक भांति की मन भावन बोलियां बोलते हैं और बड़े २ निर्मल जलभरे सरोवरहैं उनमें कमल खिलेहुए जिनपर भौरों के झुंडके झुंड गूंज रहे और तीर में हंस सारस आदि पक्षी कलोलें कर रहे शीतल सुगन्धसनी मन्द पवन बह रही औ बड़ी बड़ी बाड़ियों की बाड़ों पर पनवाड़ियां लगी हुई बीच बीच बरण बरण के फूलों की क्यारियां कोसों तक फूली हुई ठौर २ इन्दारों बाबाड़ियोंपर रहट परोहे चल रहे माली मीठेर स्वरोंसे गाय २ जल सींच रहे॥

यह शोभा बन उपबन की निरख हर्ष प्रभु सब समेत मथुरा पुरी में पैठे वह पुरी कैसीहै कि जिसके चारोंओर तांबेका कोट औ पक्की चुआन चौड़ी खाई स्फटिकके चार फाटक तिनमें अष्टधाती किवाड़ कंचन खचित लगे हुये औ नगरमें बरन२ के गाते पीलेहरे धौले पचखने सतखनेमन्दिर ऊंचेसे कि घटासे बातेंकर रहे जिनके सोनेके कलश कलशियोंकी ज्योति

बिजलीसी चमकरही ध्वजा पताका फहराय रही जाली झरोखों मोखों से धूप की सुगन्ध आय रही द्वार२ पर केले केखम्भ औ सुबर्णके कलश सपल्लव धरे हुये तोरण बन्दनवार बंधीहुई घर २ बाजन बाजरहे औ एक ओर भांति २ के मणिमय कंचनके मन्दिर राजाके न्यारेही जगमगाय रहे तिनकी शोभा कुछ बरणी नहीं जाती ऐसीजो सुन्दर सुहावनी मथुरापुरी तिसे श्रीकृष्ण बलदेव ग्वालबालों को साथ लिये देखते चले ॥

दो० परीधममथुरानगर आवत नन्द कुमार।
सुन धायेपुरलोगसब गृहकोकाज बिसार॥

चौ०औरजोमथुराकीसुन्दरी सुनतकानअतिआतुरखरी॥
कहैं परस्पर बचनउचारी। आवतहैं बलभद्र मुरारी॥
तिन्हें अक्रूर गयेहैं लैन। चलउसखीअबदेखियेनैन॥
कोऊ खाते न्हातेंभजैं॥ गुहत शीशकोऊ उठितजैं॥
कामकेलिपियकीबिसरावैं। उलटेभूषण बसन बनावैं॥
जैसेही तैसे उठि धाईं। कृष्णदरशदेखनकोआईं॥

सो० लाजकान डरडार कोऊ खिरकिन कोऊ अटन।
कोऊ खरी दुआर कोउ दौरी गलियन फिरत॥

चौ० ऐसेजहांतहांखड़िनारि। प्रभुहिंबतावैंबांहपसारि॥
नीलबसन गोरेबलराम। पीताम्बरओढ़ेघनश्याम॥
येभानजे कंसके दोऊ। इनतेअसुरबच्योनहिंकोऊ॥
सुनतऊतीपुरुषारथजिनको। देखौरूपनयन भरितिनको॥
परबजन्मसुकृतकोउकीनो। सोबिधिपददर्शनफलदीनो॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवमुनि बोले कि महाराज इसी रीति से सब पुरबासी क्या स्त्री क्या पुरुष अनेक प्रकार की बातें कह कह दर्शन कर मगन होते थे और जिस हाट बाट चौहटे में हो सब समेत कृष्ण बलराम निकलतेथे तहीं अपने कोठों पर खड़े इनपर चोवा चन्दन छिड़क२ आनन्दसे वे फूल बरसाते थे औ ये नगर की शोभा देख देख ग्वाल बालोंसे यों कहते जाते थे भैया कोई भूलियो मत औ जो कोई भूले तो पिछले डेरों पर जाइयो इसमें कितनी एक दूर जायके देखते क्याहैं कि कंसके धोबी धोये कपड़ों की लादियां लादे पीठे मोटे लिये मद पियेरंग राते कंस यश गाते नगरके बाहरसे चले आतेहैं उन्हें देख कृष्णचन्द्र ने

बलदेवजीसे कहा कि भैया इनके सबचीर छीनलीजिये और आपपहर ग्वाल बालों को पहराय बचे सो लुटाय दीजिये भाईको यों सुनाय सब समेत धोबियों के पास जाय हरि बोले ॥

चौ० हमको उज्जलकपड़ादेऊ।राजहिंमिलआवैंफिरलेऊ॥
जोपहिरावनिनृपसोंपैहैं। तामेंते कुछतुम को दैहैं॥

इतनी बातके सुनतेहोउनमेंसे जो बड़ाधोबीथासो हंसकर कहनेलगा ॥

सो० राखैं खरी बनाय ह्वै आवो नृपद्वारलौं।
तब लीजोपटआय जौचाहोसोंदीजियो॥

चौ० बनबनफिरतचरावतगैयाजातिअहिरकामरीउढ़ैया॥
नटको भेष बनाये आये। नृपअम्बरपहरनमनभाये॥
जुरिके चलेनृपति के पास। पहिरावन लेवे की आस॥
नेकुआशजीवनकीजोऊ। खोवनचहौवहौपुनिसोऊ॥

यह बात धोबीकी सुनकर हरिने फिर मुसकराय कहा हम तो सूधी चालसे मांगते हैं तुम उलटी क्यों समझते हो कपड़े देनेसे कुछ तुम्हारा न बिगड़ेगा बरन यश लाभ होगा यह बचन सुनकर रजक झुंझलाय कर बोला राजा के आगे पहरने का मुंह तो देखो मेरे आगेसे जा नहीं अभी मारडालता हूं इतनी बात के सुनतेही क्रोधकर श्री कृष्णचंद्र ने तिरछा कर एक हाथ मारा कि उसका शिर भुट्टासा उड़गया तब जितने उसके साथी और टहलुये थे सबके सब पोटेमोटें लादियां छोड़ अपना जीव ले भागे और कंसके पास जा पुकारे यहां श्रीकृष्णजी ने सब कपड़े ले लिये औ आप पहन भाई को पहनाय ग्वालबालों को बांट रहे सो लुटायदिये तिस समय ग्वाल बाल अति प्रसन्न हो २ लगे उलटे पुलटे बस्त्र पहरने॥

दो० कटि कस पग पहरेभंगा सूथन मेलें बांह॥
बसन भेद जाने नहीं हंसतकृष्ण मनमांह॥

जो वहां से आगे बढ़े तो एक सूचीने आय दण्डवत् करखड़े होय कर जोड़ के कहा महाराज मैं कहनेको तो कंस का सेवक कहलाता हूं पर मनसे सदा आपही का गुण गाता हूं दया कर कहो तो आगे पहराऊं जिससे तुम्हारा दास कहाऊं ॥

इतनी बात उसके मुखसे निकलतेही अन्तर्य्यामी श्रीकृष्णने उसे अपना भक्त जान निकट बुलाके कहा तू भले समय आया अच्छा पहरायदे तब

तो उसने झटपटही खोल उधेड़ कतर छांट सींकर ठीक ठाक बनाय चुन २ रामकृष्ण समेत सबको आगे पहराय दिये उसकाल नन्दलाल उसे भक्ति दे साथ ले आगे चले ॥

चौ० तहांसुदामामालीआयो।आदरकरअपनेघरलायो॥
सबहीको मालापहिराई। मालीके घर भईबधाई॥

इति श्री लालकृतेप्रेमसागरे पुरप्रवेशोनाम द्विचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४२ ॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि पृथ्वीनाथ माली की लगन देख मगन हो श्री कृष्णचंद्र उसे भक्ति पदार्थ दे वहांसे आगे जाय देखें तो सोहीं गली में एक कुबड़ी केशर चन्दनसे कटोरियां भरे थालीके बीच धरे लिये हाथमें खड़ीहे उससे हरिने पूछा तू कौन हे ओ यह कहां लेचली हे वह बोली दीन दयाल मैं कंस की दासीहूं मेरा नामहे कुबड़ी नित चन्दन घिसकंस के लगाती हूं ओ मनसे तुम्हारे गुण गाती हूं तिसी के प्रताप से आज आप का दर्शन पाय जन्म स्वार्थ किया ओनयनों का फललिया अबदासी का मनोरथ यहहे जोप्रभुकी आज्ञा पाऊं तो चन्दन अपने हाथों चढ़ाऊं ॥

उसकी अति भक्ति देख हरिने कहा जो तेरी इसीमें प्रसन्नता हे तो लगाव इतना बचन सुनतेही कुब्जाने बड़े राव चाव से चित्त लगाय जब रामकृष्ण को चन्दन चरचा तब कृष्णचंद्र ने उस के मन की लगन देख दयाकर पांवपर पांवधर दोउंगली ठोढ़ीके तले लगाया उचकाय उसेसीधा किया हरि का हाथ लगतेही वह महासुन्दरी हुई ओर निपट बिनती कर प्रभुसे कहने लगी कि कृपानाथ ज्यों आपने कृपाकर इस दासीकीदेह सूधीकी त्योंही दया कर अब चलके घर पवित्र कीजे ओ विश्रामले दासी को सुख दीजे यहसुन हरि उसका हाथ पकड़ मुसुकरायके कहने लगे ॥

चौ० तैंअमदूरहमारोकियो।मिलिकैशीतलचंदनदियो॥
रूपशीलगुणसुंदरनीकी।तोसोंप्रीतिनिरंतरजीकी॥
आयमिलोंगोकंसहिमारि।योंकहआगेचलेमुरारि॥

ओर कुब्जा अपने घर जायकेशर चन्दन से चौक पुराय हरिके मिलने की आश मन में रख मंगलाचार करने लगी ॥

चौ० आयतहांमथुराकीनारि। करैंअचम्भोकहैंनिहारि॥
धनिधनिकुब्जातेरोभाग।जाकोबिधनादियोसुहाग॥
ऐसोकहाकठिनतपकियो। गोपीनाथभेटभुजलियो॥

हमनीकेदेखेनहिंहरी। तोकोंमिलेप्रीतिअतिकरी ॥
ऐसे तहां कहैं सबनारी। मथुरा देखतफिरैं मुरारी ॥

इस बीच नगर देखते २ सब समेत प्रभु धनुष पौर पर जा पहुंचे इन्हें अपने रंगराते माते जाते देखतेही पौरिये रिसाय के बोले इधर किधर चले आते हो गवांर दूर खड़े रहो यह है राजद्वार द्वारपालों की बात सुनी अनसुनी कर हरि सब समेत दर्राने वहां चले गये जहां तीन ताड़ लम्बा अति मोटा भारी महादेव का धनुष धरा था जातेही झट उठाय चढ़ाय सहज स्वभावही खैंच यों तोड़ डाला कि ज्यों हाथी गाड़ा तोड़ता है ॥

इसमें सब रखवाले कंस के बिठाये धनुष की चौकी देते थे सो चढ़ आये प्रभु ने उन्हें भी मार गिराया तिस समय पुरबासी तो यह चरित्र देख बिचार कर निश्शंक हो आपस में यों कहने लगे कि देखो राजा ने घर बैठे अपनी मृत्यु आप बुलाई है इन दोनों भाइयों के हाथ से अब जीता बचेगा नहीं और धनुष टूटने का अति शब्द सुन कंस भय खाय अपने लोगों से पूछने लगा कि यह महा शब्द काहे का हुआ इस बीच कितने एक लोग राजा के जो दूर खड़े देखते थे वे मूड़ फिकार यों जा पुकारे कि महाराज की दुहाई रामकृष्ण ने आय नगरीमें बड़ी धूम मचाई शिव का धनुष तोड़ सब रखवालों को मारडाला ॥

इतनी बात के सुनतेही कंस ने बहुत से योद्धाओं को बुला के कहा तुम इनके साथ जाओ औ कृष्ण बलदेवको छल बल कर अभी मार आओ इतना बचन कंसके मुखसे निकलतेही ये अपने अस्त्र शस्त्र ले वहां गये जहां वे दोनों भाई खड़े थे इन्होंने उन्हें ज्यों ललकारा त्यों उन्होंने इन सबोंको भी आय मार डाला जद हरिने देखा कि यहां कंसका सेवक अब कोई नहीं रहा तब बलरामजी से कहा कि भाई हमें आये बड़ी बेर हुई डेरों पै चला चाहिये क्योंकि बाबा नन्द हमारी बाट देख २ भावना करते होंयगे यों कह सब ग्वालबालों को साथ ले प्रभु बलराम समेत चल कर वहां आये जहां डेरे पड़े थे आतेही नन्दमहर से तो कहा कि पिता हम नगरमें जाय भला कुतूहल देख आये औ गोप ग्वालोंको अपने बागे दिखला लाये ॥

चौ० तहंलखिनन्दकहैंसमझाया।काम्हतुम्हारीटेंवनजाय॥
ब्रजबन नहीं हमारौ गांव। यह है कंसराय्रको ठांव ॥

यहंजनि कछू उपद्रव करौ। मेरीसीख पूत मन धरौ॥

जद नन्दरायजी ऐसे समुझाय चुके तद नन्दलाल बड़े लाड़से बोले कि पिता भूंख लगी है जो हमारी माता ने खाने को साथ कर दिया है सो दीजिये इतनी बात के सुनतेही उन्होंने जो पदार्थ खानेका साथ आया था सो निकाल दिया कृष्ण बलदेवने ले ग्वालबालों के साथ मिलकर खा लिया इतनी कथा कह श्रीशुकदेव मुनि बोले कि महाराज इधर तो ये आय परमानन्दसे ब्यालू कर सोये औ उधर श्रीकृष्णकी बातें सुन २ कंस के चित्त में अति चिन्ता हुई तो न उसे बैठे चैन था न खड़े मनहीं मन कुढ़ता था अपनी पीर किसी से न कहता था कहा है॥

दो० ज्यों काठहिं घुन खात है कोऊ न जानै पीर॥
त्यों चिन्ता चित में भई बुधि बल घटत शरीर॥

निदान अति घबड़ाय तब मन्दिर में जाय सेज पर सोया पर उसे मारे डर के नींद न आई॥

चौ० तीनपहरनिशिजागतगई। लागीपलकनींदक्षणभई॥
तबसपनोदेख्योमनमाहिं। फिरैशोशबिनघड़कीछांहिं॥
कबहूं नगन रेत में न्हाय। धावै गदहा चढ़ बिषखाय॥
बसे मसान भत संग लिये। रक्त फूल की माला हिये॥
बरत रूख देखै चहुं ओर। तिनपरै बैठे बाल किशोर॥

महाराज जब कंसने ऐसा स्वप्न देखा तबतो वह अति ब्याकुलहो चौंक पड़ा औ शोचबिचार करताउठकर बाहर आया अपनेमंचियोंको बुलाय बोला तुम अभी जावो रंगभूमिको झड़वाय छिड़कवाय संवारो और नन्दउपनन्द समेत सब ब्रजबासियों को औ बसुदेव आदि यदुबंशियों को रंगभूमि में बुलाय बिठाओ औ सब देश २ के जोराजा आयेहैं तिन्हेंभी इतनेमें मैंभी आताहूं॥

कंसकी आज्ञापाय मंची रंगभूमिमें आये उसे झड़वाय छिड़कवाय तहां पाटम्बर छाय बिछाय ध्वजा पताका तोरण बंदनवार बंधवाय अनेक २ भांतिके बाजे बजवाय सबको बुलाय भेजा वे आये औ अपने २ मंच पर जाय जाय बैठे इस बीच राजा कंसभी अति अभिमान भरा अपने मचान पर आय बैठा उसकाल देवता बिमानों में बैठे आकाश से देखने लगे॥

इतिश्रीलालकृतेप्रेमसागरेकंसस्वप्नदर्शनानामचयश्चत्वारिंशोऽध्यायः॥ ४३॥

श्री शुकदेवमुनि बोले कि महाराज भोरही जब नन्द उपनन्द सब बड़े २ गोप रंगभूमि की सभामें गये तब श्रीकृष्णचंद्रजी ने बलदेवजी से कहा कि भाई सब गोप आय गये अब बिलम्ब न करिये शीघ्र ग्वालबाल सखाओं को साथ ले रंगभूमि देखने चलिये ॥

इतनी बातके सुनतेही बलरामजी उठ खड़े हुये औ सब ग्वाल बाल सखाओंसे कहा कि भाइयो चलो रंगभूमिकी रचना देख आवें यहबचन सुनते ही तुरंत सब साथ हो लिये निदान श्रीकृष्ण बलराम नटवर भेष किये ग्वालबाल सखाओं को साथ लिये चले २ रंगभूमि की पौरपर आय खड़े हुये जहां दश सहस्र हाथियों का बलवाला गज कुबलया पीड़ खड़ा झूमता था ॥

चौ० । देखिमतंगद्वारमतवारो । गजपालहिंबलरामपुकारो ॥
सुनोमहावतबातहमारी । लेऊद्वारतें गजतुम टारी ॥
जानदेऊ हमकोनृपपास । नातर ह्वै है गजकोनाश ॥
कहेदेतनहिंदोषहमारो । मतजानेहरिको तबारो ॥

ये त्रिभुवनपति हैं दुष्टोंको मार भूमिका भार उतारने को आये हैं यह सुन महावत क्रोधकर बोला मैं जानता हूं गोचराय के त्रिभुवनपति भये हैं इसीसे यहां आय बड़े शूर की भांति अड़े खड़े हैं धनुषका तोड़ना न समझियो मेरा हाथी दशसहस्र हाथियोंका बल रखता है जबतक इससे न लड़ोगे तबतक भीतर न जानेपावोगे तुमनेतो बहुत बलीमारे हैं परआज इसके हाथ से बचोगे तब मैं जानूंगा कि तुम बड़े बली हो ॥

दो० । तबैकोपिंहलधरकह्यो । सुन रे मूढ़ कुजात ॥
गजसमेतपटकौं अबहिं । मुखसंभारिकऊबात ॥
सो० । नेकु न लगि है बार । हाथीमरिजैहैअबहिं ॥
तोसों कहत पुकार । अबऊंमानमेरो कह्यो ॥

इतनी बातके सुनतेही झुंझुला कर गजपालने गज पेला ज्योंवह बलदेव जी पर टूटा त्यों इन्होंने हाथ घुमाय एक थपेड़ा ऐसा मारा कि वह सूंड़ सकोड़ चिंघाड़ मार पीछेहटा यहचरित्र देख कंसके बड़े २योद्धा जोखड़े देखतेथे सो अपने जियोंमे हार मान मनहीं मन कहने लगे कि इनमहां बलवानों से कौन जीत सकेगा औ महावत भी हाथी को पीछे हटाजान अतिभय मान जीमें बिचार करने लगा कि जो बालक न मारे जांय

तो कंसभी मुझे जीता न छोड़ेगा यों सोच समझ उसने फिर अंकुश मार हाथीको तता किया औ इन दोनों भाइयोंपर हूलदिया उसने आतेही सूंड़ से हरिको पटक पछाड़ खुनसाय जो दांतोंसे दबाया तो प्रभु सूक्ष्म शरीर बनाय दांतों के बीच बच रहे ॥

दो० । डरपि उठे तिहिकाल सबसुर मुनि पुर नर नारि ।
दुहूं दशन बिचहूं कढ़े बलनिधि प्रभु देतारि ॥

सो० । उठै गजहिके साथ बछरि ख्याल हो हांकदे ॥
तुरतहि भये सनाथ देखि चरित सब श्यामके ॥

हांकसुनतअतिकोपबढ़ायो । झटकिसुंडबछरोगजधायो ॥
रहेउ दरतरदबकिमुरारी।गयोजानगजरह्योनिहारी
पाछे प्रगट फेर हरिटेरो । बलदाऊ आगे तै घेरो ॥
लागेगजहिखिलावनदोऊ।भैचकरहेदेखिसबकोऊ॥

महाराज उसे कभी बलराम सूंड़ पकड़ खैंचते थे कभी श्याम पूंछपकड़ और जब वह इन्हें पकड़ने को आताथा तब ये अलग होजाते थे कितनी एक बेर ताईं उस्से ऐसे खेलते रहे जैसे बछड़ों के साथ बालकपन में खेलते थे निदान हरिने पूंछ पकड़ फिराय उसे दे पटका और मारे घूसोंके मार डाला दांत उखाड़ लिये तब उसके मुखसे लोहू नदीकी भांति बह निकला हाथीके मरतेही महावत ललकार कर आया प्रभुने उसेभी हाथी के पांव तले झट मारगिराया और हंसते हंसते दोनों भाई नटवर भेष किये एक एक दांत हाथीका हाथमें लिये रंगभूमिके बीच जा खड़े हुये उस काल नन्दलाल को जिन जिन ने जिस जिस भावसे देखा उस उस को विसी २ भाव से दृष्टि आये मल्लोंने मल्ल माना राजाओं ने राजा जाना देवताओं ने अपना प्रभू बूझा ग्वालबालों ने सखानन्द उपनन्द ने बालक समझा औ पुरकी युवतियों ने रूपनिधान औ कंसादिक राक्षसों ने काल समान देखा महाराज इनको निहारतेही कंस अतिभयमान हो पुकारा अरे मल्लों इन्हें पछाड़ मारो मेरे आगेसे टालो ॥

इतनी बात ज्यों कंस के मुंहसे निकली त्यों सब मल्ल गुरू सुत चेले संगलिये बरण २ के भेष किये ताल ठोंक २ भिड़नेको श्रीकृष्ण बलरामके चारों ओर घिर आये जैसे वे आये तैसे ये भी संभल खड़े हुए तब उनमें

से इनकी ओर देख चतुराईकर चाणूर बोला सुनो आज हमारे राजा कुछ उदास हैं इस्से जी बहलाने को तुम्हारा युद्ध देखा चाहतेहैं क्योंकि तुम ने बनमें रह सब बिद्या सीखी हैं और किसी बातका मनमें सोच न कीजे हमारे साथ मल्ल युद्ध कर अपने राजाको सुखदीजे श्रीकृष्ण बोले राजा जीने बड़ी दया कर हमें बुलाया है आज हमसे क्या सरेगा इनका काज तुम अतिबली गुणवान् हम बालक अजान तुमसे हाथ कैसे मिलावें कहा है ब्याह बैर औ प्रीति समानसे कीजे पर राजाजीसे कुछ हमारा बशनहीं चलता इससे तुम्हारा कहा मानतेहैं हमें बचालीजो बलकर पटक मत दीजो अब हमें तुम्हें उचित है जिसमें धर्मरहे सो कीजिये औ मिल कर अपने राजाको सुख दीजिये ॥

चौ० तबचाणूरकहैभयखाय । तुम्हरीगतिजानीनहिंजाय ॥
तुमबालकमानुषनहिंदोऊ । कीन्हेकपटबलीहौकोऊ ॥
खेलत धनुष खंड द्वैकरे । मारे तुरत कुबलया तरे ॥
तुमसे लरेहानि नहिंहोय । याबातें जाने सब कोय

इतिश्रीलालकृतेप्रेमसागरेकुबलियाबधोनामचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४४ ॥

श्री शुकदेव मुनि बोले कि पृथ्वीनाथ ऐसे कितनी एक बातें कर ताल ठोक चाणूर तो श्रीकृष्णके सोंहींहुआ औमुष्टिक बलरामजी से भिड़ा उनसे इनसे मल्ल युद्ध होने लगा ॥

दो० शिरसों शिर भुजसोंभुजा दृष्टि दृष्टि सों जोरि
चरण चरण गहि झपटकै लपटत झपट झकोरि ॥

उसकाल सब लोग इन्हें उन्हें देख देख आपस में कहने लगे कि भाइयो इस सभा में अति अनीति होती है देखो कहां ये बालक रूप निधान कहां ये सबल मल्ल बज्र समान जो बरजें तो कंस रिसाय न बर्जे तो धर्मजाय इससे अब यहां रहना उचित नहीं क्योंकि हमारा कुछबश नहीं चलता ॥

महाराज इधर तो ये सबलोग यों कहते थे और उधर श्रीकृष्ण बलराम मल्लों से मल्लयुद्ध करतेथे निदान इन दोनों भाइयों ने उन दोनों मल्लों को पछाड़ मारा उनके मरतेही सब मल्लआय टूटे प्रभुने पल भरमें तिन्हें भी मार गिराया तिस समय हरिभक्त तो प्रसन्न हो बाजनबजाया बजाय जय जय कार करनेलगे औ देवता आकाशसे अपने बिमानों में बैठे

कृष्ण यश गाय २ फूल बर्षाने लगे और कंस अति दुःख पाय व्याकुल हो रिसाय अपने लोगोंसे कहने लगा अरे बाजेवाले बाजे बजाते हो तुम्हें क्या कृष्ण की जीत भातीहै ॥

यो कह बोला येदोनों बालक बड़े चञ्चलहैं इन्हें पकड़ बांध सभा से बाहर ले जाओ औ देवकी समेत उग्रसेन बसुदेव कपटी को पकड़ लाओ पहले उन्हें मार पीछे इन दोनों को भी मारडालो इतना बचन कंस के मुखसे निकलतेही भक्तोंके हितकारी मुरारी सब असुरोंको डगा भरमेंमार उछलके वहां जा चढ़े जहां अति ऊंचे मंचपर झिलम पहने टोपदिये फरी खांड़ा लिये बड़े अभिमान से कंस बैठाथा वह इनको काल समान निकट देखतेही भयखाय उठ खड़ाहुआ औ लगा थरथर कांपने ॥

मनसे तो चाहा कि भागूं पर मारे लाजके भाग न सका फरी खाड़ा संभाल लगा चोट चलावने ॥

उस काल नन्दलाल अपनी घात लगाये उसकी चोट बचाते थे सुर मुनि औ गन्धर्ब यह महायुद्ध देख देख भय मान हो यों पुकारते थे हे नाथ हेनाथ इस दुष्टको बेग मारो कितनी एक बेर तक मंचपर युद्ध रहा निदान प्रभुने सबको दुखित जान उसके केश पकड़ मंच से नीचे पटका औ ऊपर से आप भी कूदे कि उसका जीव घटसे निकल सटका तबसब सभाके लोग पुकारे श्रीकृष्णचंद्र ने कंस को मारा यह शब्द सुन सुर नर मुनि सबको अति आनन्द हुआ ॥

दो० कर स्तुति पुनि २ हरष बरष सुमन सुर वृन्द ।
मुदित बजावतदुंदुभी कहि जय २ नँदनन्द ॥

सो० मथुरा पुर नर नारि अति प्रफुल्ल सबको हियो ।
मनऊ कुमुदबनचारु बिकशितहरिमुखशशिनिरखि ॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी ने राजा परीक्षित से कहा कि धर्मावतार कंस के मरतेही जो अति बलवान् आठ भाई उसके थे सो लड़ने को चढ़ आये प्रभुने उन्हें भी मार गिराया जब हरि ने देखा कि अब यहां राजस कोई नहीं रहा तब कंस की लोथको घसीट यमुना तीर

पर ले आये औ दोनों भाइयों ने बैठ विश्राम लिया तिस दिन से उस ठौर का नाम विश्रामघाट हुआ ॥



आगे कंस का मरना सुन कंस की रानियां देवरानियों समेत अति व्याकुल हो रोती पीटती वहां आई जहां यमुना के तीर दोनों ओर मृतक लिये बैठे थे औ लगीं अपने पति का मुख निरख २ सुख सुमिर गुण गाय२ व्याकुल हो २ पछाड़ खाय २ मरने कि इस बीच करुणानिधान कान्ह करुणाकर उनके निकट जा बोले ॥

चौ० माईंसुनऊ शोकनहिंकीजै । मामाजीकोपानीदीजै ॥
सदा न कोऊ जीवतरहै । झूंठोसो जो अपनोकहै ॥
मातपितासुतबंधुनकोई।जन्ममरणफिरहीफिरहोई॥
जौलौं जासों सनबँधरहै । तौहीलौं मिलकै सुखलहै ॥

महाराज जद श्रीकृष्णचन्द्र ने रानियों को ऐसे समुझाया तद उन्होंने वहां से उठ धीर्य्य धर यमुना तीर पर आ पति को पानी दिया औ आप प्रभु ने अपने हाथ कंस को आग दे उसकी गति की ॥

इति श्रीलालकृते प्रेमसागरे कंसासुरबधो नाम पञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः ॥४५॥

श्रीशुकदेवमुनि बोले कि हे राजा रानियां तो देवरानियों समेत वहां से न्हाय धोय रोय राजमन्दिर को गईं औ श्रीकृष्ण बलराम बसुदेव देवकी के पास आय उनके हाथ पांव की हथकड़ियां बेड़ियां काट दण्डवत् कर हाथ जोड़ सन्मुख खड़े हुये तिस समय प्रभुका रूप देख बसुदेव देवकी को ज्ञान हुआ तो उन्हों ने अपमेजी में निश्चय कर जाना कि ये दोनों बिधाताहैं असुरों को मार भूमि का भार उतारने को संसारमें अवतार ले आये हैं ॥

जब बसुदेव देवकी ने यों जाना तब अन्तर्य्यामी हरि ने अपनी माया फैलाय दी उसने उनकी यह मति हरि ली फिर तो उन्होंने इन्हें पुचकर समझा कि इतने में श्रीकृष्णचन्द्र अति दीनता कर बोले ॥

तुमबड़ुदिवसलह्योदुखभारीकरतरहेअतिसुरतिहमारी॥

इसमें हमारा कुछ अपराध नहीं क्योंकि जब से आप हमें गोकुल में नन्द के यहां रख आये तब से परबश थे हमारा बश न था पर मन में सदा यह आता था कि जिसके गर्भ में दशमहीने रह जन्म लिया उसे कभी कुछ सुख न दिया न हमहीं माता पिता का सुख देखा बृथा जन्म पराये यहां खोया उन्होंने हमारे लिये अति बिपत्ति सही हमसे कुछ उनकी सेवा न भई संसार में सामर्थी वेई हैं जो मा बाप की सेवा करते हैं हम उनके ऋणी रहे टहल न करसके ॥

पृथ्वीनाथ जब श्रीकृष्णजी ने अपने मनका खेद यों कह सुनाया तब अति आनन्द कर उन दोनों ने इन दोनों को हितकर कण्ठ लगाया औ सुखमान पिछला दुःख सब गंवाया ऐसे माता पिता को सुख दे दोनों भाई वहां से चले २ उग्रसेन के पास आये औ हाथ जोड़ कर बोले ॥

चौ० नानाजीअबकीजैराज। शुभनक्षचनीकोदिनआज॥

इतना हरि के मुख से निकलतेही राजा उग्रसेन उठकर आ श्रीकृष्णचन्द्र के पावों पर गिर कहने लगे कि कृपानाथ मेरी बिनती सुनलीजिये जैसे आपने सब असुरों समेत कंस महादुष्ट को मार भक्तों को सुख दिया तैसेही सिंहासन पै बैठ अब मथुपुरी का राज्यकर प्रजापालन कीजिये प्रभु बोले महाराज यदुबंशियों को राज्य का अधिकार नहीं इस बातको सब कोई जानता है जब राजा ययाति बूढ़े हुये तब अपने पुत्र यदु को उन्हों ने बुलाकर कहा अपनी तरुण अवस्था मुझे दे और मेरा

बुढ़ापा तूले यह सुन उसने अपने जी में बिचारा कि जो मैं पिता को युवाअवस्था दूंगा तो यह तरुण हो भोग करेगा इससे मुझे पाप होगो इस में नहीं करनाहीं भला है यों शोच समझ के उसने कहा कि पिता यह तो मुझसे न हो सकेगा इतनी बात के सुनतेही राजा ययाति ने क्रोध कर शाप दिया कि जा तेरे बंश में राजा कोई न होगा ॥

इसबीच पुरुनाम उनका छोटाबेटा सम्मुख आ हाथजोड़ बोला पिता अपनी बृद्ध अवस्था मुझे दो औ मेरी तरुणाई तुम लो यह देह किसी काम का नहीं जो तुम्हारे काम आवे तो इस्से उत्तम क्या है जब पुरु ने यों कहा तब राजा ययाति प्रसन्नहो अपनी बृद्ध अवस्था दे उसकी युवा अवस्था ले बोले कि तेरे कुल में राजगद्दी रहेगी इस्से नाना जी हम यदुबंशी हैं हमें राज्य करना उचित नहीं ॥

सो० करौ बैठ तुमराज दूर करो सन्देह सब ।
हम करिहैं सब काज जो आयसु देहौ हमें ॥

चौ० जोनमानिहैंआनितिहारीताहिदंडकरिहैंहमभारी
औरकछूचित सोचनकीजैनीतिसहितपरजैसुखदीजै
यादवजिते कंसकी त्रास नगर छांड़िकै गये प्रवास ॥
तिनकोअबकरिखोजमँगाओसुखदैमथुरामांझबसाओ
बिप्र धेनु सुर पूजन कीजै इनकी रक्षा में चित दीजै ॥

इतनीकथा कह श्रीशुकदेवमुनि बोले कि धर्मावतार महाराजाधिराज भक्तहितकारी श्रीकृष्णचन्द्र ने उग्रसेनको अपना भक्त जान ऐसे समझाय सिंहासन पर बिठाय राजतिलक दिया और छत्रफिरवाया दोनों भाइयों ने अपने हाथों चमर किया ॥

उसकाल सब नगर के बासी अति आनन्द में मगन हो धन्य धन्य कहने लगे और देवता फूल बर्षावने महाराज यों उग्रसेन को राज पाट पर बिठाय दोनों भाई बहुत से बस्त्र आभूषण अपने साथ लिवाय वहां से चलेर नन्दरायजी के पास आये और सम्मुख हाथ जोड़ खड़ेहो अति दीनता कर बोले हम तुम्हारी क्या बड़ाईकरें जो सहस्र जीभ होंय तोभी तुम्हारे गुणका बखान हम से न हो सके तुमने हमें अति प्रीति कर अपने पुत्रकी भांति पाला सब लाड़ प्यार किया और यशोदा मैया भी

बड़ा स्नेह करतीं औ अपना हित हमहीं पर रखतीं सदा निज पुत्रसमान जानतीं कभी मनसे भी हमें पराया कर न मानतीं ॥

ऐसे कह फिर श्रीकृष्णचन्द्र बोले कि हे पिता तुम यह बात सुनकर कुछ बुरा मत मानो हम अपने मनकी बात कहतेहैं कि माता पितातो तुम्हेंही कहेंगे पर अब कुछदिन मथुरा में रहेंगे अपने जाति भाइयोंको देख यदुकुल की उत्पत्ति सुनेंगे और माता पिता से मिल उन्हें सुखदेंगे क्योंकि उन्होंने हमारे लिये बड़ा दुःख सहाहे जो हमें तुम्हारे यहां न पहुंचा आते तो वे दुःख न पाते इतना कह वस्त्र आभूषण नन्दमहर के आगेधर प्रभुने निर्मोही हो कहा ॥

चौ० मैयासोंपालागनकहियो । हमपैप्रेमकरेतुमरहियो॥

इतनी बात श्रीकृष्ण के मुखसे निकलतेही नन्दराय तो अति उदास हो लगे लम्बी सांसें लेने और ग्वाल बाल बिचार कर मनहीं मन यों कहने कि यह क्या अचम्भे की बात कहतेहैं इससे ऐसा समझमें आता है कि अबये कपटकर जाया चाहतेहैं नहींतो ऐसे निठुर बचन न कहते महाराज निदान उनमें से श्रीदामा नाम सखा बोला भैया कन्हैया अब मथुरामें तेरा क्या कामहै जो निठुराई कर पिताको छोड़ यहां रहताहै भलाकिया कंसको मारा सबका काजसम्हारा अब नन्दके साथहो लीजिये और वृन्दाबनमें चल राज कीजिये यहां का राजदेख मनमें मत ललचाओ वहां का सा सुख न पावोगे ॥

सुनो राज देखकर मूर्ख भूलते हैं औ हाथी घोड़े देख देख फूलते हैं तुम वृन्दाबन छोड़ कहीं मत रहो वहां सदा बसंत ऋतु रहती है सघन बन औ यमुना की शोभा मनसे नहीं बिसरती भाई जो वह सुख छोड़ हमारा कहा न मान माता पिता की माया तज यहां रहोगे तो इस में तुम्हारी क्या बड़ाई होगी उग्रसेन की सेवा करोगे और रातदिन चिन्ता में रहोगे जिसे तुमने राज दिया उसी के आधीन होना होगा यह अपमान कैसे सहा जायगा इससे अब उत्तम यहीहै कि नन्दराय को दुःख न दीजे इनके साथ हो लीजे ॥

चौ० ब्रजबननदीबिहारबिचारौगायनकोमनतेनबिसारौ
नहींछांड़िहैंहमब्रजनाथा।चलिहैंसबैतिहारेसाथा ॥

इतनीकथा कह श्रीशुकदेवमुनिने राजा परीक्षितसे कहा कि महाराज

ऐसे कितनी एक बातें कह दशबीस सखा श्रीकृष्ण बलराम जीके साथ रहे औ उन्हों ने नन्दराय से बुझा कर कहा कि आप सबको ले निस्संन्देह आगे बढ़िये पीछेसे हमभी इन्हें साथ लिये चले आते हैं इतनी बातके सुनतेही हुये॥

सो० आकुल सबै अहीर मानहुं पन्नग के डसे।
हरिमुख लखत अधीर ठाढ़े काढ़े चित्रसे॥

उस समय बलदेवजी नन्दराय को अति दुखित देख समझाने लगे कि पिता तुम इतना दुख क्यों पाते हो थोड़े एक दिनों में यहांका काजकर हमभी आते हैं आपको आगे इसलिये बिदा करते हैं कि माता हमारी अकेली व्याकुल होती होयगी तुम्हारे गयेसे उन्हें कुछ धीरज होगा नन्दजीबोले कि बेटा एकबार तुम मेरेसाथ चलो फिर मिलकर चलेआइयो॥

दो० ऐसेकहि अति बिकल हो रहे नन्द गहि पाय।
भईछीन द्युति मन्द मति नयनन जलन रहाय॥

महाराज जब मायारहित श्रीकृष्णचन्द्र जीने ग्वालबालों समेत नन्द रायको महा व्याकुल देखा तब मन में बिचारा कि ये मुझसे बिछड़ेंगे तो जीते न बचेंगे त्योंहीं उन्होंने अपनी उसमायाको छोड़ा जिसने सारे संसार को भुला रक्खा है उसने आतेही नन्दजी को सब समेत अज्ञान किया फिर प्रभु बोले कि पिता तुम इतना क्यों पछताते हो पहले यही बिचारो जो मथुरा औ बृन्दाबनमें अंतरही क्या है तुमसे हम कहीं दूर तो नहीं जाते जो इतना दुख पाते हो बृन्दाबनके लोग दुखी होंगे इसलिये तुम्हें आगे भेजते हैं॥

जद ऐसे प्रभुने नन्दमहरको समझाया तब वे धीरज धर हाथजोड़ बोले प्रभु जो तुम्हारेही जीमें यों आया तो मेरा क्या बश है जाता हूं तुम्हारा कहा टाल नहीं सक्ता इतना बचन नन्दजी के मुखसे सुनतेही हरिने सब गोप ग्वाल बालों समेत नन्दरायको तो वृन्दाबन बिदा किया औ आप कई एक सखाओं समेत दोनों भाई मथुरामें रहे उसकाल नन्द सहित गोप ग्वाल चले॥

चौ०चलेसकलमगशोचतभारी। हरिसरबसमनऊजुआरी॥
काहूसुधिकाहूसुधिनाहींलटपटचरणपरतमगमाहीं॥
जातबृन्दाबनदेखतमधुबनबिरहबिथाबाढ़ीव्याकुलतन

इसी रीति से ज्यों त्यों कर बृन्दाबन पहुंचे इनका आना सुनतेही यशोदा रानी अति अकुलाय कर दौड़ी आई औ राम कृष्ण को न देख महा ब्याकुल हो नन्दजीसे कहने लगीं ॥

चौ० अहो कंतसुतकहां गँवाये। पट आभूषणलीन्हेआये॥
कंचनफेंककांचघरराख्योअमृतछांड़िमढ़बिषचाख्यो
पारसपायअंधज्योंडारे। फिरगुणसुनेकोपारहिमारे॥

ऐसे तुमनेभी पुच गंवाये औ बसन आभूषण उनके पलटे ले आये अब उनबिन धन क्या करोगे हे मूर्ख कन्त जिनके पलक ओटभये छातीफटे कहो उन बिन दिन कैसे कटें जब उन्होंने तुमसे बिछुड़नेको कहा तब तुम्हारा हिया कैसे रहा ॥

इतनी बात सुन नन्दजीने बड़ा दुःख पाया औ नीचा शिर कर यह बचन सुनाया कि सच्च है ये बस्त्र अलंकार श्रीकृष्णने दिये पर मुझे यह सुधि नहीं वे किसने लिये और मैं कृष्णकी क्या बात कहूंगा सुनकर तू भी दुःख पावेगी ॥

चौ० कंसमारमोपैफिरआये। प्रीतिहरणकहिबचनसुनाये॥
बसुदेव के पुच वेभये। कर मनुहार हँकारी गये॥
होंतबमहरिअंचभेरह्यो। पोषणभरणहमारोकह्यो॥
अब न महरि हरिसों सुत कहिये।
ईश्वर जानि भजन करि रहिये॥

उसे तो हमने पहलेही नारायण जानाथा पर माया बश पुच कर माना महाराज जद नन्दरायजीने सच्च सच्च बातें श्रीकृष्ण की कहीं औ यशोदा ने सुनीं तिस समय मायाबश हो यशोदारानी कभीतो प्रभुको अपना पुच जान मनहीं मन पछताय ब्याकुलहो २ रोतीथीं और कभी ज्ञानकर ईश्वर जान उनका ध्यान धरगुण गाय गाय मनका खेद खोती थीं और इसी रीतिसेसब बृन्दाबनबासी क्या स्त्री क्या पुरुष हरिके प्रेमरंगराते अनेक अनेक प्रकार की बातें करते थे सो मेरी सामर्थ्य नहीं जो मैं वर्णन करूं इससे अब मथुरा की लीला कहता हूं तुम चित्त दे सुनो ॥

कि जब हलधर औ गोबिन्द नन्दराय को बिदाकर बसुदेव देवकीके पास आये तब उन्होंने इन्हें देख दुःख भुलाय ऐसे सुख माना कि जैसे तपी तपकर अपना तपका फल पाय सुख माने आगे बसुदेव देवकीने कहा

कि कृष्ण बलदेव पराये यहां रहे हैं उन्होंने उनके साथ खाया पिया है औ अपनी जाति का व्यवहार भी नहीं जानते इसी से अब उचितहै कि पुरोहितको बुलायकर पूछें जो वहकहे सोकरें देवकी बोली बहुत अच्छा ॥

तद बसुदेवजीने अपने कुल पूज्य गर्ग मुनिजी को बुला भेजा वे आये उनसे इन्होंने अपने मनका संदेह कहके पूछाकि महाराज हमेंक्या करना उचितहै सो दया कर कहिये गर्ग मुनि बोलेपहले सब जातिभाइयों को नौत बुलाइये पीछे जातकर्म कर रामकृष्ण को जनेऊ दीजे ॥

इतना बचन पुरोहित के मुख से निकलतेही बसुदेवजी ने नगर में नौता भेज सब ब्राह्मण यदुबंशियों को नौत बुलाया वे आये तिन्हें अति आदरमान कर बिठाया ॥

उस काल पहले तोबसुदेवजीने बिधिसे जातकर्म कर जन्मपत्री लिखवाय दश सहस्र गौ सोने के सींग तामे की पीठ रूपे के खुर समेतपाटम्बर उढ़ाय ब्राह्मणों को दीं जो श्रीकृष्णजी के जन्मके समय संकल्पी थीं पीछे मंगलाचार करवाय वेद की बिधिसे सब रीति भांति कर रामकृष्ण का यज्ञोपवीत किया और उन दोनों भाइयोंको कुछबिद्या पढ़ने को भेज दिया वे चले२ अवन्तिका पुरी का एक सांदीपन नामऋषि महापण्डितऔर बड़ा ज्ञानवान काशीपुरीमें था उसके यहां आये दंडवत् कर हाथ जोड़ सम्मुख खड़े हो अतिदीनता करबोले ॥

चौ० हमपरकृपाकरोऋषिराय विद्यादानदेहुमनलाय ॥

महाराज जब कृष्ण बलराम जीने सांदीपन ऋषिसे यों दीनता कर कहा तब उन्होंने इन्हें अति प्यारसे अपने घरमें रक्खा औ लगे बड़ी कृपाकर पढ़ावने कितने एक दिनों में ये चारवेद उपवेद छः शास्त्र नव व्याकरण अठारह पुराण मंच यंच तंच आगम ज्योतिष वैद्यक कोक संगीत पिंगल पढ़ चौदहों विद्या निधान हुये तब एक दिन दोनों भाइयों ने हाथ जोड़ अति बिनतीकर गुरुसे कहा कि महाराज कहाहै जो अनेक जन्म अवतारले बहुतेरा कुछ दीजिये तौ भी विद्या का पलटा न दिया जाय पर आप हमारी शक्ति देख गुरुदक्षिणा की आज्ञा कीजे तो हमयथा शक्ति दे अशीस ले अपने घर जांय ॥

इतनी बात श्रीकृष्ण बलरामके मुखसे निकलतेही सांदीपनऋषि वहां से उठ शोच बिचार करता घर भीतरगया और उसने अपनी स्त्रीसे इन का भेद यों समझा कर कहा कि ये राम कृष्ण जो दोनों बालक हैं सो

आदिपुरुष अविनाशी हैं भक्तों के हेतु अवतार ले भूमि का भार उतारने को संसारमें आयेहैं मैंने इनकी की लीलादेख यहभेद जाना क्योंकिजो पढ़पढ़ फिर फिर जन्म लेते हैं सो भी विद्यारूपी सागर की थाह नहीं पाते औ देखो इस बाल अवस्था से थोड़ेही दिनों में ऐसे अगम अपार समुद्र के पार होगये वे जो किया चाहें सो पल भर में कर सक्ते हैं इतना कह फिर बोले॥

चौ० इनपैकहामांगियेनारि। सुनिकैसुन्दरिकहैबिचारि॥
मृतकपुत्रमांगौतुमजाय। जोहरिहैंतो देहैं ल्याय॥

ऐसे घर में से बिचार कर सान्दीपन ऋषि स्त्री सहित बाहर आय कृष्ण बलदेवजी के सन्मुख कर जोड़ दीनता कर बोले महाराज मेरे एक पुत्र था तिसे साथ ले मैं कुटुम्ब समेत एक पर्व में समुद्र न्हाने गया था जो वहां पहुंच कपड़े उतार सब समेत तीर में न्हाने लगा तो एक सागरका बड़ी लहर आई उसमें मेरा पुत्र बह गया सो फिर न निकला किसी मगर मच्छने निगल लिया उसका दुःख मुझे बड़ा है जो आप गुरु दक्षिणा दिया चाहते हैं तो वही सुत लाय दीजे औ हमारे मनका दुःख दूर कीजे॥

यह सुन श्रीकृष्ण बलराम गुरुपत्नी औ गुरुको प्रणाम कर रथ पर चढ़ उनका पुत्र लेने के निमित्त समुद्र की ओर चले चले कितनी एक बेर में तीर पर जा पहुंचे कि इन्हें क्रोधवान आते देख सागर भयमान हो मनुष्य शरीर धारण कर बहुतसी भेट ले नीर से निकल तीर पर डरता कांपता इनके सोंही आ खड़ा हुआ औ भेट रख दण्डवत् कर हाथ जोड़ शिर नवाय अति बिनती कर बोला॥

चौ० बड़ोभागप्रभुदर्शनदयो। कौनकाजइतआपनभयो॥

श्रीकृष्णचन्द्र बोले हमारे गुरुदेव यहां कुनबे समेत न्हाने आये थे तिनके पुत्रको चौ तू तरंग में लेगया बहाय के तिसे लादे इसीलिये हम यहां आये हैं॥

चौ० सुनसमुद्रबोल्योशिरनाय। मैंनहिंलीनोवाहिबहाय॥
तुमसबहीकेगुरु जगदीश। रामरूपबांध्योबारीश॥

तभी से मैं बहुत डरता हूं औ अपनी मर्य्यादमें रहता हूं हरि बोले जो तूने नहीं लिया तो यहांसे कौन उसे लेगया समुद्रने कहा कृपानाथ मैं इसका भेद बताता हूं कि एक शंखासुर नाम असुर शखरूप मुझ में

रहता है सो सब जलचर जीवों को दुःख देता है औ जो कोई तीर पै न्हाने को आता है उसे पकड़ ले जाता है कदाचित् वह आपके गुरुसुत को लेगया हो तो मैं नहीं जानता भीतर पैठ देखिये ॥

चौ० योंसुनकृष्ण धँसे मनलाय । मांझसमुन्दर पहुंचेजाय ॥
देखतही शंखासुर मारयो । पेट फाड़के बाहर डारयो ॥
तामें गुरुको पुत्र नपायो । पछताने बलभद्र सुनायो ॥

कि भैया हमने इसे बिन काज मारा बलराम जी बोले कुछ चिन्ता नहीं अब आप इसे धारण कीजे यह सुन हरिने उस शंख को अपना आयुध किया आगे दोनों भाई वहांसे चले २ यमकी पुरी में पहुंचे उसका नाम संयमनी औ धर्मराज जहां का राजा है ॥

इन्हें देख धर्मराज आगे आय अति आव भक्ति कर लेगया सिंहासन पर बैठाय पांव धोय चरणामृत ले बोला धन्य यह पुरी ठौर जो प्रभुने दर्शन दिया औ कृतार्थ किया अब आज्ञा दीजे सो सेवक पूरीकरे कृष्णने कहा हमारे गुरुपुत्र को लादे ॥

इतना बचन हरि के मुखसे निकलतेही धर्मराज झट जाकर बालक को ले आया औ हाथ जोड़ बिनती कर बोला कि कृपानाथ आपकी कृपा से मैंने पहलेही यह बात जानी थी कि आप गुरुसुत लेने आवेंगे इससे मैंने योंहीं कररक्खा इस बालक को जन्म नहीं दिया महाराज ऐसे कह धर्मराज ने बालक हरि को दिया प्रभु ने ले लिया औ तुरन्त उसे रथ पर बिठाय वहांसे चले कितनी एक बेरमें ला गुरु के सोंहीं खड़ा किया औ दोनों भाइयों ने हाथ जोड़के कहा गुरुदेव अब क्या आज्ञा होती है ॥

इतनी बात सुन औ पुत्र को देख सान्दीपन ऋषि ने अति प्रसन्न हो कृष्ण बलराम को बहुत सी अशीश देकर कहा ॥

चौ० अबहींमांगोंकहासुरारी । दीनोंमोहिंपुत्रसुखभारी
अतियशतुमसोंशिष्यहमारो । कुशलक्षेमअबघरैपधारो

जब ऐसे गुरुने आज्ञाकी तब दोनों भाई बिदा हो दण्डवत् कर रथ पर बैठ वहां से चले २ मथुरापुरीके निकट आये उनका आना सुनराजा उग्रसेन बसुदेव समेत नगर निवासी क्या स्त्री क्या पुरुष सब उठ धाये औ नगर के बाहर आय भेट कर अति सुख पाय बाजे गाजे से पाटम्बर के पांवड़े डालते प्रभु को नगर में लेगये उस काल घर २ मंगला चार होने

लगे औ बधाई बाजने ॥ इति श्रीलालकृते प्रेमसागरे शंखासुर बधःनाम षट् चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४६ ॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि पृथ्वी नाथ श्रीकृष्णचन्द्र ने बृन्दाबन की सुरत करी तो मैं सब लीला कहता हूं तुम चित्त देकर सुनो कि एकदिन हरि ने बलरामजी से कहा कि भाई सब बृन्दाबन बासी हमारी सुरत कर अति दुःख पाते होंगे क्योंकि जो हमने उनसे अवधि की थी सोबीत गई इससे अब उचित है कि किसी को वहां भेजदीजे जो जाकर उनका समाधान कर आवे ॥

यों भाई से मता कर हरिने उद्धव को बुलाय के कहा कि अहो उद्धव एक तो तुम हमारे बड़े सखा हो दूजे अति चतुर ज्ञानवान् औ धीर इस लिये हम तुम्हें बृन्दाबन भेजा चाहते हैं कि तुम जाकर नन्द यशोदा औ गोपियों को ज्ञान दे उनका समाधान कर आओ औ माता रोहिणी को ले आओ उद्धव जीने कहा जो आज्ञा ॥

फिर श्रीकृष्णचंद्र बोले कि तुम प्रथम नन्द महर औ यशोदा जीको ज्ञान उपजाय उनके मनका मोह मिटाय ऐसे समझाय कर कहियो जो वे मुझे निकट जान दुःख तजें पुत्र भाव छोड़ ईश्वर मान भजें पीछे उन गोपियों से कहियो जिन्होंने मेरे काज छोड़ी हे लोक वेद की लाज रात दिन लीला यश गाती हैं औ अवधि की आश किये प्राण मुट्ठी में लिये हैं कि तुम कन्त भाव छोड़ हरि को भगवान् जान भजो औ बिरह दुःख तजो ॥

महा राज ऐसे उद्धवसे कह दोनों भाइयों ने मिल एक पाती लिखी जिस में नन्द यशोदा समेत गोप ग्वाल बालों को तो यथा योग्य दंडवत् प्रणाम आशीर्बाद लिखा औ सब ब्रज युबतियों को योगका उपदेश लिख उद्धव के हाथ दी औ कहाकि यह पाती तुमहीं पढ़ सुनाइयो जैसेबने तैसे उन सब को समझाय शीघ्र आइयो ॥

इतना संदेशा कह प्रभुने निज बस्त्र आभूषण मुकुट पहराय अपनेही रथ पर बैठाय उद्धव जीको बृन्दाबन बिदा किया ये रथ हांके कितनी एक बेर में मथुरासे चले २ बृन्दाबन के निकट जा पहुंचे तो वहांदेखते क्या हैं कि सघन २ कुंजों के पेड़ोंपर भांति भांति के पक्षी मन भावन बोलियां बोल रहे हैं और तिधर तिधर धौली पीली भूरी काली गायें घटासी फिरती हैं औ ठौर२ गोपी गोप ग्वालबाल श्रीकृष्ण यश गायरहे हैं ॥

बचन गोपियों के मुखसे निकलतेही उद्धवजी ने कहा जो संदेसा श्रीकृष्ण चन्द्रने लिखभेजाहै सो मैं समझाकर कहताहूं तुम चित्तदे सुनो लिखा है कि तुम भोगकी आश छोड़ योगकरो तुम से बियोग कभी नहीं होगा औ कहा है निशिदिन तुम करती हो मेरा ध्यान इससे कोई नहीं है प्रिय मेरे तुम समान ॥

इतना कह फिर उद्धवजी बोले जो हैं आदि पुरुष अबिनाशी हरि तिन से तुमने प्रीति निरन्तर करी औ जिन्हें सब कोई अलख अगोचर अभेद बखाने तिन्हें तुमने अपने कन्त कर मान पृथ्वी पवन पानी तेज आकाश का है जैसे देहमें निवास ऐसे प्रभु तुममें बिराजतेहैं पर माया के गुणसे न्यारे दिखाई देते हैं उनका स्मरण ध्यान किया करो वे सदा अपने भक्त के बश रहते हैं औ पास रहने से होता है ज्ञान ध्यान का नाश इसलिये हरिने कियाहै दूरजायके बास औ मुझे यहभी श्रीकृष्णचन्द्र ने समझाके कहा है कि तुम्हें बेनु बजाय बनमें बुलाया औ जब देखा मदन औ बिरहका प्रकाश तब हमने तुम्हारे साथ मिलकर कियाथा रास ॥

चौ० जदतुम ईश्वरता बिसराई। अंर्दान भये यदुराई॥

फिर ज्यों तुमने ज्ञानकर ध्यान हरिका मनमें किया त्योंहीं तुम्हारे चित्तकी भक्ति जान प्रभुने आय दर्शन दिया महाराज इतना बचन उद्धव जी के मुखसे निकलतेही ॥

चौ० गोपी तबैकहैं सतराय। सुनीबात अबरहअरगाय॥
ज्ञानयोगबुधिहमैंसुनावें। ध्यानछोड़आकाशबतावें॥
जिनको लीलामें मनरहै। तिनको को नायण कहै॥
बालकपनतेजिनसुखदयो। सोक्योंअलखअगोचरभयो
जोसबगुणयुतरूपसरूप। सोक्योंनिर्गुणहोयनिरूप॥
जोतनमेंप्रियप्राणहमारे। तौकोसुनिहैबचनतिहारे॥
एकसखीउठिकहैबिचारि। ऊधोकीकीजैमनुहारि॥
इनसेंसखीकछूनहिंकहियेसुनिकैबचनदेखमुखरहिये
एककहतिअपराधनयाको यहआयोपठयोकुब्जाको
अबकुब्जाजोजाहिसिखावै। सोईवाको गायोगावै॥
कालहुंश्यामकहैंनहिंऐसी। कहीआइब्रजमेंइनजैसी॥
ऐसीबात सुनैको माई। उठत शूलसुनिसहीनजाई॥

कहतभोगतजियोगअराधो। ऐसीकैसेकहिहैंसाधो॥
जपतपसंयमनेमअचार। यहसबविधवाकोव्यौहार॥
युगश्रीवल्लभकुंअरकन्हाई। श्रीयहमारेपरसुखदाई॥
अच्छतपतिविभूतिकिनलाई। अहोकौनयहरीतिचलाई॥
हमकोनेमयोगव्रतएहा। नंदनँदनपदपरमसनेहा॥
ऊधोतुम्हेंदोषकोलावै॥ यहसबकुब्जानाचनचावै॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेव मुनि बोले कि महाराज जब गोपियों के मुखसे ऐसे प्रेमसने बचन सुने तब योग कहा श्री कहके उद्धव मनहीं मन पछताय सकुचाय मौन साध शिर नवाय रहि गये फिर एक गोपीने पूछा कहो बलभद्रजी कुशल तुमसे हैं श्री बालापन की प्रीति बिचार कभी वेभी हमारी सुधि करतेहैं कि नहीं॥

यहसुन उनहीं में से किसीऔर गोपीने उत्तर दिया कि सखी तुमतो हो अहीरी गवांरि और मथुराकी हैं सुन्दरि नारि तिनके बशहो हरि बिहार करते हैं अब हमारी सुरत क्यों करेंगे जबसे वहां जाके छाये सखी तट से पी भये पराये जो पहले हम ऐसा जानतीं तो काहेको जाने देतींअब पछताये कुछ हाथ नहीं आता इससे उचित है कि सब दुखछोड़ अवधि की आश कर रहिये क्योंकि जैसे आठ महीने पृथ्वी बन पर्व्वत मेघकी आश किये तपन सहते हैं और तिन्हें आय वह ठंढा करताहै तैसे हरि भी आय मिलेंगे॥

चौ०। एककहतिहरिकीनोकाज। बैरीमारो लीनोराज॥
काहेको वृन्दाबन आवें। राजछोड़क्योंगायचरावें॥
छोड़ुसखीअवधिकीआश। चिन्ताजैहैभयेनिराश॥
एकचियाबोलीअकुलाय। कृष्णआशक्योंछोड़ीजाय॥

बन पर्व्वत और यमुना के तीरमें जहां २ श्री कृष्ण बलबीर ने लीला करी है वहां २ ठौर देखि सुधि आती है खरी प्राणपति हरिकी यों कह फिर बोले॥

दो०। दुखसागरयहव्रजभयो नामनावबिचवार।
बड़हिंबिरहबियोगजल कृष्णकरैं कब पार॥
चौ०। गोपीनाथकीक्योंसुधिगई। लाजनकछूनामकीभई॥

इतनी बात सुन उद्धवजी मनहीं मन बिचार कर कहनेलगे कि धन्य

हैं इन गोपियों को औ इनकी दृढ़ता को जो सबसे छोड़ श्रीकृष्णचन्द्र के ध्यानमें लीन होरहीहैं महाराज उद्धवजी तो उनका प्रेम देख मनहीमन सराहतेही थे कि उस काल सब गोपी उठ खड़ी हुईं औ उद्धव जी को बड़े आदर मानसे अपने घर लिवाय लेगईं उनकी प्रीति देख इन्होंने भी वहां जाय भोजन किया औ बिश्राम कर श्रीकृष्ण की कथा सुनाय उन्हें बहुत सुख दिया तब सब गोपी उद्धवजी की पूजाकर बहुतसी भेट आगे धर हाथजोड़ अति बिनती कर बोलीं उद्धवजी तुम हरिसे जाय कहियो कि नाथ आगे तो तुम बड़ी कृपा करते थे हाथ पकड़ अपने साथ लिये फिरते थे अब ठकुराई पाई नगर नारि कुब्जाके कहे योग लिख भेजा हम अबला अपविच अबतक गुरुमुखभी नहीं हुईं हम ज्ञान क्या जानें ॥

चौ० । उनसोंबालापनकीप्रीति । जानेंकहायोगकीरीति ॥
वेहरिकोंन योगदै जात । यह न संदेशे की है बात ॥
उद्धवयोंकहियोसमुझाय । प्राण जात हैं राखैंआय ॥

महाराज इतनी बात कह सब गोपियां तो हरिका ध्यान कर मनमें मगन हो रहीं और उद्धवजी उन्हें दंडवत् कर वहां से उठ रथ पर बैठ गोवर्द्धन में आये वहां कईएक दिन रहे फिर वहांसे जो चले तो जहां२ श्रीकृष्णचन्द्रजी ने लीला करी थी तहां तहां गये औ दो २ चार २ दिन सब ठौर रहे ॥

निदान कितने एक दिवस पीछे फिर वृन्दाबनमें आये और नन्द यशोदा जीके पासजा हाथ जोड़ कर बोले कि आपकी प्रीति देख मैंइतने दिन ब्रजमें रहा अब आज्ञा पाऊं तो मथुरा को जाऊं ॥

इतनी बातके सुनतेही यशोदा रानी दूध दही माखन और बहुतसी मिठाई घरमें जाय लेआईं और उद्धव जीको देके कहा कि तुम श्रीकृष्ण बलराम प्यारे को देना और बहिन देवकी से यों कहना कि मेरे कृष्ण बलराम को भेजदें बिरमाय न रक्खें इतना संदेशा कह नन्दरानी अति ब्याकुल हो रोनेलगी तब नन्दजी बोले कि उद्धवजी हम तुमसे अधिक क्या कहें आप तुम चतुर गुणवन् महाज्ञानीहो हमारी ओर हो प्रभुसे ऐसे जाय कहियो जो वे ब्रजबासियों का दुख बिचार बेग आय दर्शन दें और हमारी सुधि न बिसरें ॥

इतना कह जब नन्दराय ने आंसू भर लिये और जितने ब्रजबासी क्या स्त्री क्या पुरुष वहां खड़े थे सो भी सब लगे रोने तब उद्धवजी उन्हें

समझाय बुझाय आशा भरोसादे ढाढ़स बंधाय बिदा हो रोहिणीको साथ ले मथुरा को चले और कितनी एक बेर में चले २ श्रीकृष्णचन्द्र के पास आ पहुंचे ॥

इन्हें देखतेही श्रीकृष्ण बलदेव उठकर मिले औ बड़े प्यार से इनकी कुशलक्षेम पूंछ वृन्दाबनके समाचार पूंछनेलगे कहो उद्धवजी नन्दयशोदा समेत सब ब्रजबासी आनन्द से हैं औ कभी हमारी सुरत करते हैं कि नहीं उद्धवजी बोले महाराज ब्रज की महिमा औ ब्रजबासियों का प्रेम मुझसे कुछ कहा नहीं जाता उनके तो तुम्हीं प्राण निशि दिन करते वे तुम्हाराही ध्यान औ ऐसी देखी गोपियोंकी प्रीति जैसे होतीहै पूर्ण भजन की रीति आपका कहा योगका उपदेश जासुनाया पर मैंने भजनका भेद उन्हीं से पाया ॥

इतना समाचार कह उद्धवजी बोले कि दीनदयाल में अधिक क्या कहूं आप अन्तर्य्यामी घट २ की जानते हैं थोड़ेही में सबी समझिये कि ब्रज में क्या जड़ क्या चेतन्य सब आप के दर्श पर्श बिन महादुखी हैं केवल अवधि की आश कर रहे हैं ॥

इतनी बातके सुनतेही नद दोनों भाई उदास हो रहे तद उद्धवजी तो श्रीकृष्णचन्द्र से बिदा हो नन्द यशोदा का संदेशा बसुदेव देवकीको पहुंचाय अपने घर गये औ रोहिणीजी श्रीकृष्ण बलराम से मिल अति आनन्द कर निजमन्दिरमें रहीं ॥ इति श्रीलालकृते प्रेमसागरे उद्धव गोपी सम्बोधन भ्रमरगीतनाम अष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८ ॥

श्रीशुकदेव मुनि बोले कि महाराज एक दिन श्रीकृष्ण बिहारी भक्त हितकारी कुब्जा की प्रीति बिचार अपना बचन प्रतिपालने को उद्धव को साथ ले उसके घर गये ॥

चौ० जबकुब्जाजान्योहरिआये। पाटम्बरपांवड़ेबिछाये ॥
अतिआनन्दहृदये उठिआगे। परब पण्यपुंज सबजागे ॥
उद्धवको आसन बैठारि। मन्दिरभीतर पैसेमुरारि ॥

वहां जाय देखें तो चित्रशाला में उजला बिछौना बिछा है उस पर एक फूलोंसे संवारी अच्छी सेज बिछी है तिसी पर हरि जा बिराजे औ कुब्जा एक ओर मन्दिर में सुगन्ध उबटन लगाय न्हाय धोय कंघी चोटी कर सुथरे कपड़े गहने पहर अपना नख शिखसे शृंगार कर पान खाय

सुगन्ध लगाय ऐसे सज चाव से श्रीकृष्णचन्द्र के निकट आई कि जैसे रति अपने पति के पास आई होय औ लाज से घूंघट किये प्रथम मिलन का भय उर लिये चुपचाप एक ओर खड़ी हो रही देखतेही श्रीकृष्णचन्द्र आनन्द कन्द ने उसे हाथ पकड़ अपने पास बिठा लिया औ उसका मनोर्थ पूर्ण किया ॥

चौ० तबउठिउद्धवकेढिगआये। भईलाजहंसिनयननवाये॥

महाराज यों कुब्जाको सुख दे उद्धवजी का साथ ले श्रीकृष्णचन्द्र फिर अपने घर आये औ बलरामजी से कहने लगे कि भाई हमने अक्रूरजीसे कहा था कि तुम्हारा घर देखने जायंगे सो पहिले तो वहां चलिये पीछे उन्हें हस्तिनापुर को भेज वहां के समाचार मंगवावें ॥

इतना कह दोनों भाई अक्रूर के घर गये वह प्रभु को देखतेही अति सुखपाय प्रणाम कर चरण रज शिरपर चढ़ाय हाथ जोड़ बिनती कर बोला कृपानाथ आपने बड़ी कृपाकी जो आय दर्शन दिया औ मेरा घर पवित्र किया यह सुन श्रीकृष्णचन्द्र बोले काका इतनी बड़ाई क्यों करते हो हमतो आप के लड़के हैं यों कह फिर सुनाया कि काका जी आप के पुण्य से असुर तो सब मारेगये पर एकही चिन्ता हमारे जी में है जो सुनते हैं पांडु बैकुण्ठ सिधारे औ दुर्योधन के हाथ से पांचो भाई हैं दुखी हमारे ॥

चौ० कुंतीकुफूअधिकदुखपावैं। तुमबिनजायकौनसमझावैं॥

इतनी बात के सुनतेही अक्रूरजी ने हांसे कहा कि आप इस बात की चिन्ता न कीजे मैं हस्तिनापुर जाऊंगा औ उन्हें समझाय वहां की सुधि ले आऊंगा ॥

इतिश्री लालकृते प्रेमसागरे कुब्जाकेलि वर्णनो नाम एकोनपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ४९ ॥

श्रीशुकदेव मुनि बोले कि पृथ्वीनाथ जब ऐसे श्रीकृष्णजी ने अक्रूर के मुख से सुना तब उन्होंने उन्हें पांडवों की सुधि लेने को बिदाकिया वे रथ पर बैठ चले कई एक दिन में मथुरा से हस्तिनापुर पहुंचे और रथ से उतर जहां राजा दुर्योधन अपनी सभा में सिंहासनपर बैठा था वहां जाय जुहार कर खड़ेहुये इन्हें देखतही दुर्योधन समासमेत उठकर मिला औ अति आदरमान से अपने पास बिठाय इनकी कुशलक्षेम पूंछ बोला ॥

चौ० नीके सरसेन बसुदेव। नीके हैं मोहन बलदेव॥
उग्रसेन राजाके हितेत। नाहिन काहूकी सुधिलेत॥
धुधहिंमारकरतहैंराज। तिनहिनकाहूसोंहै काज॥

ऐसे जब दुर्योधन ने कहा तब अक्रूर सुन चुप हो रहा औ मनहीं मन कहने लगा कि यह पापियोंकी सभाहै मुझे रहना उचित नहीं क्योंकि जो मैं रहूंगा तो यह ऐसी २ अनेक बातें कहेगा सो मुझसे कब सुनी जायगी इससे यहां रहना भला नहीं॥

योंविचार अक्रूरजी वहां से उठ बिदुर को साथ ले पांडु के घर गये तहां जाय देखें तो कुन्ती पतिके शोकसे महा व्याकुल होरही है उसके पास जा बैठे औ लगे समझाने कि माई विधना से कुछ किसी का बश नहीं चलता औ सदा कोई अमर हो जीताभी नहीं रहता देह धर जीव दुख सुख सहता है इस से मनुष्य को चिन्ता करनी उचित नहीं क्योंकि चिन्ताकियेसे कुछहाथ नहीं आता केवल चित्त को दुःख होता है॥

महाराज जद ऐसे समझाय बुझाय अक्रूरजी ने कुन्ती से कहा तद वे शोच समझ चुप होरहीं औ इनको कुशल पूछ बोलीं अहो अक्रूरजी हमारे माता पिता औ भाई बसुदेवजी कुटुम्बसमेत भलेहैं औ श्रीकृष्ण बलराम कभी युधिष्ठिर भीम अर्जुन नकुल सहदेव इन अपने पांचों भाइयों की सुधि करतेहैं ये तो यहां दुःख समुद्रमें पड़ेहैं वे इनकी रक्षा कब आय करेंगे हमसे अब तो इस अन्ध धृतराष्ट्रका द्वेष सहा नहीं जाता क्योंकि वह दुर्योधन की मतिसे चलताहै इन पांचो के मारनेके उपाय में दिन रात रहताहै कई बेर तो बिष घोल दिया सो मेरे भीमसेनने पीलिया॥

इतना कह पुनि कुन्ती बोली अहो अक्रूरजी जब सब कौरव यों बैर किये रहें तब ये मेरे बालक किसका मुंह चहें औ मीचसे बच कैसे होंय सयाने यही दुःख बड़ा है हम क्या बखाने ज्यों हरिणी झुण्डसे बिछुड़ करती है त्रास त्यों मैंभी सदा रहती हूं उदास जिन्होंने कंसादिक असुर संहारे सोई हैं मेरे रखवारे॥

चौ०भीमयुधिष्ठिरअर्जुनभाई।इनको दुखतुमकहियोजाई॥

जब ऐसे दीन हो कुन्तीने कहे बैन तब सुनकर अक्रूर ने भरलिये नैन औ समझाके कहने लगा कि माता तुम कुछ चिन्ता मत करो ये जो पांचों पुत्र तुम्हारेहैं सो महाबली यशस्वी होंगे शत्रु औ दुष्टों को मार करेंगे निकन्द इनके पक्षी हैं श्रीगोबिन्द यों कहफिर अक्रूरजी बोले कि

श्रीकृष्ण बलराम ने मुझे यहकह तुम्हारे पासभेजा है कि फूफूसे कहियो किसी बातसे दुख न पावें हम वेगही तुम्हारे निकट आते हैं ॥

महाराज ऐसे श्रीकृष्ण की कही बातें कह अक्रूरजी कुन्तीको समझाय बुझाय आशा भरोसा दे बिदा हो बिदुरको साथ ले धृतराष्ट्र के पासगये औ उससे कहा तुम पुरुष होयके ऐसी अनीति क्यों करते हो जो पुत्रके बश होय अपने भाईका राजपाट ले भतीजों को दुःख देते हो यह कहां का धर्म है जो ऐसा अधर्म करते हो ॥

चौ० लोचन गये न सूझे हिये। कुलबहिजाय पापके किये ॥

तुमने अच्छे भले बैठे बिठाये क्यों भाई का राज्य लिया औ भीम युधिष्ठिर को दुःख दिया ॥

इतनी बात के सुनतेही धृतराष्ट्र अक्रूर का हाथ पकड़ बोला कि मैं क्या करूं मेरा कहा कोई नहीं सुनता ये सब अपनी २ मतिमे चलतेहैं मैं तो इनके सोंही मूर्ख होरहाहूं इससे इनकी बातोंमें कुछ नहीं बोलता एकान्त बैठ चुपचाप अपने प्रभुका भजन करता हूं इतनी बात जो धृतराष्ट्र ने कही तो अक्रूरजी दण्डवत् कर वहां से उठ रथ पर चढ़ हस्तिनापुर से चले २ मथुरा नगरी में आये ॥

दो० उग्रसेन बसुदेव सों। कही पाण्डु की बात ॥
कुन्ती के सुन महादुख। भये छीण अति गात ॥

यों उग्रसेन बसुदेवजी से हास्तनापुर के सब समाचार कह अक्रूरजी फिर श्रीकृष्ण बलरामजीके पास जा प्रणाम कर हाथ जोड़ बोले महाराज मैंने हस्तिनापुरमें जाय देखा आपकी फूफी औ पांचो भाई कौरवोंके हाथ से महादुखी हैं अधिक क्या कहूंगा आप अन्तर्य्यामी हैं वहां की अवस्था औ कुरीति तुमसे कुछ छिपी नहीं यों कह अक्रूरजी तो कुन्तीका कहा संदेशा सुनाय बिदा हो अपने घर गये औ सब समाचार सुन श्रीकृष्ण बलदेव जो हैं सब देवन के देव जो लोकरीति से बैठ चिन्ताकर भूमिका भार उतारने का बिचार करने लगे ॥

इतनी कथा श्रीशुकदेव मुनिने राजा परीक्षित को सुनायकर कहा कि हे पृथ्वीनाथ यह जो मैंने ब्रजबन मथुराका यश गाया सो पूर्वार्द्ध कहाया अब आगे उत्तरार्द्ध गाऊंगा जो द्वारकानाथ का बल पाऊंगा ॥

इतिश्रीलालकृतेप्रेमसागरेअक्रूरहस्तिनापुरगमनोनामपंचशत्तमोऽध्यायः५०॥

इतिपूर्वार्द्धम् समाप्तम् ॥

अथ उत्तरार्द्ध प्रारम्भः ॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज ज्यों श्रीकृष्णचन्द्र दल समेत जरासन्ध को जीत कालयमन को मार मुचकुन्द को तार ब्रज को तज द्वारका में जाय बसे त्यों मैं सब कथा कहता हूं तुम सचेत हो चित्त लगाय सुनो कि राजा उग्रसेन तो राजनीति लिये मथुरापुरी का राज्य करते थे औ श्रीकृष्ण बलराम सेवक की भांति उनके आज्ञाकारी इससे राजप्रजा सुखी थी पर एक कंस की रानियांहीं अपने पति के शोकसे महादुखी न उन्हें नींद आतीथी न भूख प्यास लगतीथी आठ पहर उदास रहती थीं ॥

एकदिन वे दोनों बहिन अतिचिन्ता कर आपस में कहने लगीं जैसे नृप बिन प्रजा चन्द्र बिन यामिनी शोभा नहीं पाती तैसे कान्त बिनकामिनी भी शोभा नहीं पाती अब अनाथ हो यहां रहना भला नहीं इससे अपने पिताके घर चल रहिये सो अच्छा महाराज वे दोनों रानियां ऐसे आपस में शोच बिचार कर रथ मंगवाय उस पर चढ़ मथुरा से चलीं २ मगध देश में अपने पिता के यहां आईं जैसे श्रीकृष्ण बलरामजी ने सब असुरों समेत कंस को मारा तैसे उन दोनोंने रो २ समाचार अपने पिता से सब कह सुनाया ॥

सुनतेही जरासन्ध अति क्रोधकर सभामें आया और लगा कहने कि ऐसे बली कौन यदुकुलमें उपजे जिन्होंने सब असुरों समेत महाबली कंस को मार मेरी बेटियोंको रांडकिया मैं अभी अपना सबकटक ले चढ़ धाऊं औसब यदुबंशियों समेत मथुरापुरीको जलाय राम कृष्णको जीता बांधलाऊं तो मेरा नाम जरासन्ध नहीं तो नहीं ॥

इतना कह उसने तुरन्तहा चारों ओर के राजाओं को पत्र लिखे कि तुम अपना दल ले २ हमारे पास आओ हम कंसका पलटा ले यदुबंशियों को निर्बंश करेंगे जरासन्ध का पत्र पातेही सब देश २ के नरेश अपना २ दल साथले झट चले आये औ यहां जरासन्धने भी अपनी सबसेना ठीक ठाक बनाय रक्खी निदान सब असुर दल साथले जरासन्ध ने जिस समय मगधदेशसे मथुरापुरी को प्रस्थानकिया तिससमय उसकेसंग तेईसअक्षौहिणी थीं इक्कीस सहस्र आठसौ सत्तर रथी औ और इतनेही गज पति एकलाख नौहस्र साढ़ेतीनिसे पैदलछासठ सहस्रअश्वपति यह अक्षौहिणी का प्रमाणहै ॥

ऐसी तेईस अक्षौहिणी उसके साथ थीं औ उनमेंसे एक २ राक्षस जैसा

बलीथा से मैं कहां तक बर्णन करूंगा महाराज जिस काल जरासन्ध सब असुर सेना साथ ले धौंसादे चला उसकाल दशों दिशा के दिग्पाल लगे थर २ कांपने औ सब देवता मारे डरके भागने पृथ्वी न्यारीहो बोझ से लगी छातसी हिलने निदान कितने एक दिनों में चला २ आपहुंचा और उसने चारों ओरसे मथुरापुरी को घेर लिया तब नगर निवासी अति भय खाय श्रीकृष्णचन्द्रके पास जा पुकारे कि महाराज जरासन्ध ने आयचारों ओर से नगर घेरा अब क्या करें औ किधर जांय ॥

इतनी बातके सुनतेही हरि कुछ शोच बिचार करनेलगे इसमें बलराम जीने जाय प्रभुसे कहाकि महाराज आपने भक्तोंका दुख दूर करनेके हेतु अवतार लिया है अब अग्नितन धारण कर असुररूपी बनको जलाय भूमि का भार उतारिये यहसुन श्रीकृष्णचन्द्र उनको साथले उग्रसेनके पास गये औ कहा कि महाराज हमें तो लडनेकी आज्ञा दीजे औ आप सब यदुवंशियों को साथले गढकी रक्षा कीजे ॥

इतना कह ज्यों माता पिता के निकट आये त्यों सब नगरनिवासी घिर आये औ लगे अति व्याकुलहो कहने कि हेकृष्ण अब इन असुरों के हाथ से कैसे बचें तब हरि ने माता पिता समेत सब को भयातुर देख समझाके कहा कि तुम किसी भांति चिन्ता मत करो यह असुर दल जो तुम देखते हो पलभरमें यहांका यहीं ऐसे बिलाय जायगा कि जैसे पानी के बबूले पानीमें बिलाय जाते हैं योंकह सब को समझाय बुझाय ढाढस बंधाय उनसे बिदा हो प्रभु ज्यों आगे बढ़े त्यों देवताओंने दो रथ शस्त्र भर इनके लिये भेज दिये वे आय इनके सोंही खड़ेहुये तबये दोनोंभाई उन दोनों रथोंमें बैठ लिये ॥

चौ० । निकसेदो जयदुराय । पहुंचेसुदलमेंजाय ॥

जहां जरासन्ध खड़ाथा तहां जा निकले तो देखते ही जरासन्ध श्रीकृष्णचन्द्र से अति अभिमान कर कहने लगा अरे तू मेरे सोंही से भाग जा मैं तुझे क्या मारूं तू मेरे समानका नहीं जो मैं तुझपर शस्त्र चलाऊं भला बलराम को मैं देखलेताहूं श्रीकृष्णचन्द्रबोले अरे मूर्ख अभिमानी तू यह क्या बकता है जो शूरमा होतेहैं सो बड़ा बोल नहीं बोलते सबसे दीनता करते हैं काम पड़े अपना बल दिखाते हैं और जो अपने मुंह

अपनी बड़ाई मारते हैं सो क्या कुछ भले कहातेहैं कहाहै कि गर्जता है सो बरसता नहीं इससे वृथा बकवाद क्या करताहै ॥

इतनी बातके सुनतेही जरासन्ध ने जो क्रोध किया त्यों श्रीकृष्णबलदेव चल खड़े हुये इनके पीछे वहभी अपनी सबसेना ले धाया औ उसने यों पुकार कर कह सुनाया अरे दुष्टो मेरे आगे से तुम कहां भाग जाओगे बहुत दिन जीते बचे तुमने अपने मनमें क्या समझा है अब जीते न रहने पाओगे जहां सब असुरों समेत कंस गयाहै तहांही सब यदुबंशियों समेत तुम्हेंभी भेजूंगा महाराज ऐसा दुष्ट बचन उस असुरके मुखसे निकलतेही कितनी एक दूर जाय दोनों भाई फिर खड़े हुये श्रीकृष्ण जीने तो सब शस्त्र लिये औ बलरामजी ने हल मूशल जो असुरदल उनके निकट गया तो दोनों बीर ललकारके ऐसे टूटे कि जैसे हाथियोंके यूथपर सिंह टूटे औ लगा लोहा बाजने ॥

उसकाल माद्रजो बाजता था सोतो मेघसा गाजता था औ चारोंओर से राक्षसों का दल जो घिर आया था सो दल बादल सा छायाथा औ शस्त्रों की झड़ी झड़ीसी लगी थी उसके बीच श्रीकृष्ण बलराम युद्ध करते ऐसे शोभायमान लगते थे जैसे घनमें दामिनी सुहावनी लगती है सब देवता अपने २ बिमानों पर बैठे आकाशसे देख २ प्रभुका यश गातेथे औ इन्हीं की जीत मनाते थे औ उग्रसेन समेत सब यदुबंशी अति चिन्ताकर मन ही मन पछताते थे कि हमने यह क्या किया जो श्रीकृष्ण बलराम को असुरदल में जाने दिया ॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेव जी बोले कि पृथ्वीनाथ जब लड़ते २ असुरोंकी बहुतसी सेना कटगई तब बलदेवजी ने रथ से उतर जरासन्ध को बांधलिया इसमें श्रीकृष्णचन्द्रजीने जा बलराम से कहा कि भाई इसे जीता छोड़ दो मारो मत क्योंकि यह जीता जायगा तो फिर असुरों को साथ ले आवेगा ऐसे बलदेव जीको समझाय प्रभुने जरासन्ध को छुड़वाय दिया वह अपने उन लोगोंमें गया जो रणमें भाग के बचे थे ॥

चौ० चउंदिशिचाड़िकहैंपछतायासिगरीसेनागईबिलाय॥
भयोदुःखअतिकैसेजीजे। अबघर छांड़ितपस्याकीजे॥
मंचीतबै कहे समझाय। तुमसोज्ञानी क्यों पछताय॥
कबहुंहारजीतपुनिहोई। राजदेश छांड़ैनहिंकोई॥

क्या हुआ जो अबकी लड़ाईमें हारे फिर अपना दल जोड़ लावेंगे औ

उसके सम्मुख हो निकले वह इन्हें देखतेही अपने मनमें कहने लगा कि होनहो यही कृष्ण है नारद मुनिने जो चिन्ह बताये थे सो सब इनमें पाये जाते हैं इसी ने कंसादि असुर मारे जरासंध की सब सेना हनी ऐसे मनहीं मन बिचार ॥

चौ०। कालयवनयोंकहैपुकारि। काहेभागे जातमुरारि॥
आयपरयोअबमोसोंकाम। ठाढ़े रहौकरौ संग्राम॥
जरासन्धहोंनाहींकंस। यादवकुलकोकरौंविध्वंस॥

हे राजा योंकह कालयवन अति अभिमान कर अपनी सब सेना को छोड़ अकेला श्रीकृष्णचन्द्र के पीछे धाया पर उस मूर्खने प्रभुका भेद न पाया आगे २ तो हरि भागे जातेथे और एक हाथके अन्तरसे पीछे पीछे वह दौड़ा जाताथा निदान भागते २ जब बहुत दूर निकल गये तबप्रभु एक पहाड़की गुफामें बढ़गये वहां जा देखा तो एक पुरुष सोया पड़ा है येझट अपना पीताम्बर उसे उढ़ाय आप अलग एक ओर छिपरहे पीछेसे कालयवनभी दौड़ता हांफता उस अतिअंधेरी कन्दरामें जापहुंचा और पीताम्बर ओढ़े उस पुरुष को सोता देख इसने जीमें जाना कि यह कृष्णही छलकर सो रहा है ॥

महाराज ऐसे मनहीं मन बिचार क्रोधकर सोते हुयेको एक लातमार कालयवन बोला अरेकपटी क्या मिसकर साधुकी भांति निःचिन्ताईसे सोरहा है उठमैं तुझे अबहीं मारता हूं यों कह इसने उसके ऊपर से पीताम्बर झटक लिया वह नींदसे चौंकपड़ा और इसने जो इसकी ओर क्रोध कर देखा तो वह जल बल भस्म हो गया इतनी बात के सुनते हीं राजा परीक्षित ने कहा ॥

चौ०। यहशुकदेवकहौसमुझाय। कोवहरह्योकंदराजाय॥
ताकीदृष्टि भस्मक्योंभयो। कौनेवाहिमहाबरदयो॥

श्रीशुकदेव मुनि बोले पृथ्वीनाथ इक्ष्वाकु बंशी सची मान्धाताका बेटा मुचकुन्द अतिबली महा प्रतापी जिसका अरि दल दलन यश छाय रहा नौ खण्ड एकसमय सब देवता असुरोंके सताये निपट घबराये मुचकुन्द के पास आये और अति दीनता कर उन्होंने कहा महाराज असुर बहुत बढ़े अब तिनके हाथसे बचनहीं सकते बेग हमारी रक्षा करो यहरीति परम्परा से चली आईहै कि जब सुर मुनि ऋषि अबल हुये हैं तब तब उनकी सहायता क्षत्रियोंने करीहै ॥

इतनी बातके सुनतेही मुचकुन्द उन के साथ हो लिया और जाके असुरों से युद्ध करने लगा इस में लड़ते २ कितनेही युग बीत गये तब देवताओं ने मुचकुन्द से कहा कि महाराज आपने हमारे लिये बहुत श्रम किया अब कहीं बैठ विश्राम लीजिये औ देहको सुख दीजिये॥

चौ० बज्रतदिननकीनोसंग्राम। गयोकुटुम्ब राजधनधाम॥
रह्योनकोऊतहांतिहारौ।तातेंअबजिनघरप्रगधारौ॥

और जहां तुम्हारा मन माने तहां जाओ यह सुन मुचकुन्दने देवताओं से कहा कृपानाथ मुझे कहीं कृपाकर ऐसी एकान्त ठौर बतलाइये कि जहां जायमें निश्चिन्ताई से सोऊं औ कोई न जगावे इतनी बातके सुनतेही प्रसन्न हो देवताओं ने मुचकुन्द से कहा कि महाराज आप धोलागिरि पर्बतकी कन्दरामें जाय शयन कीजिये वहां तुम्हें कोई न जगावेगा और जो कोई जने अनजाने वहां जाके तुम्हें जगावेगा तोवह देखतेही तुम्हारी दृष्टिसे जल बल राख हो जावेगा॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेव जीने राजासे कहा कि महाराज ऐसे देवताओं से वर पाय मुचकुन्द उस गुफामें रहा था इस्से उस की दृष्टि पड़तेही कालयवन जलकर छार होगया आगे करुणानिधान कान्ह भक्त हितकारीने मेघवर्ण चन्द्रमुख कमल नयन चतुर्भुज हो शंखचक्र गदापद्म लिये मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल बनमाल औ पीताम्बर पहरे मुचकुन्दको दर्शन दिया प्रभुका स्वरूप देखतेही वह साष्टांग प्रणामकर खड़ा हो हाथजोड़ बोला कि कृपानाथ जैसे आपने इसमहा अंधेरी कन्दरा में आय उजालाकर तमदूरकिया तैसे दयाकर अपना नाम भेद बताय मेरेमनका भी भ्रमदूरकीजे॥

कृष्णचंद्र बोले कि मेरेतो जन्म कर्म्म गुणहैं बहुत घने वे किसीभांति गिने न जांय कोई कितनाहीं गिने परमें इस जन्मका भेद कहताहूं सो सुनो कि अब के बसुदेव के यहां जन्म लिया इस्से बासुदेव मेरा नाम हुआ औ मथुरा पुरीमें सब असुरों समेत कंसको मैंनेही मार भूमिकाभार उतारा औ सत्रह बेर तेईस २ अक्षौहिणी सेनाले जरासन्ध युद्ध करनेको चढ़िआया सोभी मुझसे हारा औ यह कालयवन तीन किरोड़ म्लेच्छकी भीड़ भाड़ ले लड़ने को आया था सो तुम्हारी दृष्टि से जल मरा इतनी बात प्रभुके मुखसे निकलते ही सुनकर मुचकुन्द को ज्ञान हुआतो बोला कि महाराज आप की माया अति प्रबलहै उसने संसारको मोहाहै इसी से किसीकी कुछ सुध बुध ठिकाने नहीं रहती॥

चौ० । करत कर्म सबसुखके हेत । तातेंभारी दुखसहिलेत ॥
दो० । चर्महाड़ज्यों श्वानमुख रुधिर चचोरे आप ॥
जानत ताहीतें चुअत सुख मानत सन्ताप ॥

श्री महाराज जो इस संसार में आयाहै सो गृहरूपी अंधकूपसे बिना आपकी कृपा निकल नहीं सक्ता इससे मुझेभी चिन्ता है कि मैं कैसे गृह रूप कूपसे निकलूंगा श्रीकृष्णजी बोले सुन मुचकुन्द बाततो ऐसीहीहै जैसे तूने कही परमैं तेरे तरने का उपाय बता देताहूं सो तू कर तैंने राज पाट भूमि धन स्त्रीके लिये अधिक अधर्म कियेहैं सो बिन तप किये न छूटेंगे इससे उत्तर दिशामें जाय तपस्या कर यह अपनी देह छोड़ फिर ऋषिके घर जन्म लेगा तब तू मुक्ति पदार्थ पावेगा महाराज इतनी बात ज्यों मुचकुन्दने सुनी त्यों जाना कि अब कलियुग आया यह समझप्रभुसे बिदा हो दंडवत् कर परिक्रमा दे मुचकुन्द तो बदरीनाथ को गया श्री श्रीकृष्णचंद्रजीने मथुरा में आय बलराम जीसे कहा ॥

चौ० कालयवनकोकियोनिकन्दबदरीबनपठयोमुचकुन्द॥
कालयवन कीसेना घनी । तिनघेरी मथुराआपनी ॥
आवहुतहांमलेच्छनमारैं । सकलभूमिकोभारउतारैं ॥

ऐसे कह हलधरको साथले श्रीकृष्णचन्द्र मथुरापुरीसे निकल वहां आये जहां कालयवन का कटक खड़ा था श्री आतेही दोनों उनसे युद्ध करने लगे निदान लड़ते २ जब म्लेच्छ की सेना प्रभुने सब मारी तब बलदेव जीसे कहा कि भाई मथुराकी सब सम्पत्ति ले द्वारकाको भेज दीजे बलरामजी बोले बहुत अच्छा तब श्रीकृष्णचन्द्रने मथुरा का सब धन निकलवा भैंसों छकड़ों ऊंटों हाथियों पर लदवाय द्वारका को भेज दिया इस बीच फिर जरासन्ध तेईसही अक्षौहिणी सेनाले मथुरापुरी पर चढ़ि आया तब श्रीकृष्ण बलराम अति घबरायके निकले तो उसके सन्मुख जा दिखाईदे उसके मनका सन्ताप मिटाने को भाग चले तब मंत्रीने जरासन्ध से कहा कि महाराज आपके प्रतापके आगे ऐसा कौन बली है जो ठहरे देखो वे दोनों भाई कृष्ण बलराम छोड़के सब धन धाम लेके अपना प्राण तुम्हारे त्रासके मारे नंगे पांव भागे चले जातेहैं इतनी बात मंत्रीसे सुन जरासन्ध भी यों पुकार कर कहता हुआ सेना ले उनके पीछे दौड़ा ॥

चौ० काहे डरके भागे जात । ठाढ़े रहौ करौ कछु बात ॥

परतउठतकम्पतक्योंभारी।आईदेढिगमीतिहारी॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेव मुनि बोले कि पृथ्वीनाथ जब श्रीकृष्ण औ बलदेवजी ने भाग के लोकरीति दिखाई तब जरासन्ध के मन का पिछला सब शोक गया औ अति प्रसन्न हुआ ऐसा कि जिसका कुछ वर्णन नहीं किया जाता आगे श्रीकृष्ण बलरामजी भागते२ एक गोतम नाम पर्वत ग्यारह योजन ऊंचाथा तिस पर चढ़ि गये औ उसकी चोटीपर आय खड़े भये॥

चौ० देखजरासन्धकहैपुकारि। शिखरचढ़ेबलभद्रमुरारि॥
अबकिमिहमसोंजायपलाय।यापर्वतकोदेहुंजलाय॥

इतना बचन जरासन्धके मुखसे निकलतेही सब असुरों ने उस पहाड़ को जा घेरा और नगर नगर गांव गांवसे काठ कबाड़ लाय लाय उसके चारों ओर चुनदिया तिस पर गड़ गूगड़ घी तेलसे भिगोय डालकर आग लगादी जब वह आग पर्वत की चोटी तक लहकी तब उन दोनों भाइयों ने वहांसे इस भांति द्वारका को बाटली कि किसीने उन्हें जातेभी न देखा और पहाड़ जल कर भस्म होगया उस काल जरासन्ध श्रीकृष्ण बलरामको उस पर्वतके संग जल मरा जान अति सुखमान सब दल साथ ले मथुरा पुरी में आया औ वहांका राज्य ले नगर में ढिंढोरा दे उसने अपना थाना बैठाया जितने उग्रसेन बसुदेव के पुराने मन्दिर थे सो सब ढहवाये औ उसने आप अपने नये बनवाये॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी ने राजासे कहा कि महाराज इसी रीतिसे जरासन्धको धोखा दे श्रीकृष्ण बलरामजी तो द्वारका में जाय बसे और जरासन्ध भी मथुरा नगरीसे चल सब सेना ले अति आनन्द करता निश्शंक हो अपने घर आया॥ इति श्रीलालकृते प्रेमसागरे कालयवन मरनो मुचकुन्द तरनो नाम द्विपंचाशत्तमोऽध्यायः॥ ५२॥

शुकदेव मुनि बोले कि महाराज अब आगे कथा सुनिये कि जब कालयवन को मार मुचकुन्द को तार जरासन्धको धोखादे बलदेवजी को साथले श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द ज्यों द्वारकामें गये त्यों सब यदुबंशियों के जी में जी आया औ सारे नगर में सुख छाया सब चैन आनन्द से पुरबासी रहने लगे इसमें कितने एकदिन पीछे कई एकदिन यदुबंशियों ने राजा उग्रसेन से जा कहा कि महाराज अब कहीं बलरामजी का बिवाह किया चाहिये क्योंकि ये समर्थ हुये इतनी बातके सुनतेही राजा उग्रसेन ने एक ब्राह्मण को बुलाय अति समझाय बुझाय के कहा कि देवता तुम

कहीं जाकर अच्छा कुल घर देख बलरामजी की सगाई कर आओ इतना कह रोली अक्षत रुपया नारियल मंगवाय उग्रसेनजी ने उस ब्राह्मण को तिलक कर रुपया नारियल दे बिदा किया वह चला चला आनर्त्त देश में राजा रेवतके यहां गया औ उसकी कन्या रेवतीसे बलरामजी की सगाई कर लग्न ठहराय उसके ब्राह्मणके साथ टीका लिवाय द्वारकामें राजा उग्रसेन के पास ले आया और उसने वहां का सब ब्यौरा कह सुनाया सुनतेही राजा उग्रसेनने अति प्रसन्न हो उस ब्राह्मणको बुलाय जो टीका ले आया था मंगलाचार करवाय टीका लिया और उसे बहुतसा धन दे बिदा किया पीछे आप सब यदुबंशियों को साथ ले बड़ी धूम धाम से आनर्त्त देश में जाय बलरामजी का ब्याह कर लाये ॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवमुनि ने राजासे कहा कि पृथ्वीनाथ इसी रीति से तो सब यदुबंशी बलदेवजी का बिवाह कर लाये और श्रीकृष्ण चन्द्र आपही भाईको साथ ले कुण्डिनपुरमें जाय भीष्मक नरेश की बेटी रुक्मिणी शिशुपाल की मांग को राक्षसें से युद्ध कर छीनलाये उसे घरमें लाय ब्याह किया यह सुन राजा परीक्षित ने श्रीशुकदेवजी से पूछा कि कृपासिन्धु भीष्मकसुता रुक्मिणी को श्रीकृष्णचन्द्र कुण्डिनपुर में जाय सुरोंको मार किस रीतिसे लाये सो तुम मुझे समझाय कर कहो श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज आप मन लगाय सुनिये मैं सब भेद वहां का समझाकर कहता हूं कि बिदर्भ देश में कुण्डिनपुर नाम नगर एक तहां भीष्मक नाम नरेश जिसका यश छाय रहा चहूं देश उनके घरमें जाय सीताजीने अवतार लिया कन्या के होतेही राजा भीष्मक ने ज्योतिषियों को बुलाय भेजा उन्होंने आय लग्नसाध उस लड़की का नाम रुक्मिणी धरकर कहा कि महाराज हमारे बिचारने में येसा आताहै कि यहकन्या अति सुशील सुभाव रूप निधान गुणोंमें लक्ष्मी समान होगी और आदि पुरुष से ब्याही जायगी ॥

इतना बचन ज्योतिषियों के मुखसे निकलतेही राजा भीष्मकने अति सुखमान बड़ा आनन्द किया औ बहुतसा कुछ ब्राह्मणों को दिया आगे वह लड़की चन्द्रकलाकी भांति दिनदिन बढ़ने लगी औ बाल लीला कर माता पिता को सुखदेने इसमें कुछ बड़ी हुई तो लगी सखी सहेलियोंके साथ अनेक २ प्रकार के अनूठे २ खेल खेलने एक दिन वह मृगनयनी पिकबयनी चम्पकबरणी चन्द्रमुखी सखियों के संग आंख मिचौली खेलने

गई तो खेलती समय सब सखियां उसे कहने लगी कि रुक्मिणी तू हमारा खेल खोने को आई है क्योंकि जहां तूहमारे साथ अंधेरे में छिपती हो तहां तेरे मुखचन्द्र की ज्योति से चांदनी होजाती है इस्से हम छिप नहीं सक्तीं यह सुन वह हंसकर चुप होरही ॥

इतनी कथा कह शुकदेवजी ने कहा कि महाराज इसी भांति वह सखियों के संग खेलती थी औ दिनदिन छबि उसकी दूनी होतीथी कि इस बीच एकदिन नारद जी कुंडिनपुरमें आय रुक्मिणी को देख श्रीकृष्णचंद्र के पास द्वारका में जाय उन्होंने कहा कि महाराज कुंडिनपुरमें राजा भीष्मक के घर एक कन्या रूप गुणशील की खान लक्ष्मी के समान जन्मी है सो तुम्हारे योग्यहै यह भेद जब नारदमुनि से सुनि पाया तभीसे रात दिन हरिने अपना मन उसपर लगाया महाराज इसी रीति करके तो श्री कृष्णचंद्रने रुक्मिणीका नाम गुण सुना औ जैसे रुक्मिणी ने प्रभु कानाम यश सुना सो कहताहूं कि एक समय देश देश के कितने एक याचकोंने जाय कुंडिनपुर में श्रीकृष्णचन्द्र का यश गाय २ जैसे प्रभुने मथुरामें जन्म लिया औ गोकुल वृन्दाबन में जाय ग्वाल बालों के संग बालचरित्रकिया और असुरों को मार भूमिका भार उतार यदुबंशियों को सुख दिया था तैसेही गाय सुनाया हरि के चरित्र सुनते ही सब नगर निवासी अति आश्चर्य्य कर आपस में कहने लगे कि जिसकी लीला हमने कानों सुनी तिन्हें कब नयनों देखेंगे इसी बीच याचक किसी ढब से राजा भीष्मक की सभा में जाय प्रभुके चरित्र औ गुण गानेलगे उस काल ॥

चढ़ीअटारुक्मिणिसुन्दरी।हरिचरित्रधुनिश्रवणनपरी॥
अचरज करै भलिमन रहै। फेर उफक कर देखनचहै॥
सुनिकेकुंवरिरहीमनलाय। प्रेमलताउरउपजीआय॥
भईमगन बिह्वलसुन्दरी। वाकीसुधबुधहरिगुणहरी॥

यों कह श्रीशुकदेवजी बोले कि पृथ्वीनाथ इसी भांति रुक्मिणीने प्रभु का यश औ नाम सुना तो उसी दिनसे रात दिन आठ पहर औ साठ घड़ी सोते जागते बैठे खड़े चलते फिरते खाते पीते खेलते उन्हीं का ध्यान किये रहे औ गुण गाया करे नित भोरही उठ स्नान कर मट्टी की गौरी बनाय रोली अक्षत पुष्प चढ़ाय धूप दीप नैवेद्य कर मनाय हाथ जोड़ शिरनाय उनके आगे कहा करे ॥

चौ० मोपैगौरिकृपातुमकरौयदुपतिपतिदैसमदुखहरौ॥

इसी रीति से सदा रुक्मिणी जी रहने लगीं एकदिन सखियों के संग खेलतीथी कि राजा भीष्मक उसेदेख अपने मनमें चिन्ताकर कहनेलगा कि अब यहहुई ब्याहने योग्य इसे कहीं न दीजै तो हंसेंगे लोग कहाहै कि जिसके घरमें कन्याबड़ी होय तिसका दान पुण्य जपतप करना वृथाहै क्योंकि किये से तबतक कुछधर्म नहीं होता जबतक कन्याके ऋणसे न उऋण होंय यों विचार राजा भीष्मक अपनी सभा में आय सब मंत्री और कुटुम्ब के लोगोंको बुलाय बोला भाइयो कन्याब्याहन योग्यहुई इसके लिये कुलवान गुणखान रूपनिधान शीलवान कहीं बर ढूंढा चाहिये॥

इतनी बातके सुनतेही उन लोगों ने अनेक २ देशोंके नरेशों के कुल गुणरूप औ पराक्रम कह सुनाये परराजा भीष्मक के चित्तमें किसीकी बात कुछ न आई तब उनका बड़ा बेटा जिसका नाम रुक्म सो कहने लगा कि पिता नगर चंदेली का राजा शिशुपाल अति बलवानहै और सबभांति से हमारी समान तिससे रुक्मिणी की सगाई वहां कीजै औ जगत्में यश लीजै महाराज जद उसकी भी बात राजा ने सुनी अनसुनी की तद तो रुक्मकेश नाम उसका छोटा लड़का बोला॥

चौ० रुक्मिणिपिताकृष्णकोदीजै। बासुदेवसोंनाताकीजै॥
यहसुन भीष्मक हरषेगात। कही पूततैं नीकीबात॥
तूबालकसबसोंअतिज्ञानी। तेरीबातभलीहममानी॥

दो० छोटे बड़े सों पूंछ के कीजै मन परतीत।
सार बचन गहिलीजिये यही जगत की रीत॥

ऐसे कह फिर राजा भीष्मक बोला कि यहतो रुक्मकेश ने भलीबात कही यदुबंशियों में राजा सूरसेन बड़े यशस्वी औ प्रतापी हुए तिनहींके पुत्र वसुदेव जी हैं सो कैसे हैं कि जिनके घरमें आदि पुरुष अबिनाशी सकल देवन के देव श्रीकृष्णचन्द्रजीने जन्मले महाबली कंसादि राक्षसोंको मारा औ भूमिका भार उतार यदुकुल को उजागर किया और सब यदुबंशियों समेत प्रजा को सुखदिया ऐसे जो द्वारकानाथ श्रीकृष्णचंद्रजी को रुक्मिणी दें तो जगत्में यश औ बड़ाई लें इतनी बात के सुनतेही सब सभा के लोग अति प्रसन्न हो बोले कि महाराज यहतो तुमने भली बिचारी ऐसा बर घर और कहीं न मिलेगा इससे उत्तम यहीहै कि श्रीकृष्णचंद्रही को रुक्मिणी व्याह दीजै महाराज जब सब सभा के लोगों ने यों

कहा तब राजा भीष्मक का बड़ा बेटा जिसका नाम रुक्म सो सुन निपट झुंझलाय के बोला ॥

चौ० समझनबोलतमहागंवार।जानतनहींकृष्णव्यवहार॥
सोरहवर्षनन्दकेरह्यो। तबअहीरसबकाहूकह्यो॥
कामरिओढ़ीगायचराई। बनमेंबैठछाकतिनखाई॥

वह तो गँवार ग्वाल है उसकी जाति पांति का क्या ठिकाना और जिसके मा बापही का भेद नहीं जाना जाता उसे हम पुच किसका कहैं कोई नन्दगोप का जानताहै कोई बसुदेव का कर मानताहै पर आजतक किसी ने न पाया कि कृष्ण किसका बेटाहै इसीसे जो जिसके मनमेंआता है सो गाता है महाराज हमें सब कोई जानता मानता है और यदुबंशी राजा कब भये क्या हुआ जो थोड़े दिनोंसे बढ़कर उन्होंने बड़ाई पाई पहला कलंक तो अब न छूटैगा वह उग्रसेन का चाकर कहाताहै उससे सगाई कर क्या हम कुछ संसार में यश पावेंगे कहा है ब्याह बैर और प्रीति समान से करिये तो शोभा पाइये और जो कृष्ण को देंगे तो लोग कहेंगे ग्वाल का सारा तिससे सब जायगा नाम औ यश हमारा ॥

महाराज यों कह फिर रुक्म बोला कि नगर चन्देली का राजा शिशुपाल बड़ाबली औ प्रतापी है उस के डरसे सब थरथर कांपते हैं औ परम्परा से उनके घरमें राजगद्दी चली आतीहै इससे अब उत्तम यहीहै कि रुक्मिणी उसी को दीजै और मेरे आगे फिर कृष्णका नाम भी न लीजै इतनी बात के सुनतेही सब सभा के लोग मारे डरके मनही मन अकुलाय पछताय के चुप होरहे औ राजा भीष्मक भी कुछ न बोला इस में रुक्म ने ज्योतिषियों को बुलाय शुभ दिन लग्न ठहराय एक ब्राह्मण के हाथ राजा शिशुपाल के यहां टीका भेज दिया वह ब्राह्मण टीका लिये चला २ नगर चन्देली में जाय राजा शिशुपाल की सभा में पहुंचा देखतेही राजा ने प्रणाम कर जब ब्राह्मण से पूंछा कहो देवता आपका आना कहां से हुआ और यहां किस मनोऽर्थ के लिये आये तबतो उस बिप्रने अशीशदे अपने आने का सब ब्यौरा कहा सुनतेही प्रसन्नहो राजा शिशुपाल ने अपना पुरोहित बुलाय टीका लिया औ उस ब्राह्मण को बहुत कुछदे बिदाकिया पीछे जरासन्धआदि सब देश २ के नरेशोंको नौतबुलाया वेसब अपने दल ले २ आये तब यह भी अपना सब कटक ले ब्याहन चला उस ब्राह्मण ने आ राजा भीष्मक से कहा जो टीका लेगया था कि

महाराज मैं राजा शिशुपाल को टीका देआया वह बड़ी धूमधाम से बरात ले व्याहने को आता है आप अपना कार्य्य कीजे ॥

यह सुन राजा भीष्मक पहले तो निपट उदास हुये पीछे कुछ शोच समझ मन्दिर में जाय उन्होंने पटरानी से कहा वह सुनकर लगी मंगलामुखी औ कुटुम्ब की नारियों को बुलाय मंगलाचार करवाय ब्याहकी सब रीति भांति करने फिर राजाने बाहर आ प्रधान औ मंत्रियों को आज्ञा दी कि कन्या के बिवाह में हमें जोजो वस्तु चाहिये सोसो सब इकट्ठी करो राजाकी आज्ञा पातेही मंत्री औ प्रधानों ने सब वस्तु बात्तकी बात में बनवाय मंगवाय लाय धरीं लोगोंने देखा सुना तो यह चर्चा नगर में फैली कि रुक्मिणी का बिवाह श्रीकृष्णचंद्र से होता था सो दुष्ट रुक्म ने न होने दिया अब शिशुपाल से होगा ॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी ने राजा परीक्षित से कहाकि पृथ्वीनाथ नगरमें तो घरघर यह बात होरही थी औ राजमन्दिर में नारियां गाय बजाय के रीति भांति करतीथीं ब्राह्मण वेद पढ़पढ़ टेहले करवाते थे ठौरठौर दुन्दुभी बजाते थे द्वारद्वार सपल्लव केलेके खम्भ गाड़ २ सोने के कलश भर २ लोग धरते थे औ तोरण बन्दनवारें बांधते थे औ एक ओर नगर निवासी न्यारेही हाट बाट चौहटे झाड़ बुहाड़ पटसे पाटते थे इसी भांति घर और बाहर में धूम मच रही थी कि उसी समय दो चार सखियों ने जा रुक्मिणी से कहा कि ॥

चौ० तोहिरुक्मशिशुपालहिदई। अबतरुक्मिणिरानीभई
बोलीशोचनायकरशीश । मनबचमेरेप्रभुजगदीश ॥

इतनी बात कह रुक्मिणी ने अति चिन्ताकर एक ब्राह्मण को बुलाय हाथ जोड़ उसकी बहुतसी बिनती औ बड़ाई कर अपना मनोर्थ सब सुनाके कहाकि महाराज मेरा संदेशा द्वारका ले जाओ और द्वारकानाथ को सुनाय उन्हें साथले आवो तो मैं तुम्हारा बड़ा गुण मानूंगी औयह जानूंगी कि तुमनेही दयाकर मुझे श्रीकृष्ण बर दिया ॥

इतनी कथा के सुनतेही वह ब्राह्मण बोला अच्छा तुम संदेशा कहो मैं ले जाऊंगा औ श्रीकृष्णचंद्र को सुनाऊंगा वे कृपानाथ हैं जो कृपा कर मेरे संग आवेंगे तो लेआऊंगा इतना बचन ज्यों ब्राह्मण के मुखसे निकला त्योंहीं रुक्मिणी जीने एक पाती प्रेम रंगरांती लिख उसके हाथ दी और कहाकि श्रीकृष्णचंद्र आनन्द कन्द को पाती दे मेरी ओर से कहियो कि

उस दासीने कर जोड़ अति बिनती कर कहाहै जो आप अन्तर्य्यामी हैं घट२ की जानते हैं अधिक क्या कहूंगी मैंने तुम्हारी शरण लीहै अबमेरी लाज तुम्हेहै जिसमेंरहे सोकीजे और इस दासीको आयबेग दर्शन दीजे ॥

महाराज ऐसे कह सुन जब रुक्मिणी जीने उस ब्राह्मण को बिदा कियो तब वह प्रभुका ध्यानकर नाम लेता द्वारका को चला और हरि इच्छा से बातके कहते जा पहुंचा वहां जाय देखा तो समुद्र के बीचयह पुरीहै जिसके चहुं ओर बड़े २ पर्बत औ बन उपबन शोभा देरहे हैं तिसमें भांति २ के पशुपक्षी बोलरहे हैं औ निर्मल जलभरे सुथरे सरोवर उनमें कमला डहडहायरहे उनपर भौंरोंके झुंडके झुण्डगुंज रहे औ तिसपै हंससारस आदि पक्षी कलोलें कररहे कोसों तक अनेक २ प्रकार के फल फूलोंकी बाड़ियां चली गईहैं तिनकी बाड़ोंपर पनबाड़ियां लहलहारही हैं बावली इन्दारों पर खड़े मीठे२ सुरोंसे गाय२ माली रहंटपरोहे चलाय२ऊंचे नीचे नीरसींच रहेहैं और पनघटोंपर पनहारियोंके ठट्ठकेठट्ठ लगेहुयेहैं ॥

यह छबि निरख हरष वह ब्राह्मण ज्यों वहां आया तो देखता क्या है कि नगर के चारों ओर अति ऊंचा कोट उसमें चार फाटक तिनमें कंचन खचित जड़ाऊ किवाड़ लगेहुये हैं औ पुरी के भीतर चांदी सोनेके मणिमय पचखने सतखने मन्दिर ऊंचे ऐसे कि आकाश से बातें करें जग मगाय रहेहैं तिनके कलश कलशियां बिजली सी चमकती हैं बरण२की ध्वजा पताका फहराय रही हैं खिड़की झरोखों मोखों जालियों से सुगन्ध की लपटें आइरहीं हैं द्वारद्वार सपल्लव केले के खम्भ औ कंचन कलश भरे धरे हैं तोरण बन्दनवारें बंधीहुई हैं और घर घर आनन्द के बाजन बाजरहे हैं ठौर२ कथा पुराण औ हरि चर्चा होरहीहै अठारह बरण सुख चैन से बास करतेहैं सुदर्शनचक्र पुरीकी रक्षा करता है ॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी बोले कि राजा ऐसी जो सुन्दर सुहावनी द्वारका पुरी तिसे देखता २ वह ब्राह्मण राजा उग्रसेन की सभा में जा खड़ा हुआ और अशीश कर वहां इसने पूछा कि श्रीकृष्णचन्द्रजी कहां बिराजतेहैं तब किसीने इसे हरिका मन्दिर बताय दिया यह ज्यों द्वारपर जाय खड़ा हुआ त्यों द्वारपालों ने इसे देख दण्डवत् कर पूछा ॥

चौ० । कोहौआप कहांतेआये । कौनदेशकीपातीलाये ॥

यह बोला ब्राह्मण हूं कुण्डिनपुर का रहनेवाला राजा भीष्मक की कन्या रुक्मिणी उसकी चिट्ठी श्रीकृष्णचन्द्र को देने आया हूं इतनीबातके

सुनतेही पौरियों ने कहा महाराज आप मन्दिर में पधारिये श्रीकृष्णचन्द्र सोंही सिंहासन पर बिराजते हैं यह बचन सुन ब्राह्मण ज्यों भीतरगया त्यों हरि ने देखतेही सिंहासन से उतर दण्डवत् कर अति आदरमान किया और सिंहासन पर बिठाय चरणोदक चरणामृत लिया और ऐसी सेवा करनेलगे जैसे कोई अपने इष्ट की सेवा करे निदान प्रभु ने सुगन्ध उबटन लगाय न्हिलाय धुलाय पहलेतो उसे षटरस भोजन करवाय पीछे बीड़ा दे केसर चन्दन से चरच फूलोंकी माला पहराय मणिमय मन्दिर में लेजाय एक सुथरे जड़ाऊ छपरखट में लिटाया महाराज वहभी बाट का हारा थका तो थाही लेटतेही सुखपाय सोगया श्रीकृष्णचन्द्रजी कितनी एक बेर तक तो उसकी बातें सुननेकी अभिलाषा किये वहां बैठे मनहीं मन कहते रहे कि अब उठे अब उठे निदान जब देखा कि न उठा तब आतुर हो उसके पैताने बैठ लगे पांवदाबने इसमें उनकी नींद टूटी तो वह उठ बैठा तब हरि ने उसकी क्षेम कुशल पूछ पूछा ॥

चौ० नीकोराजदेश तुमतनौ । हमसोंभेद कह्योआपनौ ॥
कौनकाजइतआवनभयो । दर्शदिखाइहमैंसुखदयो॥

ब्राह्मण बोला कि कृपानिधान आप मन दे सुनिये मैं अपने आनेका कारण कहताहूं कि महाराज कुण्डिनपुर के राजा भीष्मक की कन्या ने जब से आपका नाम औ गुण सुनाहै तभीसे वह निशदिन तुम्हारा ध्यान कियेरहती है औ चरण कमल की सेवा कियाचाहती थी और संयोगभी आय बना था पर बात बिगड़गई प्रभु बोले सो क्या ब्राह्मण ने कहा दीनदयाल एकदिन राजा भीष्मकने अपने सब कुटुम्ब औ सभाके लोगों को बुलाय के कहा कि भाइयो कन्या ब्याहन योग्य भई अब इसकेलिये बर ठहराया चाहिये इतना बचन राजा के मुखसे निकलतेही उन्हों ने अनेक २ राजाओं का कुल गुण नाम औ पराक्रम कह सुनाया पर इनके मन में न आया तद रुक्मकेश ने आप का नामलिया तो प्रसन्नहो राजा ने उसका कहना मानलिया और सबसे कहा कि भाइयो मेरे मन में तो इसकी बात पत्थर की लकीर होचुकी तुम क्या कहते हो वे बोले महाराज ऐसा घर बर जो चिलोकी भर में ढूंढ़ियेगा तौभी न पाइयेगा इससे अब उचित यही है कि बिलम्ब न कीजे श्रीकृष्णचन्द्र से रुक्मिणी का विवाह कर दीजे महाराज यह बात ठहरचुकी थी इसमें रुक्म ने भांजी

मार रुक्मिणीकी सगाई शिशुपाल से की अब वह सब असुर दल साथ ले ब्याहने को चढ़ा है॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेव मुनि बोले कि पृथ्वीनाथ ऐसे उस ब्राह्मण ने सब समाचार कह रुक्मिणी जी की चिट्ठी हरिके हाथ दी प्रभुने अति हित से पाती ले छातीसे लगाय ली औ पढ़कर प्रसन्न हो ब्राह्मण से कहा देवता तुम किसी बातकी चिन्ता मतकरो मैं तुम्हारे साथ चल असुरोंको मार उनका मनोर्थ पूरा करूंगा यह सुन ब्राह्मण को तो धीर्य्य हुआ पर हरि रुक्मिणी का ध्यान कर चिन्ता करने लगे॥ इति श्रीलाल कृते प्रेमसागरे श्रीकृष्णप्रति रुक्मिणीसंदेशोनाम चिपंचाशत्तमोऽध्यायः॥५३॥

श्रीशुकदेव मुनि बोले कि हे राजा श्रीकृष्णचन्द्र ने ऐसे उस ब्राह्मण को ढाढ़स बंधाय फिर कहा॥

दो० जैसे घिसके काठते काठहि ज्वाला जारि॥
ऐसे सुन्दरि ल्यायहौं दुष्ट असुरदल मारि॥

इतना कह फिर सुथरे बस्त्र आभूषण मनमानते पहन राजा उग्रसेन के पास जाय प्रभुने हाथ जोड़ कर कहा महाराज कुण्डिनपुर के राजा भीष्मकने अपनी कन्या देने को पत्र लिख पुरोहित के हाथ मुझे अकेला बुलाया है जो आप आज्ञा दें तो जाऊं औ उसकी बेटी ब्याह लाऊं॥

चौ० सुनकै उग्रसेन यों कहै। दूर देश कैसे मन रहै॥
तहां अकेलेजात मुरारि। मत काहूसों उपजै रारि॥

तब तुम्हारे समाचार हमें कौन पहुंचावेगा यों कह पुनि उग्रसेन बोले कि अच्छा जो तुम वहां जाया चाहते हो तो अपनी सब सेना साथ ले दोनों भाई जाओ और ब्याह कर शीघ्र चले आओ वहां किसीसे लड़ाई झगड़ा न करना क्योंकि तुम चिरंजीव हो तो सुन्दरी बहुत आय रहेंगी आज्ञा पातेही श्रीकृष्णचन्द्र बोले कि महाराज तुम ने सच कहा पर मैं आगे चलताहूं आप कटक समेत बलरामजी को पीछेसे भेज दीजियेगा॥

ऐसे कह हरि उग्रसेन बसुदेवसे बिदा हो उस ब्राह्मणके निकट आये और रथ समेत अपने दारुक सारथी को बुलवाया वह प्रभु की आज्ञा पातेही चार घोड़ेका रथ तुरन्त जोत लाया तब श्रीकृष्णचंद्र उस पर चढ़े औ ब्राह्मणको पास बिठाय द्वारका से कुण्डिनपुर को चले ज्यों नगर के बाहर निकले त्यों देखते क्या हैं कि दाहनी ओर तो मृगके झुंडके झुंड चले जातेहैं औ सन्मुख से सिंह सिंहिनी अपना भक्ष लिये गर्जते आते हैं

यह शुभ शकुन देख ब्राह्मण अपने जीमें बिचार कर बोला कि महाराज इस समय इस शकुनके देखनेसे मेरे बिचारमें यह आता है कि जैसे ये अपना काज साधके आतेहैं तैसेही तुमभी अपना काज सिद्धकर आवोगे श्रीकृष्णचंद्र बोले आपकी कृपासे इतना कह हरि वहांसे बढ़े औ नये २ देश नगर गांव देखते २ कुण्डिनपुर में जा पहुंचे तो वहां देखा कि ठौर २ व्याहकी सामा जो संयोग धरी है तिससे नगर की छबि कुछ और की औरही होरही है ॥

चौ० भारेंगली चोहटे छावें। चोवाचन्दनसों छिरकावें॥
पोयसुपारीभौराकियेबिचबिचकनकनारियलदिये
हरेपात फल फूल अपार। ऐसी घरघर बन्दनवार॥
ध्वजा पताका तोरणतने। सुढबकलश कंचनके बने॥

और घर घर में आनन्द होरहा है महाराज यह तो नगरकी शोभा थी औ राजमन्दिर में जो कुतूहल होरहा था उसका वर्णन कोई क्याकरे वह देखतेही बने आगे श्रीकृष्णचन्द्र ने सब नगर देख आ राजा भीष्मक की बाड़ी में डेरा किया औ शीतल छांह में बैठ ठंढे हो उस ब्राह्मण से कहा कि देवता तुम पहले हमारे आनेका समाचाररुक्मिणी जीको जा सुनाओ जोवे धीर्य्य धर अपने मनका दुःख हरें पीछे वहां का भेद हमें आसुनाओ जो हम फिर उसका उपाय करें ब्राह्मण बोला कि कृपानाथ आज व्याहका पहिला दिनहै राजमन्दिर में बड़ी धूमधाम होरहीहै मैं जाता हूं पर रुक्मिणी जीको अकेली पाय आपके आनेका भेद कहूंगा यों सुनाय ब्राह्मण वहांसे चला महाराज इधरसे हरितो यों चुपचाप अकेले पहुंचे और उधरसे राजा शिशुपाल जरासन्ध समेत सबअसुर दल लिये इस धूमसे आया कि जिसका वारापार नहीं औ इतनी भीड़ संगकर लाया कि जिसके बोझसे लगा शेषनाग डगमगाने और पृथ्वीउलटने उसके आने की सुधि पाय राजा भीष्मक अपने मंत्री औ कुटुम्ब के लोगों समेत आगू बढ़ लेनेगये औ बड़े आदरमान से आगोनी कर सब को पहरावनी पहराय रत्न जटित बस्त्र आभूषण औ हाथी घोड़े दे उन्हें नगर में लेआये औ जनवासा दिया फिर खाने पीनेका सन्मान किया ॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेव मुनि बोले कि महाराज अबमैं अन्तर कथा कहताहूं आप चित्त लगाय सुनिये कियब श्रीकृष्णचंद्र द्वारकासेचले तिसी समय सब यदुबंशियों ने जाय राजा उग्रसेन से कहा कि महाराज

हमने सुनाहै कि कुंडिनपुर में राजा शिशुपाल जरासन्ध समेत सब असुर दल ले ब्याहन आया है और हरि अकेले गयेहैं इससे हम जानते हैं कि वहां श्रीकृष्णजी से और उनसे युद्ध होगा यहबात जानके भी हमअजान हो हरि को छोड़ यहां कैसे रहें हमारा मनतो मानता नहीं आगे जो-आप आज्ञा कीजे सो करें ॥

इस बातके सुनतेही राजा उग्रसेन ने अति भय खाय घबराय बल रामजी को निकट बुलाय समझाय के कहा कि तुम हमारी सब सेना ले श्रीकृष्ण के न पहुंचते शीघ्र कुण्डिनपुर जाओ औ उन्हें अपने संगकर ले आओ राजाकी आज्ञा पातेही बलदेवजी छप्पन करोड़ यादव जोड़ ले कुंडिनपुर को चले उसकाल कटक के हाथी काले धौले धूमरे दल बादल से जनाते थे और उनके श्वेत २ दांत बकपांति से धौंसा मेघसा गरजता था और शस्त्र बिजली से चमकते थे राते पीले बागे पहिने घुड़ चढ़ों के टोलके टोल जिधर तिधर दृष्टि आतेथे रथों के तांतों के तांते झम झमाते चले जातेथे तिनकी शोभा निरख २ हरष देवता अति हित से अपने २ बिमानों पर बैठे आकाश से फूल बरसाय २ श्रीकृष्णचन्द्र आनन्द कन्द की जै मनाते थे इसबीच सब दल लिये चले चले कुंडिनपुर मेंहरि के पहुंचतेही बलराम जी भी जा पहुंचे यों सुनाय फिर शुकदेवजी बोले कि महाराज श्रीकृष्णचन्द्र रूपसागर जगत उजागर तो इसभांति कुंडिनपुर पहुंच चुके थे पर रुक्मिणी ने इनके आनेका समाचार न पाया ॥

चौ० बिकलबदनचितवैचहुंओर। जैसेचन्दमलिन भयभोर॥
अतिचिंतासुंदरिजियबाढ़ी। देखेजंचअटापरठाढ़ी॥
चढ़िचढ़िउझकैखिरकीद्वार। नयननतेंछांड़ैजलधार॥

दो० बिलख बदन अति मलिन मन लेत उसास निसास।
व्याकुल बर्षत नैन जल सोचत कहति उदास॥

कि अबतक क्यों नहीं आये हरि उनका तो नाम है अन्तर्यामी ऐसी मुझमे क्या चूक पड़ी जो अबलग उन्होंने मेरी सुधि न ली क्या ब्राह्मण वहां नहीं पहुंचा के हरि ने मुझे कुरूप जान मेरी प्रीति की प्रतीति न करीके जरासन्ध का आना सुन प्रभु न आये कल ब्याह का दिन है और असुर आय पहुंचा जो वह कल मेराकर गहेगा तो यह पापी जीव हरि बिन कैसे रहेगा जप तप नेम धर्म कुछ आड़े न आये अब क्या करूं और

किधर जाऊं अपनी बरात ले आया शिशुपाल कैसे बिरमें प्रभुदीन दयाल

इतनी बात जब रुक्मिणी के मुंहसे निकली तब एकसखीने तो कही कि दूरदेश बिन पिता बन्धुकी आज्ञा हरि कैसे आवेंगे और दूसरी बोली कि जिनका नाम है अन्तर्य्यामी दीन दयाल बेबिन आये न रहेंगे रुक्मिणी तू धीर्य्य धर व्याकुल नहो मेरा मन यह हामी भरताहै कि अभी आय कोई यों कहता है कि हरि आये महाराज ऐसे वे दोनों आपस में बत-कहाव कर रहींथी कि वैसेमें ब्राह्मणने जाय अशीश दे कहा कि श्रीकृष्ण-चंद्र जीने आय राज बाड़ी में डेरा किया और सब दल लिये बलदेवजी पीछे से आते हैं ब्राह्मण को देखते और इतनी बातके सुनतेही रुक्मिणी जीके जीमेंजी आया और उन्होंने उसकाल ऐसा सुख माना कि जैसे तपी तपका फल पाय सुख माने ॥

आगे श्रीरुक्मिणीजी हाथ जोड़ शिर झुकाय उस ब्राह्मण के सम्मुख आय कहने लगी कि आज तुमने आय हरि का आगमन सुनाय मुझे प्राण दान दिया मैं इसके पलटे क्या दूंजो त्रिलोकी की माया दूं तो भी तुम्हारे ऋणसे उऋण न हूं ऐसे कह मनमार सकुचाय रही तद वह ब्राह्मण अति संतुष्ट हो आशीर्बाद कर वहांसे उठ राजा भीष्मक के पास गया और उसने श्रीकृष्ण के आने का ब्यौरा सब समझाय के कहा सुनत प्रमाण राजा भीष्मक उठ धाया और चला चला वहां आया जहां बाड़ी में श्रीकृष्ण बलराम सुखधाम बिराजते थे आते ही साष्टांग प्रणाम कर सम्मुख खड़े हो हाथ जोड़के कहा ॥

चौ० मेरेमन बचहौ तुमहरी । कहाकहौं जो दुष्टन करी ॥

अब मेरा मनोर्थ पूर्ण हुआजो आपने आय दर्शन दिया योंकह प्रभुके डेरे करवाय राजा भीष्मक तो अपने घर आय चिन्ता करऐसे कहनेलगा ॥

चौ० हरि चरित्रजाननहिंकोई । क्याजानेअबकैसीहोई ॥

और जहां कृष्ण बलदेव थे तहां नगर निवासी क्या स्त्री क्या पुरुष आय २ शिर नाय प्रभु यश गाय २ सराहि २ आपस में यों कहते थे कि रुक्मिणी योग्य बर श्रीकृष्णहीं है बिधना करे यह जोरी जुरै औ चिरंजीव रहे इसबीच दोनों भाईयों के कुछ जो जीमें आया तो नगर देखने चले उस समय ये दोनों भाई जिस हाट बाट चौहटे से होजाते थे तहीं नर नारियों के ठट्ट के ठट्ट लगजाते थे औ इनके ऊपर चोआ चन्दन गुलाब

नीर छिड़क छिड़क फूल बरसाय हाथ बढ़ाय बढ़ाय प्रभु को आपस में यों कह बताते थे ॥

चौ० नीलाम्बर ओढ़े बलराम । पीताम्बरपहनेघनश्याम ॥
कुंडलचपलमुकुटशिरधरे । कमलनयनचाहतमनहरे ॥

औ ये देखते जाते थे निदान सब नगर और राजा शिशुपालका कटक देख ये तो अपने दलमें आये औ इनके आने का समाचार सुन राजा भीष्मक का बड़ा बेटा अति क्रोधकर अपने पिता के निकट आय कहने लगा कि सच कहो कृष्ण यहां किसका बुलाया आया यह भेद मैंने नहीं पाया बिन बुलाये यह कैसे आया ब्याह काज है सुखका धाम इसमें इस का है क्या काम ये दोनों कपटी कुटिल जहां जाते हैं तहां ही उत्पात मचाते हैं जो तुम अपना भला चाहो तो तुम मुझसे सत्य कहो ये किस के बुलाये आये ॥

महाराज रुक्म ऐसे पिता को धमकाय वहां से उठ सात पांच करता वहां गया जहां राजा शिशुपाल और जरासन्ध अपनी सभा में बैठेथे औ उनसे कहा कि यहां रामकृष्ण आये हे अपने सब लोगों को जता दो जो सावधानी से रहें इन दोनों भाइयों का नाम सुनतेही राजा शिशुपाल तो हरि चरित्र को लख ब्योहार जुहार करने लगा औ मनही मन बिचार जरासन्ध कहने लगा कि सुनो ये दोनों जहां आवते हैं तहां कुछ न कुछ उपद्रव मचाते हैं ये महाबली औ कपटी हैं इन्होंने ब्रजमें कंसादिक बड़े२ राक्षस सहज सुभावही मारे इन्हें तुम मत जानो बारे ये कभी किसी से लड़कर नहीं हारे कृष्णने सत्रह बेर मेरा दल हना जबमें अठारहवीं बेर चढ़ आया तब यह भाग पर्वत पै जा चढ़ा ज्यों मैंने उसमें आग लगाई त्यों यह छलकर द्वारका को चला गया ॥

चौ० याकोकाहूभेदनपायो । अबयहकरनउपद्रवआयो ॥
हैयहछलीमहा छलकारै । काहू पै जान्योनहिंपरै ॥

इससे अब ऐसा कुछ उपाय कीजे जिससे हम सबोंकी पत रहे इतनी बात जब जरासन्ध ने कही तब रुक्म बोला कि वेक्या वस्तु हैं जिनके लिये तुम इतने भयभीतहो तिन्हें तो मैं भली भांतिसे जानताहूं कि बन बन गाते नाचते बेनु बजाते धेनु चराते फिरते थे वे ग्वाल गंवार युद्ध विद्या की रीति क्या जानें तुम किसी बात की चिन्ता अपने मनमें मत

करो हम सब यदुबंशियों समेत कृष्ण बलराम को छिनभरमें मार हटावेंगे ॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज उस दिन रुक्म तो जरासन्ध औ शिशुपाल को समझाय बुझाय ढाढ़स बंधाय अपने घर आया औ उन्होंने सात पांचकर रात गंवाई भोर होतेही इधर राजा शिशुपाल औ जरासन्ध तो ब्याह का दिन जान बरात निकालने की धूम धाममें लगे और उधर राजा भीष्मक के यहां भी मंगला चार होने लगे इसमें रुक्मिणीजी ने उठतेही एक ब्राह्मण के मुख श्रीकृष्णचंद्र से कहला भेजा कि कृपानिधान आज ब्याह का दिनहै दो घड़ी दिन रहे नगरके पूरब देवी का मंन्दिर है तहां मैं पूजा करने जाऊंगी मेरी लाज तुम्हें है जिसमें रहे सो करिये आगे पहर दिन चढ़े सखी सहेली औ कुटुम्ब की स्त्रियां आईं उन्होंने आतेही पहले तो आंगन में गजमोतियों का चौक पुरवाय कंचन की जड़ाऊ चौकी बिछवाय तिसपर रुक्मिणी को बिठाय सात सुहागनों से तेल चढ़वाया पीछे सुगन्ध उबटन लगाय न्हिलाय धुलाय उसे सोलह शृङ्गार करवाय बारह आभूषण पहराय ऊपर राता चोला उढ़ाय बनी बनाय बिठाया इतने में घड़ी चार एक दिन पिछला रह गया उसकाल रुक्मिणी बाल अपनी सब सखी सहेलियों को साथ ले बाजे गाजे से देवी की पूजा करनेको चली तो राजा भीष्मकने अपने लोग रखवालीको उसके साथ कर दिये ॥

ये समाचार पाय कि राजकन्या नगरके बाहर देवी पूजने चलीहै राजा शिशुपाल ने भी श्रीकृष्णचन्द्र के डरसे अपने बड़े बड़े रावत सावन्त शूर बीर योद्धाओं को बुलाय सबभांति ऊंच नीच समझाय बुझाय रुक्मिणीजी की चौकसी को भेजदिया वे भी आय अपने अस्त्र शस्त्र संभाल राजकन्या के संग हो लिये उस बिरियां रुक्मिणीजी सशृङ्गार किये सखी सहेलियों के झुंड के झुंड लिये अन्तर पट की ओट में औ काले २ राक्षसोंके कोट में जाते ऐसी शोभायमान लगती थी कि जैसे श्यामघटा के बीच तारामंडल समेत चन्द्रमा निदान कितनी एक बेर में चली चली देवी के मन्दिरमें पहुंची वहां जाय हाथ पांव धोय आचमन कर शुद्धहोय राजकन्या ने पहले तो चन्दन अक्षत धूप दीप नैवेद्य कर अद्वा समेत देवी की वेद विधि से पूजा की पीछे ब्राह्मणियों को इच्छा भोजन करवाय सुथरी तीयलें पहराय रोली की खौर काढ़ अक्षत लगाय उन्हें दक्षिणा दी औ उनसे अशीश ली ॥

आगे देवीकी परिक्रमादे वह चन्द्रमुखी चम्पकवरणी मृगनयनी पिक-बयनी गजगवनी सखियों को साथ ले हरिके मिलने की चिन्ता किये ज्यों वहांसे निश्चिन्त हो चलने को हुई त्यों श्रीकृष्णचंद्र भी अकेले रथ पर बैठ वहां पहुंचे जहां रुक्मिणी के साथी सब योधा शस्त्र अस्त्रसे जकड़े खड़े थे इतना कह शुकदेवजी बोले ॥

दो० पूजि गौरि जबहीं चली एक कहत अकुलाय ॥
सुन सुन्दरि आये हरी देख ध्वजा फहराय ॥

यह बात सखीसे सुन और प्रभुके रथ की बेरख देख राजकन्या अति आनन्द कर फूली अंग न समाती थी औ सखी के हाथ पर हाथ दिये मोहनी रूप किये हरिके मिलने की आश लिये कुछ कुछ मुसकराती ऐसे सबके बीच मन्दगति जातीथी कि जिसकी शोभा कुछ बर्णी नहीं जाती आगे श्रीकृष्णचंद्रको देखतेही सब रखवाले भूलेसे खड़े होरहे औ अन्तर पट उनके हाथसे छूटपड़ा इसमें मोहनीरूपसे रुक्मिणीजीको ज्यों उन्होंने देखा त्यों और भी मोहितहोगयेसेशिथिल हुये कि तिन्हें अपनेतनमनकीभीसुध न थी ॥

दो० भृकुटी धनुष चढ़ाय अंजन बरुणी पनच कै ॥
लोचन बाण चलाय मारे पै जीवत रहै ॥

महाराज उस काल सब राक्षस तो चिच केसे कढ़े खड़े देखतेही रहे औ श्रीकृष्णचंद्र सब के बीच रुक्मिणी के पास रथ बढ़ाय जाय खड़े हुये प्राणपति को देखतेही उसने सकुच कर मिलने को ज्यों हाथ बढ़ाया त्यों प्रभुने बांये हाथ से उठाय उसे रथ पर बैठाया ॥

चौ० काँपतगातसकुचमनभारी। छांड़सबनहरिसंगसिधारी
ज्यों बैरागी छांड़ै गेह। कृष्ण चरण सों करै सनेह ॥

महाराज रुक्मिणीजी ने तो जप तप ब्रत पुण्य किये का फल पाया औ पिछला दुःख सब गँवाया बैरी अस्त्र शस्त्र लिये खड़े मुख देखतेरहे प्रभु उनके बीच से रुक्मिणी को ले ऐसे चले कि ॥

दो० ज्यों बकु झुण्डन स्यारके परै सिंह बिच आय ॥
अपनो भक्षण लेय के चले निडर घहराय ॥

आगे श्रीकृष्णचंद्रके चलतेही बलरामजी भी पीछेसे धौंसा दे सब दल साथ ले जाय मिले ॥ इति श्रीलीलकृते प्रेमसागरे रुक्मिणीहरणोनाम चतुर-पंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५४ ॥

लीजे मैं तेईस तेईस अक्षौहिणी ले मथुरापुरी पर सचह बेर चढ़ गया औ इसी कृष्ण ने सचहबेर मेरा सब दल हना मैंने कुछ शोक न किया औ अठारहवीं बेर जद इसका दल मारा तद कुछ हर्षभी न किया यह भागकर पहाड़ पर जा चढ़ा मैंने इसे वहीं फूंकदिया न जानिये यह क्योंकर जिया इसकी गति कुछ जानीनहीं जाती इतना कह फिरजरासंध बोला कि महाराज अब उचित यही है जो इस समय को टाल दीजे कहा है कि प्राण बचें तो पीछे सब हो रहता है जैसे हमें हुआ सचह बार हार अठारहवीं बेर जीते इस्से जिसमें अपनी कुशल होय सो कीजे और हठ छोंड़ दीजे ॥

महाराज जद जरासंध ने ऐसे समझाय के कहा तद उसे कुछ धीर्य्य हुआ औ जितने घायल योधा बचे थे तिन को साथ ले अछताय पछताय जरासंधके साथ हो लिया ये तो यहांसे यों हारके चले औ जहां शिशुपाल का घर था तहां की बात सुनो कि पुच का आगमन विचार शिशुपाल की मा ज्यों मंगलाचार करनेलगी त्यों सम्मुख छींक हुई औ दाहनी आंख उसकी फड़कने लगी ये अशकुन देख उसका माथा ठनका कि इस बीच किसी ने आय कहा कि तुम्हारे पुचकी सेना सब कट गई औ दुलहनभी न मिली अब वहांसे भाग अपना जीव लिये आता है इतनी बातके सुनतेही शिशुपाल की माता अति चिन्ताकर अवाक्य होरही ॥

आगे शिशुपाल औ जरासन्ध का भागना सुन रुक्म अति क्रोध कर अपनी सभामें आन बैठा औसबको सुनाय कहने लगा कि कृष्ण मेरेहाथ से बच कहां जा सक्ता है अभी जाय उसे मार रुक्मिणी को ले आऊं तो मेरा नाम रुक्म नहीं तो नहीं फिर कुंडनपुर में न आऊं महाराज ऐसे पैजकर रुक्म एक अक्षौहिणी दलले श्रीकृष्णचंद्र से लड़ने को चढ़ धाया औ उसने यादवों का दल जाघेरा उसकाल उसने लोगों से कहा कि तुम तो यादवोंको मारो औ मैं आगेजाय कृष्णको जीता पकड़ लाताहूं इतनी बातके सुनतेही उसके साथी यदुबंशियों से युद्ध करने लगे औ वह रथ बढ़ाय श्रीकृष्णचंद्र के निकट जाय ललकार कर बोला अरे कपटी गँवार तूक्या जाने राज व्यवहार बालकपने में जैसे तैंने दूधदही की चोरी करी तैसे तैंने यहांभी आय सुन्दरी हरी ॥

चौ० । ब्रजबासी हमनहींअहीर । ऐसेकहकर लीनेतीर ॥
विषके बुझे लिये उनबीन । खैंचधनुषशरछोंड़ेतीन ॥

उन बाणोंको आते देख श्रीकृष्णचंद्र ने बीचही काटा फिर रुक्म ने और बाण चलाये प्रभुने वेभी काट गिराये औ अपना धनुष संभाल कई एक बाण ऐसे मारे कि रथ के घोड़ों समेत सारथी उड़ गया और धनुष उसके हाथसे कट नीचे गिरा पुनि जितने आयुध उसने लिये हरिने सब काट काट गिरा दिये तबतो वह अति झुंझलाय फरी खांडा उठाय रथ से कूद श्रीकृष्णचंद्र की ओर यों झपटा कि जैसे बावला गंटड़ गज पर आवे के जो पतंग दीपक पर धावे निदान जातेही उसने हरिके रथ पर एक गदा चलाई कि प्रभुने झट उसे पकड़ बांधा औ चाहा कि मारें इस में रुक्मिणी जी बोलीं॥

चौ० मारौमत भैयाहै मेरो। छाड़ौनाथ तिहारोचेरो॥
मरखअन्धकहायहजाने। लक्ष्मीकांतहिपामरमाने॥
तुमयोगेश्वरआदिअनंत। भक्त हेतु प्रगटत भगवंत॥
यहजड़कहातुम्हेंपहिचाने दीनदयालकृपालबखाने॥

इतनी कथा कह फिर कहने लगीकि साधु जड़ औ बालक का अपराध मनमें नहीं लाते जैसे कि सिंह श्वानके भूंकने पर ध्यान नहीं करता औ जो तुम इसे मारोगे तो होगा मेरे पिताको सोग यह करना तुम्हें नहींहै योग जिस ठौर तुम्हारे चरण पड़तहैं तहांके सब प्राणी आनन्द में रहते हैं यहबड़े अचरजकी बातहै कि तुमसा सगा रहते राजा भीष्मक पुत्रकादुख पावे महाराज ऐसे कह एकबार तो रुक्मिणी जी यों बोलीं कि महाराज तुमने भलाहित सम्बधी से किया जो उसे पकड़ बांधा औ खड्ग हाथमें ले मारने को उपस्थित हुये पुनि अति व्याकुल हो थरथराय आंखें डब-डबाय बिसूर २ प्रभोंपड़ गोट पसार कहने लगी॥

चौ० बन्धुभीख प्रभुमोको देऊ। इतनोयशतुमजगमेंलेऊ॥

इतनी बातके सुननेसे औ रुक्मिणी जीकी ओर देखने से श्रीकृष्णचंद्र जीका सब कोप शान्त हुआ तब उन्हों ने उसे जीव से तो न मारा पर सारथी को सैन करी उसने झट इसकी पगड़ी उतार टुण्डियां चढ़ाय मूंछ दाढ़ी औ शिर मूड़ सात चोटी रख रथके पंछे बांध लिया॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेव जी बोले कि महाराज हुक्म की तो श्रीकृष्ण जी ने यहांयह अवस्थाकी और बलदेव वहांसे सब असुरदल को मार भगाय कर भाईके मिलने को ऐसे चले कि जैसे इतनज कमलबह

में कमलों को तोड़ खाय अकुलाय के बिखराय भागता होय निदान कितनी एक बेरमें प्रभुके समीप जाय पहुंचे औ रुक्मको बंधादेख श्रीकृष्ण जीसे अति झुंझलाय के बोले कि तुमने यह कामकिया जो सालेको पकड़ बांधा तुम्हारा कुटैव नहीं जाती॥

चौ० बांध्यौयाहिकरीबुधियोरीयहतमछ्यासगाईतोरी
औयदुकुलकोलीकलगाई।अबहमसोंकोकरैसगाई॥

जिस समय यह युद्ध करने को आपके सम्मुख आया तब तुमने से समझाय बुझायके उलटा क्यों न फेरदिया महाराज ऐसे कह बलराम जीने रुक्म को तो खेाल समझाय बुझाय अति शिष्टाचार कर बिदा किया फिर हाथ जोड़ अति बिनती कर बलराम मुख धाम रुक्मिणी जीसे कहनेलगे कि हे सुन्दरी तुम्हारे भाई को जो यह दशा हुई इसमें कुछ हमारी चूक नहीं यह उसके पूर्व जन्मके किये कर्मका फलहै औ क्षत्रियों का धर्म भी है कि भूमि धन त्रिया के काज करतेहैं युद्ध बल परस्पर साज इसबात का तुम बिलग मत मानो मेरा कहा सच्चही जानो हार जीत भी इसके साथही लगी है और यह संसार दुःख का समुद्रहै यहां आय सुख कहां पर मनुष्य मायाके बशहो दुःखसुख भलाबुरा हारजीत संयोग बियोग मनहीं मनसे मान लेतेहैं पर इसमें हर्ष शोक जोचको नहीं होता तुम अपनेभाई के बिरूप होने की चिन्ता मत करो क्योंकि ज्ञानी लोग बहुधा देह का नाश कहतेहैं इस लेखे देहको पत गई कुछ जीव की नहीं॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेव जीने राजा परीक्षित से कहा कि धर्मावतार जब बलराम जीने ऐसे रुक्मिणी को समझाया तब॥

दो० सुनि सुन्दरि मन समझकै किये जेठ की लाज।
सैन मांहि पियसों कहत हांकहुरथ ब्रजराज॥

चौ० घंघटओट बदनकी करै। मधुर बचनहरिसों उच्चरै॥
सम्मुख ठाढ़ेहैं बलराज। अहोकंत रथबेग चलाज॥

इतनी बात श्रीरुक्मिणी जीके मुखसे निकलतेही इधर तो श्रीकृष्णचंद्र जीने रथ द्वारका की ओर हांका औ उधर रुक्म अपने लोगों में जाय अति चिन्ता कर कहने लगा कि मैं कुंडिनपुर से यह पैज करके आया था कि अभी जाय कृष्ण बलराम को सब यदुबंशियों समेत मार रुक्मिणी को ले आऊंगा सो मेरा प्रण पूरा न हुआ और उलटी अपनी पत खोई अब

जीता न रहूंगा इसदेश औगृहस्थाश्रम कोछोड़ वैरागी हो कहींजायमारूंगा॥

जब रुक्मने ऐसे कहा तब उसके लोगों मेंसे कोई बोला महाराज तुम महाबीर हो औ बड़े प्रतापी तुम्हारे हाथसे जो वे जाते बचगये सो उनके भले दिन थे अपने प्रारब्ध के बलसे निकल गये नहीं तो आपके सम्मुख हो शत्रु कब जीता बच सक्ता है तुम अज्ञान हो ऐसी बात क्यों बिचारते हो कभी हार होतीहै कभी जीत पर शूरबीरों का धर्महै जो साहसनहीं छोड़ते भला रिपु आज बचगया फिर मार लेंगे महाराज जद यों उसने रुक्म को समझाया तद वह यह कहने लगा कि सुनो॥

चौ० हारयोउनसों औपतिगई। मेरेमनअति लज्जाभई॥
जन्मनहींकुंडिनपुरजाऊं। बरनऔरहीगांउबसाऊं॥
यौंकहउनइकनगरबसाय। सुतदाराधनतहांमँगाय॥
ताकोधरयोभोजकटनाम। ऐसोरुक्म बसायोग्राम॥

महाराज उधरतो रुक्म राजा भीष्मक से बैरकर वहां रहा औ इधर श्रीकृष्णचन्द औ बलदेवजी चले २ द्वारका के निकट आय पहुंचे॥

चौ० उड़ीरेणुआकाशजुछाई। तबहीपुरबासिनसुधिपाई॥

दो० आवत हरि जाने जबहिं राख्या नगर बनाय।
शोभा भई तिहुं लोक की कही कौन पैजाय॥

उसकाल घर २ मंगलाचार होरहा द्वार २ केले के खंभ गड़े कंचन कलश मङ्गल सपल्लव धरे ध्वजा पताका फहराय रहीं तोरण बन्दनवारें बंधी हुई औ प्रति हाट बाट चौहटों में चौमुखे दिये लिये युवतियों के यूथके यूथ खड़े औ राजा उग्रसेन भी सब यदुबंशियों समेत बाजे गाजे से अगाऊ जाय रीति भांति कर बलराम सुखधाम औ श्रीकृष्णचंद्र आनन्दकन्द को नगर में ले आये उस समय के बनाव की छबि कुछ बरनी नहीं जाती क्या स्त्री क्या पुरुष सबही के मनमें आनन्द छाय रहा था प्रभुके सोंही आय २ सब भेट दे २ भेटते थे औ नारियां अपने अपने द्वारों बारों चौबारों कोठों परसे मंगलगीत गाय गाय आरती उतार उतारफल फूल बरसावती थीं और श्रीकृष्णचंद्र और बलदेवजी यथा योग्य सबकी जोहार करते जाते थे निदान इसी रीति से चले २ राजमन्दिर में जा बिराजे आगे कई एक दिवस पीछे एकदिन श्रीकृष्णजी राजसभा में जहां राजा उग्रसेन सूरसेन बसुदेव आदि सब बड़े २ यदुबंशी बैठे थे गये और

प्रणामकर उन्होंने उनके आगे कहा कि महाराज युद्ध जीति जो कोई सुन्दरी लाता है वही राक्षस ब्याह कहाता है॥

इतनी बात के सुनतेही सूरसेनजी ने पुरोहित बुलाय उसे समझाय के कहा कि तुम श्रीकृष्ण के बिवाह का दिन ठहरा दो उसने झट पत्रा खोल भला महीना दिन बार नक्षत्र देख शुभसूर्य्य चंद्रमा बिचार ब्याह का दिन ठहराय दिया तब राजाउग्रसेनने अपने मंत्रियों को तीयह आज्ञादी कि तुम ब्याहकीसब सामा इकट्ठी करो औ आप बैठ पंच लिख २ पंडव कौरव आदि सबदेश बिदेश के राजाओं को ब्राह्मणों के हाथ भिजवाये महाराज चिट्ठी पातेही सब राजा प्रसन्न हो २ उठ धाये तिन्हों के साथ ब्राह्मण पण्डित भाट भिखारी भी होलिये॥

और ये समाचार सुन राजा भीष्मक ने भी बहुत बस्त्र शस्त्र जडाऊ आभूषण औ रथ हाथी घोड़े दास दासियों के डेले एक ब्राह्मण को दे कन्यादान का संकल्प मनही में ले अति बिनती कर द्वारकाको भेजदिया इधरसे तो देश २ के नरेश आये और इधरसे राजा भीष्मक का पठाया सब सामा लिये वह ब्राह्मण भी आया उस समय की शोभा द्वारकापुरी की कुछ बरनी नहीं जाती आगे ब्याहका दिन आया तो सब रीतिभांति कर उस कन्या को मढ़ेके नीचे ले जा बैठाया और सब बड़े बड़े यदुबंशी भी आय बैठे उस बिरियां॥

चौ० पण्डितततहांवेदउचरैं। रुक्मिणिसंगहरिभांवरफिरैं॥
ढोल दुंदुभी भेर बजावैं। हरषहिदेव पुष्प बरसावैं॥
सिद्ध साध्य चारण गन्धर्व। अन्तरिक्षभये देखें सर्व॥
चढ़ बिमान घिरे शिरनावैं। देवबधूसब मंगल गावैं॥
हाथगह्योप्रभुभांवरपारी। बामभोरुकिमणिठारी
छोरीगांठपटाफेरदियो। कुलदेवीका पूजनकियो॥
छोरतकंकण हरिसुन्दरी। खेलतद्यूतभांतो करी॥
अतिआनन्दरच्यजगदीश। निरखहरषसबदेहिंअसीस॥
हरिरुक्मिणिजोरीचिरजियो। जिनकचरितसुधारसपियो॥
दीनोंदानविप्रजंआये। मागधबन्दीजनपहिराये॥
जेनृप देश देशके आये। दीनी बिदा सबै पहुंचाये॥

इतनी कथा कह शुकदेव जी बोले कि महाराज जोजन हरि

रुक्मिणीका चरित्र पढ़े सुनेगा और पढ़ सुनके स्मरण करेगा सो भक्ति मुक्ति यश पावेगा पुनि जे फल होताहै अश्वमेधादि यज्ञ गो आदि दान गंगादि स्नान प्रयागादि तीर्थ करने से सोई फल मिलता है हरि कथा कहने सुनने से ॥ इति श्रीलाल कृते प्रेमसागरे रुक्मणी चरित्र वर्णनो नाम पञ्चपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५५ ॥

श्रीशुकदेव जी बोले कि महाराज एकदिन श्रीमहादेव जी कैलाश पर अपने ध्यानमें बैठेथे कि देव प्रेरित एका एकी कामदेवने आ सताया तो हरकी समाधि खुलगई तो बिचार करने लगे इतने में कि मनसिज बसन्त ऋतु रचे पर्वतपर प्राप्तहे इसका अहंकार जान कामको भस्म करडाला ॥

दो० कामबलीजबशिवदह्यो तबरतिधरतनधीर ।
पतिबिनरतितलफतखरी बिह्वलबिकलशरीर ॥

चौ० कामनारिअतिलोटतफिरै कंत२कहिचितिभुजभरै
पियबिनतियादुखीअतिजान तबबोलेशिवकृपानिधान

कि हे रति तूचिन्ता मतकरै तेरापति अनङ्ग हो सबको व्यापेगा और जिसभांति तुझे मिलेगा सो सुन में कहत हूं कि पहिले तोवह श्रीकृष्णचन्द्रके घरमें जन्मलेगा और उसकानाम प्रद्युम्नहोगा पीछेउसे सम्बरलेजाय समुद्रमें बहावेगा फिरवह मत्स्यके पेटमें हो सम्बरही की रसोइमें आवेगा तू वहीं जायके रह जब वह आवे उसेले पालियो वह सम्बरको मार तुझे साथले द्वारकामें सुखसेजाय बसेगा महाराज

चौ० जबमहेशयोंरतिसमझाई।तबतनधरिसंबरघरआई ॥
सुन्दरिबीचसमईरहेनिशिदिनमारगप्रियकेचहे।

इतना कथाकह श्रीशुकदेवजी बोले कि राजा इधर रतिते पति के मिलनेकी आशकर यों रहनेलगी और इधर रुक्मणीजी को गर्भरहा और दशमहीने में पूरेदिनों लड़काभया यह समाचारपाय ज्योतिषियों ने आय लग्नसाध बसुदेवजी से कहाकि महाराज इस बालक के शुभग्रह देख हमारे बिचारमें यों आताहै कि रूपगुण पराक्रममें यह श्रीकृष्णचन्द्रजी के समानहोगा पर बालकपन भर जलमें रहेगा पुनि रिपुको मार स्त्री समेत आनमिलेगा योंकह प्रद्युम्न नामधर ज्योतिषी तो दक्षिणा ले बिदाहुये और बसुदेवजी के घरमें रीतिभांति और मंगलाचार होनेलगे आगे नारदमुनि जीनेजाय उसीसमय समझाय सम्बरसे कहाकि तूकिस नींदमें सोताहै तुझे

चेतहै कि नहीं वह बोला क्या इन्होंने कहा तेरा बैरी काम का अवतार प्रद्युम्ननाम श्रीकृष्णचन्द्र के घरमें जन्मलेचुका ॥

राजा नारदजी तो सम्बर को योंचिताय चलेगये औ सम्बर ने शोच बिचारकर मनहीं मनमें यह उपाय ठहराया कि पवनरूप हो वहां जाय उसे हरलाऊं और समुद्रमें बहाऊं तो मेरे मनकी चिन्ता मिटे औ निर्भय होरहूं यह बिचारकर सम्बर वहांसे उठ अलखरूप होचला श्रीकृष्णचन्द्र के मन्दिरमें आया कि जहां रुक्मिणी जी सोवरमें हैं उसे टकाये छातीसे लगाये बालकको दूध पिलाती थीं वे चुपचाप घातलगाय खड़ाहोरहा ज्योंबालक परसे रुक्मिणी जीका हाथ अलगहुआ त्यों असुर अपनी माया फैलाय उसे उठाय ऐसे लेआया कि जितनी स्त्रियां वहां बैठीथीं उनमेंसे किसीने न देखा न जाना किकौन किसरूपसे आय क्योंकर उठाय लेगया बालक को आगे न देख रुक्मिणी जी अति घबराईं और रोनेलगीं उनके रोने का शब्द सुन सब यदुवंशी व्यास्त्री व्यापुरुष घिरआये और अनेक प्रकार की बातें कह कर चिन्ता करने लगे ॥

इसीबीच नारदजीने आय सबको समझाय करकहा कितुम बालक के जीनेकी कुछ भावना मतकरो उसे किसी बातका डरनहीं वहकहीं जाय पर उसेकाल नहीं ब्यापैगा और बालापन ब्यतीत कर एक सुन्दरी नारी साथ लिये तुमें आय मिलेगा महाराज ऐसे सब यदुबंशियों को भेद बताय समझाय बुझाय नारदमुनि जब बिदाहुये तब वे भी शोच समझ सन्तोष कर रहे ॥

अब आगे कथा सुनिये कि सम्बरजो प्रद्युम्नको लेगयाथा उसने उन्हें समुद्रमें डालदिया वहां एक मछली ने निगल लिया उस मछलीको और एक बड़ी मछली निगलगई इसमें एक मछुयेने जाय समुद्रमें ज्योंजाल फेंका त्योंवहमीन जालमें आई धीमर जालखैंच उस मच्छको देख अति प्रसन्नहो ले अपने घरआया निदान वहमछली उसने जाराजा सम्बरकोभेटदी राजाने ले अपने पाकभवनमें भेजदी रसोई करनेवालीने ज्यों उसमछली को चीरा त्यों उसमें से एक और मछली निकली उसका पेट फाड़ा तो एक लड़का श्यामबरण अति सुन्दर उसमेंसे निकला उसने देखतेही अति अचरज किया औ वह लड़का जाय रति को दिया उसने महा प्रसन्न हो ले लिया यह बात सम्बर ने सुनी तो रति को बुलायके कहा कि इस लड़केको भली भांतिसे यत्न कर पाल इतनी बात राजाकी सुन रति उस

लड़केको ले निज मन्दिरमें आई उस काल नारदजी ने जाय रतिसे कहा ॥

दो० अबतयाहिपालचितलायतोपतिप्रद्युम्नप्रगट्यो आय॥
सम्बरमार तोहि लेजैहै। बालापन या ठौर बितैहै॥

इतना भेद बताय नारदजी तो चले गये औ रति अति हितसे चित्त लगाय पालने लगी ज्यों ज्यों वह बालक बढ़ता था त्यों त्यों रतिको पति के मिलने की चाह होती थी कभी वह उसका रूप देख प्रेमकर हियेसे लगाती थी कभी दृग मुख कपोल चूम आपही बिहंस उसके लगती थी गले और यों कहती थी ॥

ऐसोप्रभुसंयोगबनायो। मछलीमांहिकन्तमैंपायो॥

श्री महाराज ॥

दो० प्रेम सहित पय ल्याय कै। हित सों प्यावत ताहि॥
हलधरावत गुण गाय कै। कहत कन्त चित चाहि॥

आगे जब प्रद्युम्नजी पांच वर्ष के हुये तब रति अनेक २ भांति के आभूषण पहनाय २ अपने मनका स्वाद पूरा करनेलगी औ नयनोंको सुख देने लगी उस काल वह बालक ज्यों रतिका आंचल पकड़ मा मा कहने लगा त्यों वह हंसकर बोली हे कन्त तुम यह क्या कहतेहो मैं तुम्हारी नारि तुम देखो अपनेहिये बिचारि मुझे पर्वतजीने यह कहाथा कि तू सम्बर के घर जाय रहु तेरा कन्त श्रीकृष्णचन्द्र के घरमें जन्म लेगा सो मछली के पेटमें हो तेरे पास आवेगा औ नारदजी भी कह गयेथे कि तू उदास मत हो तेरा स्वामी तुझे आय मिलताहै तभीसे तुम्हारे मिलने की आसा किये यहां बास कर रही हूं तुम्हारे आनेसे मेरी आश पूरी भई ॥

ऐसे कह रतिने फिर पति को धनुषविद्या सब पढ़ाई जब वे धनुष विद्या में निपुण हुये तब एकदिन रतिने पतिसे कहा कि स्वामी अब यहां रहना उचित नहीं क्योंकि तुम्हारी माता श्रीरुक्मिणीजी ऐसे तुम बिन दुःखपाय अकुलाती हैं जैसे बत्स बिन गाय इससे अब उचित यही है कि असुरसम्बर को मार मुझे संग ले द्वारकामें चल मातापिता का दर्शन कीजे औ उन्हें सुख दीजे आपके देखने की लालसा किये हुये हैं ॥

श्रीशुकदेवजी यह प्रसंग सुनाय राजासे कहने लगे कि महाराज इसी रीतिसे रति की बातें सुनते २ प्रद्युम्नजी जब सयाने हुये तो एक दिन खेलते २ राजा सम्बर के पास गये वह इन्हें देखतेही अपने लड़के को

समान जान लाड़कर बोला कि इस बालकको मैंने अपना लड़काकर पाला है इतनी बातके सुनतेही प्रद्युम्नजीने अति क्रोधकर कहा कि मैं बालक हूं मेरी तेरा अब तू लड़कर देख बल मेरा यों सुनाय खम ठोक सम्मुख हुआ तब हंसकर सम्बर कहनेलगा कि भाई यह मेरेलिये दूसरा प्रद्युम्न कहांसे आया क्या दूध पिलवा मैंने सर्प बढ़ाया जो ऐसी बात कहता है इतना कह फिर बोला अरे बेटा तू क्या कहताहै ये बैन क्यों तुझे यमदूत आये हैं लेन ॥

महाराज इतनी बात सम्बरके मुंहसे सुनतेही वह बोला प्रद्युम्न मेरा ही है नाम मुझसे आज तू कर संग्राम लेन तो मुझे सागरमें बहाया पर मैं अपना बैर लेने फिर आया तूने अपने घरमें अपना काल बढ़ाया अब केन किसका बेटा और केन किसका बाप ॥

दो० सुन सम्बर आयुध गहे बढ्यो क्रोध मन भाव ॥
मनहुं सर्पको पूंछ पर पर्‌या अन्धको पाव ॥

आगे सम्बर अपना सब दल मंगवाय प्रद्युम्न को बाहर ले आय क्रोध कर गदा उठाय मेघ की भांति गरजकर बोला देखूं अब तुझे काल से कौन बचाता है इतना कह ज्यों इस ने कपट कर गदा चलाई त्यों प्रद्युम्न जीने सहजही काट गिराई फिर उस ने रिसाय कर अग्नि बाण चलाये उन्होंने जल बाण छोड़ बुझाय गिराये तबतो सम्बरने महा क्रोध कर जितने आयुध उसके पासथे सब किये औ इसने कटकाट गिरादिये जब कोई आयुध उसके पास न रहा तब क्रोधकर धाय प्रद्युम्नजी जाय लिपटे दोनों से मल्ल युद्ध होने लगा कितनी एक बेर यों छे ये उसे आकाशकोले उड़े वहांजाय खड्गसे उसका शिर काट गिराय दिया और फिर आय असुरदल बध किया ॥

सम्बर को मारा रतिने सुनपाया औ उसी समय एक बिमान स्वर्ग से आया उसपर रति पति दोनों चढ़बैठे औ द्वारका को चले ऐसे कि जैसे दामिनी समेत सुन्दर मेघ जाता होय औ चले २ वहां पहुंचे कि जहां कंचन के मन्दिर ऊंचे सुमेर से जगमगाय रहे थे बिमान से उतर अचानक दोनों रनवास में गये इन्हेंदेख सब सुन्दरी चौंकउठीं औ यों समझा कि श्रीकृष्ण एक सुन्दरि नारी संगले आये हैं सकुच रहीं पर यह भेद कसूने न जाना कि प्रद्युम्न हैं सब कृष्णही कृष्ण कहती थीं इसमें जब

प्रद्युम्न जीने कहा कि हमारे माता पिता कहांहैं तब रुक्मिणीजी अपनी सखियोंसे कहनेलगीं हे सखी यह हरिकी अनुहारी कौनहै वे बोलीं हमारी समझमें तो यह आताहै कि हो नहो यह श्रीकृष्णही का पुत्रहै इतनी बात के सुनतेही रुक्मिणीजी की छातीसे दूधकी धार बह निकली और बाईं बांह फड़कने लगी औ मिलने को मन घबराया पर बिन पतिकी आज्ञा मिल न सकी उसकाल वहां नारदजी ने आय पूर्व कथाकह सबके मनका सन्देह मिटा दिया तबतो रुक्मिणी जीने दौड़ कर पुत्रका मुख चूम उसे छातीसे लगाया और रीति भांति से ब्याह कर बेटे बहूको घर में लिया उस समय क्या स्त्री क्या पुरुष सब यदुबंशियों ने आय मंगलाचार कर अति आनन्द किया घर २ बधाई बाजने लगी और सारी द्वारकापुरी में सुख छाय गया॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेव जीने राजा परीक्षित से कहाकि महाराज ऐसे प्रद्युम्न जी जन्मले बालकपन अनत बिताय रिपु को मारि रति को ले द्वारकापुरी में आये तब घर २ आनन्द मंगल हुयेबधाये॥

इतिश्री लाल कृते प्रेमसागरे प्रद्युम्न जन्म सम्बर बध नाम षट् पञ्चाशत्तमोऽध्यायः॥ ५६॥

श्रीशुकदेव जी बोले कि महाराज सत्राजित ने पहिले तो श्रीकृष्णचन्द्र को मणिकी चोरी लगाई पीछे झूंठ समझ लज्जित हो उसने अपनी कन्या सत्यभामा हरिको ब्याहदी यह सुन राजा परीक्षित ने श्रीशुकदेव जीसे पूछा कि कृपानिधान सत्राजित कौन था मणि उसने कहांपाई और कैसे हरिको चोरी लगाई फिर क्योंकर झूठ समझ कन्या ब्याहदी यहतुम मुझे समझाके कहो॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज सुनिये मैं सब समझा कर कहता हूं सत्राजित एक यादव था तिसने बहुत दिन तक सूर्य्यकी अति कठिन तपस्याकी तब सूर्य्य देवता ने प्रसन्न हो उसे निकट बुलाय मणि देकर कहा कि स्यमन्तक है इस मणिका नाम इसमेंहै सुख सम्पत्ति का विश्राम सदा इसे मानियो और बल तेज में मेरे समान जानियो जो तू इसे जप तप संयम व्रत कर ध्यावेगा तो इससे मुंह मांगा फल पावेगा जिस देश नगर घर में यह जावेगा तहां दुख दरिद्र काल कभी न आवेगा सर्वदा सुकाल रहेगा औ वृद्धि सिद्धि भी रहेगी॥

महाराज ऐसे कह सूर्य देवताने सत्राजितको विदा किया वह मणि

ले अपने घर आया आगे प्रातही उठ स्नान कर संध्या तर्पणसे निश्चिन्त हो नित्य चन्दन अक्षत पुष्प धूप दीप नेवेद्य सहित मणि की पूजा किया करे और तिस मणि से जो आठ भार सोना निकले सो ले औ प्रसन्न रहे एक दिन पूजा करते करते सचाजित ने मणि की शोभा औ कान्ति देख निज मन में बिचारा कि यह मणि श्रीकृष्णचन्द्र को ले जाकर दिखाइये तो भला ॥

यों बिचार मणि कंठमें बांध सचाजित यदुबंशियों की सभाको चला मणिका प्रकाश दूरसे देख सब यदुबंशी खड़े हो श्रीकृष्णजी से कहनेलगे कि महाराज तुम्हारे दर्शन की अभिलाषा किये सूर्य चला आताहै तुम को ब्रह्मा रुद्र इन्द्रादि सब देवता ध्यावते हैं और आठ पहर ध्यानधर तुम्हारा यश गाते हैं तुमहो आदि पुरुष अबिनाशी तुम्हें नित्य सेवतीहैं कमला भई दासी तुम हो सब देवों के देव कोई नहीं जानता तुम्हारा भेव तुम्हारे गुण औ चरित्र हैं अपार क्यों प्रभु छिपोगे आय संसार महाराज जब सचाजित को आता देख सब यदुबंशी यों कहने लगे तबहरि बोले ये सूर्य्य नहीं सचाजित यादवहै इसने सूर्य्यकी तपस्याकर एकमणि पाईहै उसका प्रकाश सूर्य्य के समान है वही मणि बांधे वह चला आता है ॥

महाराज इतनी बात जब तक श्रीकृष्णजी कहैं तब तक वह आयसभा में बैठा जहां यादव सार पासे खेल रहेथे मणिकी कान्ति देख सबकामन मोहित हुआ और श्रीकृष्णचन्द्र भी रहे तब सचाजित कुछ मनमें समझ उस समय बिदाहो अपने घर गया आगे वह मणि गले मे बांध नित्य आवे एक दिन सब यदुबंशियों ने हरिसे कहा कि महाराज सचाजित से मणिले राजा उग्रसेन को दीजे औ जगमें यश लीजे यह मणि इसे नहीं फबती राजाके योग्यहै ॥

इस बातके सुनतेही श्रीकृष्णजी ने हंसते २ सचाजित से कहाकि यह मणि राजा जीको दो और संसार में यश बड़ाई लो देनेका नाम सुनतेही वह प्रणाम कर चुप चाप वहां से उठ शोच बिचार करता अपने भाईके पास जा बोला कि आज श्रीकृष्णजी ने मुझमे मणि मांगी और मैंने न दी इतनी बात ज्यों सचाजित के मुंहसे निकली त्यों क्रोधकर उस के भाई प्रसेन वह मणि अपने गले में बांध शस्त्र लगाय घोड़े पर चढ़ अहेर को निकला और महाबन में जाय धनुष चढ़ाय लगा सांबर चीतल पाढ़े रोझ और मृग मारने इसमें एक हरिण जो उसके आगे से झपटा तो

इसनेभी खिजला उस के पीछे घोड़ा दपटा और चला चला अकेला वहां पहुंचा कि जहांयुगान युगकी एक बड़ी औड़ी गुफा थी ॥

मृग और घोड़ेकी पांवकी आहट पाय उसमेंसे एक सिंह निकला वहइन तीनोंको मारके मणि ले फिर उस गुफामें बड़ गया मणि के जातेही उस महा अंधेरी गुफामें ऐसा प्रकाश हुआ कि पाताल तक चांदना गया वहां जाम्बवान नाम एक रीछ जो श्रीरामचन्द्र के साथ रामावतार में था सो त्रेतायुग से तहां कुटुम्ब समेत रहाथा वह गुफामें उजाला देख उठधाया और चला २ सिंहके पास आया फिर वह सिंहको मार मणिले अपनी स्त्री केनिकट गया उसने मणिले अपनी पुत्रीके पालने में बांधी वह उसे देख नित्य हंस २ खेला करै और सारे स्थानमें आठ पहर प्रकाश रहे ॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज मणि यों गई और प्रसेन की यह गति भई तब प्रसेन के साथ जो लोग गये थे उन्होंने आ सत्राजित से कहा कि महाराज ॥

चौ० इमकोत्यागअकेलोधायोजहांगयोतहँखोजनपायो॥
कहत न बनेढूंढ़ फिरआये कहूं प्रसेन न वनमें पाये ॥

इतनी बातके सुनतेही सत्राजित खाना पीना छोड़ अति उदास हो चिन्ताकर मनही मन कहने लगा कि यह काम श्रीकृष्ण काहे को मेरे भाई को मणिके लिये मार मणिले घरमें आय बैठाहे पहले मुझसे मांगता था मैंने नदी अब उसने यों ली ऐसे वह मनही मन कहे और रातदिन चिन्तामें रहे एक दिन वह रात्रि समय स्त्री के पास सेज पर तन खोया मन मलीन मष्ट मारे बैठा मनही मन कुछ शोच बिचार करता था कि उसकी नारीने कहा ॥

चौ० । कहाकंतमनमोचतरहौमोसों भेद आपनो कहौ ॥

सत्राजित बोला कि स्त्रीसे कठिन बातका भेद कहना उचित नहीं क्योंकि इस के पेट में बात नहीं रहती जो घर में सुनती है सो बाहर प्रकाश करदेती है यह अज्ञान इसे किसी बातका ज्ञान नहीं भलाको कै बुरा इतनी बातके सुनतेही सत्राजित की स्त्री खिझलाकर बोली मैंनेकब कोई बात घरमें सुन बाहर कही है एक जो तुम कहतेहो क्या सबनारी समान होतीहैं यों सुनाय फिर उसने कहा कि जब तक तुम अपने मन की बात मेरे आगे न कहोगे तबतकमैं अन्न पानीभी न खाऊंगीयह वचन

नारी से सुन सत्राजित बोला कि झूठ सच्च की तो भगवान जाने पर मेरे मनमें एक बात आईहै सो मैं तेरे आगे कहताहूं परंतु तू किसू के सोहीं मत कहियो उसकी स्त्री बोली अच्छा मैं न कहूंगी ॥

सत्राजित कहने लगा कि एक दिन श्रीकृष्णजी ने मुझ से मणि मांगी और मैंने न दी इस्से मेरे जीमें आता है कि उसीने मेरे भाई को बन में जाय मारा औ मणि ली यह उसीका कामहै दूसरे की सामर्थ्य नहीं जो ऐसा काम करै ॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज बातके सुनतेही उसे रात भर नींद न आई और उस ने सात पांच कर रैन गँवाई भोर होतेही उसने जो अपनी सखी सहेली और दासीसे कहा कि श्रीकृष्ण जी ने प्रसेनको मारा औ मणि ली यह बात रात मैंने अपने कन्तके मुखसुनी है पर तुम किसीके आगे मत कहियो वे वहांसे तो भला कह चुप चाप चली आईं घर अचरज कर एकान्त बैठ आपसमें चरचा करने लगीं निदान एक दासीने यह बात श्रीकृष्णचन्द्र के रनवासेमें जा सुनाई सुनतेही सबके जीमें आया जो सत्राजित की स्त्रीने यह बात कही है तो झूठ न होगी ऐसे समझ उदास हो सब रनवास श्रीकृष्ण को बुरा कहने लगीं इसी बीच किसीने आय श्रीकृष्ण जीसे कहा कि महाराज तुम्हें तो प्रसेन के मारने औ मणिके लेनेका कलंक लग चुका तुम क्या बैठ रहे हो कुछ इसका उपाय करो ॥

इतनी बातके सुनतेही श्रीकृष्ण जी पहिले तो घबराये पीछे कुछशोच समझ वहां आये जहां उग्रसेन बसुदेव औ बलराम बैठे सभा करते थे और बोलेकि महाराज हमें सब लोग कलंक लगातेहैं कि श्रीकृष्णने प्रसेन को मार मणि लेली इस्से आपकी आज्ञा ले प्रसेन और मणिके ढूंढने को जाताहूं जिस्से यह अपयश छूटे यों कह श्रीकृष्ण जी वहांसे आय कितने एक यदुबंशियों औ प्रसेन के साथियों को साथ ले बन को चले कितनी एक दूर जाय देखें तो घोड़े के चरण चिन्ह दृष्टि पड़े उन्हींको देखते २ वहांजाय पहुंचे जहां सिंहने तुरंग समेत प्रसेन को मार खाया था दोनों की लोथ और सिंहके पाओंका चिन्ह देख सबने जाना कि उसे सिंह ने मार खाया यह समझ मणि न पाय श्रीकृष्णचन्द्र सबको साथ लिये वहां गये जहां वह ओड़ी अंधेरी महा भयावनी गुफाथी उसके द्वारपर देखते क्याहैं कि सिंह मरा पड़ाहै पर मणि वहांभी नहीं ऐसे अचरज देख सब

श्रीकृष्णजी से कहने लगे कि महाराज इस बनमें ऐसा बलीजन्तु कहांसे आया जो सिंहको मार मणिले गुफ़ामें पैठा अब इसका कुछ उपाय नहीं जहां तक ढूंढ़ने का धर्म्म था तहां तक आपने ढूंढ़ा तुम्हारा कलंक छूटा अब नाहरके शिर अपयश पड़ा श्रीकृष्णजी बोले चलो इस गुफ़ामें धसके देखें कि नाहर को मार मणि कौन ले गया वे सब बोले कि महाराजजिस गुफ़ा का मुख देखेहमें डर लगताहै उसमें धसेंगेकैसे बरन हमतुमसेभी बिनती कर कहतेहैं कि इसमहाभयावनी गुफ़ामेंआपभी न जाइयेअब घरको पधारिये हमसब मिल नगरमें कहेंगे कि प्रसेनको मार सिंहने मणि ली औ सिंह कोमार मणिलेकोई जन्तु एक अति डरावनी औड़ी गुफ़ामेंगया यहसब हम अपनी आंखों देखआये श्रीकृष्णचंद्र बोले मेरामन मणिमें लगाहै मैं अकेलागुफ़ा में जाताहूं दशदिन पीछे आऊंगा तुम दश दिन तक यहां रहियो इसमें हमें बिलम्ब होय तो घरजाय संदेशा कहियो महाराज इतनी बातकह हरि खुशहो भयावनी गुफ़ामें पैठे और चले२ वहां पहुंचे जहां जाम्बवान सोता था और उसकी स्त्री अपनी लड़की को खड़ी पालने में झुलाती थी

वह प्रभुको देख भयखाय पुकारी औ जाम्बवान जागा तोवाय हरिसे जाय लिपटा औ मल्लयुद्ध करने लगा जब उसका कोईदांव औ बलहरि पर न चला तब मनहीमन बिचारकर कहने लगा कि मेरेतो बलके हैं लक्ष्मण राम और इस संसारमें ऐसा बली कौनहै जो मुझसे करे संग्राम महाराज जाम्बवान मनहीमन ज्ञानसे यों बिचार प्रभुका ध्यानकर ॥

चौ० ठाढ़ोउसरिजोरिकेहाथ। बोलादर्श देऊरघुनाथ॥
अन्तर्यामीमैंतुमजाने। लीलादेखतही पहिचाने॥
भलीकरीलीन्होंअवतार। करिहौदरभमिकोभार
चेतायुगतेयहिठांरह्यो। नारदभेदतुम्हारोकह्यो॥
मणिकेकाजेप्रभुइतएहैं। तबहीं तोकोदर्शनदैहैं॥

इतनी कथाकह श्रीशुकदेवजीने राजापरीक्षितसे कहा कि हेराजा जिस समय जाम्बवान ने प्रभुको जान यों बखान किया तिसीकाल श्रीमुरारी भक्तहितकारी ने जाम्बवानको लगनदेख मगनहो रामका भेषकर धनुष बाण धर दर्शन दिया आगे जाम्बवन्त ने साष्टांग प्रणाम कर खड़े हो हाथजोड़ अति दीनता से कहा कि हे कृपासिन्धु दीनबन्धु जो आपकी आज्ञापाऊं तो अपना मनेार्थ कह सुनाऊं प्रभुबोले अच्छाकह तब जाम्ब-

बान ने कहा कि हे पतितपावन दीनानाथ मेरे चित्तमें योंहै कि यह कन्या जाम्बवती आपको व्याहदूं औ जगतमें यश बड़ाई लूं भगवान ने कहाजो तेरी इच्छामें ऐसाहै तो हमेंभी यहणहै इतना बचन प्रभुके मुख से निकलतेही जाम्बवानने पहिले तो श्रीकृष्णचद्र की चन्दन अछत पुष्प दीप नेवेद्य ले पूजाकी पीछे वेदकी बिधिसे अपनी बेटी व्याहदी और उसके योतुकमें मणिभी धरदी ॥

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव मुनि बोले कि हेराजा श्रीकृष्णचन्द्र आनन्द कन्द तो मणि समेत जाम्बवती को ले यों गुफासे चले और जो यादव गुफा के मुंह पर प्रसेन औ श्रीकृष्ण के साथी खड़ेथे अब तिनकी कथा सुनिये गुफाके बाहर उन्हेंजब अठाईस दिन बीते औ हरि आये सब वे वहांसे निराश हो अनेक २ प्रकार की चिन्ता करते और रोते पीटते द्वारकामें आये ये समाचार पाय सब यदुबंशी निपट घबराये औ श्रीकृष्ण का नाम लेले महाशोक कर रोने पीटने लगे और सारे निवास में कुलाहल पड़गया निदान सब रानियां व्याकुलहो तनछीण मनमलीन राजमन्दिर से निकल रोती पीटती वहां आईं जहां नगरके बाहर एक कोस पर देवीका मन्दिर था ॥

पूजाकर गौरी को मनाय हाथजोड़ शिरनाय कहनेलगीं हेदेवी तुम्हें सुर नर मुनि सब ध्यावतेहैं तुमसे जोवर मांगतेहैं सो पावतेहैं तू भूत भविष्य बर्त्तमान की सबी बात जानतीहै कह श्रीकृष्णचन्द्र आनन्द कन्द कब आवेंगे महाराज सब रानियां तो देवी द्वारपर धरना दे यों मनाय रहींथी औ उग्रसेन बसुदेव बलदेव आदि सब यादव महा चिन्ता में बैठेथे कि इसबीच श्रीकृष्ण अबिनाशी द्वारका बासी हंसते २ जाम्बवती को लिये आय राजसभामें खड़े हुए प्रभुका चन्द्रमुख देख सबको आनन्द हुआ और यह शुभ समाचार पाय सब रानियां भी देवी पूजाकर आईं और मंगलाचार करने लगीं इतनी कथाकह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज कृष्णजीने सभामें बैठतेही सचाजित को बुलाभेजा और वह मणि देकर कहाकि यहमणि हमने न लीथी तुमने झूठे हमें कलंक दियाथा ॥

चौ० यहमणिजाम्बवंतहीलीनीसुतासमेतमोहितिनहीनी
मणिलेतबहिँचल्योशिरनायासचाजितमनशोचतजाय
हरिअपराधकियोमैंभारी। अनजानेहीनीकुलगारी

यादवपतिहिकलंकगायों । मणिके काजबैरबढ़ायों ॥
अबयहदोषकटैसोकीजै । सतभामा मणिकृष्णै दीजै ॥

महाराज ऐसे मनहीमन शोच बिचार करता मणि लिये मन मारे सचाजित अपने घरगया और उसने सब अपने जीका बिचार स्त्रीसे कह सुनाया उसकी स्त्री बोली स्वामी यह बात तुमने अच्छी बिचारी सत्यभामा श्रीकृष्णको दीजे और जगतमें यश लीजे इतनी बातके सुनतेही सचाजित ने एक ब्राह्मण को बुलाय शुभ लग्न मुहूर्त ठहराय रोलीअक्षत रुपया नारियल एक थाल में धर पुरोहित के हाथ श्रीकृष्ण के यहां टीका भेजदिया श्रीकृष्णचन्द्र जी बड़ी धूमधाम से मोड़बांध ब्याहन आये तब सचाजितने सबरीति भांतिकर वेदकी बिधिसे कन्यादान दिया और बहुतसा धनदे यौतुकमें उसमणि कोभी धरदिया ॥

मणिको देखतेही श्रीकृष्णचंद्रजी ने उसमेंसे निकाल बाहर किया और कहाकि मणियह हमारेकिसीकामकी नहीं क्योंकितुमने सूर्य्यकी तपस्याकर पाई हमारे कुलमें श्रीभगवान छुड़ाय और देवता को दीवस्तु नहीं लेते यहतुम अपने घर में रक्खो श्रीकृष्णचंद्र जीके मुखसे यह बातके निकलतेही सचाजित मणि लेकर लजाय रहा और श्रीकृष्णचंद्र जी सत्यभामा को ले बाजेगाजेसे निजधाम को पधारे औ आनन्दसे सत्यभामा समेत राजमन्दिर में जा बिराजे ॥

इतनी कथा सुन राजा परीक्षित ने श्रीशुकदेवजी से पूछा कि कृपा निधान श्रीकृष्णजीको कलंक क्योंलगा सोकृपाकर कहो शुकदेवजीबोले राजा

दो० चांदचौथकोदेखियो मोहनभादौंमास ।
तातेलग्योकलंकयह अतिसनभयोउदास ॥

औरसुनो ॥

दो० जोभादौंकीचौथको चांदनिहारैकोय ।
यहप्रसंगश्रवणनसुने ताहिकलंकनहोय ॥

इतिश्री लालकृते प्रेमसागरेजाम्बवन्त सत्यभामा विवाह वर्णनोनाम सप्तपंचाशत्तमोऽध्यायः ५७ ॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज मणि के लिये जैसे शतधन्वा सचाजितको मार मणिले हरिको दे द्वारका छोड़ भागा तैसे मैं कथा कहता

हूं तुम चिन्तदे सुनो एक समय हस्तिनापुर आय किसीने बलराम मुख धाम औ श्रीकृष्णचंद्र आनन्द कन्द से यह संदेशा कहा ॥

दो०पांडवन्योतेअन्धसुत घरकेबीचसुवाय।
अर्द्धरात्रिचहुंओरते दीनीआगलगाय ॥

इतनी बातके सुनतेहीदोनों भाई अति दुख पाय घबराय तत्काल दारुक सारथी से अपना रथ मंगाय तिसपर चढ़ हस्तिनापुर को गये औ रथसे उतर कौरवोंकी सभामेंजाय खड़े रहे वहां देखते क्याहैं कि सब तनदीन मनमलीन बैठेहैं दुर्योधन मनमन कुछ शोचता है भीष्म नयनों से जल मोचताहैधृतराष्ट्र बड़ा दुख करताहै द्रोणाचार्य्य की भी आंखोंसे पानी चलताहैविदूरथ जीभी पछताय गांधारी बैठी उसकेपास आय औरभी जो कौरवोंकीस्त्रियां महाराज पांडवोंकी सुधकर २ रोरही थीं औ सारी सभा शोकमय होरही थी महाराज वहां की यह दशादेख श्रीकृष्ण बलरामजीभी उनके पासजाबैठे औ उन्होंने पांडवों का समाचार पूछा पर किसीने कुछ भेद न कहा सब चुपहो रहे

इतनी कथाकह श्रीशुकदेवजी ने राजा परीक्षितसे कहा कि महाराज श्रीकृष्णबलराम जीतो पांडवोंके जलने के समाचार पाय हस्तिनापुर गये औ द्वारकामें शतधन्वा नामएक यादव था कि जिसे पहिले सत्यभामा मांगीथी तिस पास अक्रूर कृतवर्मा गये और दोनों ने उससे कहा कि हस्तिनापुर गये श्रीकृष्ण बलराम अब आय पड़ाहै तेरादांव सचाजित से तू अपना बैरले क्योंकि उसने तेरी बड़ी चूक कीहै जो तेरी मांग श्रीकृष्ण कोदी औ तुझे गाली चढ़ाई अबयहां उसका कोईनहींहै कोई सहाई इतनी बात सुनतेही शतधन्वा अतिक्रोधकर उठा और साचि समय सचाजितके घरजा ललकारा निदान छलबल कर उसेमार वह मणिले आया तब शतधन्वा अकेला घरमेंबैठकुछशोचविचार मनहींमनपछतायकहने लगा ॥

चौ० मैंयहबैरकृष्णसोंकियोमोहिअक्रूर कर मतिदियो॥
दो० शतधर्मा अक्रूर मिलिमतोदियो मोहिआय।
साधुकहैजोकपटकी तासोंकहाबसाय ॥

महाराज इधर शतधन्वा तो इसभांति पछिताय २ बार बार कहता था कि होनहार से कुछन बसाय कर्मकी गति किसीकी जानी नहीं जाय और उधर सचाजित को मरा निहार उसकी नारी रोरी कन्त कन्त कर

उठी पुकार उसके रोनेकी धुनि सुनि सब कुटुम्ब के लोग क्या स्त्री क्या पुरुष अनेक २ भांतिकी बातकह रोने पीटने लगे औ सारेघरमें कोलाहल पड़गया पिताका मरना सुन उसी समय आय सत्यभामाजी सबको समझाय बुझाय बापकी लोथको तेलमें डलवाय अपना रथ मंगाय तिस पर चढ़ श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द के पासचली औ रातदिनके बीच जा पहुंची

चौ०देखतहीउठबोलेहरी । धरहैकुशलक्षेम सुन्दरी ॥
सतभामाकहिजोरेहाथ तुमबिनकुशलकहांयदुनाथ।
हमहिबिपतिशतधन्वादई । मेरोपिताहत्योमोपलई
धरैतेलमेंखसुरतिहारे । करौदरसबशलहमारे ॥

इतनीबात कह सत्यभामाजी भी श्रीकृष्ण बलदेवजी के सोहीं खड़ी होय हाथपितार कर धायमार रोनेलगीं उनका रोना सुन श्रीकृष्ण बलराम जीने भी पहले तो अति उदास हो रोकर लोकरीति दिखाई पीछे सत्यभामा को आशा भरोसा दे ठाढ़स बंधाय वहांसे साथले द्वारका में आये श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज द्वारकामें आतेही श्रीकृष्णचन्द्रने सत्यभामा को महादुखीदेख प्रतिज्ञाकर कहा कि सुन्दरी तुम अपने मन में धीरज धरो और किसी बातकी चिन्ता मतकरो जो होनाथा सोतोहुआ परअबमें शतधन्वा कोमारतुम्हारे पिताकाबैरलूंगा तबमें और कामकरूंगा ॥

महाराज रामकृष्ण के आतेही शतधन्वा अति भयखाय घरछोड़ मन हीं मन यह कहता है कि पराये कहे मैंने श्रीकृष्णजी से बैर किया अब शरण किसकी लूं कृतवर्मा के पास आया और हाथ जोड़ अति बिनती कर बोला कि महाराज आपके कहेसे मैंने किया यह काम अब मुझपर कोपेहैं श्रीकृष्ण औ बलराम इससेमैं भागकर तुम्हारी शरण आया हूं मुझे कहीं रहनेका ठौर बताइये शतधन्वा से इतनी बातसुन कृतवर्मा बोला कि सुनो हमसे कुछनहीं होसक्ता जिसका बैर श्रीकृष्णचन्द्र से भया सोनर सबही से गया तूक्या नहीं जानता था कि हैं अतिबली मुरारि तिनसे बैरकिये होगी हारि किसीके कहेसे क्या हुआ अपना बल विचार कामक्यों न किया संसार की रीतिहै कि बैर ब्याह और प्रीति समानही से कीजे तूहमारा भरोसा मतरख हम श्रीकृष्णचन्द्र आनन्द कन्दके सेवकहैं उनसे बैर करना हमें नहीं शोभता जहां तेरे सींग समांय तहां जा ॥

महाराज इतनी बात सुन शतधन्वा निपट उदास हो वहां से

चल अक्रूर के पास आया हाथ बांध शिरनाय बिनती कर हा हा खाय कहनेलगा कि प्रभु तुम हो यादवपति ईश तुम्हें मान के नवावतेहैं शीश साधु दयाल धरन तुम धीर दुःख सह आप हरते हो पर पीर बचन कहे की लाज है तुम्हें अपनी शरण रक्खो तुम हमें मैंने तुम्हारा हो कहा मान यह काम किया अब तुमही कृष्ण के हाथ से बचाओ॥

इतनी बात के सुनतेही अक्रूरजी ने शतधन्वा से कहा कि तू बड़ा मूर्ख है जो हम से ऐसी बात कहता है क्या तू नहीं जानता कि कृष्णचंद्र सबके कर्त्ता दुःखहर्त्ता हैं उन से बैर कर संसार में अब कोई रह सक्ता है कहनेवाले का क्या बिगड़ा अबतो तेरे शिर आ पड़ी कहा है कि सुरनर मुनि की यही है रीति अपने स्वार्थ के लिये करते हैं प्रीति और जगत् में बहुत भांति के लोग हैं सो अनेक२ प्रकार की बातें अपने स्वार्थ की कहते हैं इससे मनुष्य को उचित है कि किसी के कहे पर न जाय जो काम करै तिस में पहले अपना भला बुरा विचार ले पीछे उस काज में पांव दे तूने समझ बूझकर किया है काम अब तुझे कहीं जगत्में रहनेको नहीं है धाम जिसने कृष्णसे बैर किया वह फिर न जिया जहां भागके रहा तहां मारागया मुझे मरनानहीं जो तेरापक्षकरूं संसारमें जीवसबकोप्यारा है॥

महाराज अक्रूरजी ने जब शतधन्वा को यों रूखे रूखे बचन सुनाये तबतो वह निराश हो जीकी आश छोड़ मणि अक्रूरजी के पास रख रथ पर चढ़ नगर छोड़ भागा और उसके पीछे रथ पर चढ़ श्रीकृष्ण बलराम भी उठ दौड़े औ चलते२ इन्होंने उसे सौ योजन पर लिया इनके रथकी आहट पाय शतधन्वा अति घबराय रथसे उतर मिथिलापुरी में जा पड़ा प्रभुने उसे देख क्रोध कर सुदर्शनचक्र को आज्ञाकी तू अभी शतधन्वा का शिरकाट प्रभुकी आज्ञा पातेही सुदर्शनचक्र ने उसका शिर जा काटा तब श्रीकृष्णचन्द्र ने उसके पासजाय मणि ढूंढ़ी पर न पाई फिर इन्होंने बलदेव जीसे कहा कि भाई शतधन्वा को मारा और मणि न पाई बलराम जी बोले कि भाई वह मणि किसी बड़े पुरुष ने पाई तिसने हमें लाय नहीं दिखाई वह मणि किसी के पास छिपने की नहीं तुम देखियो निदान प्रगटेगी कहीं न कहीं॥

इतनी बात कह बलदेवजी ने श्रीकृष्णचन्द्रसे कहा कि भाई अब तुम तो द्वारकापुरी को सिधारो और हम मणि के खोजने को जाते हैं जहां पावेंगे तहां से ले आवेंगे॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी ने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज श्रीकृष्णचंद्र आनन्दकन्द तो शतधन्वा को मार द्वारकापुरी को पधारे और बलराम सुखधाम मणिके खोजने को सिधारे देश २ नगर २ गांव २ में ढूंढ़ते २ बलदेवजी चले चले अयोध्यापुरीमें जा पहुंचे इनके पहुंचने के समाचार पाय अयोध्या का राजा दुर्योधन उठ धाया आगे बढ़ भेट कर भेट दे प्रभु को बाजे गाजे से पाटम्बर के पांवड़े डालता निज मन्दिरमें ले आया सिंहासन पर बिठाय अनेक प्रकार से पूजा कर भोजन करवाय अति बिनती कर शिरनाय हाथ जोड़ संमुख खड़ाहो बोला कृपासिंधु आप का आना इधर कैसे हुआ सो कृपा कर कहिये ॥

महाराज बलदेवजी ने उसके मनकी लगन देख मगन हो अपने जाने का सब भेद कह सुनाया इतनी बात सुन राजा दुर्योधन बोला कि नाथ वह मणि कहीं किसी के पास न रहेगी कभी न कभी आपसे आप प्रकाश हो रहेगी यों सुनाय फिर हाथजोड़ कहनेलगा कि दीनदयाल मेरे बड़े भाग्य जो आपका दर्शन मैंने घर बैठे पाया और जन्मका पाप गंवाया अब कृपा कर दासके मनकी अभिलाषा पूरीकीजे और कुछदिवस रह शिष्यकर गदा युद्धसिखाय जगमें यश लीजे महाराज दुर्योधन से इतनीबातसुन बलरामजी ने उसे शिष्य किया और कुछ दिन वहां रह सब गदायुद्ध की विद्या सिखाई पर मणि वहांभी सारेनगरमें खोजी और न पाई आगे श्रीकृष्णजी के पहुंचने उपरान्त कितने एक दिन पीछे बलराम जी भी द्वारकानगरी में आये तो श्रीकृष्णचन्द्रजी ने सब यादव साथ ले सत्राजित को तेल से निकाल अग्निसंस्कार किया और अपने हाथों दाह दिया जब श्रीकृष्णजी क्रियाकर्म से निश्चिन्त हुये तब अक्रूर और कृतवर्मा कुछ आपस में सोच विचार कर श्रीकृष्णजी के पास आय उन्हें एकान्त ले जाय मणि दिखाय कर बोले कि महाराज यादव सब बहिर्मुख भये और माया में मोहगये तुम्हारा स्मरण ध्यान छोड़ अनान्य होरहे हैं जो ये अब कुछ कष्ट पावें तो प्रभु की सेवामें आवें इसलिये हम नगर छोड़ मणि लेभागते हैं जब हम इनसे आपकाभजन स्मरण करावेंगे तब द्वारकापुरी में आवेंगे इतनी बात कह अक्रूर और कृतवर्मा सब कुटुम्ब समेत आधीरात को श्रीकृष्णचंद्र के भेद में द्वारकापुरी से भागे ऐसे कि किसीने न जाना कि किधर गये भोर होतेही सारे नगर में यह चर्चा फैली कि न जानिये रात को रात में अक्रूर और कृतवर्मा कुटुम्ब समेत किधर गये और क्या हुये ॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज इधर द्वारकापुरीमें तो नित घर घर यह चर्चा होने लगी और उधर अक्रूरजी प्रथम प्रयागमें जाय मुण्डन करवाय त्रिवेणी न्हायबहुतसा दान पुण्य कर तहां हरिपैड़ी बंधवाय गया को गये वहां भी फल्गू नदी के तीर बैठ शास्त्रकी रीतिसे श्राद्ध किया और गयालियोंको जिमाय बहुतही दान दिया पुनि गदाधर के दर्शन कर तहांसे चल काशीपुरीमें आये इनके आनेका समाचार पाय इधर उधरके राजा सब आय आय भेटकर भेट धरने लगे और ये वहां यज्ञ दान तप व्रत कर रहने लगे इसमें कितने एक दिन बीते श्रीमुरारी भक्तहितकारी ने अक्रूरजी का बुलाना जी में ठान बलरामजी से आनके कहा कि भाई अब प्रजाको कुछ दुःख दीजे और अक्रूरजीको बुलवालीजे बलदेवजी बोले महाराज जो आपकी इच्छामें आवे सो कीजे और साधुवों को सुख दीजे इतनी बात बलरामजी के मुखसे निकलतेही श्रीकृष्णचन्द्र जीने ऐसा किया कि द्वारकापुरीमें घर २ तप तिजारी मिरगी बयो दाद खाज आधासीसी कोढ़ महाकोढ़ जलन्धर भगन्दर कठन्दर अतीसार खांसी शूल अर्द्धांग शीतांग झोला सन्निपात आंव मरोड़ा आदि व्याधि फैलगई और चारमहीने वर्षा भी न हुई तिससे सारे नगरके नदी नाले सरोवर सूखगये तृण अन्न कुछभी न उपजा नभचर जलचर थलचर जीव जन्तु पक्षी और ढोर लगे व्याकुल हो भूख २ मरने और पुरबासी सारे भूखोंके चाहिचाहि करने निदान सब नगरनिवासी महाव्याकुल हो निपट घबराय श्रीकृष्णचंद दुःखनिकन्द के पास आये और अति गिड़गिड़ाय अधिक आधीनता कर हाथजोड़ शिरनाय कहने लगे ॥

चौ० हमतोशरणतिहारीरहैं । कष्टमहाअबक्योंकरसहैं ॥
मेघन बरष्यो पीड़ा भई । कहा बिधाताने यह ठई ॥

इतना कह फिर कहने लगे कि हे द्वारकानाथ दीनदयाल हमारे तो कर्त्ता दुखहर्त्ता तुमहो तुम्हें छोड़ कहांजाय और किससे कहें यह उपाधि बैठे बैठाये में कहांसे आई और क्यों हुई सो कृपा कर कहिये ॥

श्रीशुकदेव मुनि बोले महाराज इतनी बातके सुनतेही श्रीकृष्णचन्द्रजी ने उनसे कहा कि सुनो जिस पुरसे साधुजन निकलजाता है तहां आपसे आप काल दरिद्र दुःख आताहै जबसे अक्रूरजी इसनगरसे गयेहैं तभी से यहां यह गति हुईहै जहां रहतेहैं साधु सत्यवादी और हरिदास तहांहोता है अशुभ अकाल बिपत्तिका नाश इंद्र रखताहै हरिभक्तों से स्नेह इसीलिये

उस नगर में भली भांति बरसाता है मेह इतनी बात के सुनतेही सब यादव बोल उठे कि महाराज आपने सच्चकहा यह बात हमारे मनमेंभी आई क्योंकि अक्रूरके पिताका श्वफल्क नाम है वहभीबड़ा साधु सत्यबादी धर्मात्मा है जहां वह रहता है तहांकभी नहीं होता है दुख दरिद्र औ अकाल सदा समय पर बर्षता है मेह तिस्से होता है सुकाल और सुना है कि एक समय काशीपुरी में बड़ा दुर्भिक्ष पड़ा तब काशी का राजा श्वफल्क को लेगया महाराज श्वफल्क के जातेही उस देशमें मन मानता बर्षा समा हुआ औ सबका दुख गया पुनि काशीपुरी के राजा ने अपनी लड़की श्वफल्क को ब्याह दी आनन्द से वहां रहने लगे जिस राज-कन्या का नाम गांदिनी था तिसका पुत्र अक्रूर है इतना कह सबयादव बोले कि महाराज हमतो यह बात आगेसे जानते थे अब जो आप आज्ञा कीजे सो करें श्रीकृष्णचंद्र बोले कि अबतुम अति आदर मान कर अक्रूर जीको जहां पाओ तहांसे लेआओ यह बचन प्रभुके मुखसे निकलतेही सब यादव मिल अक्रूर को ढूंढने निकले औ चले २ बारणसी पहुंचे अक्रूर जीसे भेटकर भेटदे हाथजोड़ शिरनाय सम्मुख खड़े हो बोले ॥

चौ० चलौनाथबोलतबलश्याम। तुमबिनपुरबासीहैंबिराम
जितहींतुमतितहींसुखबासा। तुमबिनकष्टदरिद्रनिवासा॥
यद्यपि पुरमें थी गोपाल। तऊ कष्टदै परयो अकाल ॥
साधुन बश थीपति रहैं। तिनके सब सुख संपति लहैं ॥

महाराज इतनी बातके सुनतेही अक्रूर जी वहांसे अति आतुर हो कुटुम्ब समेत कृतवर्मा को साथले सब यदुबंशियों को लिये बाजेगाजे से चल खड़े हुये और कितने एक दिनों के बीच सब समेत द्वारकापुरी में पहुंचे इनके आने का समाचार पाय श्रीकृष्णजी औ बलराम आगे बढ़ आय इन्हें अति मान सन्मान से नगर में लिवाय ले गये हे राजा अ-क्रूरजी के पुरमें प्रवेश करते ही मेह बर्षा औ समा हुआ सारे नगरका दुःख दरिद्र बह गया अक्रूर की महिमा हुई सब द्वारकाबासी आनन्द मंगल से रहने लगे आगे एकदिन कृष्णचंद आनन्दकन्द ने अक्रूरजीको निकट बुलाय एकान्त ले जाय के कहा तुमने सचीजित की मणिलेक्या की वह बोला महाराज मेरेपास है फिर प्रभुने कहा जिसकी बस्तु तिसे दीजे औ वह न होय तो उसके पुत्रको सौंपिये पुत्र न होय तो उसकी

स्त्रीका दीजिये स्त्री न होय तोउसके भाईकोदीजे भाई न होय तो उस के कुटुम्ब को सौंपिये कुटुम्ब भी न होय तो उसके गुरुपुत्र को दीजे गुरुपुत्र नहोय तो ब्राह्मणका दीजिये पर किसी का द्रव्य आप न लीजिये यह कन्या है इससे अब उचित है कि सत्राजितकी मणि उसके नातीको दो औ जगत में बड़ाई लो, महाराज श्रीकृष्णचंद्र के मुखसे इतनी बातके निकलतेही अक्रूरजीने मणिलाय प्रभुके आगे धर हाथजोड़ अतिविनती कर कहा कि दीनानाथ यहमणि आप लीजे औ मेरा अपराध दूर कीजे क्योंकि इस मणि से सोना निकला सो मैंने तीर्थयात्रा में उठाया है प्रभु बोले अच्छा किया यों कह मणिले हरिने सत्यभामाको जायदी औ उसके चित्तकी सब चिन्ता दूरकी ॥ इतिश्रीलालकृते प्रेमसागरे शतधन्वा वधो नामाष्टपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५८ ॥

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज एक दिन श्रीकृष्णचंद आनन्द कन्द जगबन्धुजी ने यह बिचार किया कि अब चलकर पांडवों को देखिये जो आगसे बचे जाते जागतेहैं इतनी बातकह हरि कितने एक यदुबंशियों को साथले द्वारकापुरी से चल हस्तिनापुर आये इनके आने का समाचार पाय युधिष्ठिर अर्जुन भीम नकुल सहदेव पांचों भाई अति हर्षित हो उठधाये औ नगरके बाहर आय मिल बडी आवभगत कर लिवाय घरले गये ॥

घरमें जातेही कुन्ती औ द्रौपदी ने पहिले तो सात सुहागिनों को बुलाय मोतियों का चौक पुरवाय तिस पर चन्दन की चौकी बिछवाय उसपर श्रीकृष्ण को बैठाय मंगलाचार करवाय अपने हाथों आरती उतारी पीछे प्रभुके पांय धुलवाय रसोई में लेजाय षट्रस भोजन करवाया महाराज जब श्रीकृष्णचन्द्रजी भोजन कर पान खाने लगे तब ॥

चौ० कुन्ती ढिगबैठीकहैबात । पिताबंधुपूछतकुशलात ॥
नीके सरसेन बसुदेव । बन्धु भतीजे अरु बलदेव ॥
तिनमेंप्रीणहमारोरहै । तुमबिनकौनकष्टदुखदहै ॥
जबजबबिपतिपरीअतिभारीतबतुमरचाकरीहमारी
अहोकृष्णतुमपरदुखहरणा पांचोंबंधुतुम्हारीशरणा
ज्योंहरणीटकझुरडकिचासा । त्योंयेअंधसुतनकेबासा

महाराज जब कुन्ती यों कह चुकी ॥

चौ० तबहिंयुधिष्ठिरजोरेहाथ। तुमहौप्रभुयादवपतिनाथ
तुमकोयोगेश्वरनितध्यावतशिवबिरंचिकेध्याननआवत
हमकोघरहोदर्शनदीनो। ऐसोकहापुण्यहमकीनो
चारमासरहिकेसुखदैहौं। बरषाऋतुबीतेघरजैहौं॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज इस बात के सुनतेही भक्त हितकारी श्रीबिहारी सबको आशा भरोसा दे वहां रहे औ दिन २ आनन्द प्रेम बढ़ाने लगे एक दिन राजा युधिष्ठिर के साथ श्रीकृष्णचंद्र अर्जुन भीम नकुल सहदेव को लिये धनुष बाण कर गहे रथपर चढ़ बनमें अहेर को गये वहां जाय रथसे उतर फेंटबांध बाहें चढ़ाय शरसाध जंगल झाड़ २ लगे सिंह बाघ गैंड़े अरने साबर शूकर हिरण रीछ मार २ राजा युधिष्ठिर के सम्मुख लाय २ धरने और राजा युधिष्ठिर हंस२ रीछ २ ले२ जो जिसके भक्ष्यथे तिसे देन औ हिरण रीछा साबर रसोई में भेजने॥

तिस समय श्रीकृष्ण औ अर्जुन आखेट करते २ कितनी एकदूर सब से आगे जाय एक वृक्षके नीचे खड़े हुये फिर नदीके तीर जाके दोनों ने जलपिया इसमें श्रीकृष्णजी देखते क्याहैं कि नदी तीर एक सुन्दरी नव यौवना चंद्रमुखी चम्पकबरनी मृगनयनी पिकबयनी गजगामिनी केहरिकटिनी नख शिख से शृङ्गार किये अनङ्गमद पिये महाछबि लिये अकेली फिरतीहे उसे देखतेही हरि छकित थकित हो बोले॥

चौ० यहकोसुन्दरिविहरतअंग। कोजनहींजाहिकेसंग॥

महाराज इतनी बात प्रभु के मुखसे सुन और उसे देख अर्जुन हड़बड़ाय दौड़कर वहांगया जहां वह महासुन्दरी नदी के तीर २ फिररही थी और पूछने लगा कि कह सुन्दरी तूकौनहे और कहांसे आई हे और किसलिये यहां अकेली फिरती यह भेद अपना सब मुझे समझाय कर कह इतनी बातके सुनतेही॥

चौ० सुन्दरिबरणीकयाआपनी। हौंकन्याहौंसूरजतनी॥
कालिन्दीहैमेरोनाम। पितादियोजलमाविश्राम॥
यहनदीमेंमन्दिरआय। मोसोपिताकह्योसमुझाय॥
कोजोसुतानदीढिगफेरो। आयमिलैगायहबरतेरो॥
यदुकुलमाहिंकृष्णअवतरे। तोकाजेहिंठांअनुसरे॥

सुन उग्रसेनने वहीं मंचीको बुलाय आज्ञादी कि तुम अभी जाय ब्याह की सब सामा ले आओ आज्ञा पाय मंचीने ब्याहकी सामग्री बातकी बातमें सब लायदी तिसी समय उग्रसेन बसुदेवने एक ज्योतिषीको बुलाय शुभ दिन ठहराय श्रीकृष्णजी का कालिन्दीके साथ वेदकी विधिसे ब्याहकिया॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी बोले कि हे राजा कालिन्दी का बिवाह तो यों हुआ अब आगे जैसे मिचबिन्दाको हरि लाये औ ब्याहा तैसे कथा कहताहूं तुम चित्तदे सुनो शूरसेनकी बेटी श्रीकृष्णजी की फूफी तिस का नाम राजाधिदेवी उस की कन्या मिचबिन्दा जब वह ब्याहने योग्य हुई तब उसने स्वयम्बर किया तहां सब देश २ के नरेश गुणवान रूपनिधान महाबलवान शूरबीर अतिधीर बनठनके एकसे एक अधिक जा इकट्ठे हुये ये समाचार पाय श्रीकृष्णजी भी अर्जुन को साथ ले वहां गये औ जाके बीचों बीच स्वयम्बर के खड़े हुये ॥

हरषीसुन्दरिदेखिमुरारि।हारडारिमुखरहीनिहारि॥

महाराज यह चरित्र देख सब देश २ के राजा तो लज्जितहो मनहीं मन अनखाने लगे औ दुर्योधन ने जाय उसके भाई मिचसेन से कहा कि बन्धु तुम्हारे मामाका बेटाहै हरि तिसे देख भूलीहै सुन्दरि एक लोक बिरुद्धरीति है उसके होनेसे जगत में हंसाई होगी तुम जाय बहन को समझाय कहो कि श्रीकृष्ण को न बर नहीं तो सब राजाओं की भीड़में हंसी होयगी इतनी बातके सुनतेही मिचसेन ने जाय बहन को बुझाय के कहा ॥

महाराज भाईकी बात सुन समझ ज्यों मिचबिन्दा प्रभुके पाससे हट कर अलग दूरहो खड़ी हुई तो अर्जुनने झुककर श्रीकृष्णचन्द्र के कानमें कहा महाराज अब आप किस की कान करते हैं बात बिगड़ चुकी जो कुछ करनाहो सो कीजे बिलम्ब न कीजिये अर्जुनकी बात सुनतेही श्रीकृष्ण जीने स्वयम्बर के बीच से झट हाथ पकड़ मिचबिन्दा को उठायरथ में बैठाय लिया वहीं सबके देखते रथ हांक दिया उसकाल सब भूपाल अपने २ शस्त्र लेले घोड़ोंपर चढ़ २ प्रभुका आगा घेर लड़ने को जाखड़े रहे औ नगरनिवासी लोग हंसि २ तालियां बजाय २ गालियां देदे यों कहने लगे ॥

चौ० फुफूसुताकोब्याहनआयोयहतोकृष्णबड़ोयशपायो

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज जब श्रीकृष्णजी ने देखा कि चारों ओरसे जो असुरदल घिर आयाहै सो लड़ेबिन न रहेगा तब उन्होंने कई एक बाण निषङ्गसे निकाल धनुष तान ऐसे मारे कि वह सबसेना असुरोंकी तितरबितर हो वहांकी वहां बिलायगई औ प्रभु निर्द्वन्द आनन्दसे द्वारका पहुंचे॥

श्रीशुकदेवजी बोले महाराज श्रीकृष्णजी ने मित्रबिन्दा को तो यों ले जाय द्वारकामें व्याहा अब आगे जैसे सत्याको प्रभु लाये सो कथा कहता हूं तुम मनलगाय सुनो। कोशलदेश में नग्नजित नाम नरेश तिसकी कन्या सत्या जब वह व्याहन योग्य हुई तब राजाने सात बैल अति ऊंचे अथावने बिन नथे मंगवाय यह प्रतिज्ञा कर देशमें छुड़वाय दिये कि जो इन सातों वृषभों को एकबार नाथ लावेगा उसेमें अपनी कन्या ब्याहूंगा महाराज वे सातों बैल शिर झुकाये पूंछें उठाये भूं खूंद २ डकरते फिरें और जिसे पावें तिसे हनें॥

आगे ये समाचार पाय श्रीकृष्णचन्द्र अर्जुन को साथले वहां गये औजा राजा नग्नजित के सम्मुख खड़ेहुये इनको देखते ही राजा सिंहासन से उतर साष्टांग प्रणाम कर इन्हें सिंहासन पर बिठाय चन्दन अक्षत पुष्प चढ़ाय धूप दीप कर नैवेद्य आगे धर हाथ जोड़ शिरनाय अति बिनती कर बोला कि आज मेरे भाग जागे जो शिव बिरंचिके कर्त्ता प्रभु मेरेघर आये यों सुनाय फिर बोला कि महाराज मैंने एक प्रतिज्ञाकी है सो पूरी होनी कठिन थी पर अब मुझे निश्चय हुआ कि वह आपकी कृपासे तुरंत पूरी होगी प्रभुबोले कि ऐसी क्या प्रतिज्ञा तूने कीहै जिसका होना कठिन है तब राजाने कहा कृपानाथ मैंने सातबैल अनाथे छुड़वाय यह प्रतिज्ञा कीहै कि जो इन सातों बैलों को एक बेर नाथेगा तिसे मैं अपनी कन्या ब्याहूंगा श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज॥

चौ०। सुनहरि फेंटबांध तहं गये। सातरूप धरि ठाढ़ेभये॥
काहुनलख्योअलखब्योहार। सातोंनाथेएकैबार॥

वे वृषभनाथ के नाथने के समय ऐसे खड़े रहे कि जैसे काठके बैलखड़े होंय प्रभु सातोंकोनाथ एकरस्सीमें गांथ राजसभामें लेआये यह चरित्र देख सब नगरनिवासी तो क्या स्त्री क्या पुरुष अचरज कर धन्य धन्य करने लगे और राजा नग्नजित ने उसी समय पुरोहित को बुलाय वेदविधिसे कन्यादान किया तिसके यौतुकमें दशसहस्र गाय नवलाख हाथी दश

सहस्र घोड़े तिहत्तर लाख रथ दे दास दासी अनगिनत दिये श्रीकृष्णचन्द्रसबले वहांसे जब चले तब खिजलाय सब राजाओंने प्रभुको मार्गमें आन घेरा तहां मारे बाणोंके अर्जुनने सबको मार भगाया हरि आनन्द मंगलसे सब समेत द्वारकापुरी में जाय हुंचे उसकाल सब द्वारकावासी आगे आय प्रभुको बाजे गाजे से पाटम्बर पांवड़े डालते राजमन्दिर में लेगये औ यौतुक देख सब अचंभित रहे॥

चौ०नग्नजीतकीकरतबड़ाई। कहतलोगयहबड़ीसगाई॥
भलोव्याहकोशलपतिकियो। कृष्णहिंइतोदायजोदियो

महाराज नगरनिवासी तो इस ढबकी बातें कर रहेथे कि उसीसमय श्रीकृष्ण चंद्र औ बलरामजी ने वहां आके राजा नग्नजित का दियाहुआ सब दायज अर्जुनको दिया औ जगत में यश लिया आगे सब जैसे श्री कृष्णचन्द्र भद्राको व्याह लाये सो कथा कहताहूं तुम चित लगाय निश्चिन्त हो सुनो केकय देश के राजाकी बेटी भद्रा ने स्वयम्बर किया औ देश देश के नरेशों को पत्र लिखे वे आय इकट्ठे हुये वहां श्रीकृष्ण चंद्र भी अर्जुन को साथ ले गये औ स्वयम्बर के बीच सभा में जाखड़े हुये जब राजकन्या माला हाथमें लिये सब राजाओं को देखती भालती रूपसागर जगत उजागर श्रीकृष्णचंद्र के निकट आई तो देखतेही भूलरही औउसने माला इनके गलेमें डाली यह देख उसके माता पिता ने प्रसन्न हो वह कन्या हरिको वेदकी विधिसे व्याहदी उसके दायजे में बहुत कुछ दिया कि जिसका वारापार नहीं॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज श्रीकृष्णचंद्र भद्रा को तो यों व्याह लाये फिर जैसे प्रभुने लक्ष्मणाको व्याहा सो कथा कहता हूं तुम सुनो भद्रदेशका नरेश अतिबली औ बड़ा प्रतापी तिसकी कन्या लक्ष्मणा जब व्याहने योग्य हुई तब उसने स्वयम्बरकर चारों दिशाओंके नरेशों को पत्र लिख लिख बुलाया वे अति धूम धाम से अपनी २ साज साज वहां आये औ स्वयम्बरके बीच बड़े बनावसे पांति पांति जाबैठे॥

श्रीकृष्णचंद्र भी अर्जुन को साथ लिये तहां गये और ज्यों स्वयम्बर के बीच जाखड़े भये त्यों लक्ष्मणा ने सबको देख औ श्रीकृष्णजी के गले में माला डाली आगे उसके पिताने वेदकी विधिसे प्रभुके साथ लक्ष्मणाका व्याह करदिया सब देश २ के राजा जोवहां आयेथे सो महा लज्जित हो

आपस में कहनेलगे कि देखें हमारे रहते किस भांति श्रीकृष्ण लक्ष्मणा को ले जाता है ॥

ऐसे कह वे सब अपना २ दल साज मार्ग रोंक जा खड़े हुये ज्यों श्रीकृष्णचन्द्र औ अर्जुन लक्ष्मणा समेत रथले आगेबढ़े त्यों उन्होंने इन्हें आय रोंका और युद्ध करने लगे निदान कितनी एक बेरमें सारे राजोंके अर्जुन और श्रीकृष्णजी ने सबको मार भगाया और अति आनन्द मंगल से नगर द्वारका पहुंचे इनके जातेही सारे नगर में घर घर ॥

चौ० भई बधाई मंगलचार । होत वेद रीति व्यवहार ॥

इतनी कथा कह शुकदेवजी बोले कि महाराज इस भांति श्रीकृष्णचन्द्रजी पांच ब्याह करलाये तब द्वारकामें आठों पटरानियों समेत सुख से रहने लगे औ पटरानियां आठों पहर सेवा करने लगीं पटरानियों के नाम रुक्मिणी, जाम्बवती, सत्यभामा, कालिन्दी, मित्रबिन्दा, सत्या, भद्रा लक्ष्मणा ॥ इति श्रीलालकृते प्रेमसागरे श्रीकृष्णचन्द्र पञ्चविवाहकरनोनामैकोनषष्टितमोऽध्यायः ॥ ५९ ॥

शुकदेवजी बोले कि राजा एक समय पृथ्वी मनुष्य तनु धारण कर अति कठिन तप करने लगी तहां ब्रह्मा विष्णु रुद्र इन तीनों देवताओं ने आ उससे पूछा कि तू किसलिये इतनी कठिन तपस्या करतीहै धरती बोली कृपासिंधु मुझे पुत्रकी वांछाहै इस कारण महातप करती हूं दया कर मुझे एक पुत्र अति बलवान् महाप्रतापी बड़ा तेजस्वी दो ऐसा कि जिसका सामना संसार में कोई न करे न वह किसी के हाथ से मरे ॥

यह बचन सुन प्रसन्न हो तीनों देवताओं ने वर दे उससे कहा कि तेरा सुत भौमासुर नाम अतिबली महाप्रतापी होगा उससे लड़ कोई न जीतेगा वह सृष्टि के सब राजाओं को जीत अपने बश करेगा स्वर्गलोक में जाय देवताओं को मार भगाय अदितिके कुण्डल छीन आय पहिनेगा और इन्द्रका छत्र छिनाय लाय अपने शिर धरेगा संसार के राजाओं की कन्या सोलह सहस्र एकसौ लाय अनब्याही घेर रक्खेगा तब श्रीकृष्णचंद्र सब अपना कटक ले उस पर चढ़ जांयगे और उनसे तू कहेगी इसे मारो पुनि वे मार सब राजकन्याओं को ले द्वारकापुरी पधारेंगे ॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी ने राजा परीक्षितसे कहा कि महाराज तीनों देवताओं ने वर दे जब यों कहा तब भूमि इतना कह चुप होरही कि मैं ऐसी बात क्यों कहूंगी कि मेरे बेटेको मारो आगे कितने

एक दिन पीछे भूमि का पुत्र भौमासुर हुआ तिसी का नाम नरकासुर भी कहतेहैं वह प्राग्ज्योतिषपुर में रहने लगा उसपुर के चारों ओर पहाड़ों की चोट और जल अग्नि पवन का कोट बनाय सारे संसार के राजाओं की कन्या बलकर छीन छीन धाय समेत लाय लाय उसने वहां रक्खीं नित उठ सोलह सहस्र एकसौ राजकन्याओं के खाने पीने पहिरने की चौकसी वह किया करे और बड़े यत्नसे उन्हें पलवावे॥

एकदिन भौमासुर अति कोपकर पुष्पक बिमान में बैठ जो लंका से लाया था सुरपुर में गया और लगा देवताओं को सताने उसके दुःखसे देवता स्थान छोड़ अपना जी ले ले जिधर तिधर भाग गये तब वह अदिति के कुण्डल औ इंद्रका छत्र छीन लाया आगे सब सृष्टिके सुरनर मुनियों को अति दुख देने लगा उसका सब आचरण सुन श्रीकृष्णचंद्र जगबंधुजी ने अपने जी में कहा॥

बाहिमारिसुन्दरिसबल्याऊं। सुरपतिछत्रतहींपहुंचाऊं॥
जायअदितिकेकुण्डलदेहौं। निर्भयराजइन्द्रकोकरिहौं॥

इतना कह पुनि श्रीकृष्णचंद्र जी ने सत्यभामा से कहा कि हे नारी तू मेरे साथ चले तो भौमासुर मारा जाय क्योंकि तू भूमिका अंश है इस लेखे उसकी मा हुई जब देवताओं ने भूमिको पुत्र का वर दिया था तब यह कह दिया था कि जद तू मारने को कहेगी तद तेरा पुत्र मरेगा नहीं तो किसी भांति मारा न मरेगा इस बात के सुनतेही सत्यभामा जी कुछ मनही मन सोच समझ इतना कह अनमनी हो रहीं कि महाराज मेरा पुत्र आपका सुत हुआ तुम उसे क्योंकर मारोगे प्रभुने इस बात को टाल कहा कि उसके मारने की तो कुछ चिन्ता नहीं पर एक समय मैंने तुम्हें बचन दिया था तिसे पूरा किया चाहता हूं सत्यभामा बोलीं सो क्या प्रभु कहने लगे कि एकसमय नारदजी ने आय मुझे कल्पबृक्षका फूल दिया वहले मैंने रुक्मिणीको भेजा वह बात सुन तू रिसाय रही तब मैंने यह प्रतिज्ञा करी कि तू उदास मत हो मैं तुझे कल्पबृक्ष ही लाऊंगा सो अपना बचन प्रतिपालने को और तुझे सुरपुर दिखाने को साथ ले चलता हूं इतनी बात के सुनतेही सत्यभामाजी प्रसन्न हो हरि के साथ चलने को उपस्थित हुईं तब प्रभु उसे गरुड़ पर अपने पीछे बैठाय साथ लेचले कितनी एक दूर जाय श्रीकृष्णजीने सत्यभामासे पूछा कि सचु कहु सुन्दरी इस बातको सुन तू पहिले क्या समझ अप्रसन्न हुई

थी उसका भेद मुझे समझाके कह जो मेरे मनका संदेहजाय सत्यभामा बोली कि महाराज तुम भौमासुरको मार सोलह सहस्र एकसौ राजकन्या लाओगे तिनमें मुझे भी गिनोगे यह समझ अनमनी हुई थी श्रीकृष्णचन्द्र बोले कि तू किसी बात की चिन्ता मत करै मैं कल्पवृक्ष लाय तेरे घरमें रक्खूंगा औ तू उसके साथ मुझे नारदमुनि को दान कीजो फिर मोल ले मुझे अपने पास रखना मैं तेरे सदा आधीन रहूंगा ऐसेही इंद्राणीने इंद्र को वृक्ष के साथ दान किया था औ अदिति ने कश्यप को इस दान के करनेमें कोई नारी तेरे समान मेरे न होगी महाराज इसीभांति की बातें कहते २ श्रीकृष्णजी प्राग्ज्योतिषपुर के निकट जाय पहुंचे वहां पहाड़का कोट अग्नि जल पवन की ओट देखतेही प्रभुने गरुड़ औ सुदर्शनचक्रको आज्ञाकी उन्होंने पल भरमें ढाय बुझाय बहाय धाम अच्छा पन्थ बनाय दिया जो हरि आगे बढ़ नगरमें जाने लगे तो गढ़के रखवाले दैत्य लड़ने को चढ़ आये प्रभुने तिन्हें गदासे सहजही मार गिराया उनके मरने का समाचार पाय मुर नाम राक्षस पांचशीशवाला जो उस पुर और गढ़ का रखवालाथा सो अति क्रोधकर त्रिशूल हाथमें ले श्रीकृष्णजी पर चढ़आया औ लगा आखें लाल २ कर दांत पीस २ कहने कि ॥

चौ० मोतेबली कौनजग और। वाहिदेखिहौं मैंयाठौर॥

महाराज इतना कह मुरदैत्य कृष्णचंद्र पर यों टपटा कि ज्यों गरुड़ सर्प पर झपटे आगे उसने त्रिशूल चलाया सो प्रभुने चक्र से काटगिराया फिर खिझलाय मुरने जितने शस्त्र हरि पर घाले तितने प्रभुने सहजही काटडाले फिर वह हक्कबक्काय दौड़ कर प्रभुसे आय लिपटा औ मल्लयुद्ध करने लगा निदान कितनी एक बेर में युद्ध करते २ श्रीकृष्णजीने सत्यभामाजी को महा भयमान जान सुदर्शनचक्र से उसके पांचों शिर काट डाले धड़से शिर गिरतेही धमका सुन भौमासुर बोला कि यह अतिशब्द काहेका हुआ इस बीच किसीने जा सुनाया कि महाराज श्रीकृष्णने आय मुर दैत्य को मार डाला ॥

इतनी बातके सुनतेही प्रथम तो भौमासुर ने अति खेद किया पीछे अपने सेनापतिको युद्ध करनेका आयसु किया वह सब कटक साज लड़ने को गढ़के द्वार पर जा उपस्थित हुआ और उसके पीछे अपने पिताका मरना सुन मुरके सातबेटे जो अतिबलवान औ बड़े योधाथेसोभी अनेक कार अस्त्र शस्त्र धारणकर श्रीकृष्णचंद्रजी के सम्मुख लड़ने को जा खड़े

हुये पीछेसे भौमासुर ने अपने सेनापति औ मुर के बेटों से कहला भेजा कि तुम सावधानीसे युद्ध करो मैंभी आवता हूं लड़ने की आज्ञा पातेही सब असुर दल साथ ले मुरके बेटों समेत भौमासुरका सेनापति श्रीकृष्ण जीसे युद्ध करने को चढ़ आया औ एकाएकी प्रभुके चारों ओर सब कटक दल बादल सा जा छाया सब ओरसे अनेक२ प्रकारके अस्त्र शस्त्र भौमासुरके शूर कृष्णचंद्र पर चलातेथे औ वे सहज सुभावही काट२ ढेरकरते जातेथे निदान हरिने सत्यभामाजी को महा भयातुर देख असुरदल को मारके सातों बेटों समेत सुदर्शन चक्रसे बातकी बातमें यों काट गिराया कि जैसे किसान ज्वार की खेती को काट गिरावे ॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी ने राजा परीक्षितसे कहा कि महाराज मुरके पुत्रों समेत सब सेना कटी सुन प्रथम तो भौमासुर अति चिन्ताकर महा घबराया पीछे कुछ सोच समझ धीरज कर कितने एक महाबली राक्षसों को अपने साथ लिये लाल२ आखें क्रोधसे किये कसकर फेंट बांधे शस्त्र साधे बकता झकता श्रीकृष्णजीसे लड़नेको आय उपस्थित हुआ ज्यों भौमासुर ने प्रभु को देखा त्यों उसने एक बार अति रिसाय मूठकी मूठ बाण चलाये सो हरिने तीन२ टुकड़े कर काट गिराये उस काल ॥

चौ०काढ़खड्गभौमासुरलियो।कोपिहंकारकृष्णउरदियो
करैशब्द अतिमेघ समान। अरेगँवार नपावहि जान ॥
करकस बचन यहां उच्चरै। महायुद्ध भौमासुर करै ॥

महाराज यह तो अति बलकर इन पर गदा चलाता था औ श्रीकृष्ण के शरीरमें उसकी चोट यों लगती थी कि ज्यों हाथीके अंगमें फूल छड़ी आगे वह अनेक२ अस्त्रशस्त्रले प्रभुसेलड़ा औ प्रभुनेसब काटडाले तब वह फिर घर जाय एक त्रिशूल ले आया औ युद्ध करने को उपस्थित हुआ ॥

चौ०तबसतभामाटेरसुनाई। अबकिनयाहिहतोयदुराई ॥
बचनसुनतप्रभुचक्रसँभारयो।काटशीशभौमासुरमारयो
कुण्डलमुकुटसहितशिरपरयोधरकेगिरतशेषथरहरयो
तिहंलोकमेंआनन्दभयो। शोचदुःखसबहीकोगयो ॥
तासुज्योतिहरिदेहसमानी।जय२ शब्दकरैंसुरज्ञानी
घिरे बिमान पुहुप बरषावैं।वेदबखानि देवयश गावैं ॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेव मुनि बोले कि महाराज भौमासुर के

मरतेही भूमि औ भौमासुर की स्त्री पुत्र समेत आय प्रभुके सम्मुख हाथ जोड़ शिर नवाय अति बिनती कर कहनेलगी हे ज्योतिस्वरूप ब्रह्मरूप भक्तहितकारी बिहारी तुम साधु सन्त के हेतु धरते हो भेष अनन्त तुम्हारी महिमा लीला मायाहै अपरम्पारतिसे कोनजाने और किसे इतनी सामर्थ्य है जो बिन कृपा तुम्हारी बखाने तुम सब देवोंके हो देव कोई नहीं जानता तुम्हारा भेव ॥

महाराज ऐसे कह छत्र कुण्डल पृथ्वी प्रभु के आगे धर फिर बोली दीनानाथ दीनबंधु कृपासिंधु यह भगदत्त भौमासुर का बेटा आपकी शरण आयाहै अब करुणाकर अपना कोमल कमलसा कर इसके शीश पर दीजे औ अपने भयसे इसे निर्भय कीजे इतनी बातके सुनतेही करुणानिधान श्रीकान्ह ने करुणाकर भगदत्त के शीश पर हाथ धरा और अपने भय से उसे निडर किया तब भौमावती भौमासुर की स्त्री बहुतसी भेट हरि के आगे धर अति बिनती कर हाथ जोड़ शीश झुकाय खड़ी हो बोली ॥

हे दीनदयाल कृपाल जैसे आपने दर्शन दे हम सबको कृतार्थ किया तैसे अब चल कर मेरा घर पवित्र कीजे इस बात के सुनते ही अन्तर्यामी भक्त हितकारी श्री मुरारी भौमासुर के घर पधारे उस काल वे दोनों मा बेटे हरिको पाटम्बर के पांवड़े डाल घरमें ले जाय सिंहासन पर बिठाय अर्घ दे चरणामृत ले अति दीनता कर बोले हे त्रिलोकीनाथ आपने भलाकिया जो इस महाअसुर को बधकिया हरिसे बिरोधकर जिसने संसारमें सुख पाया रावण कुम्भकरण कंसादि ने बैर करअपना जी गंवाया और जिसने २ आप से द्रोह किया तिस २ का जगतमें नाम लेवा पानी देवा कोई न रहा इतना कह फिर भौमावती बोली हे नाथ अब आप मेरी बिनती मान भगदत्तको निजसेवक जान जोसोलह सहस्र राजकन्या इसके बापने अनब्याही रोक रक्खीहैं सोअंगीकार कीजे महाराज योंकह उसने सब राजकन्याओं को निकाल प्रभुकेसोहीं पांतिकी पांतिला खड़ाकिया वे जगत उजागर रूपसागर श्रीकृष्णचंद्रआनन्द कन्द को देखते ही मोहितहो अति गिड़गिड़ाय हाहा खाय हाथ जोड़ बोलीं नाथ जैसे आपने आय हम अबलाओं को इस महादुष्ट के बन्धसे निकाली तैसे अब कृपाकर इन दासियोंको साथले चलिये औ निज सेवा में रखियेतोभला ॥

यह बात सुन श्रीकृष्णचन्द्र ने उन्हें इतना कहाकि हमतुमको साथ ले चलनेको रथ पालकियां मंगावे हैं भगदत्तकी ओरदेखा भगदत्त प्रभुके

मनका कारण समझ अपनी राजधानी में जाय हाथी घोड़े सजवाय घुड़बहल औ रथ झमझमाते जगमगाते जुतवाय सुखपाल पालकी नालकी डोली चण्डोला झलाबोर के कसवाय लिवाय लाया हरि देखतेही सब राजकन्याओं को उनपर चढ़ने की आज्ञादे भगदत्तको साथले राजमन्दिर में जाय उसे राजगद्दी पर बिठाय राजतिलक उसे निज हाथ से दे आप बिदा ली जिसकाल सब राजकन्याओं को साथ लिये वहां से द्वारका को चले तिस समय की शोभा कुछ बरणीनहीं जाती कि हाथी बेलोंकी झलाबोर गङ्गा यमुनी झूलोंकी झमक और घोड़ोंके पाखरोंकी टमक औसुखपाल पालकी नालकी डोली चण्डोल रथ घुड़बहलों के घटा टोपों की आभ औ उनके मोतियों की झालरों की ज्योति सूर्य्यकी ज्योतिसे मिल एकहो जगमगाय रही थी ॥

आगे श्रीकृष्णचंद्र सब राजकन्याओं को लिये कितनेएक दिनोंमें चलेचले द्वारकापुरी पहुंचे वहां जाय राजकन्याओं को राजमन्दिर में रख राजा उग्रसेन के पास जाय प्रणाम कर पहले तो श्रीकृष्णजीने भौमासुरके मारने औ राजकन्याओं के छुड़ाय लाने का सब भेद कह सुनाया फिर राजा उग्रसेन से बिदाहो प्रभु सत्यभामा को साथले छत्र कुंडल लिये गरुड़पर बैठ स्वर्गको गये तहां पहुंचतेही ॥

चौ० । कुण्डलदियेअदितिकेईश । छत्रधरयोसुरपतिकेशीश ॥

कहो जो सत्यभामा तुमसे कल्पवृक्ष मांगतीहैं देखो वह क्याकहताहै इस बातका उत्तर मुझे लादो पीछे समझा जायगा महाराज इतनी बात श्रीकृष्णजी के मुखसे सुन नारद जीने सुरपतिसे जाय कहाकि सत्यभामा तुम्हारी भौजाई तुमसे कल्पतरु मांगती है तुम क्या कहते हो सो कहो मैं उन्हें जाय सुनाऊं इस बातके सुनतेही इन्द्र महिलेतो हकबकाय कुछ सोच रहा पीछे उसने नारद मुनिका कहा सब इन्द्राणी से जाय कहा ॥

चौ० । इन्द्राणीसुनिकहैरिसाय । सुरपतितेरीकुमतिनजाय
तूहै बड़ो मूढ़ मति अन्धु । कोहै कृष्ण कौनको बंधु ॥

तुझेवह सुधिहै कि नहीं जोउसने ब्रजमें से तेरीपूजा मेट ब्रजबासियों से गिरि गोबर्द्धन पुजवाया छलकर तेरी पूजाका सब पकवान आप खाया फिर सात दिन तुझे गिरिपरबर्षाय उसने तेरा गर्व गंवाय सब जगत में निरादर किया इस बातकी कुछ तेरेतईं लाजहै या नहीं वह अपनी नारी की बात मानता है तू मेरा कहा क्यों नहीं मानता सुनता ॥

महाराज जब इंद्राणीने इंद्रसे यों कह सुनाया तबवह अपनासा मुंह ले उलट नारदजी के पास आया औ बोला हे ऋषिराय तुम मेरी ओरसे जाय श्रीकृष्णचंद्र से कहो कल्पवृक्ष नन्दन बन तज अनत न जायगा औ जायगा तो वहां किसी भांति न रहेगा इतना कह फिर समझाके कहियो जो आगेकी भांति अब यहां हमसे बिगाड़ न करैं जैसे ब्रजमें ब्रजबासियों को बहकाय गिरिका मिसकर सब हमारी पूजा की सामा खाय गयेनहीं तो महा युद्ध होगा ॥

यह बात सुन नारदजी ने आ श्रीकृष्णचंद्र से इंद्र की बात कही कह सुनाय के फिर कहा महाराज कल्पतरु इंद्रतो देताथा पर इंद्राणी ने न देनेदिया इस बातके सुनतेही श्रीमुरारी गर्भग्रहारी नन्दनबन में आय रखवालों को मार भगाया कल्पवृक्षको उठाय गरुड़ पर धर ले आये उस काल वे रखवाले जो प्रभु के हाथकी मार खाय भागेथे इंद्र के पास जा पुकारे कल्पतरुके लेजाने के समाचार पाय महाराज राजा इंद्र अतिकोप कर बज्र हाथमें ले सब देवताओं को बुलाय ऐरावत हाथीपर चढ़ श्रीकृष्णचन्द्र जीसे युद्ध करनेको उपस्थित हुआ फिर नारदमुनिजी ने जाय इंद्र से कहा राजा तू महा मूर्खहै जो स्त्रीके कहे भगवान से लड़ने को उपस्थित हुआ है ऐसी बात कहते तुझे लाजनहीं आती जो तुझे लड़नाही था तो जब भौमासुर तेरा छत्र औ अदितिके कुंडल छिनाय ले गया तब क्यों न लड़ा अब प्रभुने भौमासुर को मार कुंडल औ छत्र ला दियेतो तू उन्हींसे लड़ने लगा जो तू ऐसाही बलवानथा तो भौमासुरसे क्योंन लड़ा तू वह दिन भूलगया जो ब्रजमें जाय प्रभुकी दीनता कर अपना अपराध क्षमा कराय आया फिर उन्हींसे लड़ने चलाहै महाराज नारदजी के मुख से इतनी बात सुनतेही राजा इंद्र जो युद्ध करने को उपस्थित हुआ तो अछताय पछताय लज्जित हो मन मार रहगया ॥

आगे श्रीकृष्णचंद्र द्वारका पधारे तब हर्षित भये देव हरिको यादव सारे प्रभुने सत्यभामा के मन्दिर में कल्पवृक्ष लेजाय के रक्खा और राजा उग्रसेन ने सोलह सहस्र एकसो राजकन्या अनब्याही थीं सोसब वेदरीति से श्रीकृष्णचंद्र को ब्याहीं ॥

चौ० भयो वेदविधि मंगलचार । ऐसेहरि विहरत संसार ॥
सोलहसहस एकसौगेहा । रहतकृष्णकरपरमसनेहा ॥
पटरानी आठौंजेगनी । प्रीतिनिरन्तरतिनसोंघनी ॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी बोले कि हेराजा हरिने ऐसे भौमासुरको बध किया औ अदिति का कुंडल औ इंद्रका छत्र ला दिया फिर सोलह सहस्र एकसौ आठ बिवाह कर श्रीकृष्णचंद्र द्वारकापुरी में आनन्द से सबको ले लीला करने लगे ॥ इति श्रीलालकृते प्रेमसागरे भौमासुरबधो नामषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६० ॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज एक समय मणिमय कंचनके मन्दिर में कुन्दन का जड़ाऊ छपरखट बिछाथा तिसपर फेनसे बिछोने फूलोंसे संवारे कपोल गेडुआ औ शीशे समेत सुगन्धसे महक रहेथे कर्पूर गुलाब नीर चोवा चन्दन अरगजा सेजके चारोंओर पाचोंमे भरा धराथा अनेक प्रकार के चित्र बिचित्र चारों ओर भीतों पर खिचे हुयेथे आलों में जहांतहां फूल फल पकवान पाक धरे थे औ सब सुखका सामान जो चाहिये सो उपस्थित था ॥

झलाबेर का घांघरा घूम घुमारा तिसपर सब्बे मोती टके हुये चमचमाती अंगिया झल झलाती सारी जगमगाती ओढ़नी पहिने ओढ़े मथ शिख से शृङ्गार किये रोली की आड़ दिये बड़े २ मोतियों की नथ शीशफूल कर णफूल मांगटीका टेढ़ीबन्दी चन्द्रहार मोहनमाला धुकधुकी पञ्चलड़ीसतलड़ी मुक्तमाल दुहरे तिहरे नवरत्न औ भुजबन्ध कंकण पहुंची नौगरी चूड़ी छाप छल्ले किंकिणी अनवट बिछुये लहर लहर आदि सब आभूषण रत्न जटित पहने चंद्रबदनी चम्पकबरणी मृगनयनी पिकबयनी कटि केहरी श्रीरुक्मिणी जी औ मेघबरण चन्द्र मुखी कमल नयन मोरके पंखों का मुकुट दिये बनमाल हिये पीताम्बर पहिरे पीत पट ओढ़े रूप सागर त्रिभुवन उजागर श्रीकृष्णचंद्र आनन्द कन्द वहां बिराजतेथे औ आपसमें परस्पर सुख लेते देते थे कि एका एकी लेटे २ श्रीकृष्ण जीने रुक्मिणीजी से कहा कि सुन सुन्दरि एक बात तुझसे पूछता हूं तू उसका उत्तर मुझे दे कि तू तो महा सुन्दरि सब गुण संयुक्त औ राजा भीष्मक की पुत्री जो महाबली औ बड़ा प्रतापी शिशुपाल चन्देली का राजा ऐसा कि जिन के घर सात पीढ़ीसे राज चला आताहे और हम उनके पाससे भागते फिरते हैं औ मथुरा पुरी तज समुद्र में जाय बसेहैं उन्हींके भयसे ऐसे राजोंको तुम्हें तुम्हारे माता पिता भाई देतेथे औ वह बरात ले ब्याहने को भी आचुकाथा तिसे न बर तुमने कुलकी मर्य्यादछोड़ संसारकी लाज औमाता पिता बंधुकी शंकातज हमें ब्राह्मण के हाथ बुलाभेजा ॥

चौ०। तुम्हरेयोग्यनहमपरबीनाभूपतिनाहिंरूपगुणहीन॥
काहूयाचककीरतिकरी। सोतुमसुनकै मनमें धरी॥
कटकसाजिनृपव्याहनआयो तबतुमहमकोबोलपठायो
आयउपाधिबनीहीभारी क्योंहूंकैपतिरहीहमारी॥
तिनकोदेखततुमकोलाथे। दलहलधरउनकेबिचलाये॥
तुमलिखभेजीहीयहबानी। शिशुपालसेछुड़ाओआनी
सोपरितिन्हारहीतिहारी कछूनइच्छाहतीहमारी
अजहूंकछूनगयोतिहारोसुन्दरिमानऊंबचनहमारो॥

— कि जो कोई भूपति कुलीन गुणी बली तुम्हारे योग्य होय तिसके पास जाय रहो महाराज इतनी बातके सुनतेही श्री रुक्मिणीजी भयचक भहराय पछाड़ खाय भूमि पर गिरीं औ जल बिन मीनकी भांति तड़फड़ाय अचेत हो लगीं ऊर्द्ध स्वास लेने तिसकाल॥

दो०। इहिछबिमुखअलकावली। रही लपट इक संग।
मानऊंशशि भूतल परयो। पीवत अमी भुवंग॥

यह चरित्र देख इतना कह श्रीकृष्णचंद्र घबराकर उठे कि यहतोअभी प्राण तजती है औ चतुर्भुज हो उसके निकट जाय दो हाथों से पकड़ उठाय गोदमें बैठाय एक हाथसे पंखा करने लगे औ एक हाथसे अलक संवारने महाराज उस काल नन्दलाल प्रेम बशहो अनेक चेष्टा करने लगे कभी पीताम्बरसे प्यारीका चंद्रमुख पोंछतेथे कभी कोमल कमलसा अपना हाथ उसके हृदय पर रखतेथे निदान कितनी एक बेरमें श्रीरुक्मिणीजी के जीमें जी आया तह हरि बोले॥

चौ०। तूहीं सुन्दरिप्रेमगंभीर। तैंमन कछून राखोधीर॥
तैंमनजान्योसांचेछांड़ीं। हमनेहंसीप्रेमकीमाड़ीं॥
अबतूसुन्दरिदेहसंभार। प्राणठौरके नयनउघार॥
जौलौंतबोलतनहिंप्यारीतौलौंहमदुखपावतभारी
बेतीबचनसुनतपियनारीचितईबारिजनयनउघारी
देखेकृष्ण गोदमें लिये। भईलाजअतिसकुचीहिये॥
अरबरायउठिठाढ़ीभई। हाथजोरिपायनपरिगई॥
बोले कृष्ण पीठ कर देत। भली भली जू प्रेमअचेत॥

हमने हंसी ठानी तुमने सचुही जानी हंसी की बात में क्रोध करना उचित नहीं उठो अब क्रोध दूरकरो औ मनका शोचहरो महाराज इतनी बातके सुनतेही श्रीरुक्मिणी जी उठ हाथजोड़ शिरनाय कहने लगींकि महाराज आपने जो कहा कि हम तुम्हारे योग्य नहीं सो सच कहा क्यों कि तुम लक्ष्मीपति शिव बिरंचिके ईश तुम्हारी समताका त्रिलोक मेंकौन है हे जगदीश तुम्हें छोड़ जो जान और को ध्यावे सो ऐसेहैं जैसेकोई हरियश छोड़ गीध गुण गावे महाराज आपने जो कहाकि तुम किसी महाबली राजा को देखा सो तुमसे अति बली औ बड़ा राजा त्रिभुवन में कौन है सो कहो ब्रह्मा रुद्र इंद्रादि सब देवता बरदायी तो तुम्हारे आज्ञाकारी हैं तुम्हारी कृपा से वे जिसे चाहें हैं तिसे महाबली प्रतापी तेजस्वी बर दे बनाते हैं और जो लोग आपकी सैकड़ों वर्ष अति तपस्या करतेहैं सो राजपद पाते हैं फिर तुम्हारा भजन ध्यान जप तप भूल नीति छोड़ अनीति करतेहैं तब वे आपसे आपही अपना सर्वस्वखोय भ्रष्ट होतेहैं कृपानाथ तुम्हारी तो सदा यह रीतिहै कि अपने भक्तोंके हेतु संसारमें आय बारबार अवतार लेते हो औ दुष्ट राक्षसों को मार पृथ्वी का भार उतार निज जनोंको सुख दे कृतार्थ करते हो औ नाथ जिस पर तुम्हारी बड़ी दया होतीहै और वह धन राज यौवन रूप प्रभुता पाय जब अभिमान से अन्धाहो धर्म कर्म तप सत्य दया पूजा भजन भूलताहै तब तुम उसे दरिद्री बनातेहो क्योंकि दरिद्री सदाही तुम्हारा ध्यान स्मरण कियाकरता है इसी से तुम्हें दरिद्री भाता है जिस पर तुम्हारी बड़ी कृपा होगी सो सदा निर्द्वन्द रहेगा महाराज इतना कह फिर रुक्मिणी बोलीं कि हे प्राणनाथ जैसा काशीपुरी के राजा इंद्रद्युमनकी बेटी अम्बा ने किया तैसा मैं न करूंगी कि वह पति छोड़ राजा भीष्म के पास गई औ उसने जब न रक्खा तब फिर अपने पति के पास आई पुनि पतिने उसे निकाल दिया तब उसने गङ्गा तीरमें बैठ महादेव का बड़ा तप किया वहां भोलानाथ ने आय उसे मुंह मांगा बर दिया उस बर के बलसे जाय उसने राजा भीष्म से अपना पलटा लिया सो मुझसे न होगा॥

चौ० अरुतुमनाथकहौसमुझाई। काहूयाचककरीबड़ाई॥
वाको बचनमान तुमलियो। हमपैबिप्र पठैकै दियो॥
याचकशिवबिरंचिशारदा। नारदगुणगावतसर्बदा॥
बिप्रपठायोजानदयाल। आयकियोदुष्टनकोकाल॥

दीनजान दासीसंग लई। तुमसोंहिनाथ बड़ाईदई॥
येसुनकृष्णकह्योसुनप्यारी ज्ञानध्यानगतिलई हमारी।
सेवाभजन प्रेमतेंजान्यो। तोहीसोंमेरो मनमान्यो॥

महाराज प्रभुके मुखसे इतनी बात सुनतेही संतुष्टहो रुक्मिणीजी फिर हरिकी सेवा करने लगीं॥ इति श्रीलालकृते प्रेमसागरे रुक्मिणी मानलीला वर्णनोनामैकषष्टितमोऽध्यायः॥ ६१॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज सोलह सहस्र एकसौ आठ स्त्रियों को ले श्रीकृष्णचंद्र आनन्दसे द्वारकापुरीमें बिहार करने लगे और आठों पटरानियां आठों पहरकी सेवा में रहें नित उठ भोरहीं कोई मुख धुलवावे कोई उबटन लगाय न्हिलावे कोई पटरस भोजन बनाय जिमावे कोई अच्छे पान लौंग इलायची जायफल जावित्री समेत प्रिय को बनाय २ खिलावे कोई सुथरे बस्त्र और रत्न जटित आभूषण चुन सुबास बनाय प्रभु को पहनाती थीं॥

कोई फूल माल पहिराय गुलाब नीर छिड़क चन्दन चरचती थी कोई पंखा डुलातीथी और कोई पांव दाबतीथी महाराज इसी भांति सब रानियां अनेक २ प्रकार से प्रभुकी सदा सेवा करें और भांति २ हरि उन्हें सुखदें इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज कई बर्ष के बीच॥

दो० एक एक यदुनाथ की। तियने जाये पुत्र॥
इकइक कन्या लच्छमी। दशदश पुत्रसुपुत्र॥
एकलच्छ एकसठसहस्र असीबाड़ इकबार॥
उपजे हरिके पुत्रये। गुणबल रूप अपार॥

सब मेघबरण चन्द्रमुख कमलनयन नीले पीले झगुले पहिने गैंडे कठुले तांबूत गलेमें डाले घर घर बालचरित्र कर माता पिता को सुख दें और उनकी मायें अनेक २ भांति से लाड़ प्यार कर प्रतिपालन करें महाराज श्रीकृष्णचंद्रजी के पुत्रोंका होना सुन रुक्मने अपनी स्त्रीसे कहा कि अबमैं अपनी चारुमतीजो कृतबर्माके बेटेको मांगीहै उसेन दूंगा स्वयम्बर करूंगा तुम किसी को भेजमेरी बहन रुक्मिणी को पुत्र समेत बुलाय भेजो॥

इतनी बातके सुनतेही रुक्मकी नारी ने अति बिनती कर ननद को पत्र लिख पुत्र समेत बुलाया एक ब्राह्मण के हाथ और स्वयम्बर किया भाई भौजाई की चिट्ठी पातेही रुक्मिणी जी श्रीकृष्णचन्द्र जीसे आज्ञा ले

बिदाहो पुत्र सहित चली चली द्वारकासे भोजकट में भाईके घर पहुंचीं ॥

चौ० देखरुकमनेअतिसुखपायो आदरकरनीचेशिरनायो ॥
पावनपर बोली भौजाई । हरनभयो तवतेअवआई ॥

यह कह फिर उसने रुक्मिणी जीसे कहाकि ननद जो तुम आई हो तो हमपर दया मया कीजे और इस चारुमती कन्याको अपने पुत्रकेलिये लीजे इस बातके सुनतेही रुक्मिणी जी बोलीं कि भौजाई तुम पति की गति जानती हो मत किसी से कलह करवाओ मेया की बात कुछ महो नहीं जाती क्या जानिये किस समै क्याकरै इससे कोईबात कहते करते भय लागत है रुक्म बोला कि बहुन अब तुम किसी भांति न डरो कुछ उपाधि न होगी वेदकी आज्ञाहै कि दक्षिण देशमें कन्यादान भानजे को दीजे इस कारण मैं अपनी पुत्री चारुमती तुम्हारे पुत्र प्रद्युम्न को दूंगा श्रीकृष्णचन्द्रजी से बैरभाव छोड़ नया सम्बन्ध करूंगा ॥ महाराज इतना कह जब रुक्म वहांसे उठ सभामें गया तब प्रद्युम्नजी भी मातासे आज्ञा ले बनठन कर स्वयम्बर के बीच गये तो क्या देखते हैं कि देश देशके नरेश भांति २ के बस्त्र शस्त्र आभूषण पहने बांधे बनाव किये बिवाह की अभिलाषा हियेमें लिये सब खड़े हैं औ वह कन्या जेमाल कर लिये चारोंओर दृष्टिकिये बीचफिरतीहै पर किसीपैदृष्टि उसकी नहींठहरती इस में जो प्रद्युम्नजी स्वयम्बरके बीचगये तो देखतेही वह कन्याने मोहित हो आ इनके गलेमें जेमाल डाली सब राजा अछताय पछताय मुंहदेखते अपना सा मुंह लिये खड़े रह गये और अपने मनहीं मन कहने लगे कि भला देखो हमारे आगे इस कन्या को कैसे लेजायगा हम बाटहीमें छीन लेंगे महाराज सब राजा तो योंकह रहेथे और रुक्म ने बर कन्या को मढ़े के नीचे लेजाय वेदकी विधि से संकल्प कर कन्यादान क्रिया और उसके यौतुकमें बहुतही धन द्रव्य दिया कि जिसका कुछ वारपार नहीं आगे श्रीरुक्मिणी जी पुत्रको ब्याह भाई भौजाईसे बिदा हो बेटे बहू को ले रथ पर चढ़ ज्यों द्वारका पुरीको चलीं त्योंसब राजाओंने आय मारग रोका इस लिये कि प्रद्युम्न जीसे लड़ कन्या को छीन लें ॥ उनकी यह कुमति देख प्रद्युम्नजी भी अपने अस्त्र शस्त्र ले युद्ध करने को उपस्थित हुये कितनी बेर तक इनसे उनसे युद्ध रहा निदान प्रद्युम्न जी उन सब को मार भगाय आनन्द मंगलसे द्वारकापुरी पहुंचे इनके पहुचने के समाचार पाय सब कुटुम्ब के लोग क्या स्त्री क्या पुरुष पुरी के बाहर आय २

रीति भांति कर पाटम्बर के पांवड़े डालते बाजे गाजे से इन्हेंलेगये सारे नगरमें मंगल हुआ ये राजमन्दिर में सुखसे रहने लगे ॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी ने राजापरीक्षित से कहा महाराज कई बर्ष पीछे श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्दके पुत्र प्रद्युम्नजी के पुत्र हुआ उस काल श्रीकृष्णजी ने ज्योतिषियों को बुलाय सब कुटुम्ब को बैठाय मंगलाचार करवाय शास्त्रकी रीतिसे नामकरण किया ज्योतिषियों ने पत्र देख बर्ष मास पक्ष तिथि घड़ी लग्न नक्षत्र ठहराय उस लड़के का नाम अनिरुद्ध रक्खा उसकाल ॥

सो० फूले अँगनसमांय दानदक्षिणा द्विजनके ॥
देतनक्षण अघाँय पूतभयो प्रद्युम्न के ॥

महाराज नाती के होनेका समाचार पाय पहले तो रुक्मने बहन बहनोई को अति हितकर यह पत्रीमें लिख भेजा कि तुम्हारे पोते से हमारी पोती का ब्याह होय तो बड़ा आनन्द है और पीछे एक ब्राह्मणको बुलाय रोली अक्षत रुपया नारियल दे उसे समझायके कहा कि तुम द्वारकापुरी में जाय हमारी ओर से अति बिनती कर श्रीकृष्णजी का पौत्र अनिरुद्ध हमारा दोहता है तिसे टीका दे आवो बात के सुनतेही ब्राह्मण टीका औ लग्न साथही ले चला चला श्रीकृष्णचन्द्रके पास द्वारका पुरीमें गया उसे देख प्रभुने अति मान सन्मान कर पूछा कि कहो देवता आपका आना कहां से हुआ ब्राह्मण बोला महाराज मैं राजा भीष्मक के पुत्र रुक्म का पठाया उनकी पौत्री औ आपके पौत्र से सम्बन्ध करने को टीका औ लग्न ले आयाहूं इस बातके सुनतेही श्रीकृष्णजी ने दश भाइयों को बुलाय टीका और लग्न ले उस ब्राह्मण को बहुत कुछ दे बिदाकिया और आप बलरामजी के निकट जाय चलनेका बिचार करने लगे निदान वे दोनों भाई वहांसे उठ राजाउग्रसेन के पासजाय सब समाचार सुनाय उनसे बिदाहो बाहर आय बरातकी सब सामा मंगवाय २ इकट्ठी करवाने लगे कई एक दिनमें जब सब सामान उपस्थित हो चुका तब बड़ी धूम धाम से प्रभु बरात ले द्वारका से भोजकट नगर को चले ॥

उसकाल एक झमझमाते रथपर तो श्रीरुक्मिणीजी पुत्र पौत्र को लिये बैठी जातीथीं औ एक रथपर श्रीकृष्णचन्द्र औ बलराम बैठे जातेथे

निदान कितने एक दिनोंमें सब समेत प्रभु वहां पहुंचे महाराज बरात के पहुंचतेही रुक्म कलिङ्गादि सब देश देश के राजाओं को साथ ले नगरके बाहर जाय अगोनी कर सब को आगे पहराय अति आदरमान कर जनवासे लिवाय लाया आगे सबको खिलाय पिलाय मढ़े के नीचे लिवाय ले गया औ उनसे वेदकी बिधिसे कन्यादान किया उसके यौतुकमें जो दान दिया उसको मैं कहां तक कहूं वह अकथ्यहै इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी बोले महाराज ब्याहके हो चुकतेही राजा भीष्मक ने जनवासे में जाय हाथ जोड़ अति बिनती कर श्रीकृष्णचन्द्रजी से चुपचुपाते कहा महाराज बिवाह होचुका औ रसरहा अब आप शीघ्र चलने का बिचार कीजे क्योंकि ॥

चौ० भूप सगे जे रुक्म बुलाये । ते सब दुष्ट उपाधी आये ॥
मैतकाहूसों उपजैरारि । याहीतेहौं कहतमुरारि ॥

इतनी बात कह ज्यों राजा भीष्मक गये त्योंही श्रीरुक्मिणीजी के निकट रुक्म आया ॥

दो० कहत रुक्मिणी टेरकर किमिघर पहुंचे जाय ॥
बैरी भूपति पाहुने । जुरे तिहारे आय ॥
चौ० जोतुमभैया चाहौभलौ । हमहिंबेग पहुंचावनचलौ ॥

नहीं तो इसमें अनरस होता दीखेहै यह बचन सुन रुक्म बोला कि बहन तुम किसी बात की चिन्ता मत करो मैं पहले जो राजा देशदेश के पाहुने आये हैं तिन्हें बिदा कर आऊं पीछे जो तुम कहोगी सो मैं करूंगा इतना कह रुक्म वहांसे उठ जो राजा पाहुने आयेथे उनके पास गया वे सब मिलके कहने लगे कि रुक्म तुमने कृष्ण बलदेव को इतना धन द्रव्य दिया औ उन्होंने मारे अभिमानके कुछ भला न माना एक तो हमें इस बातका पछतावा है और दूसरे उस बातकी करक हमारे मनसे नहीं जाती कि जो बलराम ने तुम्हें अभिराम कियाथा महाराज इस बात के सुनतेही रुक्म को क्रोध हुआ तब राजा कलिङ्ग बोला कि एक बात मेरे जी में आईहै कहो तो कहूं रुक्मने कहा कहो फिर उसने कहा कि हमें श्रीकृष्णसे कुछ काम नहीं पर बलरामको बुलादो तो हम उससे चौपड़ खेल सबधन जीतले और जैसा उसे अभिमान है तैसा यहांसे रीतेहाथ बिदाकरें ज्यों कलिंगने यहबात कही त्योंही रुक्म वहांसे उठ कुछ सोच

बिचार करता बलराम जीके निकट जा बोला कि महाराज आपको सब राजाओं ने प्रणाम कर बुलाया है चौपड़ खेलने को ॥

चौ०सुनिबलभद्र तबहितहिंआये।भूपतिउठिकेशीशनवाये॥

आगे सबराजा बलरामजी का शिष्टाचार कर बोलेकि आपको चौपड़ खेलनेका बड़ाअभ्यास है इसलिये हम आपकेसाथ खेला चाहतेहैं इतना कह उन्होंने चौपड़ मंगवाय बिछाई औ रुक्म और बलरामजी से होने लगी पहले रुक्म दशबेर जीता तब बलदेवजी से कहनेलगा कि धन तो सब बीता अब काहेसे खेलोगे इसमें राजा कलिंग बड़ी बात कह हंसा यह चरित्र देख बलदेवजी ने नीचा शिरकर शोच करनेलगे तब रुक्मने दशकरोड़ रुपये एकबार लगाये सो बलदेव जीने ज्यों जीतकर उठाये त्यों सब राजा घांधलकर बोले कि यह रुक्म का पांसा पड़ा तुम क्यों रुपये समेटते हो ॥

चौ० सुन बलराम फेरसबदीने । अर्ब लगाये पांसे लीने॥

फिर हलधर जीते औ रुक्म हारा उस समय भी रोंगटीकर सबराजाओं ने रुक्मको जिताया और यों कह सुनाया ॥

चौ०।जुआखेल पांसेकी मार।यहतुम जानोकहागँवार॥
जुआयुद्वगतिभूपतिजानै। ग्वालगोपगैयनपहिंचानै॥

इसबातके सुनतेही बलदेवजीका क्रोध यों बढ़ा कि जैसे पूनों को समुद्र की तरंग बढ़े निदान ज्यों त्यों कर बलरामजीने क्रोधको रोका मनको समझाय फिर सातअर्ब रुपये लगाये और चौपड़ खेलने लगे फिरभी बलदेवजी जीते औ सभोंने कपटकर रुक्मही को जीता कहा इस अनीतिके होतेही आकाश से यह बाणी हुई कि हलधर जीते और रुक्म हारा अरेराजाओ तुमने क्यों झूठ बचन उचारा महाराज जब रुक्म समेत सब राजाओं ने आकाशबाणी सुनी अनसुनीकी तब बलदेवजी महाक्रोधमें आयबोले ॥

चौ०करीसगाईबैरनछाड़ो।हमसोंफेरकलहतुमगाड़ो॥
मारोंतोहिंअरेअन्याई। भलोबुरोमानहिभौजाई॥
अबकाहूकीकाननकरिहौं।आजप्राणकपटीकेहरिहौं॥

इतनी कथाकह श्रीशुकदेवजी ने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज निदान बलरामजी ने सबके देखते २ रुक्मको मारडाला औ कलिङ्ग के

पछाड़ मारे घूंसोंके उसके दांतउखाड़ डाले औ कहा कि तूभी मुंह पसारे के हंसा था आगे सब राजाओं को मार भगाय बलरामजी ने जनवासे में श्रीकृष्णचन्द्रजी के पास आय वहां का सब ब्यौरा कह सुनाया बात के सुनतेही हरिने सब समेत वहांसे प्रस्थानकिया और चले चले आनन्द मंगलसे द्वारका में आनपहुंचे इनके आतेही सारे नगर में सुख छायगया घर २ मंगलाचार होने लगा श्रीकृष्णजी और बलदेव जीने उग्रसेन राजा के सम्मुख जाय हाथजोड़ कहा महाराज आपके पुण्य प्रतापसे अनिरुद्ध को व्याह लाये और महादुष्ट रुक्मको मारआये ॥ इतिश्रीलालकृते प्रेमसागरेअनिरुद्धविवाहरुक्मबधोनामद्वितीयषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६२ ॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज अब जो श्रीद्वारकानाथ का बलपाऊं तो ऊषाहरण की कथा सब गाऊं जैसे उसने राचि समय स्वप्नमें अनिरुद्धजी को देखा औ असक्तहो खेदकिया पुनि चित्ररेखाने ज्यों अनिरुद्ध को लाय ऊषासे मिलाया तैसे मैं सब प्रसंग कहताहूं तुम मनदे सुनो ब्रह्मा के बंशमें पहले कश्यप हुआ तिसका पुत्र हिरण्यकश्यपु अति बली महा प्रतापी औ अमर भया उसका सुत हरिजन प्रभुभक्त प्रह्लादनाम हुआ उसका बेटा राजा बिरोचन का राजा बलि जिस का यश धर्म धरणी में अब तक छायरहा है कि प्रभुने बावन अवतारले राजाबलिको छल पाताल पठाया उस बलिका ज्येष्ठ पुत्र महा पराक्रमी बड़ा तेजस्वी बाणासुर हुआ वह शोणित पुरमें बसे नित प्रतिकैलाश में जाय शिवकी पूजा करै ब्रह्मचर्य्य पालै सत्य बोले जितेंद्रिय रहै महाराज एकदिन बाणासुर कैलाशमें जाय हरकी पूजाकर प्रेममें आय लगा मगनहो मृदंग बजाय बजाय नाचने गाने उसका गाना बजाना सुन श्रीमहादेव भोलानाथ मगन हो लगे पार्बतीजी को साथ ले नाचने और डमरू बजाने निदान नाचते नाचते शङ्कर ने अति सुखपाय प्रसन्नहो बाणासुर को निकट बुलाके कहा पुत्रमैं तुझपर संतुष्ट हुआ बर मांगे जो तू बर मांगेगा सोमैं दूंगा ॥

चौ० तैंकरबाजेभलेबजाये। सुनत श्रवण मेरेमनभाये ॥

इतनी बातके सुनतेही महाराज बाणासुर हाथ जोड़ शिरनाय अति दीनता कर बोला कि कृपानाथ जो आपने मेरे उपर कृपा की तो पहले अमरकर मुझे सबपृथ्वीका राज्य दीजे पीछे मुझे ऐसा बलीकीजे कि कोई मुझसे न जीते महादेवजी बोले कि मैंने तुझे यही बर दिया औ सब

भयसे निर्भय किया त्रिभुवन में तेरे बलको कोई न पावेगा औ बिधाता का भी तुझपर कुछ बश नचलैगा ॥

दो० बाजो भलो बजायके दियो परम सुख मोंहि।
मैंअतिहियआनन्दकर दियेसहस भुजतोंहि ॥

अब तू घर जाय निश्चिन्ताई से बैठ अबिचल राज्यकर महाराज इतना बचन श्रीभोलानाथ के मुखसे सुन सहस्रभुज पाय बाणासुर अति प्रसन्नहो परिक्रमा दे शिरनाय बिदाहो आज्ञाले शोणित पुरमें आया आगे त्रिलोकी को जीत सब देवताओं को बशकर नगरके चारोंओर जलकी चुआन चौड़ी खांई औ अग्नि पवन का कोट बनाय निर्भय हो सुखसे राज्य करनेलगा कितने एक दिनपीछे ॥

दो० लरबेबिन भईं भुज सबल। भरकैं अरु सहरांय ॥
कहत बाणकासों लरैं कापर अब चढ़िजांय ॥

चौ० भईखाजलरबेबिनभारी। कोपुजवैहियहौसहमारी॥

इतना कह बाणासुर घरसे बाहर जाय लगा पहाड़ उठाय २ तोड़ २ चूर करने औ देश २ फिरने जब सब पर्बत फोड़ चुका और उसके हाथें की सुरसुराहट खुजलाहट न गई तब ॥

चौ० कहतबाणअबकासोंलरौं। इतनीभुजाकहालैकरौं ॥
सबल भारमैंकैसेसहौं। बज्रहिजायकैहरसोंकहौं ॥

महाराज ऐसे मनहीं मन शोच बिचार कर बाणासुर महादेवजी के सम्मुख जा हाथ जोड़ शिरनाय बोला कि हे त्रिशूलपाणि त्रिलोकीनाथ तुमने जो कृपाकर सहस्र भुजा दीं सो मेरे शरीर पर भारीभईं उनका बल अब मुझसे संभाला नहीं जाता इसका कुछ उपाय कीजे कोई महा बली युद्ध करनेको मुझे बताय दीजे मैं त्रिभुवनमें ऐसा पराक्रमी किसूको नहीं देखता जो मेरे सम्मुख हो युद्ध करे दयाकर जैसे आप ने मुझे महा बली किया तैसेही अब कृपाकर मुझसे लड़ मेरे मन की अभिलाषा पूरी कीजे तो कीजे नहींतो और किसी बलीको बताय दीजे जिस्से मैं जाकर युद्ध करूं और अपने मनका शोक हरूं ॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेव जी बोले कि महाराज बाणासुर से इस भांतिकी बातें सुन श्रीमहादेवजी ने बलखाय मनहींमन इतना कहाकि

मैंने तो इसे साधु जानके बरदिय अब यह मुझीसे लड़ने को उपस्थित हुआ इस मूर्खको बलका गर्ब हुआ यहजीता न बचेगा जिसने अहंकार किया सोजगत में आन बहुत नजिया ऐसे मनही मन महादेव जी कह बोले कि बाणासुर तू मत घबराय तुझसे युद्ध करने वाला थोड़े दिन के बीच यदुकुल में श्रीकृष्णावतार होगा उस बिन त्रिभुवन में तेरा सामना करनेवाला कोई नहीं यह बचन सुन बाणासुर अति प्रसन्न हो बोला नाथ वह पुरुष कब अवतार लेगा और मैं कैसे जानूंगा कि वह वहां उपजा हैराजा शिवजीने एकध्वजा बाणासुर को देके कहा कि इस बैरख को ले जाय अपने मन्दिर के ऊपर खड़ी करदे जब यह ध्वजा आप से आप टूटकर गिरे तब तू जानियो कि मेरा रिपु जन्मा महाराज जद शंकर ने उसे ऐसे कह समझाया तब बाणासुर ध्वजाले निज घरको चला शिरनाय आगे घरजाय ध्वजा मन्दिर पर चढ़ाय दिन दिन यही मनाता था कि कब वह पुरुष प्रगटे औ मैं उससे युद्ध करूं इस में कितने एक वर्ष बीते उसकी बड़ी रानी जिसका बाणावती नाम था तिसे गर्भ रहा औ पूरेदिन एक लड़की हुई उसकाल बाणा सुर ने ज्योतिषियों को बुलाय बैठाय के कहा कि इस लड़की का नाम औ गुण गिनकर कहो इतनीबात के कहते ही ज्योतिषियों ने झट वर्ष मास पक्ष तिथि बार घड़ी मुहूर्त नक्षत्र ठहराय लग्न बिचार उस लड़की का नाम ऊषा धरके कहा कि महाराज यह कन्या गुणरूप शीलकी खानि महा जान होगी इसके ग्रह औ लक्षण ऐसे ही जान पड़ते हैं इस बातके सुनतेही बाणासुरने अति प्रसन्नहो पहिले बहुत कुछ ज्योतिषियों को दे बिदा किया पीछे मंगलामुखियों को बुलाय मंगलाचार करवाय पुनि ज्यों२ वह कन्या बढ़ने लगी त्यों त्यों बाणासुर उसे अति प्यार करने लगा जब ऊषा सात बर्षकी भई तब उसके पिताने शोणित पुरके निकट ही कैलाश था तहां कईएक सखी सहेलियोंके साथ उसे शिव पार्बती के पास पढ़ने को भेजदिया ऊषा गणेश सरस्वती को मनाय शिव पार्वती के संम्मुख जाय हाथ जोड़ शिरनाय बिनती कर बोली कि हेकृपासिंधु शिव गौरी दया कर मुझ दासी को बिद्या दान कीजै औ जगत में यश लीजै महाराज ऊषाके अति दीन बचनसुन शिव पार्वती जीने उसे प्रसन्नहो बिद्याका आरंभ करवाया वह नित प्रति जाय पढ़पढ़ आवे इसमें कितने एक दिनोंके बीच सब शास्त्रपढ़ गुणबिद्यावती हुई और सब यंत्र बजाने लगी एकदिन ऊषापार्बती जीके साथ मिलकर

बीणा बजाय संगीत की रीति से गाय रही थी कि उस काल शिव जीने आय पार्वती से कहा कि हेप्रिये मैने जो काम देवको जलाया था तिसे अब श्रीकृष्णजी ने उपजाया इतना कह श्रीमहादेवजी गिरिजा को साथ ले गङ्गातीर पर जाय नीरमें न्हाय न्हिलाय मुखकी इच्छाकर अतिलाड़ प्यार से लगे पार्वतीजी को बस्त्र अभूषण पहराने औ हित करने निदान अति आनन्द में मग्न हो डमरू बजाय बजाय तांडव नाच नाच संगीतशास्त्र की रीति से गाय गाय शिवा को लगे रिझाने और बड़े प्यार से कंठ लगाने उस समय ऊषा शिव गौरीका मुख प्यार देख देख पतिके मिलने की अभिलाषा कर मनही मन कहने लगी कि मेरा भी कन्त होय तो मैंभी शिव पार्वती की भांति उसके साथ बिहार करूं पति बिन कामनी ऐसी शोभा हीन है कि जैसे चंद्र बिन यामिनी महाराज ज्यों ऊषाने मनहीमन इतनी बातकही त्यों अन्तर्यामी श्रीपार्वती जीने ऊषा की अन्तर्गति जान उसे अतिहित से निकट बुलाय प्यारकर समझाय के कहा कि बेटी तू किसी बातकी चिन्ता मनमें मत कर तेरा पति तुझे स्वप्न में आय मिलेगा तू विसे ढुंढ़वाय लीजो और उसकेसाथ सुख भोग कीजो ऐसे बरदे शिवरानी ने ऊषा को बिदा किया वह सब बिद्या पढ़ बर पाय दण्डवत् कर अपने पिताके पास आई पिताने एक मन्दिर अति सुन्दर निराला उसे रहने को दिया औ यह कितनी एक सखी सहेलियों को ले वहां रहने लगी औ दिन २ बढ़ने महाराज जिस काल वह बाला बारह बरस की हुई तो उसके मुखचन्द्र की ज्योति देख पूर्णमासी का चन्द्रमा छबि छीन हुआ बालों की श्यामता के आगे अमावस की अंधेरी फीकी लगने लगी उसकी चाटी की सटकाई लख नागिन अपनी केंचुली छोड़ सटक गई भौंह की बंकाई निरख धनुष धकधकाने लगा आंखों की बड़ाई चंचलाई पेखमृग मीन खंजन खिसाय रहे नाककी निकाई निहार तिल फूल मुरझाय गया ऊपर के अधर की लाली लख बिंबाफल बिलबिलाने लगा दांतकी पांति निरख दाड़िम का हिया दड़क गया कपोलों की कोमलता पेख गुलाब फूलने से रह गया गलेकी गुलाई देख कपोत कलमलाने लगे कुचों की कोर निरख कमल कली सरोवर में जाय गिरी विसकी कटिकी कृशता देख केशरीने बनबास लिया जांघों की चिकनाई पेख केलेने कपूर खाया देहकी गुराई निरख सोने को सकुच भई औ चम्पा मुंहचोर हुआ करपदके आगे पद्म की पदवी कुछ

न रही ऐसी वह गज गामिनी पिकबयनी नवबाला योबन की सरसाई से शोभायमान भई कि जिसने इन सबकी शोभा छीनली आगे एकदिन वह नवयौबना सुगन्ध उबटन लगाय निर्मल नीरसे मल २ न्हाय कंघी चोटी कर पाटी संवार मांग मोतियों से भर अंजन मंजन कर मेंहदी महावर रचाय पान खाय अच्छे जड़ाऊ सोनेके गहने मंगाय शीश फूल बेना बेंदी बन्दी टेढ़ी कर्णफूल चौदानियां छड़े गज मोतियो की नथ भलके लटकन समेत जुगुनू मोतियों के दुलड़े में गुही चन्द्रहार मोहन माला पंचलड़ी सतलड़ी धुकधुकी भुजबन्द चूरी नौगरी कंकण कड़े मुंदरी छाप छल्ले किंकणी जेहर तेहर गूजरी अनवट बिछुये पहन सुथरी झम झमाती मोतियों की कोरका घोरघेरका घांघरा और चम चमाती आंचल पल्लूकी सारी पहर जगमगाती कंचुकी कस ऊपर से झल मलाती ओढ़नी ओढ़ तिसपर सुगन्धि लगाय इस सजधज से हंसते हंसते सखियों के साथ माता पिता को प्रणाम करने गई कि जैसे लक्ष्मी ज्यों सम्मुख जाय दण्डवत् कर ऊषा खड़ी भई त्यों बाणासुर ने उसके यौबन की छटा देख निज मनसे इतना कह इसे बिदा किया कि अब यहब्याहने योग्य हुई और पीछेसे कई एक राक्षस उसके मन्दिर की रखवाली को भेजे औ कितनी एक राक्षसी विसकी चौकसी को पठाईं वे वहां जाय आठ पहर सावधानी से रहने लगे औ राक्षसियां सेवा करने लगीं महाराज वह राज कन्या पतिके लिये नित प्रति तप दान व्रतकर श्री पार्वती जीकी पूजा किया करे एक दिन नित्य कर्म्म से निश्चिन्त हो राचि समय सेज पर अकेली बैठी मनही मन यों शोच रही थी कि देखिये पिता मेरा बिवाह कब करे और किस भांति मेरा बर मुझे मिले इतना कह पतिही के ध्यान में सोगई तो स्वप्नमें देखती क्याहैकि एक पुरुष किशोरवेश श्यामबरण चन्द्रमुख कमलनयन अति सुन्दर कामदेव का स्वरूप मोहनरूप पीताम्बर पहने मोर मुकुट सिरधरे त्रिभंगी छबि करे रत्न जटित आभूषण मकराकृत कुंडल बन माला गुंजहार पहने औ पीत बसन ओढ़े महा चंचल सम्मुख आय खड़ा हुआ यह उसे देखतेही मोहित हो लजाय सिर झुकाय रही तब उसने कुछ प्रेमसनी बातें कह स्नेह बढ़ाय निकट आय हाथ पकड़ कंठ लगाय इसके मन का भ्रम और शोच संकोच सब बिसराय दिया फिर तो परस्पर शोच संकोच तज सेज पर बैठ हाव भाव कटाक्ष और आलिङ्गन चुम्बन कर

मुख लेने देने लगे और आनन्द में मग्नहो प्रीति की बातें करने कि इस में कितनी एक बेर पीछे ऊषाने ज्यों प्यार कर कहा कि पतिको अंकवार भर कंठ लगाऊं त्यों नयनों से नींद गई और जिस भांति हाथ बढ़ाय मिलने को भई थी तिसी भांति मुरझाय पछताय रहगई ॥

दो० जागिपरीशोचतिखड़ी भयोपरमदुखताहि ।
कहांगयोवहप्राणपति देखतचऊंदिशिचाहि ॥

चौ० शोचतिऊषामिलिहौंकाहि। फिरिमैंकैसेदेखौंताहि
सोवतजोरहतोहौंआज । प्रीतमकबऊंनजातोभाज ॥
क्योंसुखमेंगहिबेकोभई । जोयहनीदनयनतेगई ॥
जागतहीयामिनियमभई । जैहैक्योंकरअबयहदई ॥
बिनप्रीतमजियनिपटअचैन । देखेबिनतरसतहैंनैन ॥
श्रवणसुन्योचाहतहैंबैन । कहांगयेप्रीतमसुखदैन ॥
जोसपनेपियपुनिलखिलेऊं । प्राणसाथउनकेकरिदेऊं॥

महाराज इतना कह ऊषा अति उदास हो पिया का ध्यान कर सेज पर जाय मुख लपेट पड़ रही जब रातगई भोर हुआ और डेढ़पहर दिन चढ़ा तब सखी सहेली मिल आपस में कहने लगीं कि आज क्या है जो ऊषा इतना दिनचढ़ा और अब तक सोती नहीं उठी यह बात सुन चित्रलेखा बाणासुर के प्रधान कूष्मांड की बेटी चित्रशालामें जाय क्या देखती है कि ऊषा छपरखट के बीच मनमारे जीहारे निढाल पड़ी रोरे लम्बी सांस ले रही है उसकी यह दशा देख ॥

चौ० चित्रलेखाबोलीअकुलाय।कहसखितूमोंसोंसमझाय॥
आजकहा शोचतिहैखड़ी । महाबियोगसिंधुमेंपड़ी ॥
रोरोअधिकउसासेंलेत । तनमनव्याकुलहैकिहिहेत॥
तेरेमनकोदुःखपरिहरौं । मनचीत्योकारजसबकरौं॥
मोसीसखीऔरनाघनी । हैपरतीति मोहिआपनी ॥
सकललोकमैंहौंफिरिआऊंजहांजाउंकारजकरलाऊं
मोंको बर ब्रह्मा ने दीनो । बशमेरे सबहीको कीनो ॥
मेरे संग शारदा रहै । वाके बल करिहौं जो कहै ॥
ऐसीमहामोहनीजानौं । ब्रह्माविष्णुरुद्रछलिआनौं॥

मेरोकोऊ भेद न जानै । अपनोगुण को आप बखानै ॥
ऐसेऔरनकहिहैकोऊ । भलोबुरोकोऊकिनहोऊ ॥
अबतूकह सब अपनी बात । कैसेकटी आजकी रात ॥
मोंसोंकपटकरैजनिप्यारी।पुजवोंगीसबआशतुम्हारी

महाराज इतनी बात के सुनतेही ऊषा अति सकुचाय शिरनाय चित्रलेखा के निकट आय मधुर वचन से बोली कि सखी मैं तुझे अपनी हितू जान रातकी बात सब कह सुनाती हूं तू निज मनमें रख और कुछ उपाय कर सके तो कर आज रात को स्वप्न में एक पुरुष मेघवर्ण चंद्रबदन कमलनयन पीताम्बर पहने पीतपट ओढ़े मेरे पास आय बैठा और अति हितकर उसने मेरा मन हाथ में ले लिया मैं भी शोच संकोच तज उससे बातें करने लगी निदान बतराते बतराते जो मुझे प्यार आया तो मैंने उसे पकड़ने को हाथ बढ़ाया इस बीच मेरी नींद गई और उसकी मोहनी मूर्त्ति मेरे ध्यान में रही ॥

चौ० देख्योंसुन्योंऔरनहिंऐसो।मैंकहुंकहाबताऊंजैसो॥
वाकीछबिबरणीनहिंजाय । मेरोचितलैगयोचुराय ॥

जब मैं कैलासमें श्रीमहादेवजी के पास विद्या पढ़तीथी तब श्रीपार्वती जी ने मुझसे कहा था कि तेरा पति तुझे स्वप्नमें आय मिलेगा तू उसे ढुंढ़वाय लीजो सो बर आज रात को मुझे स्वप्न में मिला मैं उसे कहां पाऊं और अपने बिरहकी पीर किसे सुनाऊं कहां जाऊं उसे किस भांति ढुंढ़वाऊं न उसका नाम जानूं न गांव महाराज इतना कह जद ऊषा लम्बी सांस ले मुरझाय रह गई तद चित्रलेखा बोली कि सखी अब तू किसी बात की चिन्ता मत करै मैं तेरे कन्त को तुझे जहां होगा तहां से ढूंढ़ ला मिलाऊंगी मुझे तीनों लोक में जानेकी सामर्थ्य है जहां होगा तहां जाय जैसे बनेगा तैसेही ले आऊंगी मुझे उसका नाम बता और जाने की आज्ञा दे ॥

ऊषा बोली बीर तेरी वही कहावत है कि मरी क्योंकि सांस न आई जो मैं उसका नाम गांवही जानती तो दुख काहे का था कुछ न कुछ उपाय करती यह बात सुन चित्रलेखा बोली सखी तू इस बातका भी शोच न कर मैं तुझे त्रिलोकी के पुरुष लिख दिखाती हूं उनमें से अपने चित चोर को देख बता दीजो फिर लो मिलाना मेरा काम तब तो हंस कर

ऊषा बोली बहुत अच्छा महाराज यह बचन ऊषा के मुखसे निकलतेही चित्ररेखा लिखने का सब सामान मंगाय आसन मार बैठी और गणेश शारदा को मनाय गुरु का ध्यान कर लिखने लगी पहले तो उसने तीन लोक चौदह भुवन सप्तद्वीप नवखंड पृथ्वी आकाश सातों समुद्र आठों लोक बैकुंठ सहित लिख दिखाये पीछे सब देव दानव गन्धर्ब किन्नर यक्ष ऋषि मुनि लोकपाल दिग्पाल और सब देशों के भूपाल लिख २ एक एक कर चित्ररेखा ने दिखाये पर ऊषाने अपना चाहिता उनमें न पाया फिर चित्ररेखा यदुबंशियोंकी मूर्त्ति एक एक लिख २ दिखाने लगी इसमें अनिरुद्धका चित्र देखतेही ऊषा बोली ॥

चौ० अबमनभोरसखी मैंपायो। रातयहीमेरेढिगआयो॥
करअबसखीतकछू उपाव। याकोढूंढ़ कहूंतेल्याव॥
सुनकै चित्ररेखा यों कहै। अब यहमोंते क्यों बचरहै॥

यों सुनाय चित्ररेखा पुनि बोली कि सखी तू इसे नहीं जानती मैं पहचानूं हूं यह यदुबंशी श्रीकृष्णचन्द्रजी का पोता प्रद्युम्नजी का बेटा औ अनिरुद्ध इसका नामहै वे समुद्रकेतीर नीरमें द्वारकानाम एकपुरीहै तहां यह रहता है हरिकी आज्ञासे उस पुरीकी चौकी आठ पहर सुदर्शन चक्र देताहै इसलिये कि कोई दैत्य दानव दुष्ट आय यदुबंशियों को न सतावे और जो कोई पुरीमें आवे सो बिना राजा उग्रसेन सूरसेनकी आज्ञा न आने पावे महाराज इस बातके सुननेही ऊषा अति उदासहो बोली कि सखी जो वहां ऐसी बिकट ठांव है तो तू किस भांति तहां जाय मेरे कन्तको लावेगी चित्ररेखा ने कहा कि आली तू इस बातसे निश्चिन्त रहु मैं हरि प्रताप से तेरे प्राणपति को ला मिलाती हूं ॥ इतना कह चित्ररेखा राम नामी कपड़े पहन गोपी चन्दन का ऊर्द्धपुंड तिलक काढ़ छापे उर भुज मूल औ कंठ में लगाय बहुतसी तुलसी की माला गले में डाल हाथ में बड़े २ तुलसीके हीरोंकी स्मरणी ले ऊपर से हीराबल ओढ़ कांखमें असनेटी भगवद्गीता की पोथी दबाकर परमभक्त बैष्णव का भेष बनाय ऊषा को यों सुनाय शिरनाय बिदा हो द्वारका को चली ॥

दो० पैंड़े अब आकाश के। अन्तरिच्छ ह्वै जाउं॥
ल्याऊं तेरे कन्त को। चित्ररेखा तो नांउं॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज चित्ररेखा अपनी माया कर पवनके तुरंग पर चढ़ अंधेरी रात में श्यामघटाके साथ बातकी बात में द्वारकापुरी में जा बिजली सी चमकी औ श्रीकृष्णचंद्र के मन्दिर में बढ़ गई ऐसी कि इसका जाना किसी ने न जाना आगे यह ढूंढ़तीर वहां गई जहां पलंग पर सोये अनिरुद्धजी अकेले स्वप्न में ऊषा के साथ बिहार कर रहे थे इसने देखतेही झट उस सोते का पलंग उठाय चट अपनी बाट ली ॥

चौ० सोवतही पर्यंक समेत । लिये जात ऊषा के हेत ॥
अनिरुद्धको लैआई तहां । ऊषाचिन्तति बैठीजहां ॥

महाराज पलंग समेत अनिरुद्धको देखतेही ऊषा पहले तो हकबकाय चित्ररेखा के पावों पर जाय गिरी पीछे यों कहने लगी धन्यहै २ सखी तेरे साहस औ पराक्रमको जो ऐसी कठिन ठौर जाय बातकी बात में पलंग समेत उठा लाई औ अपनी प्रतिज्ञा पूरी की मेरे लिये तैंने इतना कष्ट किया इसका पलटा मैं तुझे नहीं दे सक्ती तेरे ऋण की ऋणिया रही चित्ररेखा बोली सखी संसार में बड़ा सुख यही है जो पर को सुख दीजे औ कार्य्य भी भला वही है कि उपकार कीजे यह शरीर किसी काम का नहीं इससे किसीके काम आसके तो यही बड़ो कामहै इसमें स्वार्थ परमार्थ दोनों होतेहैं महाराज इतना बचन सुनाय चित्ररेखा पुनि यों कह बिदा हो अपने घर गई कि सखी भगवान्के प्रतापसे तेरा कन्त मैंने तुझे ला मिलाया अब तू इसे जगाय अपना मनोऽर्थ पूराकर चित्ररेखाके जातेही ऊषा अति प्रसन्न हो लाज किये प्रथम मिलने का भय किये मनही मन कहने लगी ॥

चौ० कहाबातकहिपियहिजगाऊंकैसेभुजभरकण्ठलगाऊं

निदान बीणा मिलाय मधुर २ सुरोंसे बजाने लगी बीणाकी धुनि सुनतेही अनिरुद्धजी जागपड़े और चारों ओर देख देख मनमें यों कहनेलगे कि यह कौन ठौर किसका मन्दिर औ मैं यहां कैसे आया और कौन मुझे सोते को पलंग समेत उठा लाया महाराज उस काल अनिरुद्धजी तो अनेक २ प्रकारकी बातें कहकह आश्चर्य्य करतेथे और ऊषा शोचसंकोच लिये प्रथम मिलने का भय किये एक ओर कोनेमें खड़ी पियका चंद्रमुख निरख २ अपने लोचनचकोरों को सुख देती थी इस बीच ॥

चौ० अनिरुद्धदेखिकहैंअकुलाय । कहसुंदरितअपनेभाय ॥
कैतू कोमोपै क्यों आई । कैतू मोंहि आप लैआई ॥
सांचेझूठएकौनहिंजानौं । सपनौसोंदेखतहौंमानौं ॥

महाराज अनिरुद्धजी ने इतनी बातें कहीं औ ऊषा ने उत्तर कुछ न दिया बरन और भी लाज कर कोने में सट रही तब तो उन्हों ने झट उसे हाथ पकड़ पलंग पर ला बिठाया और प्रीतिसनी प्यारकी बातें कह उसके मनका शोच संकोच और भय सब मिटाय कर प्रसन्न किया आगे वे दोनों परस्पर सेज पर बैठे हाव भाव कटाच्छ कर सुख लेने देने लगे औ प्रेमकथा कहने इस बीच बातों ही बातों में अनिरुद्धजी ने ऊषा से पूछा कि हेसुन्दरि तूने प्रथम मुझे कैसे देखा और पीछे किस भांति यहां मंगाया इसका भेद समझाकर कह जो मेरे मनका भ्रम जाय इतनी बात के सुनतेही ऊषा पति का मुख निरख हर्ष से बोली ॥

चौ० मोहिमिले तुमसपने आय । मेराचित लेगये चुराय ॥
जागीमनभारीदुखलह्यो । तबमैंचिचरेखासोंकह्यो ॥
सोईप्रभुतुमकोयहंलाई । ताकीगतिजानीनहिंजाई ॥

इतना कह पुनि ऊषाने कहा महाराज मैंतो जिस भांति तुम्हें देखा औ पाया तैसे सब कह सुनाया अब आप कहिये अपनी बात समझाय जैसे तुमने मुझे देखा यादवराय यह बचन सुन अनिरुद्ध अति आनन्द कर मुसकरायके बोले कि सुन्दरि मैं भी आज राचि को स्वप्नमें तुझे देख रहा था कि नींदहीमें कोई मुझे उठाय यहां ले आया इसका भेद अब तक मैंने नहीं पाया कि मुझे कौन लाया जागा तो मैंने तुझेही देखा ॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज ऐसे वे दोनों पिया प्यारी आपसमें बतराय पुनि प्रीति बढ़ाय अनेक २ प्रकार से काम कलोल करने लगे औ बिरहकी पीर हरने, आगे पानकी मिठाई मोती माल की शीतलताई और दीप ज्योति की मन्दताई निरख ज्यों ऊषा बाहर जाय देखे तो उषःकाल हुआ चंद्रकी ज्योति घटी तारे द्युतिहीन भये आकाश में अरुणाई छाई चारों ओर चिड़ियां चुहचुहाईं सरोवरमें कुमुदनी कुंभिलाईं औ कमल फूले चकवा चकई को संयोग हुआ ॥

महाराज ऐसासमय देख एक बार तो सब द्वार मूंद ऊषा बहुत घबराय घरमें आय अति प्यारकर पिया को कंठ लगाय लेटी पीछे पियाको

दुराय सखी सहेलियोंसे छिपाय छिप २ कन्तकी सेवा करने लगी निदान अनिरुद्धका आना सखी सहेलियोंने जाना फिर तो वह दिनरात पतिके संग सुखभोग किया करे एकदिन ऊषाकी मा बेटीकी सुधि लेने आई तो उसने छिप कर देखा कि वह एक महासुन्दर तरुणपुरुष के साथ कोठे पर बैठी आनन्द से चौपड़ खेल रही है यह देखतेही बिन बोले चाले दबे पावों फिर मनही मन प्रसन्न हो अशीष देती सूंट मारे वह अपने घर चली गई ॥ आगे कितने एकदिन पीछे एकदिन ऊषा पति को सोते देख जीमें यह बिचारकर सकुचती २ घरसे बाहर निकली कि कहीं ऐसा न हो जो कोई मुझे न देख अपने मन में जाने कि ऊषा पति के लिये घरसे नहीं निकलती महाराज ऊषा कन्त को अकेला छोड़ जाते तो गई पर उससे रहा न गया फिर घरमें जाय किवाड़ लगाय बिहार करनेलगी यह चरित्र देख पौरियोंने आपसमें कहा कि भाई आज क्या है जो राज-कन्या अनेक दिन पीछे घर से निकली औ फिर उलटे पावों चली गई इतनी बातके सुनतेही उनमेंसे एक बोला कि भाई मैं कई दिनसे देखता हूं कि ऊषाके मन्दिर का द्वार दिन रात लगा रहता है और घर भीतर कोई पुरुष कभी हंस २ बातें करता है और कभी चौपड़ खेलताहै दूसरे ने कहा यह बात सच्च है तो चलो बाणासुरसे जाय कहें समझ बूझ यहां क्यों बैठे रहें ॥

चौ० एककहैयहकहीनजाय। तुमसबबैठरहोअरगाय॥
भलीबुरीजोहोयसोहोय। होनहारमेटैनहिंकोय॥
कछूनबातकुंवरिकीकहिये। चुपह्वैदेखबैठहीरहिये॥

महाराज द्वारपाल आपसमें ये बातें करतेही थे कि कई एक योधा साथ लिये फिरता २ बाणासुर वहां आनिकला औ मन्दिरके ऊपर दृष्टिकर शिव जी की दी हुई ध्वजा न देख बोला कि यहांसे ध्वजा क्या हुई द्वारपालों ने उत्तर दिया कि महाराज वह तो बहुत दिन हुये कि टूटकर गिरपड़ी इस बातके सुनतेही शिवजीका बचन स्मरणकर भावितहो बाणासुर बोला ॥

चौ० कबकीध्वजापताकागिरी। बैरीकहूंऔतरोहरी॥

इतना बचन बाणासुर के मुखसे निकलतेही एक द्वारपाल सम्मुख जा खड़ाहो हाथ जोड़ शिरनाय बोला कि महाराज एक बात है पर मैं वह कह नहीं सक्ता जो आपकी आज्ञा पाऊं तो ज्योंकी त्यों कह सुनाऊं बाणा-

सुरने आज्ञाकी अच्छा कह तब पैरिया बोला कि महाराज अपराध क्षमा हो कई दिनसे हम देखतेहैं कि राजकन्याके मन्दिरमें कोई पुरुष आया है वह दिन रात बातें किया करता है इसका भेद हम नहीं जानते कि वह कौन पुरुषहै औ कब कहांसे आया है औ क्या करताहै इतनी बात के सुनते प्रमाणमान बाणासुर अति क्रोधकर अस्त्र शस्त्र उठाय दबेपावें अकेला ऊषाके मन्दिरमें जाय छिपकर क्या देखताहै कि एक पुरुष श्याम बर्ण अति सुन्दर पीतपट ओढ़े निद्रामें अचेत ऊषाके साथ सोया पड़ाहै॥

चौ० शोचत बाणासुर योंहिये। होय प्रापसोवतबधकिये॥

महाराज यों मनही मन बिचार बाणासुर तो कई एक रखवाले वहां रख उनसे यह कहकर कि तुम इसके जागतेही हमें आय कहियो वह अपने घरजाय सभाकर सब राक्षसों को बुलाय कहने लगा कि मेरा बैरी आन पहुंचा है तुम सब दल ले ऊषा का मंदिर जाय घेरो पीछेसे मैंभी आताहूं आगे इधर तो बाणासुर की आज्ञापाय सब राक्षसों ने आय ऊषा का घरघेरा औ उधर अनिरुद्धजी औ राजकन्या निद्रासे चौंक पुनि सार पांसे खेलने लगे इसमें चौपड़ खेलते २ ऊषा क्या देखतीहै कि चहुं ओर से घनघोर घटा घिर आई बिजली चमकने लगी दादुर मोर पपीहे बोलने लगे महाराज पपीहे की बोली सुनतेही इतना कह पिय के कंठ लगी॥

चौ० तुमपपिहापीपीमतकरौ। यहबियोगभाषापरिहरौ

इतने में किसी ने जाय बाणासुर से कहा कि महाराज तुम्हारा बैरी जागा बैरीका नाम सुनतेही बाणासुर क्रोधकरके उठा और अस्त्र शस्त्रले ऊषा की पोलीमें आय खड़ा हुआ और लगा छिपकर देखने निदान देखते२

चौ० बाणासुरयोकहैहंकार। कोहैरेतगेहमझार॥
घनतनबरनमदनमनहारी। कमलनेयनपीतांबरधारी
अरेचोरबाहरकिनआवै। जानकहाअबमोंसनपावै॥

महाराज जब बाणासुर ने टेरकर यों कहे बैन तब ऊषा और अनिरुद्ध सुन और देख भये निपट अचैन पुनि राजकन्या ने अति चिन्ताकर भयमान हो लम्बीस्वास ले कन्तसे कहा कि महाराज मेरा पिता असुर दल ले चढ़ि आया अब तुम इसके हाथसे कैसे बचोगे॥

दो० तबहिकोपअनिरुद्धकह मतडरपैतूनारि।

स्यारझुंडराक्षसअसुर पलमेंडारौंमारि ॥

ऐसे कह अनिरुद्धजी ने वेदमंत्र पढ़ एकसौ आठ हाथकी शिला मंगाय हाथ में ले बाहर निकल दलमें जाय बाणासुरको ललकारा इनके निकलतेही बाणासुर धनुष चढ़ाय सब दलले अनिरुद्धजी पर यों टूटा कि जैसे मधुमक्खियों का झुण्ड किसी पै टूटै जब असुर अनेक २ प्रकार के अस्त्र शस्त्र चलाने लगे तब क्रोध कर अनिरुद्धजी ने शिलाके हाथ कई एक ऐसे मारे कि सब असुर दल काईसा फटगया कुछ मरे कुछ घायल हुए बचेसो भाग गये पुनि बाणासुर जाय सबको घेरलाया औ युद्ध करनेलगा महाराज जितने अस्त्र शस्त्र असुर चलाते थे तितने इधर उधरही जाते थे अनिरुद्धजी के अंगमे एकभी न लगता था ॥

चौ० जेअनिरुद्धपरपरेहथियार । अधवरकटेशिलाकीधार
शिलाप्रहारसह्योनहिंपरै । बज्रचोटजनुसुरपतिकरै
लागतशीशबीचतेफटै । टटहिंजाघभुजाधरकटै॥

निदान लड़ते २ जब बाणासुर अकेला रहगया और सब कटक कट गया तब उसने मनहीमन आश्चर्य्यकर इतनाकह नागफांस से अनिरुद्ध जीको पकड़ बांधा कि इस अजितको मैं कैसे जीतूंगा ॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी ने राजा परीक्षित से कहा महाराज जिस समय अनिरुद्धजी को बाणासुर नागफांस से बांध अपनी सभा में लेगया उसकाल अनिरुद्धजी तो मनहीमन यों बिचारते थे कि मुझे कष्ट होय तोहोय पर ब्रह्माका बचन झूंठ करना उचित नहीं क्योंकि जोमैं नागफांससे बलकर निकलूंगा तो उसकी मर्य्याद भंग होयगी इसमें बंधे रहनाही भलाहै औ बाणासुर यह कह रहा था कि अरे लड़के मैं तुझे अब मारता हूं जो कोई तेरा सहायक हो तो तू बुला इसबीच ऊषाने पियकी यह दशा सुन चित्रलेखा से कहा कि सखी धिक्कारहै मेरे जीतब को जो पति मेरा दुखमें रहे और मैं सुखसे खाऊं पीऊं और सोऊं चित्रलेखा बोली सखी तू कुछ चिन्ता मत करै तेरे पतिका कोई कुछ न कर सकेगा निश्चिन्त रहु अभी श्रीकृष्णचन्द्र औ बलरामजी सब यदुबंशियोंको साथले चढ़आवेंगे औ असुरदल को संहार तुझ समेत अनिरुद्ध को छुड़ाय लेजायंगे उनकी यही रीतिहै कि जिस राजाके सुन्दरी कन्या सुनते हैं वहां से बल छल कर जैसे बने तैसे लेजातेहैं उन्हीं का यह पोताहै जो कुंडिनपुर से राजा

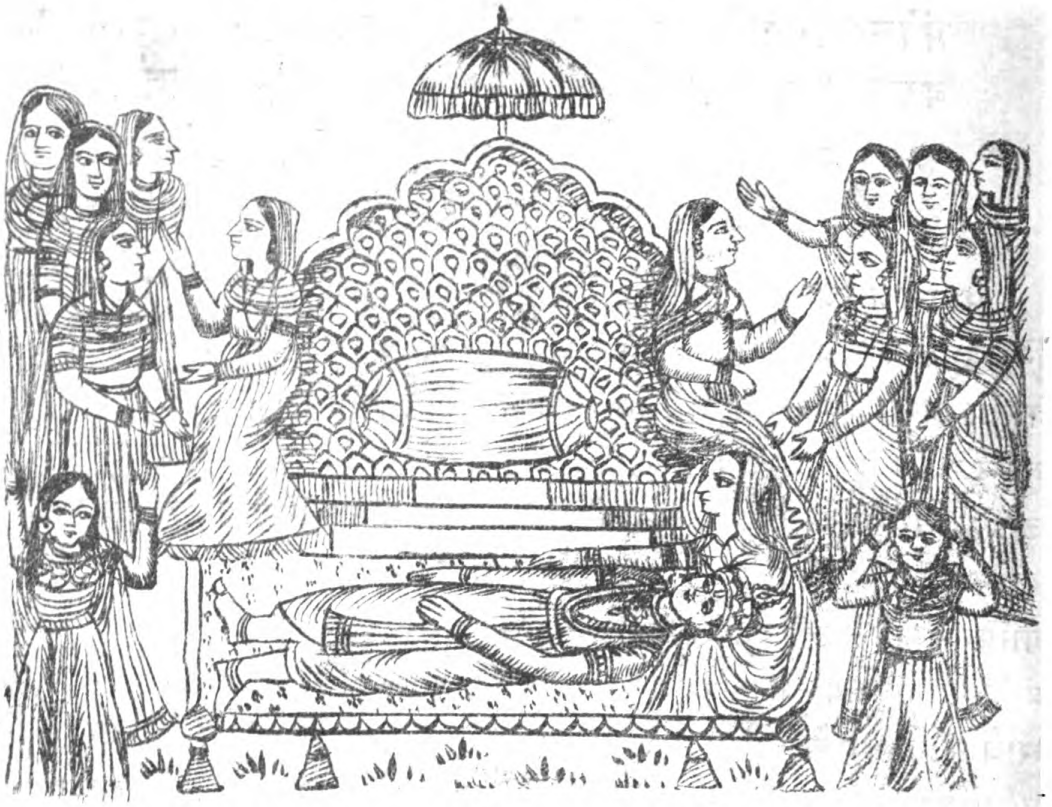
भीष्मक की बेटी रुक्मिणी को महाबली बडे प्रतापी राजा शिशुपाल औ जरासंध से संग्राम कर लेगयेथे तैसेही अब तुझे ले जांयगे तू किसी बात की भावना मतकर ऊषा बोली सखी यह दुख मुझसे सहा नहीं जाता ॥

चौ० नागफांस बांधेपियहरी । दहै गातज्वालाबिषभरी ॥
हौंकैसेसोऊंसुखसैना । पियदुखकैसेदेखूंनैना ॥
प्रीतमबिपतिपरेक्योंजीओंभोजनकरौंनेपानीपीओं
बरबधअब बाणासुरकीजो।मोकोशरणकंतकीदीजो
होनहारहोनीहैहोय । तासों कहाकहैगोकोय ॥
लोकवेदकीलाजनमानौ।पियसंगदुखसुखहीमैंजानौ

महाराज चित्रलेखा से ऐसे कह जब ऊषा कंत के निकट जाय निडर निशङ्क होकर बैठी तब किसी ने बाणासुर को जा सुनाया कि महाराज राज कन्या घरसे निकल उस पुरुष के पास गई इतनी बातके सुनतेही बाणासुरने अपने पुत्र स्कन्धको बुलाय के कहा कि बेटा तुम अपनी बहनको सभासे उठाय घरमेंलेजाय पकड़रक्खो औ निकलने न दो पिताकी आज्ञा पातेही स्कन्ध बहन के पास जा अति क्रोधकर बोला कि तैं ने यह क्या किया पापिनी जो छोड़ी लोकलाज औ कान आपनी हेनीचनी मैं तुझे क्या बध करूं होगा पाप औ अपयश से भी डरूं हूं ऊषा बोली कि भाई जो तुझे भावे सो कहो औ करो मुझे पार्वतीजी ने जो वर दियो था सो बर मैं ने पाया अब इसे छोड़ और को धाऊं तो अपने को गाली चढ़ाऊं तजतो हैं पतिको अकुलीना नारी यही रीति परंपरा से चली आती है बीच संसार जिस्से बिधना ने सम्बन्ध किया उसीके संग जगत् में अपयश लिया तो लिया महाराज इतनी बात के सुनतेही स्कन्ध क्रोधकर हाथ पकड़ ऊषा को वहांसे मन्दिरमें उठा लाया और फिर न जाने दिया पुनि अनिरुद्ध जीको भी वहां से उठाय कहीं अन्त ले जाय बंद किया उसकाल इधर तो अनिरुद्धजी तियबियोग में महाशोक करते थे औ उधर राजकन्या कन्त के बिरह में अन्न पानी तज कठिन योग करने लगी इस बीच कितने एक दिन पीछे एक दिन नारदमुनिजी ने पहले तो अनिरुद्धजीको जाय समझाया कि तुम किसी बात की चिन्ता मतकरो अभी श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द औ बलराम सुखधाम राक्षसों से कर संग्राम तुम्हें छुड़ाय ले जायगे पुनि बाणासुर को जा सुनाया कि राजा जिसे तुमने नागफांस से पकड़ बांधा

है वह श्रीकृष्ण का पौता प्रद्युम्न का बेटा है औ अनिरुद्ध उसका नाम है तुम यदुबंशियों को भली भांति से जानते हो जो जानो सो करो मैं इस बातसे तुझे सावधान करने आया था सो कर चला यह बात सुन इतनाकह बाणासुर ने नारदजी को बिदाकिया कि नारदजी मैं सबजानता हूं ॥

इतिश्री लालकृते प्रेमसागरे ऊषाअनिरुद्ध गृहणो त्रिषष्टितमोऽध्याय: ६३



श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज जब अनिरुद्धजी को बंधे बंधे चार महीने होगये तब नारदजी द्वारकापुरी में गये तो वहां क्या देखतेहैं कि सब यादव महाउदास मनमलीन तनछीण हो रहे हैं और श्रीकृष्णजी औ बलरामजी उसके बीच में बैठे अति चिन्ताकर कह रहे हैं कि बालक को यहांसे उठाय कौन लेगया इस भांति की बातें होरही थीं और रनवास में रोना पीटना होरहाथा ऐसा कि कोई किसीकी बात न सुनताथा नारदजी के जातेही सब लोग क्या स्त्री क्या पुरुष उठ धाये औ अति ब्याकुल तन छीन मन मलीन रोते बिलबिलाते सम्मुख आन खड़े हुये अति बिनतीकर हाथजोड़ शिरनाय हाहा खाय २ नारदजीसेसब पूछनेलगे ॥

चौ० सांचीबातकहौमहर्षिराय। जासोंजियराखेबिरमाय॥
सुधिकैसे अनिरुद्धकी लैहैं। कहौसाधिताकेबल रैहैं ॥

इतनी बातके सुनतेही श्री नारदजी बोले कि तुम किसी बातकी चिन्ता मत करो और अपने मन का शोक हरो अनिरुद्धजी जीते जागते शोणित पुरमेंहैं वहां उन्होंने जाय राजा बाणासुरकी कन्यासे भोगकिया इसीलिये उसने उन्हें नागफांस में पकड़ बांधाहै बिन युद्ध किये वह किसी भांति अनिरुद्धजी को न छोड़ेगा यह भेद मैंने तुम्हें कह सुनाया आगे जो उपाय तुमसे होसके सो करो महाराज यह समाचार सुनाय नारदजी तो बिदा हो चले गये पीछे सब यदुबंशियों ने जाय उग्रसेनसे कहा कि महाराज हमने ठीक समाचार पाये कि अनिरुद्धजी शोणितपुर में बाणासुरके यहां हैं उन्होंने उसकी कन्या रमी इससे उसने इन्हें नागफांसमें बांध रक्खाहै अब हमें क्या आज्ञा होतीहै इतनी बातके सुनतेही राजा उग्रसेन ने कहा कि तुम हमारी सब सेना ले जाओ और जैसे बने तैसे अनिरुद्धको छुड़ालाओ ऐसा वचन उग्रसेन के मुखसे निकलतेही महाराज सब यादव तो राजा उग्रसेन का कटक ले बलरामजी के साथ हुये और श्रीकृष्णचन्द्र और प्रद्युम्नजी गरुड़ पर चढ़ सबसे आगे शोणितपुर को गये इतनी कथा कह श्री शुकदेवजी बोले कि महाराज जिस काल बलरामजी राजा उग्रसेनका सब दल ले द्वारकापुरी से धौंसा दे शोणितपुरको चले उससमय की कुछ शोभा बरणी नहीं जाती कि सबके आगे तो बड़े २ दंतीले मतवाले हाथियों की पांति तिन पर धौंसा बाजता जाता था और ध्वजा पताका फहराती थी तिनके पीछे एक ओर गजोंकी अवली अम्बारियों समेत जिन पर बड़े २ ऐरावत योधा शूरबीर यादव झिलम टोप पहने सब अस्त्र शस्त्र लगाये बैठे जाते थे उनके पीछे रथोंके तांतोंके तांते दृष्टि आते थे उनकी पीठ पर घुड़चढ़ोंके यूथके यूथ बरण २ के घोड़े गेंड़े पट्टेवाले गजगाह पाखर डाले जमाते ठहराते नचाते कुदाते चले जातेथे और उनके बीच बीच चारण यश गाते थे और कड़खैत कड़खा तिस पीछे फरी खांडे छुरी कटारी जमधर धोंपे बरछी बरछे भाले बल्लम बाने पटे धनुष बाण गदा चक्र फरसे गड़ांसे लुहांगी बांक बिछुए समेत अनेक २ प्रकारके गुप्त अस्त्र शस्त्र लिये पैदलों का दल टीड्डीदल सा चला जाता था उनके मध्य २ धौंसे ढोल डफ बांसुरी भेर नरसिंगों का जो शब्द होता था सो अतिही सुहावना लगता था ॥

उड़ीरेणुआकाशलोंछाईछिप्योभानुभयो निशिकेभाई
चकईचकवा भयो बियोग। सुन्दरिकरैं कन्तसों भोग ॥

फूलेकमलकुमुदकुंभिलाने । निझरफिरैंनिशाजिबजाने ॥

इतनी कथा कह श्री शुकदेवजी बोले कि महाराज जिस समय बलरामजी बारह अक्षौहिणी सेना ले अति धूमधामसे उसके गढ़ गढ़ी कोट तोड़ते और देश उजाड़ते जाय शोणितपुरमें पहुंचे और श्रीकृष्णचन्द्र और प्रद्युम्नजी भी आन मिले तिसी समय किसी ने अति भय खाय घबराय जाय हाथ जोड़ शिरनाय बाणासुर से कहा कि महाराज कृष्ण बलराम अपनी सब सेना ले चढ़ आये और उन्होंने हमारे देशके गढ़ गढ़ी कोट ढाय गिराये औ नगरको चारों ओर से आय घेरा अब क्या आज्ञा होतीहै इतनी बात के सुनतेही बाणासुर महा क्रोध कर अपने बड़े २ राजसोंको बुलाय बोला तुम सब दल अपना लेजाय नगरके बाहर जाय कृष्ण बलराम के सम्मुख खड़े हो पीछे से मैं भी आताहूं महाराज आज्ञा पातेही वे असुर बातकी बातमें बारह अक्षौहिणी सेना ले श्रीकृष्ण बलरामजी के सोहीं लड़नेको अस्त्रशस्त्र लिये आ खड़े रहे उनके पीछेही श्रीमहादेवजी का भजन स्मरण ध्यानकर बाणासुरभी आ उपस्थित हुआ शुकदेव मुनि बोले कि महाराज ध्यान करतेही शिवजी का आसन डोला और ध्यान छूटा तो उन्हों ने ध्यानधर जाना कि मेरे भक्तपर भीड़ पड़ीहै इस समय चलकर उसकी चिन्ता मेटा चाहिये यह मनहींमन बिचार जब पार्बतीजी को अर्द्धांग धर जटाजूट बांध भस्म चढ़ाय बहुत सी भांग और आक धतूरा खाय श्वेतनागों का जनेऊ पहन गजचर्म ओढ़ मुंडमाल सर्पहार पहन त्रिशूल पिनाक डमरू खप्पर ले नन्दी पर चढ़ प्रेत भूत पिशाच डाकिनी शाकिनी भूतनी पिशाचनी प्रेतनी आदि सेनाले भोलानाथ चले उस समयकी कुछ शोभा बरणी नहीं जाती कि कान में गजमणिकी मुद्रा ललाट में चन्द्रमा शीश पै गङ्गा धरे लाल लाल लोचन कर अति भयंकर भेष महाकाल की मूर्त्ति बनाये इस रीतिसे बजाते गाते सेना को नचातेथे कि वह रूप देखतेही बनि आवे कहने में न आवे निदान कितनी एक बेर में शिवजी अपनी सेना लिये वहां पहुंचे कि जहां सब असुरदल लिये बाणासुर खड़ा था हर को देखतेही बाणासुर हर्ष के बोला कि कृपासिंधु आप बिन कौन इस समय मेरी सुधि ले ॥

चौ० तेजतुम्हारो इनकोदहै । यादवकुल अब कैसेरहै ॥

यों सुनाय फिर कहने लगा कि महाराज इस समय धर्मयुद्ध करो

और एक २ के सम्मुख हो एक २ लड़ो महाराज इतनी बात ज्यों बाणासुर के मुख से निकली त्यों इधर असुर दल लड़ने को तुल कर खड़ा हुआ और उधर यदुवंशी आ उपस्थित हुए दोनों ओर जुझाऊ बाजने लगा शूरबीर रावत योधा धीर अस्त्र शस्त्र साजने लगे और अधीर नपुंसक कायर खेत छोड़ २ जी लेले भागने—उस काल महाकाल स्वरूप शिवजी श्रीकृष्णचंद्र के सम्मुख हुए बाणासुर बलरामजी के सोंही हुआ स्कन्द प्रद्युम्न से भिड़ा और इसी भांति एक २ से जुट गया और लगा दोनों ओर से शस्त्र चलने उधर धनुष पिनाक महादेवजी के हाथ इधर शार्ङ्ग धनुष लिये यदुनाथ शिवजी ने ब्रह्मबाण चलाया श्रीकृष्णजी ने ब्रह्मशस्त्रसे काट गिराया फिर रुद्र ने चलाई महा बयार हरिने तेजसे दोनी टार पुनि महादेव ने अग्नि उपजाई वह मुरारीने मेह वर्षाय बुझाई और एक महाज्वाला उपजाई सो सदाशिवजी के दल में धाई उसने डाढ़ी और मूछ जलाय के कीन्हें सब असुर भयानक भेष जब असुरदल जलने लगा औ बड़ा चाहकालहुआ तब भोलानाथने जले अधजले राक्षसों और भूत प्रेतों को तो जल वर्षाय ठंढाकिया और आप अति क्रोध कर नारायणी बाण चलाने को लिया पुनि मनही मन कुछ शोच समझ न चलाय रहदिया फिरतो श्रीकृष्णजी आलस्यबाण चलाय सबको अचेत कर लगे असुर दल काटने ऐसे कि जैसे किसान खेती काटे यह चरित्र देख ज्यों महादेवजी ने अपने मनमें सोच कर कहा कि अब प्रलययुद्ध बिनकिये नहीं बनता त्योंहीं स्कन्ध मोर पर चढ़ धाया और अंतरिक्ष हो श्रीकृष्ण जीकी सेना पर बाण चलाया ॥

चौ० तब हरिसों प्रद्युम्न उचरै। मोरचढ़ो ऊपरतें लरै॥
आज्ञादेहुयुद्धअतिकरै। मारौंअबहिंभूमिगिरिपरै॥

इतनी बातके कहतेही प्रभुने आज्ञादी और प्रद्युम्नजीने एक बाणमारा सो मोरके लगा स्कन्द नीचे गिरा स्कन्दके गिरतेही बाणासुर अति कोप कर पांचसौ धनुष चढ़ाय एक २ धनुष पर दो २ बाण धर लगा मेह सा बर्षा ने और श्रीकृष्णचन्द्र नीचेही लगे काटने महाराज उस काल इधर उधर के मारू ढोल डफ से बाजते थे कड़खैत धमाल सी गाते थे घावों से लोहूकी धारें पिचकारियां सी चल रहीं थी जिधर तिधर जहां तहां लाल २ लोहू गुलाल सा दृष्टि आता था बीच बीच भूत प्रेत पिशाच ज्यों

भांति २ के भेष भयावने बनाये फिरतेथे सो भगत सी खेल रहे थे और रक्त की नदी रंगकीसी नदी बहनिकली थी लड़ाई क्या दोनों ओर होली सी होरही थी इसमें लड़ते लड़ते कितनी एक बेर पीछे श्रीकृष्ण ने एक बाण ऐसा मारा कि उसका सारथी उड़ गया औ घोडे भड़के निदान सारथी मरतेही बाणासुर भागा श्रीकृष्ण ने उसका पीछा किया ॥

इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेवजी बोले कि महाराज बाणासुर के भागने का समाचार पाय उसकी मा जिसका नाम कोटरा सो उसी समय भयानक भेष छूटे केश नंग भुनंगी आ श्रीकृष्णचन्द्रजी के सम्मुख खड़ी हुई और लगी पुकार करने ॥

चौ० देखतही प्रभु मूंदेनैन। पीठ दई ताके सुनि बैन॥
तौलौंबाणासुरभजगयो।फिरअपनोदलजोरतभयो॥

महाराज जबतक बाणासुर एक अक्षौहिणी दल साज वहां आया तब तक कोटरा श्रीकृष्णजी के आगेसे न टली पुचकी सेना देख अपने घर गई आगे बाणासुर ने आय बड़ा युद्ध किया पर प्रभु के सम्मुख न ठहरा फिर भाग महादेवजी के पास गया बाणासुर को भयातुर देख श्री शिवजी ने अति क्रोध कर महाविषमज्वरको बुलाय श्रीकृष्णजी की सेना पर चलाया वह महाबली बड़ा तेजस्वी जिसका तेज सूर्य्य के समान तीन मूंड़ नव पग छह करवाला त्रिलोचन भयानक भेष श्रीकृष्णचन्द्र के दलको आय शाला उसके तेज से यदुबंशी लगे जलने औ थर २ कांपने निदान अति दुःख पाय घबराय यदुवंशियों ने आय श्रीकृष्णचंद्रजी से कहा कि महाराज शिवजीके ज्वरने आय सारे कटकको जलायमारा अब इसके हाथ से बचाइये नहीं तो एकभी यदुबंशी जीता न बचेगा महाराजइतनी बातसुन औ सबको कातर देख हरिने शीतज्वर चलाया वह महादेव के ज्वरपर धाया इसे देखतेही वह डरकर पलाया औ चला २ सदाशिवजी के पास आया ॥

चौ० तबज्वरमहादेवसोंकहै। राखुशरण कृष्णज्वरदहै॥

यह बचन सुन महादेवजी बोले कि श्रीकृष्णजीके ज्वर बिन श्रीकृष्णचन्द्र ऐसा त्रिभुवनमें कोई नहीं जो हरै इससे उत्तम यहीहै कि तू भक्त हितकारी श्री मुरारी के पास जा शिवबाक्य सुन शोच बिचार बिषमज्वर श्री कृष्णचन्द्र आनन्दकन्दजी के सम्मुख जा हाथ जोड़ अति बिनतीकर गिड़गिड़ाय हाहा खाय बोला हे कृपासिंधु दीनबंधु पतितपावन दीन दयाल मेरा अपराध क्षमा कीजे औ अपने ज्वरसे बचाय लीजे ॥

चौ० प्रभुतुमहौब्रह्मादिकईशतुमरीशक्तिअगमजगदीश
तुमहींरचिकरसृष्टिसँवारीसबमायाजगकृष्णतुम्हारी ॥
कृपातुम्हारीअबमैंबभ्यो । ज्ञानभयेजगकर्त्ता सूभ्यो ॥

इतनी बातके सुनतेही हरि दयाल बोले कि तू मेरी शरणआया इस्से बचा नहीं तो जीता न बचता मैंने तेरा अब का अपराध क्षमाकिया कि फिर मेरे भक्त औ दासों के मत व्यापियो तुझे मेरीही आन है ज्वरबोला कृपासिंधु जो इस कथा को सुनेगा उसे शीतज्वर एकतरा औ तिजारी कभी न व्यापैगी पुनि श्रीकृष्णचंद्र बोले कि तू अब महादेव के निकट जा यहां मत रह नहींतो मेराज्वर तुझे दुःखदेगा आज्ञा पातेही बिदाहो दण्डवत् कर बिषमज्वर सदाशिवजीके पास गयाऔ ज्वरका भय सबमिट गया इतनी कथा कह श्री शुकदेवजी बोले कि महाराज ॥

चौ० यहसम्बादसुनैजोकोयाज्वरकोडरताकोनहिंहोय॥

आगे बाणासुर अतिकोप कर सब हाथोंमें धनुष बाणलेप्रभुके सम्मुख आ ललकारा औ यह बोला ॥

चौ० तुमते युद्ध किबौं मैंभारी । तौहूं सादनपुजीहमारी॥

जब यह कहकर लगा सब हाथों से बाण चलाने तब श्रीकृष्णचन्द्र जीने सुदर्शनचक्र को छोड़ उसके चार हाथ रख सब हाथ काट डाले ऐसे कि जैसे कोई बातके कहते बृक्षके गुद्दे छांट डाले हाथके कटतेही बाणासुर शिथिल हो गिरा घावोंसे लोहूकी नदी बहनिकली तिसमें भुजायें मगरमच्छ सी जनातीं थीं कटेहुये हाथियों के मस्तक घड़ियाल से डूबते जातेथे बीच २ रथ बेड़े नवाड़े से बहे जाते थे और जिधर तिधर रणभूमि में श्वान स्यार गिद्ध आदि पशु पक्षी लोथें खींच २ आपस में लड़ २ झगड़ २ फाड़२ खाते थे पुनि कौवे शिरोंसे आखें निकाल २ ले ले उड़ २ जाते थे श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज रणभूमिकी यह गति देख बाणासुर अति उदासहो पछताने लगा निदान निर्बलहो सदाशिवजीके निकट गया तब ॥

चौ० कहतरुद्रमनमांहिबिचार।अबहरिकीकीजैमनुहार॥

इतना कह श्री महादेवजी बाणासुर को साथ ले वेदपाठ करते वहां आये कि जहां रणभूमिमें श्रीकृष्णचन्द्र खड़े थे बाणासुरको पावों पर डाल शिवजी हाथ जोड़ बोले कि हे शरणागतवत्सल अब यह बाणासुर आप

की शरण आया इस पर कृपादृष्टि कीजे औ इसका अपराध मनमें न लीजे तुम तो बारबार अवतार लेतेहो भूमिका भार उतारनेको और दुष्ट हतन औ संसार के तारण को तुम हो प्रभु अलख अभेद अनन्त भक्तों के हेतु संसारमें आय प्रगटते हो भगवन्त नहीं तो सदा रहतेहो बिराट स्वरूप तिसका यह है रूप स्वर्ग शिर नाभि आकाश पृथ्वी पांव समुद्र पेट इंद्र भुजा पर्वत नख बादल केश रोम वृक्ष लोचन शशि औ भानु ब्रह्मा मन रुद्र अहंकार पवन स्वास पलक लगना रात दिन गर्जन शब्द ॥

चौ० ऐसे रूप सदा अनुसरौ। काहू पै नहिं जाने परौ॥

और यह संसार दुखका समुद्रहै इसमें चिन्ता और मोहरूपी जल भरा है प्रभु बिन तुम्हारे नामकी नावके सहारे कोई इस महा कठिन समुद्रके पार नहींजा सक्ता और यों तो बहुतेरे डूबते उछलते हैं जो नरदेह पाकर तुम्हारा भजन स्मरण और ध्यान न करेगा जाप सो भूलेगा धर्म औ बढ़ावेगा पाप जिसने संसार में आय तुम्हारा नाम न लिया तिसने अमृत छोंड़ बिष पिया जिसके हृदय में तुम बसे आय उसीको भक्ति मुक्ति मिली गुण गाय इतना कह पुनि श्री महादेवजी बोले कि हे कृपासिंधु दीनबंधु तुम्हारी महिमा अपरम्पार है किसे इतनी समर्थ्य है जो उसे बखाने औ तुम्हारे चरित्रों को जाने अब मुझपर कृपाकर इस बाणासुरका अपराधक्षमा कीजे औ इसे अपनी भक्तिदीजे यह भी तुम्हारी भक्तिका अधिकारीहै क्योंकि प्रह्लाद का बंश अंशहै श्री कृष्णचन्द्र बोले कि शिवजी हम तुममें कुछ भेद नहींहै औ जो भेद समझेगा सो महानरक में पड़ेगा औ मुझे कभी न पावेगा जिसने तुमको ध्याया तिसने अन्त समय मुझे पाया इसने निष्कपट तुम्हारा नाम लिया तिसीसे मैंने इसे चतुर्भुज किया जिसे तुम ने बर दिया औ दोगे तिसका निवाह मैंने किया और करूंगा महाराज इतना वचन प्रभु के मुख से निकलतेही सदाशिवजी दण्डवत् कर बिदा हो अपनी सेना ले कैलासको गये औ श्रीकृष्णचंद्र वहांही खड़े रहे तब बाणासुर हाथजोड़ शिरनाय बिनती कर बोला कि दीनानाथ जैसे आपने कृपा कर मुझे तारा तैसे अब चलके दासका घर पवित्र कीजे औ अनिरुद्धजी औ ऊषा को अपने साथ लीजे इस बात के सुनतेही श्री बिहारी भक्तहितकारी प्रद्युम्नजी को साथले बाणासुरके धाम पधारे महाराज उस काल बाणासुर अति प्रसन्न हो प्रभुको बड़ी आवभक्तिसे पाटम्बरके पांवड़े डालता लिवाय ले गया आगे ॥

चौ०चरणधोयचरणोदकलियोअचमनकरमाथेपरदियो॥

पुनि कहने लगा कि जो चरणोदक सबको दुर्लभहै सो मैंने हरि की कृपा से पाया जन्म जन्म का पाप गंवाया यही चरणोदक त्रिभुवन को पवित्र करता है इसीका नाम गङ्गा है इसे ब्रह्माने कमंडलु में भराशिवजी ने शीशपरधरा पुनि सुरमुनि ऋषिने माना औ भागीरथने तीनों देवताओं की तपस्या कर संसार में आना तबसे इस का नाम भागीरथी हुआ यह पापमलहरणी पवित्रकरणी साधु सन्त को सुखदेनी बैकुण्ठ की निशेनी है औ जो इसमें न्हाया उसने जन्म जन्म का पाप गंवाया जिसने गंगाजल पिया तिसने निस्सन्देह परमपद लिया जिनने भागीरथी का दर्शन किया तिनने सारे संसारको जीतलिया महाराज इतनाकह बाणासुर अनिरुद्धजी औ ऊषा को ले आय प्रभुके सम्मुख हाथ जोड़ बोला ॥

चौ० क्षमिये दोष भावई भई। यह मैं ऊषा दासी दई॥

योंकह वेदकी विधिसे बाणासुर ने कन्यादान किया औ तिसके यौतुक में बहुत कुछ दिया यों जिसका वारापार नहीं इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज व्याहके होतेही श्रीकृष्णचन्द्र बाणासुरको आशा भरोसादे राजगद्दी पर बैठाय पोते बहूको साथ ले बिदाहो धौंसा बजाय सब यदुबंशियों समेत वहांसे द्वारकापुरी को पधारे इनके आने के समाचार पाय सब द्वारकाबासी नगरके बाहर जाय प्रभुको गाजेबाजेसे लिवाय लाये उस काल पुरबासी हाट बाट चौहटों चौतरों कोठों से मंगली गीत गाय मंगलाचार करतेथे और राजमन्दिरमें श्रीरुक्मणी आदि सब सुन्दरी बधाये गाय रीति भांति करतीथीं और देवता अपने २ बिमानों पर बैठे अधरसे फूल बर्षाय २ जयजयकार करते थे औ घर बाहर सारे नगरमें आनन्द हो रहा था कि उसी समय बलराम सुखधाम औ श्रीकृष्णचन्द्र आनन्द कन्द सब यदुबंशियों को बिदा दे अनिरुद्ध को साथ ले राज मन्दिर में जा बिराजे ॥

चौ० आनीऊषागेहमझारी। हर्षहिंदेखिकृष्णकीनारी॥
देहिंअशीशसासुउरलावैंनिरखिहर्षिभूषणपहरावैं॥

इतिश्रीलालकृतेप्रे०सा०ऊषाचरित्रवर्णनोनामचतुष्षष्टितमोऽध्यायः ॥ ६४ ॥

श्रीशुकदेवजी बोले महाराज इक्ष्वाकुबंशी राजा नृग बड़ा ज्ञानी दानी धर्मात्मा साहसी था उसने अनिगनत गोदान किये जो गंगाकी बालूके

कसा भादों के मेंहकी बूंदें औ आकाश के तारे गिनेजांय तो राजा नृग के दानकी गायें भी गिनी जांय ऐसा जो ज्ञानी महादानी सो थोड़े अधर्म से गिरगिट हो अंधे कुंएमें रहा तिसे श्रीकृष्णचन्द्रजीने मोक्ष करदिया इतनी कथा सुन श्रीशुकदेवजी से राजा परीक्षितने पूंछा महाराज ऐसा धर्मात्मा दानी राजा किस पाप से गिरगिट हो अंधे कुंए में रहा औ श्री कृष्णजीने कैसे उसे तारा यह कथा तुम मुझे समझाकर कहो जो मेरेमन का संदेह जाय श्रीशुकदेवजी बोले महाराज आप चित दे मन लगाय सुनिये मैं ज्यों की त्यों सब कथा कह सुनाताहूं कि राजा नृग तो नित्य प्रति गोदान किया करतेहीथे पर एक दिन प्रातही न्हाय संध्या पूजाकरके सहस्र धौली, धूमरी, काली, पीली, भूरी, कबरी, गौ मंगाय रूपे के खुर सोने के सींग पीठ तांबेकी समेत पाटम्बर उढ़ाय संकल्पीं और उसके ऊपर बहुतसा अन्न धन ब्राह्मणों को दिया वे ले अपने घरगये दूसरे दिन फिर राजा उसी भांति गोदान करने लगा तो एक गाय पहले दिन की संकल्पी अनजाने आन मिली सो भी राजाने उन गायोंके साथ दान करदी ब्राह्मण ले अपने घर को चला आगे दूसरे ब्राह्मण ने अपनी गौ पहिचान बाटमें रोकी औ कहा कि यह गाय मेरीहै मुझे कल राजाके यहांसे मिली है भाई तू क्यों इसे लिये जाताहै वह ब्राह्मण बोला इसेतामें अभी राजाके यहांसे लिये चला आताहूं तेरी कहांसे हुई महाराज वे दोनों ब्राह्मण इसीभांति मेरी मेरी कर झगड़ने लगे निदान झगड़ते २ वे दोनों राजाके पासगये राजा ने दोनोंकी बात सुन हाथजोड़ अति बिनती कर कहा कि ॥

चौ० कोऊ लाख रुपय्या लेऊ । गैयाइककाहूको देऊ ॥

इतनी बातके सुनतेही दोनों झगड़ालू ब्राह्मण अति क्रोधकर बोले कि महाराज जो गाय हमने स्वस्ति बोलके ली सो करोड़ रूपये पानेसे भी हम न देंगे वहतो हमारे प्राणके साथ है महाराज पुनि राजाने उन ब्राह्मणों के पावों पड़ २ अनेक अनेक भांति फुसलाय समझाया पर उन तामसी ब्राह्मणों ने राजा का कहना न माना निदान महाक्रोध कर इतना कह दोनों ब्राह्मण गायछोड़ चलेगये कि महाराज जोगाय आपने संकल्प कर हमें दी औ हमने स्वस्ति बोल हाथ पसार ली वह गाय रुपये ले नहीं दी जाती अच्छाजो तुम्हारे यहां रही तो कुछचिन्ता नहीं महाराज ब्राह्मणों के जातेही राजानृग पहले तो अति उदास हो मनहीं मन

कहने लगा कि यह अधर्म अनजाने मुझसे हुआ सो कैसे छूटेगा और पीछे अतिदान पुण्य करने लगा कितने एक दिन बीते राजानृग कालवश हो मरगया उसे यमके गण धर्मराजके पास लेगये धर्मराज राजाको देखतेही सिंहासन से उठखड़ा हुआ पुनि आवभक्ति कर आसन पर बैठाय अति हित कर बोला महाराज तुम्हारा पुण्यहै बहुत औ पाप है थोड़ा कहो पहले क्या भुगतोगे ॥

चौ० सुनिनृगकहतजोरिकैहाथ। मेरोधर्मबड़ोजिननाथ॥
पहिलेहौंभुगतौंगो पाप। तनधरिकैसहिहौंसंताप॥

इतनी बात के सुनतेही धर्मराज ने राजा नृग से कहा कि महाराज तुमने अनजाने जो दानकी हुई गाय फिर दानकी उसी पाप से आपको गिरगिट हो बनबीच गोमती तीर अंधे कुंए में रहना होगा जब द्वापरके अन्त में श्रीकृष्णचंद्र अवतार लेंगे तब तुम्हें वेमोक्ष देंगे महाराज इतना कह धर्मराज चुप रहा और राजा नृग उसी समय गिरगिट हो अंधे कुंए में जा गिरा आगे जीव भक्षणकर २ वहां रहने लगा आगे कई युगबीते द्वापर के अन्त में श्रीकृष्णचन्द्रजी ने अवतार लिया और ब्रजलीला कर जब द्वारका को गये औ उनके बेटे पोते भये तब एकदिन कितने एक श्रीकृष्णजी के बेटे पोते मिल अहेर को गये औ बनमें अहेर करते २ प्यासे भये दैवयोग वेवनमें ढूंढ़ते उसी अंधे कुंएपर गये जहां राजा नृग गिरगिट का जन्म लेरहा था कुए में झांकतेही एक ने पुकार के सब से कहा कि अरे भाईदेखो इस कुंएमें कितना बड़ा एक गिरगिट है इतनी बातके सुनतेही सब दौड़ आये औ कुंएके पनघटे पर खड़े होलगे पगड़ी फेंटे मिलाय २ लटकाय २ उसे काढ़ने औ आपस में यों कहने कि भाई इसे कुंएसे बिन निकाले हम यहां से न जायंगे महाराज जब वह पगड़ी फेंटे की रस्सीसे न निकला तब उन्होंने गांव से सन सूत मूंज चाम की मोटी मोटी भारी २ बरतें मगवाईं और कुंएमें फांसी गिरगिट को बांध बलकर खेंचने लगे पर वह वहां से टसकाभी नहीं तब किसीने द्वारका में जाय श्रीकृष्णजीसे कहा कि महाराज बनमें अंधे कुंए के भीतर एक बड़ा मोटा भारी गिरगिटहै उसे अब सब कुंवर काढ़हारे परवहनहीं निकलता इतनी बात के सुनतेही हरि उठिधाये औ चले २ वहां आये जहां सब लड़के गिरगिट को निकाल रहे थे प्रभु को देखतेही सब लड़के बोले कि पिता

देखो यह कितना बड़ा गिरगिट है हम बड़ी देरसे इसे निकाल रहे हैं यह निकलता नहीं महाराज इस बचन को सुन ज्यों श्रीकृष्णचन्द्र जी ने कुंए में उतर उस के शरीर में चरण लगाया त्यों वह देह छोड़ अति सुन्दर पुरुष हुआ ॥

चौ० भूपतिरूपरह्योगहिपाय।हाथजोड़बिनवैशिरनाय॥

कृपासिंधु आपने बड़ी कृपा की जो इस महा बिपत्ति में आय मेरी सुधि ली श्रीशुकदेवजी बोले राजा जब वह मनुष्य रूपहो हरि से इस ढबकी बातें कहने लगा तब यादवों के बालक और हरिके बेटे पोते आश्चर्य्यकर श्रीकृष्णचंद्रजी से पूछने लगे कि महाराज यह कौन है और किस पापसे गिरगिट हो यहां आरहा था सो कृपा कर कहो तो हमारे मनका संदेह जाय उस काल प्रभुने आपकुछ न कहा उस राजासे कहा ॥

चौ० अपनो भेद कहो समझाय। जैसे सबै सुनैं मनलाय॥
कोहौआपकहांतें आये। कौनपापयहकाया पाये॥
सुनकैनृपकह जोरेहाथ। तुमसबजानतहौ यदुनाथ॥

तिसपर आप पूछत हो तो मैं कहताहूं मेरा नाम है राजा नृग मैंने अनगिनत गौवें ब्राह्मणों को तुम्हारे निमित्त दीं एकदिन की बात है कि मैंने कितनी एक गाय संकल्प कर ब्राह्मणों को दीं दूसरे दिन उन गायों मेंसे एक गाय फिर आई सोमैंने और गायों के साथ अनजाने दूसरे द्विज को दान कर दी ज्यों लेकर निकला त्यों पहिले ब्राह्मण ने अपनी गौ पहिचान इससे कहा यह गाय मेरीहै मुझे कल राजा के यहां से मिलीहै तू इसे क्यों लिये जाता है वह बोला मैं अभी राजा के यहां से लिये चला आता हूं तेरी कैसे हुई महाराज वे दोनों बिप्र इसी बात पर झगड़ते २ मेरे पास आये मैंने उन्हें समझाया और कहा कि एक गाय के पलटे मुझसे लाख गौलो और तुम मेंसे कोई यह गाय छोड़ दो महाराज मेरा कहा हटकर उन दोनोंने न माना निदान गौ छोड़ क्रोधकर वेदोनों चले गये मैं अछताय पछताय मनमार बैठ रहा अन्त समय यमके दूत मुझे धर्मराज के पास लेगये धर्मराजने मुझसे पूछा कि राजा तेरा धर्महै बहुत और पाप है थोड़ा पहिले क्या भुगतेगा मैंने कहा पाप इस बातके सुनतेही महाराज धर्मराज बोले कि राजा तैने ब्राह्मण को दी हुई गाय फिर दानकी इस अधर्मसे तू गिरगिटहो पृथ्वीपर जाय गोमती तीर बनके

बीच अन्धे कुंए में रह जब द्वापर युग के अन्त में श्रीकृष्णचन्द्र अवतार ले तेरे पास जांयगे तब तेरा उद्धार होगा महाराज तभीसे मैं शरट स्वरूप इस अंधे कुए में पड़ा आपके चरणकमल का ध्यान करताथा अब आय आपने मुझे महाकष्ट से उबारा औ भवसागर से पार उतारा इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी ने राजा परीक्षितसे कहा कि महाराज इतना कह राजा नृग तो विदा हो बिमानमें बैठ बैकुंठ को गया और श्रीकृष्ण चन्द्र जी सब बाल गोपालों को समझाय कर कहने लगे ॥

चौ॥ बिप्रदोषजिनकोऊकरै। मतकोउअंशबिप्रकोहरै
मनसंकल्पकियोजिनराख्यो।सत्यबचनविप्रनसोंभाख्यो
विप्रन दियो फेर जो लेई। ताको दण्ड इतो यम देई॥
बिप्रनकेसेवकभयेरहियो। सबअपराधबिप्रकोसहियो॥
बिप्रहिमानेसोमोहिमानेबिप्रनमोहिभिन्ननहिंजाने॥

जो मुझ में और ब्राह्मण में भेद जानेगा सो नरक में पड़ेगा और बिप्र को मानेगा वह मुझे पावेगा और निःसंदेह परमधामको जावेगा महाराज यह बात कह श्रीकृष्णजी सब को वहां से ले द्वारकापुरी को पधारे ॥

इति श्रीलालकृते प्रेमसागरे राजानृगमोक्षोनामपञ्चषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६५ ॥

श्री शुकदेवजी बोले कि महाराज एकसमय श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द और बलराम सुखधाम मणिमय मन्दिरमें बैठे थे कि बलदेवजी ने प्रभुसे कहा भाई जब हमें वृन्दाबनसे कंसने बुला भेजाथा और हम मथुरा को चलेथे तब गोपियों और नन्द यशोदाको हमने तुमने यह बचन दियाथा कि हम शीघ्रही आय सो मिलेंगे सो वहां न जाय द्वारका में आय बसे वे हमारी सुरत करते होंगी जो आप आज्ञाकरें तो हम जन्मभूमि देखआवें और उनका समाधान करि आवें प्रभु बोले कि अच्छा इतनीबातके सुनते ही बलरामजी सबसे बिदा हो हल मूशल ले रथ पर चढ़ सिधारे ॥

महाराज बलरामजी जिस पुरी नगर गांव में जाते थे तहां के राजा आगे बढ़ अति शिष्टाचार कर इन्हें ले जातेथे और एक एकका समाधान करते जातेथे कितने एक दिनमें चले २ बलरामजी अवन्तिकापुरी पहुंचे ॥

चौ० बिद्यागुरुकोकियोप्रणामादिनदशतहांरहेबलराम॥

आगे गुरू से बिदा हो बलदेवजी चले २ गोकुल में पधारे तो देखते क्या हैं कि बन में चारों ओर गाये मुंह बाये बिन तृण खाये श्रीकृष्णचंद्र

की सुरत किये बांसुरी की तान में मन दिये रांभती हौंकती फिरती हैं तिनके पीछे २ग्वाल बाल हरियश गाते प्रेमरंग राते चले जाते हैं और जिधर तिधर नगरनिवासी लोग प्रभुके चरित्र और लीला बखान रहेहैं महाराज जन्मभूमि में जाय ब्रजबासियों औरगायों की यह अवस्था देखि बलरामजी करुणा कर नयनोंमें नीर भर लाये आगे रथकी ध्वजा पताका देख श्रीकृष्णचन्द्र औ बलरामजीका आना जान सब ग्वालबाल दौड़ आये प्रभु उनके आतेही रथसे उतर लगे एक एकसे गले लगलग अति हित से क्षेम कुशल पूछने इस बीच किसी ने जाय नन्द यशोदासे कहा कि बलदेवजी आये यह समाचार पातेही नन्द यशोदा और बड़े २ गोप ग्वाल उठधाये उन्हें दूरसे आतेदेख बलरामजी दौड़कर नन्दरायके पावोंपरजाय गिरे तब नन्दजीने अतिआनन्दकर नयनोंमें जलभर बड़े प्यारसे बलराम जी को उठाय कंठ से लगाय और बियोग दुःख गंवाया पुनि प्रभुने ॥

चौ० गहेचरणयशुमतिकेजाय।उनहितकरउरलियोलगाय
भुजभरिभेटकण्ठगहिरही।लोचनतेजलसरिताबही ॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी ने राजा से कहा कि महाराज ऐसे मिल भुल नन्दरायजी बलरामजी को घर में ले जाय कुशल क्षेम पूछने लगे कि कहो उग्रसेन बसुदेव आदि सब यादव औ श्री कृष्णचन्द्र आनन्दकन्द आनन्द से हैं और कभी हमारी सुरत करते हैं बलरामजी बोले कि आपकी कृपा से सब आनन्द मंगल से हैं सदा सर्वदा आपका गुण गाते रहतेहैं इतना बचन सुन नन्दराय चुपरहे पुनि यशोदा रानी श्रीकृष्णजी की सुरतकर लोचन में नीर भर अति ब्याकुल हो बोली कि बलदेवजी हमारे प्यारे नयनों के तारे श्रीकृष्णजी अच्छेहैं बलरामजी ने कहा बहुत अच्छे हैं पुनि नन्दरानी कहने लगी कि बलदेव जब से हरि यहां से सिधारे तबसे हमारी आंख के आगे अंधेरा होरहा है हम आठ पहर उन्हीं का ध्यान किये रहते हैं औ वे हमारी सुरत भुलाय द्वारका में जाय छाय रहे और देखो बहन देवकी रोहिणी भी हमारी प्रीति छोड़ बैठीं ॥

चौ० मथुरातेगोकुलढिगजान्यौबसीदूरतबहीकुछमान्यौ
भेटनमिलनआवतेहरी। फिरनमिलेऐसीउन करी ॥

महाराज इतना कह जब यशोदाजी अति ब्याकुल हो रोने लगीं तब

बलरामजी ने बहुत समझाय बुझायआशा भरोसादे उनको ढांढ़स बंधाया पुनिआप भोजन कर पान खाय घरसे बाहर निकले तो क्या देखते हैं कि सब ब्रजयुवती तन छीन मन मलीन छूटे केश मैले भेष बिहारे घरबार की सुरत बिसारे प्रेमरंग राती यौवन की माती हरि गुण गाती बिरह में व्याकुल जिधर तिधर मत्तवत् चली जाती हैं महाराज बलरामजी को देखते ही अति प्रसन्न हो सब दौड़ आईं औ दण्डवत् कर हाथ जोड़ चारों ओर खड़ी होलगीं पूछने औ कहने कि कहो बलराम सुखधाम अब कहां बिराजते हैं हमारे प्राण सुन्दर श्याम कभी हमारी सुरत करते हैं बिहारी के राज पाटपाय पिछली प्रीति सब बिसारी जबसे यहां से गयेहैं तबसे एक बार उद्धवके हाथ योग का संदेशा कह पठाया या फिर किसी की सुधि न ली अब जाय समुद्र माहिं बसे तो काहेको किसी की सुधि लेंगे इतनी बातके सुनतेही एक गोपी बोल उठी कि सखी हरिकी प्रीति का कौन परेखा उनका तो देखा सबसे यहीलेखा ॥

चौ० वे काहूकेनाहिनईठ । मातपिता कोजिनदृ पीठ ॥
राधा बिन रहते नहिं घरी । सोऊ हैं बरसाने परी॥

पुनि हम तुम ने घर बार छोड़ कुल कान लोक लाज तज सुत पति त्यागि हरिसे स्नेह लगाय क्याफल पाया निदान स्नेहकी नावपर चढ़ाय बिरह समुद्र मांझ छोड़गये अब सुनतीहैं कि द्वारका मेंजाय प्रभुने बहुत ब्याहकिये और सोलह सहस्र एकसौ राजकन्या जो भौमासुर ने घेररक्खी थीं तिन्हेंभी श्रीकृष्णनेलाय ब्याहा अब उनसे बेटे पोते नातीभये उन्हें छोड़ यहां क्यों आवेंगे यह बात सुन एक और गोपी बोली कि सखी तुम हरि की बातोंका कुछ पछितावाही मतकरो क्योंकि उनके तोगुण सब उद्धवजी ने आपही सुनाये थे इतना कह पुनि वह बोली कि आली मेरी बात मानों तो अब ॥

चौ० हलधरजके परसौ प्राय । रहिहैं इनहींके गुणगाय ॥
येहैंगौरश्यामनहिं गात । करिहैंनहींकपटकीबात ॥
सुनिसंकर्षणउत्तरदियो । तुम्हरेहेतुगमनहमकियो॥
आवनहमतुमसों कहि गये । तातेंहमपठयबज दये ॥
रहिहैं मास करेंगे रास । पुजवेंगे सब तुम्हरी आस ॥

महाराज बलरामजी ने इतना कह सब ब्रजयुवतियों को आज्ञा दी

कि आज मधुमास की रात है तुम शृङ्गार कर बनमें आओ हम तुम्हारे साथमें रास करेंगे यहकह बलरामजी सांझ समय बनको सिधारे तिनके पीछे सब ब्रजयुवती भी सुथरे बस्त्र आभूषण पहन नख शिख से शृङ्गार कर बलदेवजी के पास पहुंचे ॥

चौ० टाढ़ीभईंसबैशिरनाय। हलधरछबिबरणीनहिंजाय ॥
कनकबरणनीलांबरधरे ।शशिमुखकमलनयनमनहरे॥
कुंडलएकश्रवणछबिछाजै।मनौभानुशशिसंगबिराजै ॥
एकश्रवणहरियशरसपान। दूजोकुंडलधरतनकान ॥
अंगअंगप्रति भषण घने। तिनकी शोभाकहत नबने ॥
योंकहपायनपैरीसुन्दरी। लीलारासकरङ्गरसभरी॥

महाराज इतनी बातके सुनतेही बलरामजी ने हूं किया हूं के करते ही रास की सब बस्तु आय उपस्थित हुई तबतो सब गोपियां शोच संकोच तज अनुराग कर बीन मृदंग करतालउपंग मुरली आदिक सब यंच ले २ लगीं बजाने गाने ओथेई २ करनाच २ भाव बताय बताय प्रभुको रिझाने उनका बजाना गाना नाचना सुन देख मगन हो बारुणी पानकर बलदेव जी भी सबके साथ मिल गाने नाचने औ अनेक २ भांतिके कुतूहल कर २ सुख देने लेने लगे उसकाल देवता गन्धर्ब किन्नर यक्ष अपनी अपनी स्त्रियों समेत आय आय बिमान पर बैठे प्रभुगुण गाय २ अधरसे फूल बर्षाते थे चंद्रमा तारामण्डल समेत रासमंडलीका सुख देख २ किरणों से अमृत बर्षाता था औ पवन पानी भी थंभ रहा था ॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज इसी भांति बलरामजीने ब्रजमें रह चैत बैशाख दोमहीने रात्रिको तो ब्रज युबतियों के साथ रास बिलास किया औ दिनको हरि कथा सुनाय नन्द यशोदा को सुख दिया किसी एक दिन रातसमय रास करते २ बलराम जीने जा ॥

चौ० नदीतीर करके बिश्राम। बोले तहां कोप के राम ॥
यमुनातइतहीबहिआव ।सहसधारकरिमोहिंन्हबाव॥
जोनमानिहैकह्योहमारो। खण्ड२जलहोयतिहारो ॥

महाराज जब बलरामजी की बात अभिमान कर यमुनाने सुनी अन सुनी की तबतो इन्हों ने क्रोधकर उसे हलसे खैंचली और स्नानकिया उस

दिनसे वहां यमुना अबतक टेढ़ी है आगे न्हाय श्रम मिटाय बलराम जी सब गोपियों को सुखदे साथले बनसे चले नगरमें आये तहां॥

चौ० गोपीकहैंसुनोंब्रज नाथ। हमकोंछलेचलियो साथ॥

यह बात सुन बलरामजी गोपियों को आशा भरोसा दे ढाढ़स बंधाय बिदाकर बिदा होने नन्द यशोदा के गये पुनि उन्हें भी समझाय बुझाय धीर्य्य बंधाय कई दिन रहे बिदाहो द्वारका को चले औ कितने एकदिनों में जाय पहुंचे॥ इतिश्रीलालकृते प्रेमसागरेबलभद्र रासवर्णनोनाम षटषष्टितमोऽध्यायः ६६॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज काशीपुरी में पौंड्रक नाम राजा सो महाबली औ बड़ाप्रतापी था तिसने बिष्णु का भेष किया औ छलबल कर सबका मन हरलिया सदा पीतबसनबैजंतीमाल मुक्तमाल मणिमाल पहने रहे औ शंख चक्र गदा पद्म लिये दो हाथ काठके किये एक घोड़े पर काठही का गरुड़ धरे उसपर चढ़ा फिरे वह बासुदेव पौंड्रक कहावे और सबसे आप को पुजावे जो राजा उसकी आज्ञा न माने उसपर चढ़ जाय फिर मार धाड़ कर अपने बश में रक्खे इतनी कथा कह श्रीशुकदेव जी बोले कि राजा उसका यह आचरण देख सुन देश २ नगर २ गांव २ घर २ में लोग चर्चा करने लगे कियक बासुदेव तो ब्रजभूमि के बीच यदुकुल में प्रगट हुए थे सो द्वारकापुरी में बिराजते हैं दूसरा अब काशी में हुआ है दोनों में हम किसे सच्चा जानें औ माने महाराज देश २ में यह चर्चा होरही थी कि कुछ संधान पाय बासुदेव पौंड्रक एकदिन अपनीसभा में आय बोला॥

चौ० कोहै कृष्ण द्वारका रहै। ताको बासुदेव जग कहै॥
भक्त हेतु भूहौं औतरयो। मेरो भेष तहांतिनधरयो॥

इतनी बात कह एकदूत को बुलाय उसने ऊंचनीच की बातें सबसमझाय बुझाय इतना कह द्वारकामें श्रीकृष्णचंद्रजी के पास भेज दिया कि कै तोमेराभेष बनाये फिरताहै सो छोड़दे नहीं तो लड़नेका विचारकरआज्ञा पातेही दूत बिदा हो काशीसे चला २ द्वारकापुरी पहुंचा औ श्रीकृष्णचन्द्र जीकी सभामें जा उपस्थित हुआ प्रभुने इससे पूछा कि तू कौनहै औरकहां से आया है वह बोला मैं काशीपुरीके बासुदेव पौंड्रक का दूतहूं स्वामीका पठाया कुछ संदेशाकहने आपकेपास आयाहूं कहेतो कहूंश्रीकृष्णचन्द्रबोले

कि अच्छा कह प्रभुके मुखसे यहबचन निकलतेही दूत खड़ाहो हाथजोड़ कहने लगा कि महाराज बासुदेव पौंड्रक ने कहाहै कि त्रिभुनपति जगत कर्त्ता तो मेहूं तू कौनहै मेरा भेष बनाये जरासन्ध के डरसे भाग द्वारका में जाय रहा तो मेरा बाना छोड़ शीघ्र आय मेरी शरण गह नहीं तो तेरे सब यदुबंशियों समेत तुम्हें आय मारूंगा औ भूमिका भार उतार अपने भक्तोंको पालूंगा मैंहीं हूं अलख अगोचर निराकार मेराही जप तप यज्ञ दान करते हैं सुर मुनि ऋषि नर बार २ मैंहीं ब्रह्मा हो बनाता हूं बिष्णुहो पालता हूं शिवहो संहारता हूं मैंनेही मच्छरूप हो बेद डूबते निकाले कच्छपहो गिरि धारण किया बाराह बन भूमि को रख लिया नृसिंह अवतारले हिरण्यकशिपु को बध किया बांमन अवतारले बलि को छला रामावतार ले महा दुष्ट रावण को मारा मेरा यही कामहै कि जब जब मेरे भक्तों को असुर आय सतातेहैं तबतब मैं अवतार ले भूमि का भार उतारताहूं इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी ने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज बासुदेव पौंड्रक का दूत तो इस ढबकी बातें करता था औ श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द रत्न सिंहासन परबैठे यादवों की सभामें हंस २ कर सुनते थे कि इसबीच कोई यदुबंशी बोल उठा ॥

चौ० तोहि कहा यम आयो लैन । भाषतजौत ऐसे बैन ॥
मारैं कहा तोहिहमनीच । आयोहै कपटीके बीच ॥

जो तू बसीठ न होता तो बिन मारे न छोड़ते दूतको मारनाउचित नहीं महाराज जब यदुबंशियों ने बात कही तब श्रीकृष्णजी ने उसदूत को निकट बुलाय समझाय बुझाय के कहा कि तू जाय अपने बासुदेवसे कह कि कृष्णने कहाहै जोमैं तेरा बाना छोड़ शरण आताहूं सावधान हो रहे इतनी बातके सुनतेही दूत दण्डवत् कर बिदा हुआ औ श्रीकृष्णचंद्र जी भी अपनीसेनाले काशीपुरीको सिधारे दूतनेजाय बासुदेवपौंड्रकसे कहा किमहाराज मैंने द्वारकामें जाय आपका सब संदेशा कहा श्रीकृष्ण सुनकर बोले कितू अपने स्वामी से जाय कह कि सावधान होरहे उनका बाना छोड़ शरण लेने आता हूं महाराज बसीठ यह बात कहता ही था कि किसीने आय कहा कि महाराज आप निश्चिन्त क्या बैठेहैं श्रीकृष्णअपनी सेनाले चढ़आया इतनी बातके सुनतेही बासुदेव पौंड्रक उसी भेषसेअपना सब कटक ले चढ़ धाया औचला २ श्रीकृष्णचंद्र जीके सम्मुख आया तिस

के साथ एकओर भी काशी का राजा चढ़ दौड़ा दोनो ओर दल तुलकर खड़े हुए जुझाऊ बाजे बाजने लगे शूरबीर रावत लड़ने और कायर खेत छोड़ २ अपना जी ले २ भागने उसकाल युद्ध करता काल बशहो बासुदेव पौंड्रक उसी भांति श्रीकृष्णचंद्रजी के सम्मुखहो ललकारा उसे बिष्णु भेष देख सब यदुबंशियों ने श्रीकृष्णचंद्रजी से पूछा कि महाराज इसे इस भेष से कैसे मारेंगे प्रभुने कहा कपटी के मारने का कुछ दोष नहीं॥

इतना कह हरिने सुदर्शनचक्र को आज्ञा दी उसने जातेही जो दो भुजा काठ कीथीं सोउखाड़ लीं उसके साथ गरुड़ भी टूटा औतुरंग भागा जबबासुदेव पौंड्रक नीचेगिरा तब सुदर्शनने उसका शिर काट फेंका॥

चौ० कटतशीशनृपपौंड्रकतरयो। शीशजायकाशीमेंपरयो॥
जहां हतो ताकोरिनिवास। देखतशीशसुन्दरीतास॥
रोवे योंकहिखैंचे बार। यहगति कहांभई करतार॥
तुमतो अजर अमर हे भये। कैसेप्राण पलक में गये॥

महाराज रानियों का रोना सुन सुदक्षिण नाम उसका एक बेटाथा सो वहां आय बाप का शिर कटा देख अति क्रोधकर कहने लगा कि जिसने मेरे पिता को मारा है उससे मैं बिन पलटा लिये न रहूंगा इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज बासुदेव पौंड्रकको मार श्रीकृष्णचन्द्रजी तो अपना सब कटक ले द्वारकाको सिधारे औ उसका बेटा अपने बापका बैर लेन को महादेवजी की अति कठिन तपस्या करने लगा इसमें कितने एकदिन पीछे एकदिन प्रसन्न हो महादेव भोलानाथ ने आय कहा कि बर मांग वह बोला महाराज मुझे यही बर दीजे कि श्रीकृष्णसे मैं अपने पिताका बैर लूं शिवजी बोले अच्छा जो तू बर लिया चाहताहै तो एक काम कर वह बोला क्या उलटे वेद मंत्रों से यज्ञ कर इसमें एक राक्षसी अग्निसे निकलेगी उससे जो तू कहेगा सो वह करेगी इतना बचन शिवजी के मुखसे सुन महाराज वह जाय ब्राह्मणों को बुलवाय वेदी रच तिल जव घी चीनी आदि सब होमकी सामा ले साकल्य बनाय लगा उलटे वेदमंत्र पढ़ २ होम करने निदान यज्ञ करते अग्निकुंडसे कृत्या नाम एक राजसी निकली सो श्रीकृष्णजी के पीछेही पीछे नगर देश गांव जलाती द्वारकापुरी में पहुंची औ लगी पुरी को जलाने नगर को जलता देख यदु बंशियोंने भय खाय श्रीकृष्णचन्द्रजी के पास जा पुकारा कि महाराज इस

आगसे कैसे बचेंगे यह तो सारे नगर को जलाती चली आतीहै प्रभु बोले तुम किसी बातकी चिन्ता मत करो यह कृत्या नाम राक्षसी काशीसे आई है मैं अभी इसका उपाय करता हूं महाराज इतना कह श्रीकृष्णचंद्रजीने सुदर्शनचक्र को आज्ञा दी कि इसे मार भगाय औ इसी समय काशी को जलाय आव हरिकी आज्ञा पातेही सुदर्शनचक्र ने कृत्या को मार भगाया औ बात कहतेही काशी को जलाया ॥

चौ० परजाभागीफिरेदुखारी। गारीदेहिंसुदच्छहिभारी
फिरचोचक्रशिवपुरीजलाय। सोईकहीकृष्णसोंआय ॥

इतिश्रीलालकृतेप्रेमसागरेनृपपौंड्रकमोक्षवर्णनोनामसप्तषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६७ ॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज जैसे बलराम सुखधाम रूपनिधान ने द्विविद कपि को मारा तैसेही मैं कथा कहता हूं तुम चित्त दे सुनो एक दिन द्विविद जो सुग्रीवका मंत्री औ मयन्द कपिका भाई भौमासुरका सखा था कहने लगा कि एक शूल मेरे मनमें है सो जब तब खटकता है यह बात सुन किसीने उससे पूछा कि महाराज सो क्या वह बोला जिसने मेरे मित्र भौमासुर को मारा तिसे मारूं तो मेरे मन का दुःख जाय ॥

महाराज इतना कह वह उसीसमय अति क्रोधकर द्वारकापुरीको चला श्रीकृष्णचंद्रके देश उजाड़ता औ लोगोंको दुख देता किसीको पानी बर्षाय बहाया किसी को आग बर्षाय जलाया किसीको पहाड़से पटका किसी पर पहाड़ दे पटका किसी को समुद्रमें डुबाया किसी को पकड़ बांध गुफा में छिपाया किसीका पेट फाड़ डाला किसी पर वृक्ष उखाड़ मारा इसी रीति से लोगोंको सताता जाताथा औ जहां ऋषि मुनि देवताओंको बैठे पाता था तहां मल मूत्र रुधिर बर्षाताथा निदान इसी भांति लोगोंको दुखदेता औ उपाधि करता जा द्वारकापुरी पहुंचा औ अल्प तनु धर श्रीकृष्णचंद्र के मन्दिर पर जा बैठा उसको सब सुन्दरी देख मन्दिरके भीतर किवाड़ दे २ भागकर जाय छिपीं तब तो वह मनहीं मन यह बिचार बलरामजी के समाचार पाय रैवत गिरि पर गया कि ॥

चौ० पहले हलधरको बधकरौं। पीछे प्राण कृष्णके हरौं ॥

जहां बलदेवजी स्त्रियों के साथ बिहार करते थे महाराज यह छिपकर वहां क्या देखताहै कि बलराम मद पी सब स्त्रियोंको साथ ले एक सरोवर बीच अनेक २ भांति की लीला कर गाय गाय

न्हाय न्हिलाय रहेहैं यह चरित्र देख द्विविद एक पेड़पर चढ़ा औ किलकारियां मार २ घुरक २ लगा डाल २ कूद २ फिर २ चरित्र करने और जहां मदिरा का कलश भरा औ सबके चीर धरेथे तिन पर मल करने बन्दर को सब सुन्दरी देखतेही डरकर पुकारीं कि महाराज यह कपि कहांसे आया जो हमें डराय २ हमारे वस्त्रोंपर मल मूत्र कररहाहै इतनी बातके सुनतेही बलदेवजी ने सरोवर से निकल ज्यों हंसके ढेला चलाया त्यों वह इनको मतवाला जान महा क्रोधकर किलकारी मारनीचे आया आतेही उसने मदिरा का भराघड़ा जो तीरपर धराथा सो लुढ़ाय दिया औ सारे चीर फाड़नीर नीर करडाले तबतो क्रोधकर बलरामजीने हल मूशल संभाला औ वहभी पर्बत समहो प्रभुके सोहीं युद्ध करनेआय उपस्थित हुआ इधरसे वे हल मूशल चलातेथे औउधरसे वहपेड़ पर्बत ॥

चौ० महा युद्ध दोऊमिल करैं । मेकन कहूं ठौर से टरैं ॥

महाराज येतो दोनों बली अनेक २ प्रकारकी घातें बातें कर निधड़क लड़तेथे पर देखनेवालों के मारे भयके प्राणही निकलते थे निदान प्रभुने सबको दुखित जान द्विविद कोमार गिराया उसके मरतेही सुरनर मुनि सबके जीको आनन्द हुआ औदुःख द्वन्द गया ॥

चौ० फूले देव पुष्प बर्षावैं । जयजयकार हलधरहिं सुनावैं ॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी ने कहा कि महाराज त्रेतायुग में वह बन्दरही था तिसे बलदेवजी ने मार उद्धार किया आगे बलराम सुखधाम सबको सुख दे वहां से साथले द्वारकापुरी में आये औ द्विविद के मारने का समाचार सारे यदुबंशियों को सुनाया ॥ इति श्री लालकृते प्रेम सागरे बलभद्र चरित्र द्विविद कपि बधोनाम अष्टषष्टितमोऽध्यायः ६८ ॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि राजा अब दुर्योधन की बेटी लक्ष्मणाके बिवाह की कथा कहताहूं कि जैसे शाम्ब हस्तिनापुर जाय उसे व्याह लाये महाराज राजा दुर्योधन की पुत्री लक्ष्मणा जब व्याहने योग्य हुई तब उसके पिताने सब देश २ के नरेशों कोपत्र लिखलिख बुलाया औ स्वयम्बरकिया स्वयम्बर के समाचार पाय श्रीकृष्णचन्द्र का पुत्र जो जाम्बवती से था शाम्बनाम वहभी वहां पहुंचा वहां जाय शाम्ब क्या देखताहै कि देश २ के नरेश बलवान गुणवान रूपवान महा जान बस्त्र सुथरे आभूषण रत्न जटित पहने अस्त्र शस्त्र बांधे मौन साधे स्वयम्बरके बीच पांति २ खड़े

हैं औ उनके पीछे उसी भांति सब कौरव भी जहां तहां बाहर बाजन बाज रहेहैं भीतर मंगली लोग मंगलाचार कर रहेहैं सबके बीच राज कुमरी मता पिता की दुलारी परम प्यारी मनहीं मन यों कहती हारलिये आंखों कीसी पुतली फिरती है किमैं किसे बरूं महाराज जब वहशीलवान रूपनिधान माना लिये लाज किये फिरती २ शाम्बके सम्मुख आई तब उन्होंने शोच संकोच तज निर्भय उसे हाथ पकड़ रथमें बैठायअपनी बाटली सब राजा खड़े मुंह देखते रहगये और कर्णदुर्योधन शल्य भूरिश्रवा दुर्योधन आदि सारे कौरवभी उससमय कुछ न बोले पुनि अति क्रोध कर आपसमें कहने लगे किदेखो इसने क्या काम किया जो रसमें आय अनरस किया कर्ण बोला कि यदुबंशियों की सदासे यह टेवहै कि जहां कहींशुभ काज में जाते हैं तहां उपाधिही करते हैं शल्यने कहा ॥

चौ० जाति हीन अबही ये बढ़े । राज पाय माथेपर चढ़े ॥

इतनी बात के सुनतेही सब कौरव महा कोपकर अपने २ अस्त्रशस्त्र ले योंकह चढ़ दौड़े कि देखं यहकैसा बलीहै जो हमारे आगेसे कन्याले निकल जायगा औ बीच बाटके शाम्ब को घेरा आगे दोनों ओरसे शस्त्र चलने लगे निदान कितनी एक बेरके लड़नेमें जब शाम्ब कासारथीमारा गया औ वह नीचे उतरा तबये उसे घेर पकड़ कर बांध लाये सभा के बीचों बीच खड़ाकर उन्होंने उस्से पूछा कि अबतेरा पराक्रम कहांगयायह बात सुन वह लजाय रहा इसमें नारदजी ने आय राजा दुर्योधन समेत सब कौरवोंसे कहा कियह शाम्ब श्रीकृष्णचंद्र का पुत्रहै तुम इसे कुछमत कहो जो होनाथा सो हुआ अभी इसके समाचार पाय दल साज आवेंगे श्रीकृष्ण औ बलराम जो कुछ कहना सुनना हो सो उनसे कहसुन लीजो लड़केसे बात कहना तुम्हें किसी भांति उचित नहीं इसने लड़कबुद्धि की तो की महाराज इतना बचन कह नारद जी वहां से बिदा हो चले २ द्वारकापुरी को गये और राजा उग्रसेन की सभा में जा खड़े हुए ॥

चौ० देखतसबै उठेशिरनाय । आसनदियो ततक्षणजाय ॥

बैठतेही नारदजी बोले कि महाराज कौरवों ने शाम्बको बांध महा दुःख दिया औ देते हैं जोइस समय जाय उसकी सुधि लो तो लो नहीं तोफिर शाम्ब का बचना कठिन है ॥

गर्व्वभयोकौरवको भारी । लाजसकुचनहिंकहीतिहरी ॥

बालम को बांध्योउनऐसे। अरि को बांधे कोऊ जैसे॥

इस बातके सुनतेही राजा उग्रसेन ने अति कोप कर यदुबंशियों को बुलाय के कहा कि तुम अभी सब हमारा कटक ले हस्तिनापुर पर चढ़ जाओ औकौरवोंको मार शाम्ब को छुड़ायले आओ राजा की आज्ञा पातेही ज्यों सब दल चलने को उपस्थित हुआ त्यों बलराम जीने जाय राजा उग्रसेन को समझाय कर कहा कि महाराज आप उनपर सेना न पठाइये मुझे आज्ञा कीजे जोमें जाय उन्हें छलहना दे शाम्बको छुड़ाय लाऊं देखूं उन्होंने किसलिये शाम्ब को पकड़ बांधा इसबात का भेद बिनमेरे गये न खुलेगा इतनी बातके सुनतेही राजा उग्रसेन ने बलराम जी को हस्तिनापुर जानेकी आज्ञादी औ बलदेव जी कितनेएक बड़े बड़े पंडित ब्राह्मण औ नारदमुनिको साथले द्वारकासे चले २ हस्तिनापुर पहुंचेउस समय प्रभुने नगरके बाहर एक बाड़ीमें डेरा कर नारदजीसे कहा कि महाराज हम यहां उतरेहैं आपजाय कौरवों से हमारे आनेका समाचार कहिये प्रभुकी आज्ञापाय नारदजीने नगरमें जाय बलरामजीके आनेका समाचार सुनाया॥

चौ० सुनके सावधान सब भये। आगे होय लेनतहं गये॥
भीषम कर्णद्रोण मिलचले। लीने बसन पटम्बरभले॥
दुर्योधन योंकहकरधायो। मेरो गुरुसंकर्षणआयो॥

इतनी कथा कह श्री शुकदेवजी ने राजा से कहा कि महाराज सब कौरवों ने उस बाड़ीमें जाय बलराम जी से भेटकर भेटदी औ पावों पर हाथ जोड़ बहुती स्तुतिकी आगे चोआ चन्दन लगाय फूलमाल पहराय पाटम्बर के पांवड़े बिछाय बाजे गाजेसे नगर में लिवाय लाये पुनिषटरस भोजन करवाय पास बैठ सबकी कुशलक्षेम पूंछ पूंछाकि महाराज आपका आना यहां कैसे हुआ कौरवों के मुखसे यह बात निकलतेही बलरामजी बोले कि हम राजा उग्रसेन के पठाये संदेशा कहने तुम्हारे पास आयेहैं कौरव बोले कहो बलदेवजी ने कहा कि राजा जीने कहाहै कि तुम्हें हमसे बिरोध करना उचित न था॥

चौ० तुमहोबड़ेसबालकएकाकियोयुद्धतजिज्ञानबिबेक॥
महाअधर्मजानकैकियो लोकलाजतजसुतगहिलियो
ऐसे गर्बतुम्हें अब भयो। समझ बूझताकोदुखदयो॥

महाराज इतनी बातके सुनतेही कौरव महा कोपकर बोले किबलराम

जी सबकरो अधिक बड़ाई उग्रसेनकी मतकरो हमसे यहबात सुनी नहीं जाती चारदिनकी बातहै कि उग्रसेनको कोईजानता मानता नथा जबसे हमारे यहां सगाईकी तभीसे प्रभुताईपाई अब हमीसे अभिमानकी बातकह पठाई उसे लाज नहींआती जो द्वारकामें बैठा सबराजपाय पिछली बातगंवाय जो मन मानता है सो कहता है वह दिनभूल गया कि मथुरामें ग्वाल गूजरों के साथ रहता खाता था जैसा हमने साथ खिलाय सम्बन्ध कर राज दिलवाया तिसका फल हाथों हाथ पाया जो किसी पूरे पर गुण करते तो वह जन्मभर हमारा गुण मानता किसीने सच कहाहै कि ओछे की प्रीति बालूकी भीत समान है इतनी कथा कह श्री शुकदेवजी बोले महाराज ऐसे अनेक २ प्रकार की बातें कह २ कर्ण द्रोण भीष्म दुर्योधन आदि सब कौरव गर्व कर उठ २ अपने २ घर गये और बलरामजी उनकी बातें सुन २ हंसि २ वहां बैठे मनहींमन यों कहते रहे कि इनको राज और बलका गर्व भया है जो ऐसी २ बातें कहते हैं नहीं तो ब्रह्मा रुद्र इन्द्रका ईश जिसे नवावें शीश तिस उग्रसेनकी ये निन्दा करैं तो मेरा नाम बलदेव जो सब कौरवोंको नगर समेत यमुना में डुबोऊं नहीं तो नहीं ॥

महाराज इतना कह बलदेवजी अति क्रोधकर सब कौरवों को नगर समेत हल से खैंच यमुना तीर पर ले गये और चाहें कि डुबोवें त्योंहीं अति घबराय भयखाय सब कौरव आय हाथ जोड़ शिरनाय गिड़गिड़ाय बिनती कर बोले कि महाराज हमारा अपराध क्षमा कीजे हम आपकी शरण आये अब बचाय लीजे जो कहोगे सो करेंगे सदा राजा उग्रसेनकी आज्ञा में रहेंगे राजा इतनी बातके कहतेही बलरामजी का क्रोध शान्त हुआ और जो हलसे खैंच नगर यमुना तीर पर लाये थे सो वहीं रक्खा तिसी दिनसे हस्तिनापुर यमुना पर है पहिले वहां न था आगे उन्होंने शाम्बको छोड़ दिया और राजा दुर्योधनने चचा भतीजों को मनाय घर में लेजाय मंगलाचार करवाय वेदकी बिधिसे शाम्ब को कन्यादान दिया और उसके यौतुक में बहुत कुछ संकल्प किया इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजीने कहा कि महाराज ऐसे बलरामजी हस्तिनापुर जाय कौरवोंका गर्व गंवाय भतीजे को छुड़ाय व्याह लाये उस काल सारी द्वारकापुरी में आनन्द होगया और बलदेवजीने हस्तिनापुरका सब समाचार ब्यौरे समेत समझाय राजा उग्रसेनके पास जाय कहा ॥ इति श्री लालकृते प्रेमसागरे शाम्बविवाहकथनो नामएकोनसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ६९ ॥

श्री शुकदेवजी बोले कि महाराज एकसमय नारदजी के मन में आई कि श्रीकृष्णचन्द्र सोलह सहस्र एकसौ आठ स्त्रीले कैसे गृहस्थाश्रम करते हैं सो चल कर देखा चाहिये इतना बिचार चले चले द्वारकापुरीमें आये तो नगरके बाहर क्यादेखतेहैं कि कहीं बाड़ियोंमेंनानाभांतिकेबड़े २ ऊंचे वृक्ष हरे फल फूलोंसे भरे खरे झूम रहेहैं और उन पर कपोत कीर चातक मोर आदि पक्षी मनभावन बोलियां बैठे बोल रहेहैं कहीं सुन्दर सरोवरों में कमल खिले हुये तिन पर भौंरों के झुंडके झुंड गूंज रहे तीर में हंस सारस समेत खग कुलाहल कर रहे हैं कहीं फुलवाड़ियोंमें माली मीठे मीठे सुरोंसे गाय २ ऊंचे नीचे नीर चढ़ाय क्यारियों में जल खेंव रहे हैं कहीं इन्दारे बावड़ियों पर रहंट परोहे चलरहे हैं और पनघट पर पनहारियों के ठट्टके ठट्ट लगेहैं तिनकी शोभा कुछ बरणी नहीं जाती वह देखेही बनिआवे महाराज यहशोभा बन उपबनकी निरख हरष नारदजी पुरीमें जाय देखें तो अति सुन्दर कंचन के मणिमय मन्दिर जगमगाय रहे हैं तिन पर ध्वजा पताका फहराय रही हैं द्वार २ में तोरण बन्दनवार बंधेहैं द्वार २ पर केलेके खम्भ और कंचनकेकुम्भ सपल्लव भरे धरेहैं घर २ की जाली झरोखों मोखोंसे धूपका धुवांनिकल श्यामघटा सा मंडलाय रहाहै उसके बीच २ सोनेके कलश कलशियां बिजलीसी चमक रहीहैं घर घर पूजा पाठ होम यज्ञ दान होरहा है ठौर २ भजन स्मरण गान कथा पुराण चर्चा चल रहीहै जहां तहां यदुवंशी इन्द्रकी सी सभा किये बैठे हैं और सारे नगर में सुख छाय रहा है ॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षितसे कहा कि महाराज नारदजी पुरीमें जातेही मगनहो कहने लगे कि प्रथम किस मंदिरमेंजाऊं जो श्रीकृष्णचंद्र को पाऊं महाराज मनहींमन इतना कह नारदजी पहिले श्रीरुक्मिणीजी के मन्दिर में गये वहां श्रीकृष्णचन्द्र बिराजते थे सो इन्हें देख उठ खड़े भये रुक्मिणीजी जलकी झारी भर लाईं प्रभु ने पांव धोय आसन पर बैठाय धूपदीपनेवेद्य धर पूजाकर हाथ जोड़ नारदजीसे कहा ॥

चौ० सुनोमुनीशसोईबड़भागी।जोसुरधेनुबिप्रअनुरागी ॥
जाघर चरणसाधुके परें। तेनरसुख संपति अनुसरें ॥
हमसे कुटमी तारणहेतु। घरहि आय तुमदर्शनदेतु॥

महाराज प्रभुके मुखसे इतना बचन निकलतेही यह अर्शीप दे नारद

जी जाम्बवती के मन्दिर में गये कि जगदीश तुम चिरंथिर रहो श्री रुक्मिणी जीके शीश फिर देखा कि हरि सारपांसे खेल रहेहैं नारदजी को देखतेही ज्यों प्रभुउठे त्यों नारदजी आशीर्बाद दे उलटे फिरे पुनि सत्यभामा के यहां गये तोदेखा कि श्रीकृष्णचंद्र बैठे तेल उबटन लगवायरहे हैं वहांसे चुपचाप नारदजी फिर आये इसलिये कि शास्त्रमें लिखा है कि तेल लगाने के समय न राजा प्रणाम करे न ब्राह्मण अशीष दे आगे नारदजी कालिन्दी के घर गये वहां देखा किहरि सोरहेहैं महाराज कालिन्दीने नारदजी को देखतेही हरि के पांव दाब जगाया प्रभु जागतेही ऋषिके निकट जाय दण्डवत कर हाथ जोड़ बोले किसाधुके चरण तीर्थ के जल समान हैं जहां पड़े तहां पवित्र करते हैं यह सुन वहांसे भी आशिषदे नारदजी चल खड़ेहुए और मित्रवृन्दाके धाम गये तहां देखाकि ब्रह्मभोज होरहाहै और श्रीकृष्ण परोसतेहैं नारदजीको देख प्रभुने कहा कि महाराज जो कृपाकर आये होतो आपभी प्रसाद ले हमें उच्छिष्टदीजे औ घर पवित्र कीजे नारदजीने कहा महाराज मैं थोड़ा फिर आऊं तब खाऊंगा ब्राह्मणों कोजिमा लीजे फिर ब्रह्मशेष आय मैं पाऊंगा यों सुनाय नारदजी बिदाहो सत्याके गृह पधारे वहां क्या देखतेहैं कि श्री बिहारी भक्त हितकारी आनन्दमे बैठे बिहार कररहेहैं यह चरित्र देख नारदजी उलटे पांओं फिरे पुनि भद्राके स्थानपर गये तोदेखा कि हरि भोजन कर रहेहैं वहांसे फिरेतो लक्ष्मणा के गृह पधारे तो तहां देखा कि प्रभु स्नान कर रहेहैं इतनी कथा सुनाय शुकदेवजी बोले कि महाराज इसी भांति नारदमुनि जी सोलह सहस्र एकसौ आठघर फिरे पर बिन श्रीकृष्ण कोई नदेखा जहां देखा तहां हरिको गृहस्थाश्रम का काजही करते देखा यह चरित्र लख ॥

चौ० नारदके मनअचरजयेह । कृष्णबिनानहिंकोऊगेह ॥
जाघरजाऊंतहांहरिप्यारीऐसीप्रभुलीलाबिस्तारी
सोलहसहस्रअठोतरसौघरतहांरसुंदरिसंगगिरिधर
मगनहोयऋषिकहतबिचारीयहमायाबदुनाथतिहारी
काहूसों नहिंजानी परै । कौन तिहारी मायातरै॥

महाराज जब नारदजीने अचंभा कर कहे ये बैन तब बोले प्रभु श्री कृष्णचंद्र सुखदैन कि नारद तू अपने मनमें कुछ खेद मतकरै मेरी माया

अति प्रबलहै औ सारेसंसारमें फैलरहीहै यह मुझेही मोहतीहैंतोदूसरे की क्या सामर्थ्य है जो इसके हाथसे बचे औ जगत के बीच आय इसमेंनरचे

चौ० नारदमुनिबिनवैंशिरनाय । मोपैकृपाकरौयदुराय ॥

जो आपकी भक्ति सदा मेरे चितमें रहे औ मेरा मन माया के बश होय बिषय की बासना न चहै राजा इतना कह नारदजी प्रभुसे बिदाहो दण्डवत्करं बीणा बजाते गुण गाते अपने स्थान को गये औ श्रीकृष्णचन्द्र जी द्वारका में लीला करते रहे ॥ इतिश्रीलालकृते प्रेमसागरे नारद माया दर्शनो नाम सप्ततितमोऽध्यायः ७० ॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज एक दिन श्रीकृष्णचंद्र राचि समय श्रीरुक्मिणीजी के साथ बिहार करतेथे औ रुक्मिणीजी आनन्दमें मगन बैठी प्रीतम का चंद्रमुख निरख अपने नयन चकोरों को सुखदेती थीं कि इसबीच रात ब्यतीत भई चिड़ियां चुहचुहाईं अम्बरमें अरुणाई छाई चकोरों को बियोग हुआ औ चकवा चकवियों को संयोग कमल बिकसे कुमोदिनी कुंभुलाई चंद्रमा छबि छीन भया औ सूर्य्य का तेज बढ़ा सब लोग जागे औ अपना २ गृह काज करने लगे उस काल रुक्मिणीजी तो हरिके समीप से उठ शौच संकोच लिये घरकी टहल टकोर करने लगीं औ श्रीकृष्णचंद्रजी देह शुद्धकर हाथ मुंह धोय स्नान कर जपध्यान पूजा तर्पण से निश्चन्त हो ब्राह्मणों को नाना प्रकारके दान दे नित्य कर्म से सुचित्त हो बालभोग पाय पान लौंग इलायची जावित्री जायफल के साथ खाय सुथरे बस्त्र आभूषण मंगाय पहन शस्त्र लगाय राजा उग्रसेनके पास गये पुनि जुहारकर यदुबंशियों की सभा के बीच आय रत्न सिंहासन पर बिराजे महाराज उसी समय एक ब्राह्मण ने जाय द्वारपालों से कहा कि तुम श्रीकृष्णचन्द्रजी से जाकर कहो कि एक ब्राह्मण आप के दर्शन की अभिलाषा किये द्वार पर खड़ा है जो प्रभु की आज्ञा पावे तो भीतर आवे ब्राह्मण की बातसुन द्वारपालने भगवान्से जाकहा कि महाराज एकब्राह्मण आपके दर्शनकी अभिलाषा किये पौरपर खड़ाहै जो आज्ञा पावे तो आवे हरि बोले अभी लाव प्रभुके मुखसे बात निकलतेही हाथों हाथ ब्राह्मण को सम्मुख द्वारपाल लेगये बिप्रको देखतेही श्रीकृष्णचन्द्र सिंहासन से उतर दण्डवत कर आगे बढ़ हाथ पकड़ उसे मन्दिरमें लेगये और रत्न सिंहासन पर अपने पास बिठाय पूछने लगे कि कहो देवता आप का आना कहां से भया औ किस कार्य्य के हेतु पधारे ब्राह्मण बोला कृपासिंधु

दीनबंधु मैं मगधदेश से आयाहूं औ बीस सहस्र राजेंका संदेशा लायाहूं प्रभु बोले सो क्या ब्राह्मण ने कहा महाराज जिन बीस सहस्र राजों को जरासन्धने बलकर पकड़ हथकड़ी औ बेड़ी दे रक्खा है तिन्होंने मेरेहाथ आपको अति बिनती कर यह संदेशा कहला भेजा है कि दीनानाथ तुम्हारी सदा सर्बदा से यह रीतिहै कि जब २ असुर तुम्हारे भक्तोंको सताते हैं तब २ तुम अवतार ले अपने भक्तों की रक्षा करतेहो नाथ जैसे हिरण्यकशिपुसे प्रह्लादको छुड़ाया औ गजको ग्राहसे तैसेही दयाकर अब हमें इस महादुष्ट के हाथसे छुड़ाओ हम महाकष्टमें हैं तुम बिन और किसी की सामर्थ्य नहीं जो इस महाबिपति से निकाले औ हमाराउद्धार करै महाराज इतनी बातके सुनतेही प्रभु दयालु हो बोले कि हे देवता तुम अब चिन्ता मत करो उनकी चिन्ता मुझे है इतनी बात के सुनतेही ब्राह्मण सन्तोष कर श्रीकृष्णचंद्र को आशीष देने लगा इसबीच नारदजी आ उपस्थित हुए प्रणामकर श्रीकृष्णचंद्र ने उनसे पूछा कि नारदजी तुम सब ठौर जातेहो कहो हमारे भाई युधिष्ठिर आदि पांचों पांडव इनदिनों कैसेहैं औ क्या करतेहैं बहुतदिनोंसे हमने उनके कुछ समाचार नहींपाये इस्से हमारा चित्त उन्हीं में लगाहै नारदजी बोले कि महाराज मैं उन्हीं के पास से आताहूं हैं तो कुशलक्षेम से पर इनदिनों राजसूय यज्ञ करनेकेलिये निपट भावित हो रहे हैं औ घड़ी २ यह कहते हैं कि बिना श्रीकृष्णचंद्रजी की सहायताके हमारा यज्ञ पूरा नहोगा इस्सेमहाराज मेरा कहा मानियेतो॥

चौ० पहिलेउनकोयज्ञसंभारो। पीछेकरअनतपगधारो॥

महाराज इतनी बात नारदजी के मुख से निकलतेही प्रभुने उद्धव जी को बुलाके कहा ॥

चौ० उद्धवतुमहोसखाहमारे।मनआंखनतेकबहुंनन्यारे॥
दुहुंओरकीभारी भीर। पहिलेकहांचलैंकहु बीर॥
उतराजासंकटमेंभारी। दुखपावतकियेआशहमारी
इतपांडवमिलयज्ञरचायो। ऐसेकहिप्रभुबचनसुनायो

इति श्रीलालकृतेप्रेमसागरेराजायुधिष्ठिरसंदेशोनामैकसप्ततितमोऽध्यायः ७१ ॥

श्रीशुकदेव जी बोले कि महाराज पहिले तो श्रीकृष्णचन्द्रजी ने जो राजाओं का संदेशा लायाथा उस ब्राह्मण को इतना कह बिदा किया कि देवता तुम हमारी ओर से सब राजाओं से जाय कहो कि तुम किसी बात

की चिन्ता मत करो हम वेग आय तुम्हें छुड़ावेंहैं महाराज यह बात कह श्रीकृष्णचंद्र ब्राह्मण को बिदा कर उद्धवजी को साथ ले राजा उग्रसेन की सभा में गये इन्होंने सब समाचार उनके आगे कहे वे सुनकर चुप होरहे इसमें उद्धवजी बोले कि महाराज ये दोनों काज कीजे पहिले राजाओं को जरासन्ध से छुड़ा दीजे पीछे चल कर यज्ञ संवारिये क्योंकि राजसूययज्ञ का कामबिन राजा और कोई नहीं करसक्ता औ वहां बीस सहस्र नृप इकट्ठे हैं उन्हें छुड़ाओगे तो वे सब गुणमान यज्ञका काज बिन बुलाये जाकर करेंगे महाराज और कोई दशों दिशा जीत आवेगा तौभी इतने राजा इकट्ठे नपावेगा इस्से अब उत्तम यही है कि हस्तिनापुर को चलिये पांडवों से मिल मताकर जो काम करना हो सो करिये महाराज इतना कह पुनि उद्धवजी बोले कि महाराज राजा जरासन्ध बड़ा दाता औगी ब्राह्मण का मानने औ पूजनेवाला है जो कोई उस्से जाकर मांगता है सो पाता है याचक उसके यहां से बिमुख नहीं आता वह झूंठ नहीं बोलता जिस्से बचनबद्ध होताहै उस्से निबाहताहै औ दश सहस्र हाथी का बल रखता है उसके बलके समान भीमसेन का बलहै नाथ जो तुम वहां चली तो भीमसेन को भी साथले चलो मेरी बुद्धि में आताहै कि उस की मीच भीमसेनही के हाथहै इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी ने राजा परीक्षित से कहा कि राजा जब उद्धवजी ने ये बातें कहीं तभी श्रीकृष्णचंद्र जीने राजा उग्रसेन सूरसेन से बिदा हो सब यदुबंशियों से कहा कि हमारा कटक साजो हम हस्तिनापुर को चलेंगे बातके सुनतेही सब यदुवंशी सेना साज लेआये औ प्रभुभी आठों पटरानियों समेत कटक के साथहो लिये महाराज जिस काल श्रीकृष्णचंद्र कुटुम्ब सहित सब सेना ले द्वीमो दे द्वारकापुरी से हस्तिनापुरको चले उससमय की शोभा कुछ बरणीनहीं जाती आगे हाथियों का कोट बांधे दाहिने रथ घोड़ोंकी ओट बीच में रनवास औ पीछे सब सेना साथ लिये सबकी रक्षा किये श्रीकृष्णचन्द्रचले जाते जहां डेरा होताथा तहां कई योजन के बीच एक सुन्दर सुहावना नगर बन जाताथा देश २ के नरेश भय खाय आय २ भेटपर भेट धरते थे औ प्रभु उन्हें भयातुर देख तिन का सब भांति समाधान करते थे निदान इसी धूमधाम से चले २ हरि सब समेत हस्तिनापुर के निकट पहुंचे इसमें किसी ने राजा युधिष्ठिर से आय कहा कि महाराज कोई नृपति अति सेना ले बड़ी भंड़ भाड़से आपके देशपर चढ़ आयाहै आप

बेग उसे देखिये नहीं तो उसे यहां पहुंचा जानिये महाराज इस बात के सुनतेही राजा युधिष्ठिर ने अतिभय खाय अपने नकुल सहदेव दोनों छोटे भाइयों को यह कह प्रभुके पास भेजा कितुम देखि आओ कि कौनराजा चढ़ा आता है राजाकी आज्ञा पातेही ॥

चौ० सहदेवनकुलदेखिफिरआयेराजाकोयहबचनसुनाये
प्राणनाथआयेहैंहरी । सुनिराजाचिन्तापरिहरी ॥

आगे अति आनन्द कर राजा युधिष्ठिरने भीम अर्जुन को बुलाकेकहा कि भाई तुम चारोंभैया आगूजाय श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द को लेआओ महाराज राजाकी आज्ञा पाय और प्रभुका आना सुन वे चारों भाई अति प्रसन्नहो भेट पूजा की सब सामा ओ बड़े पण्डितों को साथ ले बाजेगाजे से प्रभु को लेने चले निदान अति आदर मानसे मिलवेदकी बिधिसे भेट पूजाकर येचारों भाई श्रीकृष्णजीको सब समेत पाटम्बर के पांवड़े डालते चोआ चन्दन गुलाब नीर छिड़कते चांदी सोनेके फूल बर्षाते धूपदीप नैवेद्य करते बाजे गाजेसे नगरमें लेआये राजायुधिष्ठिरने प्रभुसेमिल अति सुखमाना ओ अपना जीवन सुफल जाना आगे बाहरभीतरसबने सबसे मिल २ यथायोग्य परस्पर सन्मान किया ओ नयनों को सुख दिया घर बाहर सारे नगरमें आनन्द होगया ओ श्रीकृष्णचन्द्र वहां रह सबको सुख देनेलगे ॥ इतिश्रीलालकृते प्रेम सागरे कृष्णहस्तिनापुरगमनोनामद्विसप्ततितमोऽध्यायः ७२ ॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज एकदिन श्रीकृष्णचन्द्र करुणासिंधु दीनबंधु भक्तहितकारी ऋषि मुनि ब्राह्मणों की सभामें बैठेथे कि राजा युधिष्ठिर ने आय अति गिड़गिड़ाय बिनती कर हाथ जोड़ शिरनाय के कहा कि हे शिव बिरंचिकेईश तुम्हारा ध्यान करतेहैं सदा सुरमुनिऋषि योगीश तुमहो अलख अगोचर अभेद कोई नहीं जानता तुम्हारा भेद ॥

मुनियोगीश्वरइकचितध्यावतातिनकेमनक्षणकभनआवत ॥
हमको घरहीं दर्शन देतु । मानत प्रेम भक्त के हेतु ॥
जैसी मोहन लीला करो । काहूपैनहिं जाने परो ॥
मायामें भूल्यो संसार । तुमसोंकरत लोकव्यवहार ॥
जोतुमको सुमिरतजगदीश । ताहिआपनोजानतईश ॥
अभिमानीतेंहौ तुम दूर । सतबादी के जीवन मूर ॥

महाराज इतना कह राजा युधिष्ठिर बोले कि हेदीनदयाल आपकी

दया से मेरे सब काम सिद्ध हुए पर एकही अभिलाषा रही प्रभु बोले सो क्या राजाने कहा कि महाराज मेरा यही मनोऽर्थ है कि राजसूय यज्ञकर आपको अर्पण करूं तो भवसागर तरूं ॥

इतनी बात के सुनते ही श्रीकृष्णचन्द्र प्रसन्न हो बोले कि राजा यह तुमने भला मनोऽर्थ किया इसमें सुर नर मुनि ऋषि सब संतुष्ट होंगे यह सबको भाताहै औ इसका करना तुम्हें कुछ कठिन नहीं क्योंकि तुम्हारे चारों भाई भीम अर्जुन नकुल सहदेव बड़े प्रतापी औ अति बलीहैं संसार में ऐसा अब कोई नहीं जो इनके सन्मुखहो पहिले इन्हें भेजिये कि ये जाय दशोंदिशा के राजाओं को जीत अपने बश कर आवें पीछे आप निश्चिन्ताई से यज्ञ कीजे ॥

राजा प्रभुके मुखसे इतनी बात ज्यों निकली त्योंही राजायुधिष्ठिर ने अपने भाइयों को बुलाय कटक दे चारों को चारोंओर भेजदिया दक्षिण को सहदेवजी पधारे पश्चिम को नकुल सिधारे उत्तर को अर्जुन धाये पूर्व में भीमसेनजी आये आगे कितने एक दिनके बीच महाराज वे चारों हरि प्रताप से सात द्वीप नवखण्ड जीत दशोंदिशा के राजाओं को बश कर अपने साथ ले आये उसकाल राजायुधिष्ठिरने हाथजोड़ श्रीकृष्णचंद्रजी से कहा कि महाराज आपकी सहायता से यह काम तो हुआ अब क्या आज्ञा होती है इसमें उद्धवजी बोले कि धर्मावतार सब देशके नरेश तो आये पर अब एक मगधदेश का राजा जरासन्धही आपके बशनहीं और जब तक वह बश न होगा तब तक यज्ञभी करना सफल न होगा महाराज जरासन्ध राजा बृहद्रथका बेटा महाबली बड़ा प्रतापी औ अतिदानी धर्मात्मा है हर किसीकी सामर्थ्य नहीं जो उसका सामना करे इस बात को सुन ज्यों राजा युधिष्ठिर उदास हुये त्यों श्रीकृष्णचन्द्र बोले कि महाराज आप किसी बात की चिन्ता न कीजे भाई भीम अर्जुन समेत हमें आज्ञा दीजे कै तो बल छल कर हम उसे पकड़ लावें कै मार आवें इस बातके सुनतेही राजा युधिष्ठिर ने दोनों भाइयों को आज्ञा दी तब हरि ने उन दोनोंको अपने साथ ले मगध देश की बाट ली आगे जाय पन्थ में श्रीकृष्णजी ने अर्जुन औ भीम से कहा कि ॥

चौ० बिप्ररूपहै पग धारिये। छल बलकर बैरी मारिये॥

महाराज इतनी बात कह श्रीकृष्णचंद्रजी ने ब्राह्मण का भेष किया

उनके साथ भीम अर्जुन ने भी विप्रभेष लिया तीनों त्रिपुण्ड किये पुस्तक कांख में लिये अति उज्ज्वल स्वरूप सुन्दर रूप बनठन कर ऐसे चले कि जैसे तीनों गुण सत्व रज तम देह धरे जाते होंय के तीनोंकाल निदान कितने एक दिनों में चले चले ये मगध देश में पहुंचे औ दोपहर के समय राजा जरासन्ध की पौर पर जा खड़े हुए इनका भेष देख पौरियों ने अपने राजा से जा कहा कि महाराज तीन ब्राह्मण अतिथि बड़े तेजस्वी महा पण्डित अति ज्ञानी कुछ कांछा लिये द्वार पर खड़े हैं हमें क्या आज्ञा होती है महाराज बातके सुनतेही राजाजरासन्ध उठआया औ इन तीनोंको प्रणामकर अति मानसन्मानसे घरमें ले आया आगे बहुदूंहें सिंहासनपर बैठाय आप सम्मुख हाथजोड़ खड़ाहो देखदेखशोच बोला ॥

चौ०याचकजोपरद्वारेआवै।बड़ानृपतिसोअतिथिकहावै॥
बिप्रनहीं तुमयोधाबली। बातन कछूकपट कीभली॥
जोठगठगनिरूपधरिआवै। ठगतीजायभलोनकहावै॥
छिपैनछचीकांतितिहारी। दीखतशूरबीरबलभारी॥
तेजवंततुम तीनों भाई। शिव बिरंचिहरिसेवरदाई॥
मैं जान्योंजियकरनिर्मान। करोदेवतुम आपबखान॥
तुम्हरीइच्छा होसो करौ। अपनीबाचातेनहिंटरौ॥
दानीमिथ्या कबहुंन भाषै। धनतनसर्वसकछूनराखै॥
मांगो सोई दे हौं दान। सुत सुन्दरिसर्वस्वपिरान॥

महाराज इस बात के सुनतेही श्रीकृष्णचन्द्रजी ने कहा कि महाराज किसी समय राजा हरिश्चन्द्र बड़ा दानी हो गया है कि जिसकी कीर्ति अब तक संसार में छाय रही है सुनिये एक समय राजा हरिश्चन्द्र के देशमें काल पड़ा और अन्न बिन सब लोग मरने लगे तब राजाने अपना सर्वस्व बेच बेच सब को खिलाया जब देश नगर का धन गया औनिर्धन हो राजा रहा तद एक दिन सांझ समय यहतो कुटुम्ब सहित भूखा बैठा था कि इसमें बिश्वामित्र ने आय इनका सत देखने को यह बचन कहा महाराज मुझे धन दीजे औ कन्यादान का फल लीजे इस बचन को सुनतेही जो कुछ घरमेंथा सो दिया पुनि ऋषि ने कहा महाराज मेराकाम इतने में न होगा फिर राजाने दास दासी बेच धन ला दिया औ धन जन गंवाय निर्धन निर्जन हो स्त्री पुत्रको ले रहा पुनि ऋषिने कहा कि

धर्म मूर्त्ति इतने धनमें मेरा काम न होगा अब मैं किसके पास जाय मांगूं मुझे तो संसार में तुमसे अधिक धनवान धर्मात्मा दानी कोई नहींदृष्टि आता है एक सुपच मायापाच है कहो तो उससे जा धन मांगू पर इस में भी लाज आती है कि ऐसे दानी राजाको याच उसे क्या याचूं महाराज इतनी बात के सुनतेही राजा हरिश्चन्द्र विश्वामित्र को साथ ले उस चाण्डाल के घर गये और इन्होंने उससे कहा कि भाई तू हमें एक बर्षके लिये गहने धर और इनका मनोर्थ पूरा कर स्वपच बोला ॥

चौ० कैसेटहलहमारीकरिहौराजसतामसमनतेंहरिहौ॥
तुमनृपमहातेजबलधारी। नीचटहलकैखरीहमारी॥

महाराज हमारा तो यही काम है कि स्मशान में जाय चौकी देओ जो मृतक आवें उसका कर पुनि हमारे घर बार की चौकसी करै तुमसे यह हो सके तो मैं रुपये टूं ओ तुम्हें बन्धक रक्खूं राजा ने कहा अच्छा मैं वर्ष भर तुम्हारी सेवा करूंगा तुम इन्हें रुपये दो महाराज इतना बचन राजाके मुखसे निकलतेही स्वपचने बिश्वामित्र को रुपये गिन दिये वह तो अपने घरगया ओ राजा वहां रह उसकी सेवा करने लगा कितने एक दिन पीछे काल बशहो राजा हरिश्चद्र का पुत्र रोहिताश्व मरगया उस मृतक को ले रानी मरघटमें गई और ज्यों चिता बनाय अग्नि संस्कार करनेलगी त्योंही राजा ने आय कर मांगा ॥

चौ०रानीबिलखकहैशिरनायादेखोसमझहियेतुमराय

यह तुम्हारा पुत्र रोहित है ओ कर देने को मेरे पास और कुछनहीं एक यह चीर है जो पहिरे खड़ी हूं राजा ने कहा मेरा इसमें कुछ बश नहीं मैं स्वामी के कार्य्य पर खड़ा हूं जो स्वामीका काम न करूं तो मेरा सत जाय महाराज इस बात के सुनतेही रानी ने चीर उतारने को ज्यों आंचल पर हाथ डला त्यों तीनोंलोक कांपउठे वोहीं भगवान ने राजा रानी का सत देख पहिले एक बिमान भेज दिया और पीछे से आय दर्शन दे तीनों का उद्धार किया महाराज जब बिधाता ने रोहित को जिलाया राजा रानी को पुत्र सहित बिमान पर बैठाय बैकुण्ठ जाने की आज्ञाकी तब राजा हरिश्चद्र ने हाथ जोड़ भगवान से कहा कि हे दीनबंधु पतित पावन दीन दयाल मैं सुपच बिन बैकुंट धाम में जा क्या करूं बिश्राम इतना बचन सुन और राजा के मनका अभिप्राय जान श्री भक्त हितकारी

करुणा सिंधु हरिने पुरी समेत सुपचको भी राजारानी कुंवरके साथतारा ॥

वहहरिश्चन्द्रअमरपदपायो यहांयुगनयुगयशचलिआयो

महाराज यह प्रसंग जरासन्ध को सुनाय श्रीकृष्णचंद्र जीने कहा कि महाराज और सुनिये कि रन्तिदेव ने ऐसा तपकिया कि अड़तालिश दिन बिन पानी रहा और जब जल पीने बैठा तिसी समय कोई प्यासा आया इसने वह नीर आप न पिया उस तृषावन्त को पिलाया उस जलदान से उसने मुक्ति पाई पुनि राजा बलिने अति दान किया तो पाताल का राज्य लिया और अबतक उसका यश चला जाता है फिर देखिये कि उद्दालक मुनि छठे महीने अन्न खाते थे एक समय खाती बिरियां उनके यहां अतिथि आया उन्ने अपना भोजन आप न खाया भूखे को खिलाया और उस क्षुधाही में मरे निदान अन्नदान करने से बैकुंठ को गये चढ़ कर बिमान पुनि एक समय देवताओं को साथ ले राजा इंद्रने जाय दधीचि से कहा कि महाराज हम वृत्तासुर के हाथसे अब बच नहीं सक्ते जो आप अपना अस्थि हमें दीजे तो उसके हाथ से बचे नहीं तो बचना कठिन है क्योंकि तुम्हारे हाड़ के आयुध बिन किसी भांति न मारा जायगा महाराज इतनी बातके सुनतेही दधीचि ने शरीर गाय से चटवाया जांघका हाड़ निकाल दिया देवताओं ने ले उस अस्थि का बज्र बनाया औ दधीचि ने प्राण गवांया बैकुंठ धाम पाया ॥

चौ० ऐसे दाता भये अपार। जिनको यश गावत संसार॥

राजा योंकह श्रीकृष्णचंद्रजी ने जरासन्ध से कहा कि महाराज जैसे आगे और युगमें धर्मात्मा दानी राजा होगये हैं तैसे अब इस काल में तुमहो क्यों आगे उन्होंने याचकों की अभिलाषा पुरी की त्यों तुम अब हमारी आश पुजाओ कहा है ॥

दो० याचक कहा न मांगई दाता कहा न देय।
गृहसुतसुन्दरिलाभनहिं तनधनदेयअलेय॥

इतने बचन प्रभुके मुखसे निकलतेही जरासंध बोला कि याचक को दाता की पीर नहीं होती तौभी दानी धीर अपनी प्रकृति नहीं छोड़ता इसमें सुख पावे के दुख देखो हरिने कपट रूपकर बामन बन राजाबलि के पास जाय तीन पग पृथ्वी मांगी उस समय शुक्रने बलि को चितायां तौभी राजाने अपना प्रण न छोड़ा ॥

चौ० देहसमेत रही तिन दई । ताकी जगमें कीरतिभई ॥
याचक विष्णुकहायप्रलीना । सर्वसलैताऊछठकीना

इससे तुम पहले अपना नाम भेद कहो तद जो तुम मांगोगे सो मैं दूंगा मैं मिथ्या नहीं भाषता श्रीकृष्णचंद्र बोले कि सुना हम सची हैं बासुदेव मेरा नामहै तुम भली भांति हमें जानते हो औ ये दोनों अर्जुन भीम हमारे फुफेरे भाईहैं हम युद्ध करने को तुम्हारे पास आये हैं हम से युद्धकीजे हम यही तुम से मांगने आये हैं और कुछ नहीं मांगते महाराज यह बात श्रीकृष्णचंद्रजी से सुन जरासन्ध हंसकर बोला कि मैं तुमसे क्या लडूं तू मेरे सोंहीं से भाग चुकाहै और अर्जुन से भी न लडूंगा क्योंकि यह बिदर्भ देश गया था करके नारीका भेष रहा भीमसेन कहो तो इससे लडूं यह मेरी समानकाहे इससे लड़नेमें मुझेकुछ लाजनहीं ॥

चौ० पहलेतुमसबभोजनकरो । पीछे मल्ल अखारे लरो ॥
भोजनदेनृपबाहिरआयो । भीमसेनतहंबोलपठायो ॥
अपनीगदाताहितिनदई । गदादूसरी आपुनलई ॥
दो० जहांसभामंडलबन्यो बैठेजायमुरारि ।
जरासंधअरुभीमतहं भएठाढ़ेइकबारि ॥
चौ० टोपी शीश काछनी काछे । बनेरूप नटवर के आछे ॥

महाराज जिस समय दोनोबीर अखाड़े में खम्भ ठोंक गदा तान धज पलट झूमकर संमुख आये उसकाल ऐसे जनाये कि मानों दो मतंग मतवाले उठि धाये आगे जरासंध ने भीमसे कहा कि पहले गदा तू चला क्योंकि तू ब्राह्मण का भेष ले मेरी पौरपर आया था इससे मैं पहिले प्रहार तुम पर न करूंगा यह बात सुन भीमसेन बोले कि राजा हमसे तुमसे धर्मयुद्धहै इससे यह ज्ञान न चाहिये पहले शस्त्रकरो महाराज उनदोनों बीरोंने परस्पर ये बातें कर एक साथही गदा चलाई और युद्धकरने लगे

चौ० ताकतघातैंअपनीअपनी । चोटकरतबाहैंअरुदहनी ॥
अंगबचाय उछरि पगधरैं । झरपैं गदागदा सोंखरैं ॥
खटपटचोटगदापटकारी लागतशब्दकुलाचलभारी

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षित से कहाकि महाराज इसी भांतिये दोनोंबली दिनभर तो धर्मयुद्ध करते औ सांझको घर आय एक साथ भोजनकर बिश्राम ऐसे नित्य लड़ते २ सत्राइस दिन भये तब

एक दिवस उनदोनों के लड़ने के समय श्रीकृष्णचन्द्र जीने मनहीं मन बिचारा कि यहतो न मारा जायगा क्योंकि जब यह जन्मा था तब दो फांक हो जन्मा था उस समय जरा राक्षसी ने आय जरासन्ध का मुह औ नाक मूंदी तब दोनों फांक मिलगईं यह समाचार सुन उसके पिता वृहद्रथ ने ज्योतिषियोंको बुलायके पूछा कि कहो इसलड़केका नाम क्याहोगा औ कैसाहोगा ज्योतिषियों ने कहा कि महाराज इसका नाम जरासन्ध हुआ औयह बड़ा प्रतापी औ अजर अमर होगा जबतक इसकी संधि न फटैगी तबतक यह किसी से न मारा जायगा इतना कह ज्योतिषी बिदा हो चले गये महाराज यहबात श्रीकृष्णजी ने मनमें सोच औ अपना बलदे भीमसेन को तिनका चीर सैन से जताया कि इसे इसीरीतिसे चीरडालो प्रभुके चितातेही भीमसेन ने जरासंध को पकड़ देमारा और एक जांघ पर पांवदे दूसरा पांवहाथसे पकड़यों चीर डालाकि जैसे कोई दातन चीर डालेजरासन्धके मरतेही सुर नर गन्धर्ब ढोल दमामें भेर बजाय २ फूल बरषाय २ जय जय कार करने लगे औ दुख द्वन्द जाय सारे नगर में आनन्द होगया उसी बिरियां जरासन्धकी नारी रोती पीटती आ श्रीकृष्ण चन्द्र जीके संमुख खड़ी हो हाथ जोड़ बोली कि धन्य हे धन्य हे नाथ तुमने जो ऐसा काम किया कि जिसने सर्बस दिया तुमने उसका प्राणलिया जो जन तुम्हें सुतबित्त समरपै देह तिसके साथ तुम करतेहो ऐसाहीस्नेह

चौ०कपटरूपकरछलबलकियोजगतआयतुमयहयशलियो

महाराज जरासंध की रानी ने जब करुणाकर करुणानिधान के आगे हाथजोड़ बिनती कर कहा तब प्रभु ने दयाल हो पहिले जरासन्ध की क्रियाकी पीछे उसके सुत सहदेव को बुलाय राजतिलकदे सिंहासन पर बिठाय के कहा कि पुत्र नीति सहित राज कीजो और ऋषि मुनि गो ब्राह्मण की रक्षा ॥ इति श्रीलालकृते प्रेमसागरे जरासंध बधो नाम त्रिसप्ततितमोऽध्यायः ७३ ॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज राज पाटपर बैठाय समझाय श्रीकृष्ण चन्द्रजी ने सहदेव से कहा कि राजा अब तुमजाय उन राजाओं को ले आओ जिन्हें तुम्हारे पिताने पहाड़की कन्दरामें मूंदरक्खा है इतना बचन प्रभु के मुख सुनतेही जरासन्ध का पुत्र सहदेव बहुत अच्छाकर कन्दराके निकट सेजाय उस के मुखसे शिला उठाय आठसौ बीस सहस्र

राजाओं को निकाल हरिके सम्मुख ले आया आतेही हथकड़ियां बेड़ियां पहने गले में सांकल लोहेकी डाले नख केश बढ़ाये तनछीन मनमलीन मैले भेष सब राजा प्रभु के सम्मुख पांति २ खड़े हो हाथजोड़ बिनती कर बोले हे कृपासिंधु दीनबन्धु आपने भले समय आय हमारी सुधली नहीं तोसब मरचुके थे तुम्हारा दर्शन पाया हमारे जीमें जीआया पिछला दुःख सब गंवाया महाराज इसबातके सुनतेही कृपासागर श्रीकृष्णचन्द्रने ज्यों उन पर दृष्टि की त्यों बातकी बात में सहदेव उनको लेजाय हथकड़ी बेड़ीकड़ी कटवाय क्षौरकराय न्हिलाय धुलवाय पट्रस भोजन खिलाय वस्त्र आभूषण पहराय शस्त्र अस्त्र बंधवाय पुनि हरि के सोहीं लिवाय लाया उसकाल श्रीकृष्णचन्द्रजी ने उन्हें चतुर्भुजी हो शंखचक्र गदा पद्म धारण कर दर्शनदिया प्रभुका स्वरूप भूप देखतेही हाथ जोड़ बोले नाथ तुम संसार के कठिन बन्धनसे छोड़ातेहो तुम्हें जरासंधकी बन्दसे छुड़ातेक्या कठिनथा जैसे आपने कृपाकर हमें इसकठिन बन्धन से छुड़ाया तैसेही अब हमें यहरूपकूपसे निकालकाम क्रोध लोभ मोहसे छुड़ाइयेगा हम एकान्त बैठ आपका ध्यानकरें औ भवसागरतरें श्रीशुकदेवजी बोले कि राजा जब सबराजाओंने ऐसे ज्ञान बैराग्यभरे बचन कहे तब श्रीकृष्णचन्द्रजी प्रसन्न हो बोले कि सुनो जिनके मन में मेरी भक्ति है वे निःसंदेह भक्ति मुक्ति पावेंगे बंध मोक्ष मनही का कारण है जिसका मन स्थिर है तिन्हें घर औ बन समान है तुम और किसीबात की चिन्ता मतकरो आनन्दसे घर में बैठ नीति सहित राज्यकर प्रजा को पालो गो ब्राह्मण की सेवामें रहो झूंठ मत भाषो काम क्रोध लोभ अभिमान तजो भाव भक्तिसे हरि को भजो तुम निःसंदेह परम पद पावोगे संसार में आय जिसने अभिमान किया वह बहुत न जिया देखो अभिमान ने किसे २ न खोदिया॥

सहस्रबाहु अतिबलीबखान्यो। परशुरामताको बलभान्यो
बेणु भूप रावण होगयो। गर्ब आपने सोऊ गयो॥
भौमासुर बाणासुर कंस। भये गर्ब ते ते विध्वन्स॥
श्रीमदगर्बकरोजिनकोय। त्यागे गर्ब सो निर्भयहोय॥

इतना कह श्रीकृष्णचन्द्रजी ने सब राजाओं से कहा कि अब तुम अपने घर जाओ कुटुम्ब से मिल अपना राज पाट संभाल हमारे न पहुंचते न पहुंचते हस्तिनापुर में राजा युधिष्ठिर के यहां राजसूय यज्ञ में

शीघ्र आओ महाराज इतनी वचन श्रीकृष्णचन्द्रजी के मुखसे निकलतेही सहदेव ने सब राजाओं के जाने का सामान जितना चाहिये तितना बात की बात में ला उपस्थित किया वे ले प्रभु से बिदा हो अपने २ देश को गये औ श्रीकृष्णचन्द्रजी भीसहदेवको साथले भीम अर्जुन सहित वहां से चले २ आनन्द मंगल से हस्तिनापुर आये आगे प्रभुने राजा युधिष्ठिर के पास जाय जरासन्ध के मारने के समाचार और सब राजाओं के छुड़ानेके ब्यौरे समेत कहसुनाये इतनीकथा कह शुकदेवजीने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द जीके हस्तिनापुर पहुंचते २ वे सब राजा भी अपनी २ सेनाले भेट सहित आन पहुंचे और राजा युधिष्ठिरसे भेंटकर भेंटदे श्रीकृष्णचन्द्रजीकी आज्ञा ले हस्तिनापुरके चारोंओर जा उतरे औ यज्ञकी टहलमें आ उपस्थितहुये ॥ इतिश्रीलाल कृतेप्रेमसागरेसर्बभूपति हस्तिनापुरगमनोनामचतुःसप्ततितमोध्यायः ॥ ७४

श्री शुकदेवजी बोले कि राजा जैसे यज्ञ राजा युधिष्ठिर ने किया औ शिशुपाल मारा गया तैसे मैंसब कथा कहताहूं तुम चित्त लगाय सुनो भीम सहस्र आठसौ राजाओं के जातेही चारों ओरके और जितने राजाथे क्या सूर्य्यबंशी और क्या चंद्रबंशी तितने सबआय हस्तिनापुर में उपस्थित हुये उस समय श्रीकृष्णचंद्र और राजा युधिष्ठिर ने मिल कर सब राजाओं का सब भांति शिष्टाचार कर समाधान किया और हर एकको एक एक काम यज्ञ का सौंपा आगे श्रीकृष्णचंद्र जीने राजा युधिष्ठिर से कहा कि महाराज भीम अर्जुन नकुल सहदेव सहित हम पांचो भाई तो सब राजाओं को साथ ले ऊपर की टहल करैं और आप ऋषि मुनि ब्राह्मणों को बुलाय यज्ञ का आरंभ कीजिये महाराज इतनी बात के सुनतेही राजा युधिष्ठिर ने सब ऋषि मुनि ब्राह्मणों को बुलाय कर पूछा कि महाराज जोजोवस्तु यज्ञमें चाहिये सो २ आज्ञाकीजिये महाराज इस बातके सुनतेही ऋषिमुनि ब्राह्मणों ने ग्रंथ देख २ यज्ञ की सब सामग्री एक पत्र पर लिख दी और राजाने वोहीं मंगाय उनके आगे धरवादी ऋषि मुनि ब्राह्मणों ने मिल यज्ञ की वेदी रची चारोंवेदके सब ऋषि मुनि ब्राह्मण वेदी के बीचआसन बिछाय जा बैठे पुनि पबित्र होय स्त्री सहित गांठ जोरि बांध राजा युधिष्ठिर भी आय बैठे औ द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य धृतराष्ट्र दुर्योधन शिशुपाल आदि जितने योद्धा औ बड़े २ राजा थे वेभी आन बैठे ब्राह्मणों ने स्वस्ति बाचन कर गणेश पुजवाय कलश स्थापन कर गृहस्थापन किया

राजाने भारद्वाज गौतम बशिष्ठ बिश्वामित्र बामदेव पराशर ब्यास कश्यप आदि बड़े २ ऋषि मुनि ब्राह्मणों का बरण किया औ उन्होंने बेद मंत्र पढ़ २ सब देवताओं का आवाहन किया औ राजासे यज्ञका संकल्प करबाय होम का आरंभ किया महाराज मंत्र पढ़ २ ऋषि मुनि ब्राह्मण आहुति देनेलगे औ देवता प्रत्यक्ष हाथ बढ़ाय २ लेनेउस समय ब्राह्मण बेद पाठ करते थे औ सब राजा होमने की सामग्री ला ला देते थे औ राजा युधिष्ठिर होमते थे कि इसमें निरद्वन्द यज्ञ पूर्ण हुआ और राजा ने पूर्णाहुति दी उस काल सुर नर मुनि सब राजा को धन्य धन्य कहने लगे और यज्ञ गन्धर्ब किन्नर बाजन बजाय बजाय यश गाय गाय फूल बरषावने इतनी कथा कह श्री शुकदेवजी ने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज यज्ञसे निश्चिन्त हो राजा युधिष्ठिर ने सहदेव जी को बुलाय के पूछा

चौ० पहिलेपूजाकाकीकीजै। अच्छतितिलककौनकोदीजै॥
कौनबड़ो देवनकोईश। ताहिपजिहमनावहिंशीश॥

सहदेव जी बोले कि महाराज सब देवों के देव हैं बासुदेव कोई नहीं जानता इनका भेव येहैं ब्रह्मा रुद्र इंद्र के ईश इन्हों को पहिले पुजवाइये नाइये शीश जैसे तरवर की जड़में जल देनेसे सब साखा हरी होतीहैं तैसे हरिकी पूजा करने से सब देवता संतुष्ट होते हैं यही जगत के करता हैं औ यही उपजते पालते मारते हैं इनकी लीला है अनन्त कोई नहीं जानता इनका अंत येई हैं प्रभु अलख अगोचर अबिनाशी इन्हीं के चरण कमल सदा सेवती कमला भई दासी भक्तों के हेतु बार २ लेतेहैं अवतार तन धर करते हैं लोक व्यवहार ॥

चौ० बंधुकहत घरबैठे आवैं। अपनी मायामाहिं भुलावैं॥
महामोहहमप्रेमभुलाने। ईश्वरकोभ्राताकरिजाने॥
इनतेबड़ोनदीसतकोई। पूजाप्रथमइन्हीकीहोई॥

महाराज इस बातके सुनतेही सब ऋषि मुनि औ राजा बोल उठे कि राजा सहदेव जीने सत्य कहा प्रथम पूजन योग्य हरिही हैं तब तो राजा युधिष्ठिरने श्रीकृष्णचंद्र जीको सिंहासन पर बैठाय आठों पटरानियों समेत चन्दन अक्षत पुष्प धूप दीप नैवेद्य कर पूजा पुनि सब देवताओं ऋषियों मुनियों ब्राह्मणों औ राजाओं की पूजा की रंग रंग के जोड़े

पहनाय चन्दनकेशर की खौरें की फूलोंके हार पहराय सुगन्ध लगाय यथा योग्य राजा ने सबकी मनुहार की श्रीशुकदेव जी बोले कि राजा॥

चौ० हरिपूजतसबकोसुखभयोशिशुपालहिकोशिरभनयो॥

कितनी एकवेर तक तो वह शिर झुकाये मनहीं मन कुछशोच बिचार करता रहा निदान काल बशहो अति क्रोधकर सिंहासन से उतर सभाके बीच निःसंकोच निडर ह्वो बोला कि इस सभामें धृतराष्ट्र दुर्योधन भीष्म कर्ण द्रोणाचार्य्य आदि सब बड़े २ ज्ञानी मानीहैं पर इस समय सब की मति मति मारी गई बड़े २ मुनीश बैठे रहे और नन्द गोप के सुत की पूजा भई औ कोई कुछ न बोला जिसने ब्रजमें जन्म ले ग्वाल बालों की जूठी छाक खाई तिसीकी इस सभामें भई प्रभुताई बड़ाई॥

चौ० ताहिबड़ोसबकहतअचेतसुरपतिकोबलिकागहिदेत

जिन्ने गोपी औ ग्वालिनियों से स्नेह किया इस सभामें तिसेही सबसे बड़ा साधु बनाय दिया जिसने दूध दही महो माखन घर २ चुरायखाया उसीका यश सबने मिलगाया बाट घाटमें जिन्ने लियादान विसीका यहां हुआ सनमान परनारी से जिसने छल बलकर भोग किया सबने मताकर उसको पहले तिलक दिया ब्रजमें से इंद्रकी पूजा जिसने छड़ाई औ पर्बत की पूजा ठहराई पुनि पूजाकी सब सामग्री गिरिके निकट लिवाय लेजाय मिलकर आपही खाई तोभी उसे लाज न आई जिसकी जाति पांति औ माता पिता कुल धर्मका नहीं ठिकाना तिसी को अलख अबिनाशी कर सबने माना इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेव जीने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज इस भांति से काल बश होय राजा शिशुपाल अनेक २ बुरी बातें श्रीकृष्णचंद्र जीको कहता था औ श्रीकृष्णचंद्र जी सभा के बीच सिंहासन पर बैठे सुन २ एक २ बात पर एक २ लकीर खींचते थे इस बीच भीष्म कर्ण द्रोण औ बड़े २ राजा हरि निन्दा सुन अति क्रोध कर बोले कि अरे मूर्ख तू सभामें बैठा हमारे संमुख प्रभुकी निन्दा करता है रे चांडाल चुप रह नहीं अभी पछाड़ मार डालते हैं महाराज यह कह शस्त्र लेले सब राजा शिशुपाल के मारने को उठ धाये उस समय श्रीकृष्ण चन्द्र आनन्द कन्द ने सबको रोक कर कहा कि तुम इस पर शस्त्र मत करो खड़े २ देखो यह आपसे आपही मारा जाताहै मैं इसके सौ अपराध सहूंगा क्योंकि मैंने बचन हाराहै सोसे बढ़ती न सहूंगा इसी लिये मैं रेखा

काढ़ता जाता हूं महाराज इतनी बात के सुनतेही सबने हाथ जोड़ श्रीकृष्णचन्द्र से पूंछा कि कृपानाथ इसका क्या भेद है जो आप इसके सौ अपराध क्षमा करियेगा सो कृपाकर हमें समझाइये जो हमारे मनका संदेह जाय प्रभु बोले कि जिस समय यह जन्मा था तिस समय इसके तीन नेत्र औ चार भुजा थीं यह समाचार पाय इसके पिता दमघोष राजा ने ज्योतिषियों औ बड़े २ पंडितों को बुलायके पूंछा कि यह लड़का कैसा हुआ इसका बिचार कर मुझे उत्तर दो राजा की बात सुनतेही पंडित और ज्योतिषियों ने शास्त्र बिचार के कहा कि महाराज यह बड़ा बली औ प्रतापी होगा और यह भी हमारे बिचार में आता है कि जिसके मिलने से इसकी एक आंख औ दो बांह गिर पड़ेंगी यह उसी के हाथ मारा जायगा इतना सुन इसकी मा महादेवी सूरसेनकी बेटी बसुदेवकी बहन हमारी फुफी अति उदास भई औ आठ पहर पुत्रही की चिन्ता में रहने लगी कितने एक दिन पीछे एक समय पुत्रको लिये पिताके घर द्वारका में आई और इसे सबसे मिलाया जब यह मुझसे मिलाओ इसकी एक आंख और दो बांह गिर पड़ीं तब फुफी ने मुझे बचनबद्ध करके कहा कि इसकी मीच तुम्हारे हाथहै तुम इसे मत मारियो मैं यह भीखतुमसे मांगती हूं मैंने कहा अच्छा सौ अपराध हम इसके न गिनेंगे इसउपरान्त अपराध करेगा तो हनेंगे हमसे यह बचन ले फुफू सब से बिदा हो इतना कह पुत्रसहित अपने घरगई कि यह सोअपराध क्यों करेगा जोकृष्णके हाथसे मरेगा महाराज इतनी कथा सुनाय श्रीकृष्णजी ने सब राजाओंके मनका भ्रम मिटाय उन लकीरों को गिना जो एकएक अपराध पर खैंचीथीं गिनतेही सौसे बढ़ती हुई तभी प्रभुने सुदर्शनचक्र को आज्ञादी उस ने झट शिशुपाल का शिर काट डाला उसके धड़से जो ज्योति निकली सो एक बारतो आकाशको धाई फिर आय सबके देखतेही श्रीकृष्णचन्द्रके मुखमें समाई यह चरित्र देख सुर नर मुनि जयजयकार कर ने लगे औ पुष्प वर्षाने उसकाल श्रीमुरारी भक्त हितकारी ने उसे तीसरी मुक्तिदी औउस की क्रिया की इतनी कथा सुन राजा परीक्षित ने श्रीशुकदेवजी से पूछा कि महाराज तीसरी मुक्ति प्रभुने किस भांतिदी सो मुझेसमझायके कहिये शुकदेवजी बोले कि राजा एक बार यह हिरण्यकश्यपु हुआ तब प्रभु ने नृसिंह अवतार ले तारा दूसरी बेर रावण भया तो हरिने रामावतार ले इसका उद्धार किया अब तीसरी बिरियां यहहै इसीसे तीसरी मुक्ति भई

इतना सुन राजाने मुनिसे कहा कि महाराज अब आगे कथा कहिये श्री शुकदेवजी बोले कि राजा यज्ञके हो चुकतेही राजायुधिष्ठिरने सबराजाओं को स्त्री सहित बागे पहिराय ब्राह्मणोंका अगणितदान दिया देनेका काम यज्ञमें राजा दुर्योधन का था द्वेषकर एककी ठौर अनेक दिये इसमें उस कायश हुआ तौभी वह प्रसन्न न हुआ ॥

इतनी कथाकह श्रीशुकदेवजी ने राजा परीक्षितसे कहा कि महाराज यज्ञ के पूर्ण होतेही श्रीकृष्णजी राजा युधिष्ठिर से बिदा हो सब सेना ले कुटुम्ब सहित हस्तिनापुर से चले २ द्वारकापुरी पधारे प्रभुके पहुंचतेही घरघर मंगलाचार होने लगा औ सारे नगरमें आनन्द होगया ॥

इतिश्रीलालकृतेप्रेमसागरेशिशुपालमोक्षोनामपञ्चसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७५ ॥

राजा परीक्षित बोले कि महाराज राजसूय यज्ञ होनेसे सबकोई प्रसन्न हुये एक दुर्योधन अप्रसन्नहुआ इसका कारण क्याहै सो तुममुझे समझायके कहो जो मेरे मनका भ्रम जाय श्रीशुकदेवजी बोले राजा तुम्हारे पितामह बड़ेज्ञानी थे विन्होंने यज्ञमें जिसे देखा तिसे तैसा कामदिया भीम को भोजन करवाने का अधिकारी किया पूजापर सहदेव को रक्षा धन लानेको नकुल रहे सेवा करने पर अर्जुन ठहरे श्रीकृष्णजी ने पांव धोने औ जूठी पत्तल उठानेका काम लिया दुर्योधन को धन बाटनेका कार्य्य दिया और सब जितने राजाथे तिन्होंने एकएक काम बांटलिया महाराज सबतो निःकपट यज्ञकी टहल करते थे पर एक राजा दुर्योधनही कपट सहित काम करताथा इससे वह एककी ठौर अनेक उठाताथा निजमनमें यहबात ठानके कि इनका भण्डार टूटे तो अप्रतिष्ठाहो पर भगवत् कृपा से अप्रतिष्ठा न हुई और यश होताथा इसलिये वह अप्रसन्न था और वह यहभी न जानता था कि मेरे हाथमें चक्रहै एकरुपया टूंगातो चारइकट्ठे होंगे इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि राजा अबआगे कथा सुनिये श्रीकृष्णचन्द्र जीके पधारतेही राजा युधिष्ठिर ने सब राजाओं को खिलाय पिलाय पहराय अति शिष्टाचार कर बिदा किया वे दल साज २ अपने २ देशको सिधारे आगे राजा युधिष्ठिर पांडव औ कौरवोंको ले गंगास्नान को बाजे गाजेसे गये तीर पर जाय दंडवत् कर रजलगाय आचमनकर स्त्री सहित नीरमें पैठे उनके संग सबने स्नानकिया पुनि न्हाय धोय संध्या पूजासे निश्चिन्त होय बस्त्र आभूषण पहन सबको साथलिये राजा युधिष्ठिर कहां आतेहैं कि जहांमयदैत्यने मन्दिर अतिसुन्दर सुबर्णके रत्नजटित

बनाये थे महाराज वहां जाय राजा युधिष्ठिर सिंहासनपर बिराजे उसकाल गन्धर्ब गुण गाते थे बन्दीजन यशबखानते थे सभा के बीच यातुर नृत्यकरती थी घरबाहर में मंगली लोगगाय बजाय मंगलाचार करतेऔर राजा युधिष्ठिर की सभा इंद्र की सी सभा होरही थी इस बीच राजा युधिष्ठिर के आनेके समाचार पाय राजा दुर्योधन भी कपटस्नेह किये वहां मिलने को बड़ी धूम धाम से आया इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी ने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज वहां मैं ने चौके के बीच ऐसा काम किया था कि जो कोई जाता था तिसे थल में जलका भ्रम होता था औ जल में थल का महाराज ज्यों दुर्योधन मन्दिर में पैठा त्यों उसे थल देख जलको भ्रम भया उसने बस्त्र समेट उठाय लिये पुनि आगे बढ़ जल देख थलका धोखा हुआ ज्यों पांव बढ़ाया त्यों उसके कपड़े भीगे यह चरित्र देख सबसभा के लोग खिल खिला ठठे राजा युधिष्ठिर ने हंसी को रोक मुंह फेर लिया महाराज सबके हंस पड़तेही राजा दुर्योधन अति लज्जित हो महाक्रोध कर उलटा फिरगया सभा में पैठ कहने लगा श्रीकृष्ण का बलपाय युधिष्ठिर को अति अभिमान हुआहै आज सभामें बैठ मेरी हंसी की इसका पलटा मैं लूं औ उसका गर्ब तोडूं तो मेरा नाम दुर्योधननहीं तो नहीं ॥ इतिश्रीलालकृते प्रे० सा० दुर्योधन मान मर्दनो नाम षट सप्ततितमोध्यायः ॥ ७६ ॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज जिस समय श्रीकृष्णचंद्र औ बलराम जी हस्तिनापुर में थे तिसी समय साल्व नाम दैत्य शिशुपाल का साथी जो रुक्मिणीके ब्याहमें श्रीकृष्णचंद्रजी के हाथकी मार खाय भागाथा सो मनहीं मन इतना कहनेलगा महादेवजी की तपस्या करके अब मैं अपना बैर यदुबंशियों से लूंगा ॥

चौ० । इन्द्रीजीतसबैबशकीनी।भखप्यासतजबहुतुसहलीनी॥
ऐसीबिधितपलाग्योकरने । सुमिरैमहादेवकेचरन ॥
नितउठिमठीरेतसैखाय ।करैकठिनतपशिवमनलाय॥
बरषएकयोंहीबिधिगयो । तबहीं महादेवबरदयो ॥

कि आजसे तू अजर अमर हुआ औ एक रथ मायाका तुझे मय दैत्य बना देगा तू जहां जाने चाहेगा वह तुझे तहां ले जायगा बिमान की भांति त्रिलोकी में उसे मेरे बरसे सब ठौर जानेकी सामर्थ्य होगी महा-

राज सदाशिवजीने ज्यों बरदिया त्यों एकरथ आय इसके सम्मुख खड़ा हुआ यह शिवजीको प्रणाम कर रथ पर चढ़ द्वारका पुरीको धंर धमका वहां जाय नगर निवासियों को अनेक अनेक भांतिकी पीड़ा उपजाने लगा कभी अग्नि बर्षाता था कभी जल कभी वृक्ष उखाड़ नगर पर फेंकताथा कभी पहाड़ उसके डरसे सब नगर निवासी अति भयमान हो भाग राजा उग्रसेनके पास जा पुकारे कि महाराज को दुहाईदैत्य ने आयनगर में अति धूम मचाई जो इसी भांति उपाधि करेगा तो कोई जीता न रहेगा महाराज इतनी बातके सुनतेही राजा उग्रसेन ने प्रद्युम्न जी औ शाम्बको बुलाके कहा कि देखो हरिका पीछा ताक यह असुर आया है प्रजा को दुःख देने तुम इसका कुछ उपाय करो राजा की आज्ञा पाय प्रद्युम्नजी सब कटक लेरथपर बैठ नगरके बाहर जा लड़ने को उपस्थित हुये औ शाम्बको भयातुर देख बोले कि तुम किसी बातकी चिन्ता मतिकरो मैं हरिप्रताप से इस असुरको बातकी बात में मार लेता हूं इतना बचन कह प्रद्युम्न जी सेनालेशस्त्र पकड़ ज्यों उसके सम्मुख हुये तो उसनेऐसी माया की कि दिन की महा अंधेरी रात होगई प्रद्युम्न जी ने वोहींतेज बाण चलाय यों महा अन्धकार को दूर किया कि ज्यों सूर्य्यका तेज कुहारसे को दूर करे पुनि कई एक बाण उन्होंने ऐसे मारे कि उसका रथ अस्त व्यस्त होगया और वह घबराकर कभी भाग जाताथा कभीआय अनेक २ राक्षसी मायाउपजाय२ लड़ता था और प्रभुकी प्रजा को अति दुःख देता था इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी ने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज दोनों ओर से महा युद्ध होताही था इसी बीच एका एकी आय शाल्वदैत्य के मंत्री द्युमान ने प्रद्युम्नजी की छाती में एक गदा ऐसी मारी कि ये मूर्छा खाय गिरे इनके गिरतेही वह किलकारी मारके पुकारा कि मैंने कृष्णके पुत्र प्रद्युम्न को मारा महाराज यादव तो राक्षसों से महा युद्ध कर रहेथे उसी समय प्रद्युम्न जीको मूर्च्छित देख दारुक सारथीका बेटा रथमेंडाल रणसेले भागा और नगरमें लेआया चैतन्यहोतेही प्रद्युम्नजीने अतिक्रोधकर सूतसेकहा ॥

चौ० ऐसोनाहिंउचितहैतोंहि । जानअचेतभजायोमोंहि
रण तजिकैतू लायो धाम । यहतोनहींशूरकोकाम॥
यदुकुलमें ऐसोनहिं कोय । तजिकैखेत जोभाग्योहोय

क्या तैंने मुझे कभी भागते देखा था जो तू आज मुझे रण से भगाय

लाया यहबात जो सुनेगा सो मेरी हंसी और निन्दा करेगा तै ने यहकाम भला न किया जो बिन काम कलंक का टीका लगाय दिया महाराज इतनी बातके सुनतेही सारथी रथ से उतर संमुख खड़ा हो हाथ जोड़ शिरनाय बोला कि हे प्रभु तुम सब नीति जानते हो ऐसा संसार में कोई धर्म्म नहीं जिसे तुम नहीं जानते कहा है ॥

चौ० रथीशूरजोधायलपरै। ताहिसारथीलैनिकरै॥
जोसारथीपरैखाथा। ताहिबचायरथीलैजाय॥
लागीप्रबलगदाअतिभारीमर्छितह्वैसुधिदेहबिसारी॥
तबहौंरणतेलैनीसरयौं। स्वामिद्रोहअपयशतेडरयौं॥
घड़ीएकलीनोबिश्राम। अबचलकर कीजैसंग्राम॥
तुमतेंधर्मनीतिजानिये। जगउपहासन मनआनिये॥
अबतुमसबहीकोबधकरिहौ।मायामयदानवकीहरिहौ॥

महाराज ऐसे कह सूत प्रद्युम्नजी को जलके निकट लेगया वहां जाय उन्होंने मुख हाथपांवधोय सावधान होय कवचटोप पहिनधनुषबाण संभाल सारथी से कहा भला जो भया सो भया पर अब तू मुझे वहां ले चल जहां द्युमान यदुबंशियों से युद्ध कर रहाहै बातके सुनतेही सारथी बात की बात में रथ वहां लेगया जहां वह लड़ रहा था जातेही इन्हों ने ललकार कर कहा कि तू इधर उधर क्या लड़ता है आ मेरे संमुख हो जो तुझे शिशुपाल के पास भेजूं यह बचन सुनतेही वह ज्यों प्रद्युम्न पर आय टूटा त्यों कई एक बाण मार इन्होंने उसे मार गिराया औ शाम्बने भी असुर दल काट काट समुद्र में पाटा इतनी कथा कह श्री शुकदेवजी बोले कि महाराज जब असुर दल से युद्ध करते २ द्वारका में सब यदुबंशियों को सत्ताईस दिन हुये तब अन्तर्य्यामी श्रीकृष्णचंद्र जीने हस्तिनापुर में बैठे २ द्वारका की दशा देख राजा युधिष्ठिर से कहा कि महाराज मैंने रात्रिको स्वप्नमें देखा कि द्वारकामें उपद्रवहो रहाहै औसब यदुबंशी अति दुखी हैं इससे अब आज्ञादो तो हम द्वारका को प्रस्थान करैं यह बात सुन राजा युधिष्ठिर ने हाथ जोड़ कर कहा कि जो प्रभु की इच्छा इतना बचन राजा युधिष्ठिर के मुखसे निकलतेही श्रीकृष्ण बलराम सबसे बिदाहो ज्यों पुरके बाहर निकले त्यों क्या देखते हैं कि बाईं ओर एक हरिणी दौड़ी चली जातीहै औ सोंही श्वान खड़ा शिर झाड़ता

है यह अशकुन देख हरिने बलराम जीसे कहा कि भाई तुम सबको साथले पीछे आओ मैं आगे चलताहूं राजा भाई से यों कह श्रीकृष्णचंद्र जी आगे जाय रणभूमि में क्या देखते हैं कि असुर यदुबंशियों को चारों ओर से बड़ी मार मार रहे हैं औ वे निपट घबराय २ शस्त्र चलाय रहे हैं यह चरित्र देख हरि ज्यों वहां खड़े हो कुछ भावित हुए त्यों पीछे से बलदेवजी भी आ पहुंचे उस काल श्रीकृष्णजी ने बलरामजी से कहा कि भाई तुमजाय नगर औ प्रजाकी रक्षा करो मैं इन्हें मार चला आता हूं प्रभु की आज्ञा पाय बलदेवजी तो पुरी में पधारे औ आप हरि वहां रण मेंगये जहां प्रद्युम्नजी साल्व से युद्ध कर रहे थे यदुपति के आतेही शंखध्वनि हुई औ सबने जाना कि श्रीकृष्णचंद्र आये महाराज प्रभु के आतेही साल्व अपनारथ उड़ाय आकाश में ले गया औ वहां से अग्निमय बाण बर्षानेलगा उस समय श्रीकृष्णजीने सोलह बाण गिनकर ऐसे मारे कि उसका रथ औ सारथी उड़गया औ वह लड़खड़ाय नीचे गिरा गिरतेही सम्हलकर एक बाण उसने हरिकी बाम भुजा में मारा औ यों पुकारा रे कृष्ण खड़ा रह मैं युद्धकर तेरा बल देखता हूं तैने तो शंखासुर भौमासुर औ शिशुपाल आदि बड़े २ बलवान छलबल कर मारे हैं पर अब मेरे हाथ से तेरा बचना कठिन है ॥

चौ० । मोसोंतोहिंपरेउग्रबकाम कपटछांड़िकीजोसंग्राम॥
बाणासुरभौमासुर बरी । तेरो मग देखत हैं हरी॥
पठऊँतहांबज्रनिहिंग्रावे । भाजे तू न बड़ाईपावे ॥

यह बात सुन ज्यों श्रीकृष्णजी ने इतना कहा कि रे मूर्ख अभिमानी कायर क्रूर जो हैं बड़ी गम्भीर धीर वे पहले किसी से बड़ा बोलनहीं बोलते त्यों उस नेदौड़कर हरि पर एक गदा अति क्रोध कर चलाई सो प्रभु ने सहज स्वभावही काट गिराई पुनि श्रीकृष्णचंद्र जीने उसके एक गदामारी वह गदा खाय माया की ओट में जाय दो घड़ी मूर्छित रहा फिर कपट रूप बनाय प्रभु के संमुख आय बोला ॥

दो० । मातपिहारी देवकी । पठयो मोहिंग्रकुलाय ।
रिपुसालव बसुदेव को । पकरे लीने जाय ॥

महाराज वह असुर इतना बचन सुनाय वहां से जाय मायाका बसुदेव बनाय बांधलाय श्रीकृष्णचंद्र के सोंहीं आन बोला रेकृष्ण देख मैं तेरे

पिता को बांध लाया औ अब इसका शिर काट सब यदुबंशियों को मार समुद्र में पाटूंगा पीछे तुझे मार एक छत्रराज करूंगा महाराज ऐसे कह उसने माया के बसुदेव का शिर पछाड़ के श्रीकृष्ण के देखते काटडाला और बरछी के फल पर रख सब को दिखाया यह माया का चरित्रदेख पहले तो प्रभु को मूर्छा आई पुनिदेह संभल मनहीं मन कहने लगे कि यह क्योंकर हुआ जो यह बसुदेव जीको बलराम जीके रहते द्वारका से पकड़लाया क्य यह उनसे भी बली है जो उनके सम्मुख से बसुदेव जी को ले निकल आया ॥

महाराज इसी भांति की अनेक २ बातें कितनी एक बेर लग आसुरी माया में आय प्रभुने कीं महा भावित रहे निदान ध्यान करहरिने देखा तो सब आसुरी माया में सब छाया का भेद पाया तब तो श्रीकृष्णचंद्र जीने उसे ललकारा प्रभु की ललकार सुन वह आकाश को गया और लगा वहां से प्रभु पर शस्त्र चलाने इस बीच श्रीकृष्ण जी ने कई एक बाण ऐसे मारे कि वह रथ समेत समुद्र में गिरा गिरतेही साल्व गदाले प्रभु पर झपटा तब तो हरि ने उसे अति क्रोधकर सुदर्शन चक्र से मार गिराया ऐसे कि जैसे सुरपति ने वृत्रासुर को मारगिराया था महाराज उसके गिरतेही शीश की मणि निकल भूमि पर गिरी औ ज्योति श्रीकृष्णचंद्र के मुख में समाई ॥ इतिश्री लालकृते प्रे० सा० साल्वदैत्य बधोनाम सप्त सप्ततितमोऽध्यायः ७७ ॥

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज अब मैं शिशुपाल के भाई दन्तबक्र औ बिदूरथ की कथा कहता हूं कि जैसे वे मारे गये जब से शिशुपाल मारागया तब से वे दोनों श्रीकृष्णचंद्रजीसे अपने भाई का पलटा लेने का बिचार किया करते थे निदान साल्व औ घुमान के मरतेही अपना सब कटक ले द्वारका पुरी पर चढ़आये औ चारों ओर से घेरलगे अनेक २ प्रकार के यंत्र औ शस्त्र चलाने ॥

चौ० परानगरमेंखरबरभारी। सुनपुकाररथचढ़ेमुरारी॥

आगे श्रीकृष्णचंद्रजी नगरके बाहर आय वहां खड़े हुये कि जहांअति कोप किये शस्त्र लिये वे दोनों असुर लड़ने को उपस्थित थे प्रभुको देखते ही दन्तबक्र महा अभिमान कर बोला कि रेकृष्ण तू पहले अपना शस्त्र चलायले पीछे तुझे मैं मारूंगा इतनी बात मैंने इसलिये तुझसे कही कि मरती समय तेरे मनमें यह अभिलाषा न रहे कि मैंने दन्तबक्र पर शस्त्र

न किया तूने तोबड़े बड़े बली मारेहैं पर अब मेरे हाथसे जीता न बचैगा महाराज ऐसे कितने एक दुष्ट वचन कह दन्तवक्र ने प्रभु पर गदा चलाई सो हरि ने सहजही काट गिराई पुनि दूसरी गदाले हरिसे महायुद्ध करने लगा तबतो भगवान्ने उसे मार गिराया और उसका जी निकल प्रभु के मुखमें समाया आगे दन्तवक्र का मरना देख बिदूरथ जो युद्ध करने को चढ़ आया त्योंहीं श्रीकृष्णजी ने सुदर्शनचक्र चलाया उसने बिदूरथ का शिर मुकुट कुण्डल समेत काट गिराया पुनि सब असुरदल को मार भगाया उस काल ॥

चौ० । फूलेदेवपुष्प बरषावैं । किन्नर चारणहरियश गावैं ॥
सिद्धसाधुविद्याधरसारे । जय २ चढ़ेबिमानपुकारे॥

पुनि सब बोले कि महाराज आपकी लीला अपरम्पार है कोई इसका भेद नहीं जानता प्रथम हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष भये पीछे रावण और कुम्भकर्ण अबये दन्तवक्र और शिशुपालहो आये तुमने तीनोंबेर इन्हें मारा और परम मुक्तिदी इस्से तुम्हारी गति कुछ किसू से जानी नहींजाती महाराज इतना कह देवता तो प्रभुको प्रणामकर चलेगये और हरि बलराम जीसे कहने लगे कि भाई कौरव और पांडवों से हुई लड़ाई अब क्याकरैं बलदेवजी बोले कृपानिधान कृपाकर आप हस्तिनापुर को पधारिये तीर्थ यात्रा कर पीछेसे मैंभी आता हूं इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज यह बचन सुन श्रीकृष्णचंद्रजी तो वहां को पधारे जहां कुरुक्षेत्र में कौरव और पांडव महाभारत युद्ध करते थे और बलरामजी तीर्थयात्रा को निकले आगे सबतीर्थ करते करते बलदेवजी नैमिषारण्य में पहुंचे तो वहां क्या देखतेहैं कि एक ओर ऋषि मुनि यज्ञ रचरहेहैं और एकओरऋषि मुनि की सभा में सिंहासन पर बैठे सूतजी कथा बांच रहेहैं इनको देखते ही सौनकादिक सब ऋषि मुनियोंने उठकर प्रणाम किया और सूतसिंहासन पर गद्दी लगायेबैठा देखता रहा महाराज सूतके नउठतेही बलराम जीने सौनकादिक सब ऋषि मुनियों से कहा कि इसमूर्ख को किसनेवक्ता किया और व्यासासन दिया वक्ता चाहिये भक्तिवन्त बिवेकी और ज्ञानी यह है गुण हीन कृपण और अति अभिमानी पुनि चाहिये निर्लोभी और परमार्थी यहहै महालोभी और अपस्वार्थी ज्ञानहीन अबिवेकी को यहव्यास गद्दी फबती नहीं इसे मारें तो क्या पर यहां से निकाल दिया चाहिये इसबात के सुनतेही सौनकादिक बड़े २ मुनि ऋषि अति बिनती कर

बोले कि महाराज तुम हो बीर धीर सकल धर्म नीतिके ज्ञाता यहहैकायर अधीर अबिबेकी अभिमानी अज्ञान इसका अपराध क्षमा कीजे क्योंकि यह व्यासगद्दी पर बैठाहे और ब्रह्माने यज्ञकर्मके लिये इसे यहां स्थापित कियाहै

आसनगर्ब्बमढ़ मनधरयो। उठिप्रणामतुमको नहिंकरयो॥
यहीनोथयाकोअपराध। परीचक है तो यहसाध॥
सूतहिमारेपातकहोय। जगमेंभलो कहैनहिंकोय॥
निष्फलबचननजायतिहारोयहतुमनिजमनमांहबिचारो॥

महाराज इतनी बातके सुनतेही बलरामजी ने एक कुश उठाय सहज सुभाव सूतको मारा उसके लगतेही वह मरगया यहचरित्र देख सौनकादि ऋषि मुनि हाहा कार कर अति उदास हो बोले कि महाराज जो बात होनी थी सो तो हुई पर अब कृपा कर हमारी चिन्ता मेटिये प्रभु बोले तुम्हें किस बातकी चिन्ता है सो कहो हम पूरीकरें मुनियोंने कहा महाराज हमारे यज्ञ करने में किसी बात का बिघ्न न होय यही हमारी बासना है सो पूरी कीजे और जगत में यश लीजे इतना बचन मुनियोंके मुखसे निकलतेही अन्तर्य्यामी बलराम जीने सूतके पुत्रको बुलाय व्यासगद्दी पर बैठाय के कहा यह अपने बाप से अधिक बक्ता होगा और मैंने इसे अमरपद दे चिरंजीव कियाअब तुम निश्चिन्ताईसे यज्ञ करो॥ इति श्रीलाल कृते प्रेम सागरे सूत बधो नामाष्ट सप्तति तमो ऽध्यायः॥ ७८॥

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज बलराम जीकी आज्ञा पाय सौनकादि सब ऋषिमुनि अति प्रसन्नहो ज्यों यज्ञ करनेलगे त्यों इल्वल नाम दैत्य बल्वलका बेटा आय महामेघकर बादल गरजाय बड़ी भयंकर अति काली आंधी चलाय लगा आकाश से रुधिर औ मल मूत्र वर्षाने और अनेक २ उपद्रव मचाने॥

महाराज दैत्यका यह यह अनीति देख बलदेव जीने हल मूशल को आबाहन किया वे आय उपस्थित हुये पुनि महा क्रोध कर प्रभुने इल्वल को हलसे खैंच एक मूशल उसके शिरमें ऐसे मारा कि॥

चौ० फटयोमस्तकछूटयोप्रान। रुधिरप्रबाहभयोतिहिथान
करभुजडारिपेटयोबिकरार। निकरेलोचनरातेबार॥

इल्वलके मरतेही सब मुनियों ने अति संतुष्ट हो बलदेव जीकी पूजा की और बहुतसी अस्तुतिकर भेटदी फिर बलराम सुखधाम वहांसे बिदा

हो तीर्थयात्रा को निकले तो महाराज सबतीर्थ कर पृथ्वी प्रदक्षिणा करते२ कहां पहुंचे जहां कुरुक्षेत्र में दुर्योधन और भीमसेन महा युद्ध करते थे और पांडव समेत श्रीकृष्णचंद्र और बड़ेबड़े राजा खड़े देखते थे बलराम जीके जातेही दोनों ने प्रणाम किया एकने गुरु जान दूसरे ने बंधु मान महाराज उन दोनोंको लड़ता देख बलदेवजी बोले ॥

चौ० सुभटसमानप्रबलदोउबीर। अबसंग्रामतजहुतुमधीर ॥
कौरवपाण्डुकोराखहुबंश। बंधुमिचसबभयेविध्वन्श ॥
दोऊसुनिबोलेशिरनाय। अबरणतेंउतरोनहिंजाय ॥

पुनि दुर्योधन बोला कि गुरुदेव में आपके सम्मुख झूठ नहीं भाषता आप मेरी बात मनदे सुनिये यह जो महाभारत युद्ध होताहे और लोग मरे गयेहैं और जातेहैं औ जांयगे सो तुम्हारे भाई श्रीकृष्णचंद्र जी के मते से पांडव केवल श्रीकृष्णचंद्र जीके बल से लड़ते हैं नहीं तो इन की क्या सामर्थ्य थी जो ये कौरवों से लड़ते ये बावरे तो हरिके बश ऐसे होरहे हैं कि जैसे काठ की पुतली नटुयेके बशहो जिधर वह चलावे तिधरवह चले उनको यह उचित न था जो पांडवोंकी सहायता कर हम से इतना द्वेष करें दुःशासन की भीमसे भुजा उखड़ाई औमेरी जांघमें गदा लगवाई तुमसे अधिक हम क्या कहेंगे इस समय ॥

चौ० । जोहरिकरैं सोईअबहोय । येबातें जाने सबकोय ॥

यह बचन दुर्योधन के मुखसे निकलतेही इतना कह बलरामजी श्रीकृष्णचंद्रके निकट आये कि तुमभी उपाधि करने में कुछ घाट नहीं और बोले कि भाई तुमने यह क्या किया जो युद्ध करवाय दुःशासनकी भुजा उखड़वाई औ दुर्योधन की जांघ कटवाई यह धर्म्मकी रीति नहीं है कि कोई बलवान हो किसी की भुजा उखाड़े के काटिके नीचे शस्त्र चलावे हां धर्म्म युद्ध यहहै कि एक २ को ललकार सम्मुख शस्त्र करे श्रीकृष्णचंद्र बोलेकि भाई तुम नहीं जानते कि कौरव बड़े अधर्मी अन्यायी हैं इनकी अनीति कुछ कहीनहीं जाती पहले इन्होंने दुःशासन शकुनी भगदत्त के कहेजुआ खेल कपट कर राजा युधिष्ठिर का सर्बस जीत दुःशासन द्रौपदी को हाथ पकड़ लाया इस्से उसके हाथ भीमसेन ने उखाड़े दुर्योधनने सभाके बीच द्रौपदी को जांघपर बैठनेको कहा इसीसे उसकी जांघ काटी गई इतना कह पुनि श्रीकृष्णचन्द्र बोले कि भाई तुम नहीं जानते इसी भांतिकी जो

जो अनीति कौरवों ने पांडवों के साथ कीहै सोहम कहांतक कहेंगे इस्से यह भारतकी आग किसी रीति से अब नबुझेगी तुम इसका कुछ उपाय मत करो महाराज इतना बचन प्रभुके मुख से निकलतेही बलराम जी कुरुक्षेत्र से चल द्वारकापुरी में आये औ राजा उग्रसेन सूरसेन से भेट कर हाथ जोड़ कहने लगे कि महाराज आपके पुण्य प्रताप से हम सब तीर्थ यात्रा तो करआये परएक अपराध हमसे हुआ राजा उग्रसेन बोले सोक्या बलराम जी ने कहा कि महाराज नैमिषारण्य जाय हमने सूतको मारा तिसकी हत्या हमें लगी अब आपकी आज्ञा होय तोपुनि नैमिषारण्यजाय यज्ञ के दर्शन कर तीर्थ न्हाय हत्याका पाप मिटाय आवें पीछे ब्राह्मण भोजन करवाय जाति को जिमावें जिस्से जगमें यश पावें राजा उग्रसेन बोले अच्छा आप होआइये महाराज राजाकी आज्ञा पाय बलरामजी कितने एक यदुबंशियों को साथले निमिषक्षेत्र में जाय स्नान दान कर शुद्धहो आये पुनि पुरोहित को बुलाय होम करवाय ब्राह्मण जिमाय जाति को खिलाय लोकरीति कर पवित्र हुये इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले महाराज ॥

चौ० जोयहचरितसुनैमनलाय । ताकोसबहीपापनशाय ॥

इतिश्रीलालकृतेप्रेमसागरे बलरामतीर्थ करनो एकोन शीतितमोऽध्यायः७९

श्री शुकदेवजी बोले कि महाराज अब मैं सुदामा की कथा कहताहूं कि जैसे वह प्रभुके पास गया औ उसका दरिद्र कटासो तुम मनदे सुनो दक्षिण दिशा की ओरहै एक द्राबिड़ देश तहां बिप्र औ बणिक बसते थे नरेश जिसके राज्य में घरघर होताथा भजन स्मरण औ हरिका ध्यान पुनि सब करतेथे तब यज्ञ धर्म दान औ साधुसन्त गो ब्राह्मणका सन्मान

चौ० ऐसेवेसबहीतिहिं ठौर । हरिबिनकछूनजानै और ॥

तिसी देशमें सुदामा नाम ब्राह्मण श्रीकृष्णचन्द्र का गुरुभाई अतिदीन तनछीन महा दरिद्री ऐसा कि जिसके घरपै न घास न खाने को कुछ पास रहता था एकदिन सुदामा की स्त्री दरिद्र से अति घबराय महा दुःख पाय पतिके निकट जाय भयखाय डरती कांपती बोली कि महाराज अब इस दरिद्र के हाथसे महा दुःख पातेहैं जो आप इसे खोया चाहिये तो मैं एक उपाय बताऊं ब्राह्मण बोला सो क्या कहा तुम्हारे परम मित्र त्रिलोकीनाथ द्वारका बासी श्रीकृष्णचन्द्र आनन्द कन्द हैं जो उनके पास जाओ तो यहजाय क्योंकि वे अर्थ धर्म काम मोक्ष के दाता हैं महाराज

जब ब्राह्मणी ने ऐसा समझाय कर कहा तब सुदामा बोला कि प्रिये बिन दिये श्रीकृष्णचंद्र भी किसी को कुछ नहीं देते मैं भली भांति से जानताहूं कि जन्मभर मैंने किसीको कभीकुछ नहीं दिया बिनदिये कहां सेपाऊंगा हांतेरे कहेसे जाऊंगा तो श्रीकृष्णचन्द्रजी के दर्शन कर आऊंगा इस बात के सुनतेही ब्राह्मणी ने एक अति पुराने धौले बस्त्रमें थोड़े से चावल बांध ला दिये प्रभुकी भेटके लिये और डोरी लोटा लाठीला आगे धरी तब तो सुदामा डोरी लोटा कांधे परडाल चावल की पोटली कांख में दबाय लाठी हाथमें ले गणेशको मनाय श्रीकृष्णजी का ध्यान कर द्वारकापुरी को पधारा महाराज बाटहीमें चलते २ सुदामा मनहींमन कहने लगा कि भला धनतो मेरे प्रारब्ध में नहीं पर द्वारका जाने से श्रीकृष्ण चंद्र आनन्द कन्दका दर्शन तो पाऊंगा इसी भांतिसेशोच बिचारकरता २ सुदामा तीन पहर के बीच द्वारकापुरी में पहुंचा तो क्या देखता है कि नगरके चारों ओर समुद्र है औ बीचमें पुरी वह पुरी कैसीहै कि जिसके चहूंओर बन उपबन फूल फूल रहे हैं तड़ाग बापी इन्दारों पर रहट परोहे चल रहेहैं ठौर २ गायों के यूथ के यूथ चर रहे हैं तिनके साथ ग्वाल बाल न्यारेही कुतूहल करते हैं इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज सुदामा बन उपबन की शोभा निरख पुरीके भीतर जाय देखे तो कंचन के मणिमय मंदिर महा सुन्दर जगमगाय रहेहैं ठांव ठांव अथाइयों में यदुबंशी इन्द्र कीसी सभाकिये बैठेहैं हाटबाट चौहटों में नाना प्रकारकी बस्तु बिक रहीहैं घर घर जिधर तिधर गानदान हरि भजन औ प्रभुका यश होरहा है औ सारे नगर निवासी महा आनन्द में हैं महाराज यह चरित्र देखता २ औ श्रीकृष्णचन्द्र का मन्दिर पूछता सुदामा जा प्रभुकी सिंह पौरपर खड़ाहुआ इसने किसीसे डरते डरते पूछा कि श्रीकृष्णचंद्र जी कहां विराजतेहैं उसने कहा कि देखता आप मन्दिर भीतर जाओ सम्मुखही श्रीकृष्णचंद्र जी रत्न सिंहासन पर बैठेहैं महाराज इतना बचन सुन सुदामा ज्यों भीतर गया त्यों देखतेही श्रीकृष्णचंद्र सिंहासन से उतर आगू बढ़ भेंटकर अति प्यारसे हाथ पकड़ उसे लेगये पुनि सिंहासन पर बिठाय पांव धोय चरणामृत लिया आंगे चन्दन चरच अक्षत लगाय पुष्प चढ़ाय धूप दीप कर प्रभुने सुदामा की पूजाकी ॥

चौ० । इतनीकरकेजोरेहाथ । कुशलक्षेमपूछतयदुनाथ ॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेव जीने राजा से कहा कि महाराज यह

चरित्र देख श्रीरुक्मिणी जी समेत आठों पटरानियां औ सोलह सहस्र एक सौ रानियां और सब यदुबंशी जो उस समय वहांथे मनहीं मनयों कहने लगे कि इस दरिद्री दुर्बल मलीन बस्त्र हीन ब्राह्मण ने ऐसा क्या अगले जन्म पुण्य कियाथा जो त्रिलोकीनाथ ने इसे इतनामाना महाराज अन्तर्य्यामी श्रीकृष्णचंद्र उसकाल सबके मनकी बातसमझ उनका संदेह मिटाने की सुदामा से गुरुके घरकी बातें करने लगे भाई तुम्हें वहसुधहै जो एकदिन गुरु पत्नीने हमें तुम्हें ईंधन लेने भेजाथा और जबबनसे ईंधन ले गठड़ियां बांध शिर पर घर घर को चले तब आंधी और मेह आया औ लगा मूशला धार बर्षने जल थल चारों ओर भरगया हम तुमने भीग कर महादुःख पाया जाड़ा खाय रात भर एक वृक्षकेनीचेरहे भोरही गुरुदेव बनमें ढूंढ़ने आये औ अति करुणा कर अशीश दे हमें तुम्हें अपने साथ घर लिवाय लाये॥

इतना कह पुनि श्रीकृष्णचन्द्र जी बोले कि भाई जबसे तुम गुरुदेव के यहांसे बिछुड़े तबसे हमने तुम्हारा समाचार न पाया था कि कहांथे औ क्या करते थे अब आय दर्श दिखाय तुमने हमें महासुख दिया औ घर पबित्र किया सुदामा बोला हे कृपासिंधु दीनबंधु स्वामी अन्तर्य्यामी तुम सब जानतेहो कोई बात संसार में ऐसी नहीं जो तुमसे छिपीहै॥ इति श्रीलालकृते प्रेमसागरेसुदामा द्वारकागमनो नामअशीति तमोऽध्यायः ८०

श्रीशुकदेव मुनिजी बोले कि महाराज अंतर्य्यामी श्रीकृष्ण जीनेसुदामा की बात सुन औ उसके अनेक मनोर्थ समझ हंसकर कहाकि भाई भाभी ने हमारे लिये क्याभेंट भेजीहै सो देते क्योंनहीं कांखमें किसलिये दबाय रहे हो महाराज यह बचन सुन सुदामा तो सकुचाय मुरझाय रहा औ प्रभुने झट चांवल की पोटली उसकी कांखसे निकाल ली पुनिखोल उसमें से अति रुचिकर दो मुट्ठी चांवल खाये और ज्यों तीसरी मुट्ठी भरी त्यों श्रीरुक्मिणी जीने हरिकाहाथ पकड़ा औ कहाकि महाराज आपने दोलोक तो इसे दिये अब अपने रहने को भी कोई ठौर रक्खोगे के नहीं यहतो ब्राह्मण सुशील कुलीन अति बैरागी महात्यागी सा दृष्टि आताहै क्योंकि इसे बिभव पाने से कुछ हर्ष न हुआ इस्से मैंने जाना कि ये लाभ हानि समान जानतेहैं इन्हें पानेकाहर्ष न जानेका शोक॥

इतनी बात रुक्मिणी जीके मुखसे निकलतेही श्रीकृष्णचंद्र जीने कहा कि हे प्रिये यह मेरा परम मित्र है इस के गुण मैं कहां तक बखानूं

सदा सर्बदा मेरे स्नेहमें मग्न रहता है और उसके आगे संसार के सुखको तृणवत् समझताहै इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी ने राजापरीक्षित से कहा कि महाराज ऐसे अनेक २ प्रकार की बातें कर प्रभु रुक्मिणीजी को समझाय सुदामा को मन्दिर में लिवाय लेगयेआगे षट्रस भोजन करवाय पान खिलाय हरि ने सुदामा को फेनसी सेजपर लेजाय बैठाया वह पथका हारा थका तो थाही सेज पर जाय सुखपाय सो गया प्रभुने उस समय बिश्वकर्मा को बुलायके कहा कितुम अभी जाय सुदामाके मन्दिर अति सुन्दर कंचन रत्नके बनाय तिनमें अष्ट सिद्धि नवनिद्धि धर आओ जो इसे किसी बातकी कांक्षा न रहे इतना बचन प्रभुके मुखसे निकलते ही बिश्वकर्मा वहां जाय बात की बातमें बनाय आया औ हरि से कह अपने स्थान को गया भोर होतेही सुदामा उठ स्नान ध्यान भजन पूजा से निश्चिन्त हो प्रभुके पास बिदा होने गया उस समय श्रीकृष्णचन्द्रजी मुखसे तो कुछ न बोले पर प्रेम में मग्नहो आंखे ढबढबाय शिथिल हो देखते रहे सुदामा बिदाहो प्रणामकर अपने घरको चला औ पन्थमें जाय मनहीं मन बिचार करने लगा कि भला भया जो मैंने प्रभुसे कुछ नमांगा जो उनसे कुछ मांगता तोवे देते तो सही पर मुझे लोभी लालची समझते कुछ चिन्ता नहीं ब्राह्मणी को मैं समझाय लूंगा श्रीकृष्णचंद्रजी ने मेरा अतिमान सन्मान किया औ मुझे निर्लोभी जानायही मुझे लाभहै महाराज ऐसे शोच बिचार करता २ सुदामा अपने ग्रामके निकट आया तो क्या देखताहै कि न वह ठांवहै नवह टूटी मड़ैया वहां तो एक इंद्र पुरीसी बस रहीहै देखतेही सुदामा अतिदुखितहो कहने लगा किहेनाथ तूने यह क्याकिया एक दुःख तो थाही दूसरा और दुःख दिया यहां से मेरी झोपड़ी क्या हुई और ब्राह्मणी कहां गई किससे पूंछूं औ किधर ढूंढूं इतना कह द्वारपर जाय सुदामाने द्वारपाल से पूंछा कि यह मन्दिरअति सुन्दर किसके हैं द्वारपाल ने कहा श्रीकृष्णचंद्रजी के मित्र सुदामाके हैं यह बात सुन सुदामा ज्यों कुछ कहने को हुआ त्यों भीतर से देख उसकी ब्राह्मणी अच्छे बस्त्र आभूषण पहने नख शिखसे शृङ्गार किये पान खाये सुगन्ध लगाये सखियों को साथ लिये पतिके निकट आई॥

चौ० पांवनपर पाटम्बर डारे। हाथजोड़येबचन उचारे॥
ठाढ़ेक्योंमन्दिरपगधारोमनसोंशोचकरोतुमन्यारो
तुमपाछेबिश्वकर्माआये। तिनमन्दिरपलमांझबनाये

महाराज इतनी बात ब्राह्मणी के मुख से सुन सुदामाजी मन्दिर में गये औ अति विभव देख महाउदास भये ब्राह्मणी बोली स्वामी धनपाय लोग प्रसन्न होतेहैं तुम उदास हुए इसका कारण क्याहे सोकृपाकर कहिये जो मेरे मनका संदेह जाय सुदामा बोला किहेप्रिये यह माया बड़ी ठगनी है इसने सारे संसारको ठगा है और ठगतीहै और ठगेगी सो प्रभुनेमुझे दी औ मेरे प्रेम की प्रतीति न की मैंने उनसे कब मांगी थी जो उन्हों ने मुझेदी इसीसे मेरा चित्त उदास है ब्राह्मणी बोली स्वामी तुमने तो श्री कृष्णचंद्रजी से कुछ न मांगा था पर वे अन्तर्य्यामी घटघट की जानते हैं मेरे मनकी धन की बासना सो प्रभुने पूरीकी तुम अपने मनमें और कुछ मत समझो इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेवजी ने राजा परीक्षितसे कहा कि महाराज इस प्रसंग को जो सदा सुनें सुनावेगा सोजन जगत् में आय दुःख कभी न पावेगा औ अन्तकाल वैकुण्ठ धाम जावेगा ॥ इति श्रीलाल कृते प्रेमसागरे सुदामा दरिद्र गमनो नामैकाशीतितमोऽध्यायः ॥ ८१ ॥

श्री शुकदेवजी बोले कि राजा अबमें प्रभुके कुरुक्षेत्र जाने की कथा कहता हूं तुम चितदे सुनो कि जैसे द्वारका में सब यदुवंशियों को साथ ले श्रीकृष्णचन्द्र औ बलराम सूर्य ग्रहण न्हाने कुरुक्षेत्र गये राजा ने कहा महाराज आप कहिये मैं मन दे सुनता हूं पुनि श्री शुकदेवजी बोले कि महाराज एक समय सूर्यग्रहण के समाचार पाय श्रीकृष्णचन्द्र औ बलदेव ने राजा उग्रसेन के पास जायके कहा कि महाराज बहुत दिन पीछे सूर्य ग्रहण आया है जो इस पर्वको कुरुक्षेत्र में चलकर कीजे तो बड़ा पुण्य होय क्योंकि शास्त्र में लिखाहै कि कुरुक्षेत्रमें जो दानपुण्यकरिये सोसहस्र गुणा होय इतनी बातके सुनतेही यदुवंशियों ने श्री कृष्णचन्द्रजी से पूछा कि महाराज कुरुक्षेत्र ऐसातीर्थ कैसे हुआ सो कृपा कर हमसे समझाय के कहिये श्रीशुकदेव जी बोले कि सुनो यमदग्नि ऋषि बड़े ज्ञानी ध्यानी तपस्वी तेजस्वीथे तिनके तीनपुत्र हुए उनमें सबसे बड़े परशुराम सो बैराग्य कर घर छोड़ चित्रकूट में जाय रहे औ सदाशिव की तपस्या करने लगे लड़कों के होतेही यमदग्निऋषि गृहस्थाश्रम छोड़ बैराग कर स्त्री सहित बनमें जाय तप करने लगे उनकी स्त्रीका नाम रेणुका सो एकदिन अपनी बहन को नोतने गई उसकी बहन राजासहस्रार्जुन की स्त्रीथी नोतादेते ही अहंकार कर राजा सहस्रार्जुन की स्त्री रेणुका की बहन हंसकर बोली कि बहन हमें हमारे कटक समेत जिमाय सको तो नोता दो नहीं तो

नदो महाराज यह बात सुन रेणुका अपनासा मुखले चुपचाप वहांसे उठ अपने घर आई इसे उदास देखि यमदग्नि ऋषिने पूछा कि आज क्याहै जो तू अनमनी होरही है महाराज बातके पूछतेही रेणुका ने रोकर सब ज्यों की त्यों बातकही सुनतेही यमदग्नि ऋषिने स्त्रीसे कहा कि अच्छा तू जायके अभी अपनी बहन को कटक समेत नौतआ पति की आज्ञा पाय रेणुका बहन के घर जाय नौत आई उसकी बहनने अपने स्वामीसे कहा कि कल तुम्हें सब दलसमेत यमदग्नि ऋषि के यहां भोजन करने जाना है स्त्रीकी बात सुन अच्छा कह वह हंसकर चुप होरहा भोरहोते ही यमदग्नि उठकर राजा इन्द्रके पास गए औ कामधेनु मांग लाये पुनि जाय राजा सहस्रार्जुन को बुलाय लाये वह कटक समेत आया तिसे यमदग्निजी ने इच्छा भोजन खिलाय कटक समेत भोजन कर राजा सहस्रार्जुन अति लज्जित हुआ औ मनहीं मन कहने लगा कि इसने इतने लोगोंकी सामग्री रात भरमें कहां पाई औ कैसे बनाई इसका भेद कुछ जाना नहीं जाता इतना कह बिदा होय उसने अपने घर जाय यों कह एक ब्राह्मण को भेजदिया कि देवता तुम यमदग्नि के घर जाय इसबात का भेद अब लाओ कि उसने किसके बलसे एक दिनके बीच मुझे कटक समेत नौत जिमाया इतनी बातके सुनतेही ब्राह्मणने झटजाय देखआय सहस्रार्जुन से कहा कि महाराज उसके घरमें कामधेनु है उसीके प्रभाव से उसने तुम्हें एक दिनमें नौत जिमाया यह समाचार सुन सहस्रार्जुन ने उसी ब्राह्मण से कहा कि तुम जाय हमारी ओरसे यमदग्नि ऋषिसे कहो कि सहस्रार्जुन ने कामधेनु मांगी है बातके सुनतेही वह ब्राह्मण संदेशा ले ऋषि पास गयाओ उसने सहस्रार्जुन कीकही बात कही ऋषिबोले कि यह गाय हमारी नहीं जो हम दें यहतो राजा इंद्र की है हम इसको दे नहीं सक्ते तुमजाय अपने राजासे कहो बातके कहतेही ब्राह्मण ने आय राजा सहस्रार्जुन से कहा कि महाराज ऋषि ने कहाहै कामधेनु हमारी नहीं यहतो राजा इंद्रकी है इसे हम देनहीं सक्ते इतनी बात ब्राह्मण के मुखसे निकलतेही सहस्रार्जुनने अपने कितनेएक योधावोंको बुलाय के कहा तुम अभी जाय यमदग्नि के घरसे कामधेनु खोल लाओ स्वामी की आज्ञा पाय येद्वाऋषि के स्थान पर गये औ ज्योंधेनु को खोल यमदग्नि के सम्मुख हो लेचले त्यों ऋषि ने दौड़ कर बाट में जाय कामधेनु को रोका यह समाचार पाय क्रोध कर सहस्त्रार्जुन ने आ ऋषि का शिरकाट

डाला कामधेनु भाग इन्द्रके यहां गई रेणुका आय पति के पास खड़ी हुई ॥

दो० शिर खसोटलोटत फिरै बैठि रही गहि पाय।
छातीपीटै रुदनकरि पियपिय कहिबिल्लाय॥

उस काल रेणुका का बिल्लाना और रोना सुन दशों दिशा के दिग्पाल कांप उठे और परशुराम जीका तप करते आसन डिगा और ध्यान छूटा ध्यानके छूटतेही जानकर परशुरामजी अपना कुठार ले वहां आये जहां पिता की लोथ पड़ी थी औ माता पीटतीखड़ीथी देखतेही परशुराम जीको महाकोप हुआ इसमें रेणुका ने पतिके मारे जाने का सब भेद पुच को रोरो कह सुनाया बात के सुनतेही परशुराम इतना कह वहां गए जहां सहस्रार्जुन अपनी सभामें बैठा था कि माता पहिले मैं अपने पिता के बैरी को मार आऊं तब आय पिताको उठाऊंगा उसे देखतेही परशुराम जी उसको पकर बोले ॥

दो० अरेक्रूरकायरकुलद्रोही।तातमारिदुखदीनोमोंही

ऐसे कह जब फरसा ले परशुरामजी महाकोप में आये तब वहभी धनुष बाण ले इनके सोंहीं खड़ा हुआ दोनों बली महायुद्ध करने लगे निदान लड़ते २ परशुरामजी ने चार घड़ीके बीचमें सहस्रार्जुन को मार गिराया पुनि उसका कटक चढ़आया तिसे भी इन्हों ने उसी के पास काटडाला फिर वहां से आय पिताकी गति करी औ माता को समझाय पुनि उसी ठौर परशुराम जीने रुद्रयज्ञ किया तबसे वह स्थान क्षेत्र कहकर प्रसिद्ध हुआ वहां जाकर यहण में जो कोई स्नान दान तपयज्ञ करताहै उसे सहस्र गुण फल होताहै ॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी ने राजापरीक्षित से कहा कि महाराज इस प्रसंग के सुनतेही सब यदुवंशियों ने प्रसन्न हो श्रीकृष्णचंद्रजी से कहा कि महाराज शीघ्र कुरुक्षेत्र को चलिये अब विलम्ब न कीजिये क्योंकि पर्व पर पहुंचा चाहिये बातके सुनतेही श्रीकृष्णचन्द्र और बलराम जीने राजा उग्रसेन से पूछा कि महाराज सब कोई कुरुक्षेत्र को चलेगा यहां पुरीकी चौकसी को कौन रहेगा राजा उग्रसेन ने कहा अनिरुद्ध जी को रखि चलिये राजा की आज्ञापाय प्रभुने अनिरुद्ध को बुलाय समझाय कर कहा कि बेटा तुम यहां रहो गौ ब्राह्मण की रक्षा करो और प्रजा को पालो हम राजाजी के साथ सब यदुवंशियों समेत कुरुक्षेत्र न्हाय आवें

अनिरुद्धजी ने कहा जो आज्ञा महाराज एक अनिरुद्धजी को पुरी की रखवाली को छोड़ सूरसेन बसुदेव उद्धव कृतवर्मा अक्रूरादि छोटे बड़े सब यदुबंशी अपनी २ स्त्रियों समेत राजा उग्रसेनके साथ कुरुक्षेत्र चलने को उपस्थित हुए जिस समय कटक समेत राजा उग्रसेन ने पुरी के बाहर डेरा किया उसकाल सब जाय मिले तिनके पीछेसे श्रीकृष्णचंद्रजी भी भाई भौजाई को साथ ले आठों पटरानी और सोलह सहस्त्र एकसौ रानी और बेटों पोतों समेत जाय मिले प्रभुके पहुंचतेही राजा उग्रसेन ने वहां से डेरा उठाया और राजाइन्द्र की भांति बड़ी धूम धाम से आगे को प्रस्थान किया इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज कितने एक दिनोंमें चले २ श्रीकृष्णचन्द्रजी सब यदुबंशियों समेत आनन्द मंगल से कुरुक्षेत्र में पहुंचे वहां जाय पर्वमें सबने स्नान किया और यथा शक्ति हर एक ने हाथी घोड़ा रथ पालकी बस्त्र रत्न आभूषण अन्न धन दान दिया पुनि वहां सभोंने डेरे डाले महाराज श्रीकृष्णचन्द्र औ बलराम जीके कुरुक्षेत्र जाने के समाचार पाय चहुंओर के राजा कुटुम्ब सहित अपनी २ सब सेना लेले वहां आय २ श्रीकृष्ण बलरामजी को मिले पुनि सब कौरव पांडव भी अपना २ दल ले सकुटुम्ब वहां आय मिले उसकाल कुन्ती औ द्रौपदी यदुबंशियों के रनिवास में जाय सबसे मिलीं आगेकुन्ती ने भाईके सम्मुख जाय कहाकि भाई मैं बड़ी अभागी जिस दिनसे भोगी उसी दिन से दुःख उठाती हूं तुमने जबसे ब्याहदी तब से मेरी सुधि कभी न ली और रामकृष्ण जो सबके हैं सुख दाई उनको भीमेरी दया कुछ नआई महाराज इस बातके सुनतेही करुणाकर आंखें भर बसुदेव जी बोले कि बहन तू मुझे क्यों कहती है इसमें मेरा कुछ बस नहीं कर्म की गति जानी नहीं जाती हरि इच्छा प्रबल है देखो कंसके हाथसे मैंने भी क्या क्या दुःख नपाया ॥

चौ० प्रभुआधीनसकलजगआय। कितदुखकरौदेखजगभाय

महाराज इतना कह बहन को समझाय बुझाय बसुदेव जी वहां गये जहां सबराजा राजाउग्रसेन की सभा में बैठेथे और राजा दुर्योधन आदि बड़े २ नृप और पांडव उग्रसेनही की बड़ाई करते थे कि राजा तुमबड़े भागी हो जो सदा श्रीकृष्णचंद्र का दर्शन पाते हो और जन्म २ का पाप गंवाते हो जिन्हें शिवबिरंचि आदि सबदेवता खोजते फिरें सोप्रभु तुम्हारी सदा रक्षा करैं जिनका भेद योगी यती मुनि ऋषि न पावें सोहरि तुम्हारे

आज्ञालेने आवें जोहैं सब जगके ईश वेई तुम्हें नवावते हैं शीश इतनी कथा कह श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज ऐसे सब राजा आय आय राजा उग्रसेन की प्रशंसा करते थे और वे यथायोग्य सबका समाधान इस में श्रीकृष्ण बलरामजी का आना सुन नन्द उपनन्द भी सकुटुम्ब औ सब गोपी गोप ग्वाल बाल समेत आन पहुंचे स्नान दान से सुचित्त हो नन्द जी वहां गये जहां पुत्र सहित बसुदेव देवकी बिराजते थे इन्हें देखतेही बसुदेव जी उठकर मिले और दोनों ने परस्पर प्रेमकर ऐसे सुख मानाकि जैसे कोई गई बस्तु पाय सुख माने आगे बसुदेवजी ने नन्दराय जी से ब्रजकी पिछली सब बात कह सुनाई जैसे नन्दराय जीने श्रीकृष्ण बलराम जी को पाला था महाराज इस बातके सुनते ही नन्दराय जी नयनों में नीर भर बसुदेवजी का मुख देख रहे उसकाल श्रीकृष्ण बलदेवजी प्रथम नन्द यशोदाजीको यथा योग्य दण्डवत्कर पुनि ग्वालबालों से जाय मिले तहां गोपियों ने आय हरिका चंद्रमुख निरख अपने नयन चकोरोंको सुखदिया जीतब का फल लियो इतना कह श्रीशुकदेव जी बोले कि महाराज बसुदेव देवकी रोहिणी श्रीकृष्ण बलराम से मिल जो कुछ प्रेम नन्द उपनन्द यशोदा गोपी गोप ग्वाल बालों ने किया सो मुझसे कहा नहीं जाता वह देखही बनिआवे निदान सबको स्नेहमें निपट ब्याकुल देख श्रीकृष्णचंद्रजी बोले कि सुनो ॥

चौ०। मेरीभक्तिजो प्राणीकरै। भवसागर सोनिर्भयतरै॥
तनमनधनतुमअर्पणकीन्हों नेहनिरन्तरकरमोहिंदीन्हों
तुमसमबड़भागीनहिंकोयब्रह्मारुद्रइन्द्रकिनहोय॥
योगीश्वरकेध्याननआयो तुमसंगरहनितप्रेमबढ़ायो
हौंसबहीकेघटघटरहौं। अगमअगाधजुबाणीकहौं॥

जैसे तेज जल पृथ्वी वायु आकाश का है देहमें बास तैसे सब घटमें हैमेरा प्रकाश श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज जब श्रीकृष्णचंद्र ने यहसब भेद कह सुनाया तब सब ब्रजबासियों कोधीरज आया॥ इतिश्रीलालकृते प्रेमसागरेश्रीकृष्णबलरामकुरुक्षेत्रगमनोनामद्व्यशीतितमोऽध्यायः॥ ८२॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज जैसे द्रौपदी औ श्रीकृष्णचंद्रजी की स्त्रियोंमें परस्पर बातें हुई सोमैं प्रसंग कहताहूं तुम सुनो एकदिन कौरव और पांडवों की स्त्रियां श्रीकृष्णचंद्रजी की नारियों के पास बैठीथीं प्रभुके

चरित्र और गुण गातीथीं इसमें कुछ बात जो चली तो द्रौपदी ने श्रीरुक्मिणीजी से कहा कि हे सुन्दरी कह तूने श्रीकृष्णचंद्रजी को कैसे पाया श्रीरुक्मिणी जी बोलीं ॥

चौ० । सुनौद्रौपदीतुमचितलाय । जैसेप्रभुनेकियेउपाय ॥

मेरे पिताका तो मनोर्थ था कि मैं अपनी कन्या श्रीकृष्णचंद्र को दूं औ भाईने राजा शिशुपाल को देने का मन किया वह बरात ले ब्याहने को आया औ श्रीकृष्णचंद्रजी को मैंने ब्राह्मण भेज बुलाया ब्याह के दिन मैं ज्यों गौरी की पूजा कर घर को चली त्यों श्रीकृष्णचंद्रजी ने सब असुर दलके बीच से मुझे उठाय के लेरथ में बैठाय अपनी बाटली तिस पीछे समाचार पाय सब असुर दल प्रभु पर आय टूटा सो हरिने सहजही मार भगाया पुनि मुझे ले द्वारका पधारे वहां जातेही राजा उग्रसेन सूर सेन बसुदेवजी ने वेदकी विधिसे श्रीकृष्णचंद्र जीके साथ मेरा ब्याहकिया बिवाह के समाचार पाय मेरे पिताने बहुतसा यौतुक भिजवाय दिया इतनी कथा कह श्री शुकदेवजी ने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज जैसे द्रौपदी जीने रुक्मिणी से पूछा औ उन्होंने कहा तैसेही सत्यभामा जाम्बवती कालिन्दी भद्रा सत्या मित्रबिन्दा लक्ष्मणा आदि श्रीकृष्णचंद्र जीकी सोलह सहस्र एकसौ आठ पटरानियों से पूछा औ एक एकने सब समाचार अपने अपने बिवाह का ब्योरे समेत कहा ॥ इतिश्री लाल कृते प्रेमसागरे स्त्रीगीत वर्णनो नाम अशीतितमोऽध्यायः ॥ ८३ ॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज अब मैं सब ऋषियों के आनेकीऔ वसुदेवजी के यज्ञ करनेकी कथा कहताहूं तुम चित्तदे सुनो महाराज एक दिन राजा उग्रसेन सूरसेन बसुदेव श्रीकृष्ण बलराम सब यदुबंशियों समेत सभा किये बैठेथे औ सब देशदेश के नरेश वहां उपस्थित थे कि इस बीच श्रीकृष्णचन्द आनन्द कन्द के दर्शनकी अभिलाषा कर व्यास बशिष्ठ विश्वामित्र नामदेव पराशर भृगु पुलस्ति भारद्वाज मार्कंडेय आदि अट्ठासी सहस्र ऋषि वहां आये औ तिनके साथ नारदजी भी उन्हें देखतेहीसभा की सभा सब उठ खड़ी हुई पुनि सब दण्डवत् कर पाटम्बर के पांवड़े डाल सबको सभामें लेगये आगे श्रीकृष्णचन्द्र ने सबको आसन पर बैठाय पांव धोय चरणामृत ले पिया औ सारी सभा पर छिड़का फिर चन्दन अक्षत पुष्प धूपदीप नैवेद्य कर भगवान् ने सबकी पूजा कर परिक्रमा की पुनि हाथ जोड़ सम्मुख खड़े हो हरि बोले कि धन्य भाग हमारेजो आप

ने आय घर बैठे दर्शन दिया साधुका दर्शन गंगा के स्नान समान है जिसने साधुका दर्शन पाया उसने जन्म २ का पाप गवांया इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज ॥

चौ० श्रीभगवान्बचनजबकहे । तबसबऋषीबिचारतरहे ॥

कि जो प्रभु हैं ज्योति स्वरूप औ सकल सृष्टि के कर्ता सो जब यह बात कहें तब और की किसने चलाई मनहीं मन सब मुनियों ने जद इतना कहा तद नारद जी बोले ॥

चौ० सुनोंसभातुमसबमनलाय।हरिमायाजानीनहिंजाय ॥

ये आपही ब्रह्मा हो उपजावतेहैं बिष्णु हो पालतेहैं शिवहोसंहारतेहैं इनकी गति अपरम्पार है इसमें किसीकी बुद्धि कुछ कामनहीं करती पर इतना इनकी कृपासे हम जानते हैं कि साधोंके सुख देने को औ दुष्टों के मारने को औ सनातन धर्म चलाने को बारबार अवतारले प्रभु आतेहैं महाराज ज्यों इतनी बात कह नारदजी सभासे उठने को हुए त्यों बसुदेवजी सम्मुख आय हाथ जोड़ बिनती कर बोले कि हे ऋषिराज मनुष्य संसारमें आय कर्म से कैसे छूटे सो कृपा कर कहिये महाराज यह बात बसुदेवजी के मुखसे निकलतेही सब ऋषि मुनि नारदजी का मुख देखरहे तब नारदजी ने मुनियों के मनका अभिप्राय समझ कर कहा कि हे देवताओं तुम इसबात का अचरज मत करो श्रीकृष्णजी की माया प्रबल है इसने सारे संसार को जीत रक्खा है इसीसे बसुदेवजी ने यह बात कही औ दूसरे ऐसेभी कहा है कि भोजन जिसके समीप रहता है वह उसका गुण प्रभाव औ प्रताप मायाके बश हो नहीं जानता जैसे ॥

चौ० गंगाबासी अनतहि जाय । तजकेगंगकूपजल न्हाय ॥
योंहीयादव भयेअयाने । येनहिंकछू कृष्णगतिजाने ॥

इतनी बात कह नारदजी ने मुनियों के मनका संदेह मिटाय बसुदेव जीसे कहा कि महाराज शास्त्रमें कहाहै जो नर तीर्थ दान तप व्रत यज्ञ करता है सो संसार के बन्धनसे छूट परम गति पाताहै इसबात के सुनतेही प्रसन्न हो बसुदेवजी ने बातकी बातमें सब यज्ञकी सामा मंगाय उपस्थित की औ ऋषियों मुनियों से कहा कि कृपाकर यज्ञका आरम्भ कीजे महाराज बसुदेवजी के मुखसे इतना बचन निकलते ही सब ब्राह्मणों ने यज्ञका स्थान बनाय संवारा इस बीच स्त्रियों समेत बसुदेव जी बेदीमेंजा

बैठे सब राजा औ यादव यज्ञ की टहल में औ उपस्थित हुये इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी ने राजा से कहा कि महाराज जिससमय बसुदेवजी बेदी में जा बैठे उसकाल वेदकी बिधिसे मुनियोंने यज्ञका आरम्भ किया औ लगे बेद मंच पढ़ २ आहुति देने औ देवता सदेह आय २ भाग लेने महाराज जिसकाल यज्ञ होने लगा उसकाल उधर किन्नर गन्धर्ब भेर दुंदुभी बजाय २ गुणगाते थे चारण बन्दीजन यश बखानते थे उर्बसी आदि अप्सरा नाचती थीं औ देवता अपने २ बिमानों में बैठे फूल बर्षावते थे औ इधर सब मंगली लोग गाय बजाय मंगलाचार करते थे औ याचक जय २ कार इसमें यज्ञ पूर्ण हुआ औ बसुदेवजी ने पूर्णाहुति दे ब्राह्मणों को पाटम्बर पहराय अलंकृत कर रत्न धन बहुत सा दिया औ उन्होंने वेद मंच पढ़ २ आशीर्बाद दिया आगे सब देश २ के नरेशों कोभी बसुदेवजी ने पहरोया औ जिमाया पुनि उनने यज्ञकी भेंट कर २ बिदा हो अपनी २ बाटली महाराज सब राजाओं के जाते ही नारद जी समेत सारे ऋषि मुनि भी बिदा हुये पुनि नन्दराय जी गोपी गोप ग्वाल बाल समेत जब बसुदेवजी से बिदा होने लगे उस समय की बात कुछ कही नहीं जाती इधर तो यदुबंशी करुणा कर अनेक २ प्रकार की बातें करते थे औ उधर सब व्रज बासी उसका बखान कुछ कहा नहीं जाता वह सुख देखतेही बनि आवे निदान बसुदेवजी औ श्रीकृष्णचन्द्र बलराम जीने सब समेत नन्दराय जीको समझाय बुझाय पहिराय औ बहुत सा धनदे बिदाकिया इतनी कथाकह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज इसभांति श्रीकृष्णचन्द्र वो बलराम जी पर्व न्हाय यज्ञ कर सब समेत जब द्वारकापुरी में आये तो घर २ आनन्द मंगलभये बधाये॥ इति श्रीलालकृते प्रेमसागरे बसुदेव यज्ञ करनो चतुराशीति तमो ऽध्यायः॥ ८४॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज द्वारकापुरी के बीच एकदिन श्रीकृष्ण चंद्र औ बलराम जी ज्यों बसुदेव जीके पास गये वे इन दोनों भाइयों को देख यहबात मनमें बिचार उठ खड़ेहुये कि कुरुक्षेत्र में नारदजी ने कहा था कि श्रीकृष्णचंद्र जगत के करता हैं औ हाथजोड़ बोलेकि हेप्रभु अलख अगोचर अबिनाशी सदा सेवतीहैं तुम्हैंकमला भईदासी तुमहो सब देवोंके देव कोई नहीं जानता तुम्हारा भेव तुम्हारी ही ज्योतिहै चन्द्र सूर्य्यपृथ्वी आकाश तुम्हीं करते हो सब ठौर प्रकाश तुम्हारी माया है प्रबल उसने सारे संसार को भुलाय रक्खा है त्रिलोकी में सुर नर मुनि ऐसा कोई

नहीं जो उसके हाथसे बचा हो महाराज इतना कह पुनि बसुदेवजी बोले कि नाथ॥

चौ०। कोऊजनभेदतुम्हारोजानै। बेदनमांभ्रअगाधबखानै॥
शत्रुमित्रनहिंकोऊतिहारो पुत्रपितानसहोदरप्यारो॥
पृथ्वी भार हरण अवतरो। जनके हेतु भेष बहु धरो॥

महाराज ऐसे कह बसुदेवजी बोले कि हे करुणासिंधु दीनबंधु जैसे आपने अनेक २ पतितों को तारा तैसे कृपाकर मेराभी निस्तार कीजे जो भवसागर के पार हो आपके गुण गाऊं श्रीकृष्णचन्द्र बोले कि हे पिता तुम ज्ञानी होय पुत्रों की बड़ाई क्यों करते हो टुक आपही मनमें बिचारो कि भगवत् की लीला अपरम्पार है उसका पार आज तक किसीने नहीं पाया देखो वह॥

चौ०। घटघटमांहिज्योतिह्वैरहै। ताहीसोंजगनिर्गुणकहै॥
आपहिसिरजैआपहिहरैरहैमिल्योबाँध्योनाहिंपरै॥
भ्रआकाश बायुजल ज्योति। पंचतत्त्वतेंदेहजोहोति॥
प्रभुकी शक्ति सबनिमेरहै। वेद मांहिबिधिऐसेकहै॥

महाराज इतनी बात श्रीकृष्णचंद्रजी के मुखसे सुनतेही बसुदेवजी मोह बश होय चुपकर हरिका मुखदेख रहे तब प्रभु वहांसे चल माताके निकट गये तो पुत्रका मुख देखतेही देवकीजी बोलीं हे श्रीकृष्णचंद्र आनन्द कन्द एकदुख मुझे जबतव सालेहै प्रभु बोले सो क्या देवकीजी ने कहा कि पुत्र तुम्हारे छः बड़े भाई जो कंसने मार डालेहैं उनका दुःख मेरे मनसे नहीं जाता श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज बातके कहते श्री कृष्णचंद्रजी इतना कह पातालपुरी को गये कि माता तुम अबमति कुढ़ो मैं अपने भाइयों को अभी जाय ले आताहूं प्रभुके जातेही समाचार पाय राजा बलि आय अति धूमधाम से पाटम्बर के पांवड़े डाल निज मन्दिर में लिवाय लेगया आगे सिंहासन पर बिठाय राजा बलिने चन्दन अक्षत पुष्प चढ़ाय धूपदीप नैवेद्य धर श्रीकृष्णचंद्र की पूजाकी पुनि संमुख खड़ा हो हाथ जोड़ अति स्तुति कर बोला कि महाराज आप का आना यहां कैसे हुआ हरि बोले कि राजा सत्ययुग में मरीचि ऋषि बड़े ब्रह्मचारी ज्ञानी सत्यबादी औ हरि भक्त थे उसकी स्त्री का नाम उरना उसके छः बेटे एक दिन बेठेहों भाई तरुण अवस्था में प्रजापति के संमुख जा हंसे

उनको हंसता देख प्रजापतिने महा कोपकर यह शापदिया कि तुमजाय अवतार ले असुर हो इस बातके सुनतेही ऋषि पुत्र अति भयखाय प्रजापति के चरणों पर जाय गिरे औ बहुत गिड़ गिड़ा अति विनती कर बोले कि कृपा सिंधु आपने शाप तो दिया पर अब कृपाकर कहिये कि इस शापसे हम कब मोक्ष पावेंगे उनके दीन बचन सुनि प्रजापति दयाल हो कहा कि तुम श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शन पाय मुक्त होगे ॥

चौ० इतनोकहत प्राणतब गये । तेहरिणा कुशपुत्रजु भये ॥
पुनिबसुदेवकेजन्मे जाय । तिनकोहत्योकंसने आय ॥
मरततिन्हेंमायालैआई । यहठांराखिगईसुखदाई ॥

उनका दुख माता देवकी करती हैं इस लिये हम यहां आये हैं कि अपने भाइयों को ले जाय माता को देंगे औ उनके चित्त की चिन्ता दूर करेंगे श्रीशुकदेवजी बोले कि इतना बचन हरिके मुखसे निकलतेही राजा बलिने छहों बालक ला दिये औ बहुतसी भेट आगे धरी तब प्रभु वहां से भाइयों को साथले माता के पास आये माता पुत्रोंको देख अतिप्रसन्न हुई इसबात को सुन सारी पुरीमें आनन्द हुआ औ उनका शाप छूटा ॥ इतिश्री लाल कृते प्रेमसागरे देवकीके मृतक पुत्र जीवनो नाम पञ्चाशीति तमोऽध्यायः ॥ ८५ ॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि राजा जैसे द्वारका में अर्जुन श्रीकृष्णचंद्रजी की बहन सुभद्रा को हरि लेगये औ जैसे श्रीकृष्णचन्द्र मिथिला जाय रहे तैसे मैं कथा कहताहूं तुम मन लगाय सुनो देवकीकी बेटी श्रीकृष्णचन्द्र जी से छोटी जिसका नाम सुभद्रा जब व्याहन योग्य हुई तब बसुदेवजी ने कितने एक कुटुम्बी औ श्रीकृष्ण बलराम जी को बुलाय के कहा कि अब कन्या व्याहन योग्य भई कहो किसको दीजे बलराम जी बोले कि कहाहै ब्याह बैर प्रीति समानसे कीजे एकबात मेरे मनमें आईहै कियह कन्या दुर्योधन को दीजे तो जगमें यश औ बड़ाई लीजे श्रीकृष्ण जी ने कहा मेरे बिचार में आता है जो अर्जुन को लड़की दे तो संसारमें यश ले श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज बलरामजी के कहने पर तो कोई कुछ न बोला पर श्रीकृष्णचंद्रजी के मुखसे बात निकलतेही सब पुकार उठेकि अर्जुन को कन्या देना अति उत्तमहै इस बात के सुनते ही बलराम जी बुरा मान वहांसे उठ गये औ उनका बुरा मानना देख सबलोग चुपरहे

आगे ये समाचार पाय अर्जुन संन्यासी का भेष बनाय दण्ड कमंडल ले द्वारकामें जाय एक भलीसी ठौर देख मृगछाला बिछाय आसन मार बैठा

चौ० चारमासबर्षाभररह्यौ। काहुमरमनताकोकह्यो॥
अतिथिजानसबसेवनलागे। बिप्रहेतुतासोंअनुरागे॥
वाकोभेदकछुसबजान्यो काहूसोंतिननाहिंबखान्यो॥

महाराज एकदिन बलदेव जी भी जिमाने अर्जुनको साथुकर लिवाय लेगये ज्यों अर्जुन भोजन करने बैठे त्यों चन्द्र बदनी मृगलोचनी सुभद्राजी दृष्टि आई देखतेही उधर तो अर्जुन मोहित हो सबकी दीठ बचाय फिर २ देखने लगा औ मनहीं मन यह बिचार करने कि देखिये बिधाता कब जन्मपची कि बिधि मिलावे औ इधर सुभद्रा जी इनके रूप की छटा देख रीझ तन मन से यों कहती थीं कि॥

चौ०कैकोउन्हपतिनाहिंसंन्यासीकाकारणयहभयोउदासी

महाराज इतना कह उधर तो सुभद्रा जी घर में जाय पति के मिलने की चिन्ता करने लगीं और इधर भोजन कर अर्जुन अपने आसन पर आय प्रिया के मिलने को अनेक अनेक प्रकार की भावना करने लगे इसमें कितने दिन पीछे एक समय शिवरात्रि के दिन सब पुर बासी क्या स्त्री क्या पुरुष नगर के बाहर शिवपूजन को गये तहां सुभद्राजी अपनी सखी सहेलियों समेत गईं उनके आने का समाचार पाय अर्जुन भी रथ पर चढ़ धनुष बाण ले वहां जाय उपस्थित हुआ महाराज ज्यों शिव पूजन कर सखियों को साथ ले सुभद्रा जी फिरीं त्यों देखतेही शोच संकोच तज अर्जुन ने हाथ पकड़ उठाय सुभद्रा को रथ में बैठाय अपनी बाट ली॥

चौ० सुनकै रामकोपअति कर्यो हलमसललैकांधेधर्यो॥
रातेनयन रक्त से करे घन सम गाज बोल उच्चरे॥
अबहींजायप्रलयमैंकरिहौं भुवउठायमाथेपरधरिहौं॥
मेरी बहन सुभद्रा प्यरी ताको कैसे हरै भिखारी॥
अबहींबहंसंन्यासीयाऊंतिनकोसबकुलखोजमिटाऊं

महाराज बलरामजी तो महा क्रोध में बक झक रहेही थे कि इस बातके समाचार पाय प्रद्युम्न अनिरुद्ध शाम्ब औबहे २ यादव बलदेवजी के सम्मुख आय हाथ जोड़ २ बोले कि महाराज हमें आज्ञा होय तो शत्रु को पकड़ लावें इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज

जिस समय बलरामजी सब यदुबंशियों को साथ ले अर्जुन के पीछे चलने को उपस्थित हुए उस काल श्री कृष्णचन्द्रजी ने जाय बलदेवजी को सुभद्रा हरण का सब भेद समझाया औ अति बिनती कर कहा कि भाई अर्जुन एक तो हमारी फुफी का बेटा औ दूसरे परमामित्र उसने जाने अनजाने समझे विन समझे यह कर्म किया तो किया पर हमें उस्से लड़ना किसी भांति उचित नहीं यह धर्मविरुद्ध है औ लोक विरुद्धहै इस बात को जो सुनेगा सो कहैगा कि यदुबंशियों की प्रीति है बालू कीसी भीति इतनी बात के सुनतेही बलरामजी शिर धुन झुंझला कर बोले कि यह तुम्हाराही काम है कि आग लगाय पानी को दौड़ना नहीं तो अर्जुन की क्या सामर्थ्य थी जो हमारी बहन को ले जाता इतना कह मनहीं मन पछताय ताव पेच खाय बलरामजी भाई का मुख देख हल मूशल पटक बैठ रहे औ उनके साथ सब यदुबंशी भी ॥

श्रीशुकदेव जी बोले कि राजा इधर तो श्री कृष्णचन्द्रजी ने सब को समझाय बुझाय रक्खा औ उधर अर्जुन ने घर जाय वेद की बिधि से सुभद्रा के साथ व्याह किया ब्याह के समाचार पाय श्री कृष्ण बलरामजी ने बस्त्र आभूषण दास दासी हाथी घोड़े रथ औ बहुत से रुपये एक बिप्र के हाथ संकल्प कर हस्तिनापुर भेज दिये आगे श्रीमुरारी भक्त हितकारी रथ पर बैठ मिथिला को चले जहां श्रुतदेव बहुलाश्व नाम एक राजा और एक ब्राह्मण दो भक्त थे महाराज प्रभु के चलतेही नारद बामदेव व्यास अत्रि परशुराम आदि कितने एकमुनि आनि मिले औ श्रीकृष्णचन्द्रजी के साथ हो लिये पुनि जिस देश में हो प्रभु जाते थे तहां के राजा आगू आय २ पूज २ भेट धरते जातेथे निदान चले २ कितने एक दिनों में प्रभु वहां पधारे हरि के आनेके समाचार पाय वे दोनों जैसे बैठे थे तैसेही भेट ले उठ धाये औ श्रीकृष्णचंद्र के पास आये प्रभु का दर्शन करतेही दोनों भेट धर दण्डवत् कर हाथ जोड़ संमुख खड़े हो अति बिनती कर बोले कि हेकृपासिंधु आपने बड़ी कृपाकी जो हम से पतितों को दर्शन दे पावन किया औ जन्म मरण का निबेड़ा चुका दिया इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज अन्तर्यामी श्रीकृष्णचंद्र उन दोनों भक्तों के मनकी भक्ति देख दो स्वरूप धारण कर दोनों के घररहे उन्होंने मन मानता सब रावचाव किया औ हरिने कितने एकदिन वहां ठहर उन्हें अधिक सुख दिया आगे प्रभु उनके मनका सब मनोऽर्थ पूरा

कर ज्ञान दृढ़ाय अब द्वारका को चले तब ऋषिमुनि पंथसे विदाहूए औ हरि द्वारका में जा विराजे ॥ इतिश्रीलालकृते प्रेमसागरे सुभद्रा हरणेश्री कृष्ण मिथिला गमनो नाम षडाशीतिमोऽध्यायः ॥ ८६ ॥

इतनी कथा सुन राजा परीक्षितने श्रीशुकदेवजी से पूछा किमहाराज आप जो आगे कह आये कि वेदने परम ईश्वरकी स्तुति की सो निर्गुण ब्रह्मकी स्तुति वेदने क्योंकर की यह मुझे समझाय कर कहो जो मेरेमन का संदेह जाय श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज सुनिये कि जिसने बुद्धि इन्द्री मन प्राण धर्म अर्थ काम मोक्ष को बनायाहै सोप्रभु सदा निर्गुण रूप रहता है परजब ब्रह्माण्ड रचता है तब सगुण स्वरूप होता है इससे निर्गुण सगुण यही एक ईश्वरहै इतना कहमुनि श्रीशुकदेव मुनिबोले किराजा जो प्रश्न तुमने किया सोई प्रश्न एक समय नारदजी ने नर नारायण से किया था राजा परीक्षित ने कहा कि महाराज यह प्रसंग मुझे समझाकर कहिये जो मेरे मनका संदेह जाय शुकदेवजी बोले कि राजा सतयुग में एक समय नारदजी ने सत्यलोक में जाय जहां नरनारायण अनेक मुनियों के संग बैठे तप करते थे पूंछा कि महाराज निराकार ब्रह्मकी स्तुति वेद किस भांति करतेहैं सो कृपाकर कहिये नरनारायण बोले सुन नारद जो संदेह तूने मुझसे पूछा यही संदेह एक समय जनलोक में जहां सनातनादि ऋषि बैठे तपकरतेथे वहां हुआथा तब सनन्दनमुनि ने कथा कह सबका संदेह मिटाया नारदजी बोले महाराज मैंभी तो वहीं रहता हूं जोयह प्रसंग चलता तो मैंभी सुनता नरनारायण ने कहा नारदजी तब तुम स्वेत द्वीपमें भगवत्दर्शन को गयेथे तभी यह प्रसंग चला था इससे तुमने नहीं सुना इतनी बात सुन नारदजी ने पूछा महाराज वहां क्या प्रसंग चलाथा सो कृपाकर कहिये नरनारायण बोले सुन नारद जब मुनियों ने यह प्रश्न किया तब सनन्दनमुनि कहने लगे कि सुनो जिस समय महा प्रलय होय चौदह ब्रह्माण्ड जलाकार होजाते हैं उस समय एकोब्रह्म अकेले सोते रहतेहैं जब भगवान् को सृष्टि करने की इच्छा होती है तब उनके स्वास से वेद निकल हाथ जोड़ स्तुति करतेहैं ऐसे कि जैसे कोई राजा अपने स्थान पर सोता हो औ बन्दीजन भोरही उसका यश गाय गाय उसीको जगावें इसलिये कि चैतन्य हो शीघ्र अपने कार्य्य को करै इतना प्रसंग कह नरनारायण बोले कि सुन नारद प्रभु के मुख से निकल वेद यह कहतेहैं कि हेनाथ वेग चैतन्य हो सृष्टि रचो औ जीवों

के मनसे अपनी माया दूर करो क्योंकि वे तुम्हारे रूपको पहिचानें माया तुम्हारी प्रबल है यह सब जीवों को अज्ञान कर रखती है जो इससे छूटे तो जीवको तुम्हारे समझने का ज्ञान हो हेनाथ तुम बिन इसे कोई बश नहीं करसक्ता जिस के हृदय में ज्ञानरूप हो तुम बिराते हो सोई इस माया को जीतता है यहतो किसकी सामर्थ्य है जो माया के हाथसे बचे तुम सबके कर्ता हो सबजीव तुम्हींसे उत्पन्नहो तुम्हींमें समातेहैं ऐसेकि जैसे पृथ्वी से अनेक बस्तु हो पुनि पृथ्वी में मिल जाती हैं कोई किसी देवता की पूजा स्तुति करे पर वह तुम्हारी ही पूजा स्तुति होतीहै ऐसे कि जैसे कोई कंचन के अनेक आभरण बनाय अनेक नाम धरे पर वह कंचनही है तिसी भांति तुम्हारे अनेक रूपहैं और ज्ञान कर देखिये तो कोई कुछ नहीं जिधर देखिये तिधर तुम हीं तुम दृष्टि पड़ते हो नाथ तुम्हारी माया अपरम्पार है यही सत्व रज तम तीन गुणहो तीन स्वरूप धारण कर सृष्टि को उपजाय पालन नाश करती इसका भेव न किसी ने पाया न कोई पावेगा इससे जीवको उचित यहहै कि सब बासना छोड़ तुम्हारा ध्यानकरे इसीमें इसका कल्याणहै महाराज इतना प्रसंग सुनाय नरनारायण ने नारदजी से कहा कि हे नारद जब सनन्दन मुनिने पुरातन कथाकह सबके मनका संदेह दूरकिया तब सौनकादिक मुनियों ने वेदकी विधिसे सनन्दन मुनिकी पूजाकी इतनी कथाकह श्रीशुकदेवजी बोले कि हेराजा यह नारायण नारदका सम्वाद जो कोई सुनेगा सो निस्सन्देह मुक्तिपदार्थ पाय मुक्त होगा जो कथा पूर्णब्रह्म की वेदने गाई सोई कथा सनन्दन मुनि ने सौनकादिक मुनियों को सुनाई पुनि वही कथा नरनारायण ने नारद के आगे गाई नारद से व्यास ने पाई व्यास ने मुझे पढ़ाई सो मैंने अब तुम्हें सुनाई इस कथा को जो जन सुने सुनावेगा सो मन मानता फल पावेगा जो होताहै तप यज्ञ दान व्रत तीर्थ करने में सोई पुण्य होताहै इस कथाके कहने सुनने में ॥ इति श्रीलाल कृते प्रेमसागरे नरनारायण नारद सम्वादे नाम सप्ताशीति तमोऽध्यायः ॥ ८७ ॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज भगवत् की अद्भुत लीला है इसे सब कोई जानता है जो जन हरिकी पूजा करे सो दरिद्री होय और देव को माने सो धनवान देखो हरि हर की कैसी रीति औ ये लक्ष्मी पति वे गौरीपति ये धरे बनमाल वे धरे मुण्डमाल ये चक्रपाणि वे त्रिशूल पाणि ये धरणीधर वे गङ्गाधर ये मुरली बजावें वेशृङ्गी ये बैकुंठनाथ वे कैलाश

नाथ ये प्रतिपालें वे संहारें वे चरचें चन्दन वे लगावें भस्म ये ओढ़ें अम्बर वे बाघम्बर ये पढ़ें वेद वे आगम इनका बाहन गरुड़ उनका नन्दी ये रहे ग्वाल बालोंमें वे भूत प्रेतों में ॥

चौ० दीजप्रभुकीउलटीरीति। जितइच्छातितकीजैप्रीति

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज राजा युधिष्ठिर से श्रीकृष्णचन्द्र ने कहा है कि हे युधिष्ठिर जिस पर मैं अनुग्रह करता हूं होले २ उसका सब धन खोता हूं इसलिये कि धन हीनको भाई बंधु स्त्री पुत्रादि सब कुटुम्बके लोग तज देतेहैं तबउसे बैराग्य उपजाताहै बैराग्य होनेसे धन जनकी माया छोड़ निर्मोही हो मनलगाय मेरा भजन करता है भजन के प्रताप से अटल निर्वाण पद पाताहै इतनी कथा कह पुनि शुकदेवजी कहने लगे कि महाराज और देवता की पूजा करने से मन कामना पूरी होतीहै पर मुक्ति नहीं मिलती यह प्रसंग सुनाय मुनिने पुनि राजा परीक्षित से कहा कि महाराज एक समय कश्यप का पुत्र वृकासुर तप करने की अभिलाषा कर ज्यों घरसे निकला त्यों पन्थ में उसे नारद मुनि मिले नारदजी को देखते ही इसने दंडवत् कर हाथजोड़ सम्मुख खड़ा हो अति दीनता कर पूछा कि महाराज ब्रह्मा विष्णु महादेव इन तीनों देवताओं में शीघ्र बरदाता कौनहै सो कृपाकर कहो तोमैं उन्हींकी तपस्या करूं नारदजी बोले कि सुन वृकासुर इन तीनों देवताओं में महादेव जी बड़े बर दाई हैं इन्हें न रीझते बिलम्ब न खीझते देखो शिवजीने थोड़े से तप करनेसे प्रसन्न हो सहस्रार्जुन को सहस्र हाथ दिये वो अल्पही अपराध में क्रोध कर उसका नाश किया महाराज इतना कह नारद मुनि तो चलेगये और वृकासुर अपने स्थान पर आय महादेवका अति तप यज्ञ करनेलगा सात दिनके बीच उसनेछुरी से अपने शरीर का मांस सब काट २ होमदिया आठवें दिन जब शिरकाटने को मनकिया तब भोलानाथ ने आय उसका हाथ पकड़ के कहा कि मैं तुझसे प्रसन्न हुआ जो तेरी इच्छा में आवे सो बर मांग मैं तुझे अभी दूंगा इतना वचन शिवजी के मुख से निकलतेही वृकासुर हाथ जोड़ कर बोला ॥

दो० ऐसे बर दीजै अबै। जाशिर राखौं हाथ।
भस्महोयसोपलकमें। करऊछपातुभनाथ ॥

महाराज बात के कहतेही महादेवजी ने उसे मुंह मांगा बर दिया बर पाय वह शिवजीही के शिर पर हाथ धरने गया उस काल भय खाय

महादेवजी अपना आसन छोड़ भागे उनके पीछे असुर भी दौड़ा महाराज सदा शिवजी जहां जहां फिरे तहां तहां वह भी उनके पीछे ही लगा आया निदान अति व्याकुल हो महादेवजी बैकुण्ठ में गये इनको महा दुखित देख भक्त हितकारी बैकुंठ नाथ श्रीमुरारी करुणानिधान करुणाकर बिप्र भेष धर वृकासुर के सम्मुख जाय बोले कि हे असुर राय तुम इन के पीछे क्यों भ्रम करते हो यह मुझे समझाकर कहो बात के सुनतेही वृकासुर ने सब भेद कह सुनाया पुनि भगवान बोले कि हे असुर राय तुमसा सयान हो धोखा खाय यह बड़े अचरज की बात है इस नंग मुनंगे बावले भांग धतूर खाने वाले योगी की बात कौन सत्य माने यह सदा भस्म लगाये सर्प लिपटाये भयानक भेष किये भूत प्रेतों को संग लिये स्मशान में रहता है इसकी बात किसके जीमें सच्च आवे महाराज यह बात कह श्रीनारायण बोले कि हे असुर राय जो तुम मेरा कहा झूठ मानों तो अपने शिर पर हाथ रख देख लो ॥

महाराज प्रभुके मुखसे इतनी बात सुनतेही मायाके बश अज्ञान हो ज्यों वृकासुर ने अपने शिरपर हाथ धरा त्यों जलकर भस्म का ढेरहुआ असुर के मरतेही सुर पुरमें आनन्द के बाजन बाजने लगे औ देवता जय जय कार कर फूल बर्षाने विद्याधर गन्धर्व किन्नर हरि गुणगाने उस काल हरने हरिकी अति स्तुतिकर बिदा किया औ वृकासुर को मोक्ष पदार्थ दिया श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज इस प्रसंग को जो सुने सुनावेगा सोनिः सन्देह हर हरिकी कृपासे परम पद पावेगा ॥ इति श्रीलाल कृते प्रेमसागरे वृकासुर बधो नामाष्टाशीति तमोऽध्यायः ॥ ८८ ॥

श्रीशुकदेवजी बोले कि महाराज एक समय सरस्वती के तीर सब ऋषि मुनि बैठे तप यज्ञ करते थे कि उन में से किसीने पूछा कि ब्रह्मा विष्णु महेश इन तीनों देवताओं में बड़ा कौन है सो कृपाकर कहो इस में किसीने कहा विष्णु किसीने कहा ब्रह्मा वो किसीने महादेव पर सबने मिल एकको बड़ा न बताया तब कई एक बड़े २ मुनीशों ऋषीश्वरों ने कहा कि इस योंतो किसी की बात नहीं मानते परन्तु जो कोई इन तीनों देवताओं की जाके परीक्षाकर आवे औधर्म स्वरूपी कहै तो उस का कहना सत्य मानें महाराज यह बातसुन सबने प्रणामकिया औ ब्रह्मा के पुत्र भृगुको तीनों देवताओं की परीक्षा कर आने की आज्ञा दी आज्ञा पाय भृगुमुनि प्रथम ब्रह्म लोक में गये औ चुपचाप ब्रह्माकी सभा में जा

बैठे न दण्डवत् की न स्तुति न परिक्रमा दी राजा पुत्रका अनाचार देख ब्रह्माने महा कोप किया औ चाहाकि शाप दूं पर पुत्रकी ममता कर न दिया उसकाल भृगु ब्रह्माको रजोगुण में आशक्त देख वहांसे उठ कैलाश में गया औ जहां शिव पार्वती बिराजते थे तहां जा खड़ा रहा इसेदेख शिवजी खड़े हो ज्यों हाथ पसार मिलने को हुये त्यों यह बैठगया बैठतेही शिवजी ने अति क्रोधकिया औ इसके मारनेका त्रिशूल हाथमें लिया उस समय पार्वतीजीने अति बिनती कर पावों पड़ महादेवजी को समझाया औ कहाकि यह तुम्हारा छोटा भाईहै इसका अपराध क्षमा कीजे ॥

चौ० चक्रकछूबालकसोंपरै। साधुनकवछंमनलेधरै ॥

महाराज जब पार्वतीजी ने शिवको समझा कर ठंढा किया तब भृगु महादेवजी को तमोगुण में लीन देख चल खड़े हुये पुनि बैकुंठ में गये जहां भगवान् मणिमय के छपरखट पर फूलोंकी सेज में लक्ष्मी के साथ सोतेथे ज़ातेही भृगुने भगवान् के हृदय में एक लात ऐसी मारी कि वे नींदसे चौंक पड़े मुनि को देख लक्ष्मी को छोड़ छपर खट से उतर हरि भृगुजी का पांवशिर आंखोंसे लगाय लगे दाबने औ यों कहने कि हे ब्रह्मर्षिराय मेरा अपराध क्षमा कीजे मेरे हृदय कठोर की चोट तुम्हारे कोमल चरण कमल में अनजाने लगी यह दोष चित्तमें न लीजे इतना बचन प्रभुके मुखसे निकलतेही भृगुजी अति प्रसन्न हो स्तुति कर बिदा हो वहां आये जहां सरस्वती तीर सब ऋषि मुनि बैठेथे आतेही भृगुजी ने तीनों देवतों का भेद सब ज्योंका त्यों कह सुनाया कि ॥

चौ० ब्रह्माराजसमेंलपटान्यो। महादेवतामसमें सान्यो ॥
बिष्णुजोसात्विकमाहिंप्रधान। तिनतेंबड़ोदेवनहिंआन ॥
सुनतऋषिनकोसंशयगयो। सबहीकेमनआनंदभयो ॥
बिष्णुप्रशंसासबने करी। अबिचलभक्तिहृदयमें धरी ॥

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजीने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज मैं अन्तर कथा कहताहूं तुम मन लगाय सुनो द्वारकापुरी में राजा उग्रसेन तो धर्मराज्य करते थे औ श्रीकृष्णचन्द्र बलराम उनके आज्ञाकारी राजाके राज्यके सबलोग अपने २ धर्म में सावधान काज कर्म में सज्ञान रहतेथे औ आनन्दचैन करतेथे तहां एक ब्राह्मण भी अतिसुशील धर्मिष्ठ रहता था एकसमय उसके पुत्र हो मरगया वह उस मरेपुत्रको ले राजा

उग्रसेन के द्वार पर गया और जो उसके मुंहमें आया सो कहने लगा कि तुम बड़े अधर्मी पापी हो तुम्हारेही कर्म धर्मसे प्रजा दुःख पाती है औ मेराभी पुत्र तुम्हारेही पाप आचरणसे मरा महाराज इसी भांतिकी अनेक२ बातें कह मरे लड़के को राजद्वार पर रख ब्राह्मण अपने घर आया आगे उसके आठ बेटेहुए औ आठों को वह उसी रीतिसे राजद्वार पर रख २ आया जब नवां पुत्र होनेको हुआ तब वह ब्राह्मण फिर राजा उग्रसेन की सभामें जाय श्रीकृष्णचन्द्र के संमुख खड़ाहो पुत्र के मरने का दुःख सुमिर २ रो २ यों कहने लगा कि धिक्कार है राजा और इसके राज्य को पुनि धिक्कारहै उन लोगोंको जो इस अधर्मीकी सेवा करतेहैं औ धिक्कारहै मुझे जो इस पुरीमें रहताहूं जो इन पापियों के देशमें न रहता तो मेरे पुत्र बचते इन्हींके अधर्मसे मेरे पुत्र मरे औ किसीने उपाय न किया महाराज इसी ढबकी सभाके बीच खड़ेहो ब्राह्मणने रोरो बहुत सी बातें कहीं पर कोई कुछ न बोला निदान श्रीकृष्णचंद्र के पास बैठा सुन २ घबराकर अर्जुनबोला कि हे देवता तू किसके आगे यहबात कहे है औ क्यों इतना खेदकरेहै इस सभामें कोई धनुर्द्धर नहीं जो तेरा दुख दूर करै आज कलके राजा आप कार्यी हैं पर दुःख निवारण नहीं जोप्रजा को सुखदें औ गौ ब्राह्मणकी रक्षा करें ऐसे सुनाय अर्जुनने पुनि ब्राह्मण से कहा कि देवता अब तुमजाय अपनेघर निश्चिन्त होबैठो जब तुम्हारे लड़का होने का दिन आवे तब तुम मेरे पास आइयो मैं तुम्हारे साथ चलूंगा औ लड़केको न मरने दूंगा महाराज इतनी बातके सुनतेही ब्राह्मण खिजलाय के बोला किमैं इससभा के बीच श्रीकृष्ण बलराम प्रद्युम्न औ अनिरुद्धको छुड़ाय ऐसा बलवान किसीको नहींदेखता जो मेरे पुत्रकोकाल के हाथसे बचावै अर्जुन बोला कि ब्राह्मण तू मुझे नहीं जानता कि मेरा नाम धनञ्जय है मैंतुझसे प्रतिज्ञा करताहूं किजो मैं तेरा सुत कालके हाथसे न बचाऊं तो तेरे मरेहुए लड़के जहां पाऊं तहां से लेआय तुझे दिखाऊं औ वेभीनमिलें तो गांडीव धनुष समेत अपने तईं अग्निमें जलाऊं महाराज यह प्रतिज्ञा कर जब अर्जुन ने ऐसा कहा तब वह ब्राह्मण संतोष कर अपने घर गया पुनिपुत्र होनेके समय बिप्र अर्जुन के निकट आया उस काल अर्जुन धनुष बाणले उसके साथ उठ धाया आगे वहां जाय उसका घर अर्जुनने बाणोंसे ऐसा छाया कि जिसमेंपवन भी प्रवेशनकरसके औरआप धनुष बाण लिये उसके चारोंओर फिरने लगा

इतनी कथा कह श्री शुकदेवजी ने राजा परीक्षित से कहा कि महाराज अर्जुनने बहुतसा उपाय बालक बचाने को किया पर न बचा और दिन बालक होनेके समय रोताथा उसदिन स्वास भी नलिया बरण पेट हीसे मरा निकला मरे लड़के को सुनि लज्जितहो अर्जुन श्री कृष्णचन्द्र के निकट आया औ उसके पीछे ब्राह्मण भी महाराज आतेही रो २ वह ब्राह्मण कहने लगा किरे अर्जुन धिक्कार है तुझे औ तेरे जीतब को जो मिथ्या बचन कह संसारमें लोगों को मुख दिखाताहै अरे नपुन्सक जो तू मेरे पुचको कालसे नबचा सक्ताथा तोतैने प्रतिज्ञा क्यों कीथी किमैं तेरेपुच को बचाऊंगा और न बचासकूंगा तोतेरे मरेहुए पुच सब लाटूंगा महाराज इतनी बातके सुनतेही अर्जुन धनुष बाणले वहांसे उठ चला २ संयमनी पुरीमें धर्मराज के पास गया इसे देख धर्मराज उठ खड़ा हुआ औ हाथ जोड़ स्तुति कर बोला किमहाराज आपका आगमन यहां कैसेहुआ अर्जुन बोला किमैं अमुक ब्राह्मण के बालक लेने आयाहूं धर्मराज ने कहा कि यहां वे नहीं आये महाराज इतना बचन धर्मराज के मुखसे निकलतेही अर्जुन बिदाहो वहांसे सब ठौर फिरा पर उसने ब्राह्मणके लड़केको कहीं न पाया निदान अछता पछता द्वारकापुरीमें आय चिता बनाय धनुषबाण समेत जलने को उपस्थित हुआ आगे अग्नि जलाय अर्जुन ज्योंचाहे कि चिता पर बैठें त्योंहीं श्रीमुरारी गर्व प्रहारीने हाथ आय पकड़ा औ हंसके कहा किहे अर्जुन तूमत जले तेरी प्रतिज्ञा पूरी करूंगा जहां उसब्राह्मण के पुच होंगे तहांसे लाटूंगा महाराज ऐसे कह त्रिलोकीनाथ रथ पर बैठ अर्जुन को साथले पूर्व दिशाकी ओर को चले औसात समुद्रपारहो लोकालोक पर्वतके निकट पहुंचे वहांजाय रथसे उतर एकअति अंधेरी कन्दरा में बैठे उससमय श्रीकृष्णचंद्रजी ने सुदर्शन चक्रको आज्ञाकी वह कोटि सूर्य्यका प्रकाश किये प्रभुके आगे २ महा अंधकार को टालता चला॥

चौ० तमतज केतिक आगे गये। जल में तबै जु पैठत भये॥
महा तरंग तासु में लसे। मदि आंखि ये तामें धसे॥
पड़ेऊते शेषजी जहां। कृष्णरु अर्जुन पहुंचे तहां॥

जातेही आंख खोल कर देखा कि एक बड़ा लम्बा चौड़ा ऊंचा कंचन का मणिमय मन्दिर अति सुन्दर है तहां शेषजी के शीश पर रत्नजटित सिंहासन धराहै तिसपर श्याम घन रूपी सुन्दर स्वरूप चन्द्रवदन कमल

नयन किरीट कुण्डल पहने पीतबसन ओढ़े पीतांबर काछे बनमाल मुक्तमाल डाले आप प्रभु मोहनी मूर्त्ति बिराजे हैं औ ब्रह्मा रुद्र इन्द्र आदि सब देवता सम्मुख खड़े स्तुति करतेहैं महाराज ऐसा स्वरूपदेख अर्जुन औ श्रीकृष्णचंद्र जीने प्रभुके सोहींजाय दण्डवत् कर हाथ जोड़कर अपने जानेका सब कारण कहा बातके सुनते ही प्रभुने ब्राह्मण के बालक सब मंगाय दीने औ अर्जुन ने देख भाल प्रसन्न हो लीने तब प्रभु बोले॥

चौ तुमदोउमेरीकलाजुआहि।हरिअर्जुनदेखोचितचाहि
भारउतारन भूपर गये। साधु सन्तको बड़ सुखदये॥
असुरदैत्यतुमसबसंहारे। सुरनर मुनिके काजसँवारे॥
मेरे अंश जो तुममें ह्वैहैं। पूरण काम तुम्हारे ह्वैहैं॥

इतना कह भगवान ने अर्जुन और श्रीकृष्ण जी को बिदा किया ये बालकले पुरीमें आये द्विजके पुत्र द्विजने पाये घर २ आनन्द मंगलभये बधाये इतनी कथाकह श्रीशुकदेव जीने राजा परीक्षितसे कहाकि महाराज

चौ०। जोयहकथा सुनैधरध्यान। तिनके पुत्रहोंय कल्यान॥

इति श्रीलालकृते प्रेमसागरे द्विजकुमार हरनो नवाशीति तमोऽध्यायः ८६

श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज द्वारका पुरी में श्रीकृष्णचंद्र सदा बिराजे ऋद्धिसिद्धि सब यदुबंशियों के घर २ राजे नरनारी बसन आभूषण ले नव भेष बनाये चोआ चन्दन चर्च सुगन्ध लगाये महाराज हाट बाट चौहटे झाड़ बुहार छिड़कावें तहां देश देश के ब्यापारी अनेक २ पदार्थ बेचने को लावें जिधर तिधर पुरबासी कुतूहल करें ठौर २ ब्राह्मण वेद उच्चरें घर २ में लोग कथा पुराण सुने सुनावें साधु सन्त आठों याम हरियश गावें सारथी रथ घुड़बहल जोति २ राजद्वार गरलावें रथी महारथी गजपति अश्वपति शूरबीर रावत योधा यादव राजाको जुहार करने आवें गुणीजन नाचें गावें बजावें रिझावें बन्दीजन चारण यश बखानकर हाथी घोड़े बस्त्र शस्त्र अन्न धनकंचन के रत्न जटित आभूषण पावें॥

इतनी कथा कह श्रीशुकदेवजी ने राजा से कहा कि महाराज उधर तो राजा उग्रसेन की राजधानी में इसी रीतिसे भांति भांति के कुतूहल होरहे थे और इधर श्रीकृष्णचन्द्र आनन्द कन्द सोलह सहस्र एकसौआठ युबतियों के साथ नित्य बिहार करें कभीयुवतियां प्रेममें आशक्तहो प्रभु का भेष बनायकर कभी हरि आशक्तहो युबतियों को सिंगारे और जो

परस्पर लीला क्रीड़ा करें सो अकथहै मुझसे कही नहीं जाती वह देखेही बनि आवे इतना कह श्री शुकदेवजी बोले कि महाराज एकदिन राचि समय श्रीकृष्णचन्द्र सब युवतियों के साथ बिहार करते थे और प्रभु के नाना प्रकार के चरित्र देख किन्नर गन्धर्व बीन पखावज भेर दुन्दुभी बजाय बजाय गुण गातेथे और एकसमा होरहाथा किइसमें बिहार करते २ जो कुछ प्रभुके मनमें आया तो सबको साथले सरोवरके तीर जाय नीर में पैठ जल क्रीड़ा करने लगे आगे जल क्रीड़ा करते २ सब स्त्री श्रीकृष्ण चंद्र के प्रेममें मगन हो तन मन सुरत भुलाय एक चकवा चकवी को सरोवर के वार पार बैठे बोलते देख बोलीं ॥

चौ० हेचकईतदुख क्योंगोवै । पिय बियोगतें रैन न सोवै ॥
अतिव्याकुलह्वै पियापुकारेहमसोतूनिजप्रियहिसंभारे
हम तो उनकी चेरी भईं । ऐसे कहि आगे को गईं ॥

पुनि समुद्रसे कहने लगीं किहे समुद्र तूजो लम्बी स्वांस लेताहै और रातदिन जागताहै सो क्या तुझे किसीका बियोगहै कि चौदह रत्न गयेका शोगहै इतना कह फिर चंद्रमा को देखि बोलीं हेचन्द्रमा तूक्यों तनशोग मन मलीन होरहाहै क्या तुझे राजरोग हुआ जो दिन २ घटता बढ़ता है के श्रीकृष्णचंद्र को देख जैसे हमारी गति मति भूलती है तैसे तेरी भूली है ॥

इतनी कथा कह श्री शुकदेवजी ने राजा से कहा कि महाराज इसी भांति सब युवतियों ने पवन मेघ कोकिला पर्वत नदी हंससे अनेक २ बातें कहीं सो जान लीजे आगेसब स्त्री श्रीकृष्णचंद्र के साथ बिहार करें औ सदा सेवामें रहैं प्रभुके गुण गावैं और मन बांछित फल पावैं प्रभुगहस्थ धर्मसे गृहस्थाश्रम चलावैं महाराज सोलह सहस्र एकसौ आठ श्रीकृष्णचन्द्र की रानी जो प्रथम बखानीं तिनमें एकएक रानीके दशदश पुत्र और एक २ कन्या थी और उनकी सन्तान अगणित हुई सो मेरी सामर्थ्य नहीं जो उनका बखान करूं परमैं इतना जानताहूं कि तीन करोड़ अट्ठासी सहस्र एकसौ पाठशाला थीं श्रीकृष्णचंद्र की सन्तान के पढ़ाने को और इतनेही पांड़िये आगे श्रीकृष्णचंद्रजी के जितने बेटे पोते नाती हुए रूपबल पराक्रम धन धर्ममें कोई कम न था एकएकसे बढ़कर था उनका वर्णन मैं कहां तक

करूं इतना कह ऋषि बोले महाराज मैंने ब्रज और द्वारका की लीला गाई यहहै सब की सुखदाई और जो जन इसे प्रेम सहित गावेगा सो निस्सन्देह भक्ति मुक्ति पदार्थ पावेगा जो फल होताहै तप यज्ञदान व्रत तीर्थ स्नान करने में सोफल मिलता है हरि कथा सुनने औ सुनाने से ॥

इति श्री लालकृते प्रेमसागरे द्वारका बिहार वर्णनो
नाम नवतितमोऽध्यायः ॥ ९० ॥

इति

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
कविकुलकल्पतरु	अपूर्व्वकथा	ज्ञानचालीसी	कायस्थकुलभास्कर
रसराज	क़िस्सागुलसनोबर	दोहावली	विष्णुभागवत
सत्सईमूलतथास-	सहस्त्ररजनीचरित्र	बालाबोध	अपराधभञ्जनस्तोत्र
सभाविलास	राविन्सनकाइतिहास	विद्यार्थीकीप्रथमपु०	कायस्थधर्म्मविचारण
तुलसीशब्दार्थप्र	सीताहरण	किताबजंत्री	तथाछोटा
भजनावली	सतीविलास	गणितकामधेनु	मथुरासभा
प्रेमरत्न	नुनफ़र्कीत	लीलावती	भाषातत्वप्रकाश
युगलविलास	शनिश्चरकीकथा	पटवारियोंकीपु०भा०	ज्योतिष
चित्रचन्द्रिका	ज्ञानमाला	वैद्यकभाषा	मुहूर्त्तगणपति
बारहमासाचैतवरु	गोपीचंदभरथरी	निघण्टु	मुहूर्त्तचक्रदीपिका
मनोहरलहरी	कथाश्रीगंगाजी	अमरविनोद	मुहूर्त्तचिन्तामणि
गंगालहरी	अवधयात्रा	वैद्यजीवन	मुहूर्त्तमार्त्तण्ड स०
यमुनालहरी	भरथरीगीत	औषधिसंग्रहकल्पद्रुम	मुहूर्त्तदीपक
जगद्विनोद	ज्ञानलीलावनारसी	अमृतसागरबड़ाछो०	बृहज्ज्ञातक स०
शृंगारबत्तीसी	दोहावलीरत्नावली	वैद्यमनोत्सव	जातकालंकार
राग	गंगाकर्णामाहात्म्य	ज्योतिषभाषा	जातकाभरण
रागप्रकाश	श्रीगोपालसहस्रना०	जातकचन्द्रिका	होरामकरंद
लावनी	कथासत्यनारायण	जातकालंकार	संस्कृतउर्दूटी०स०
क़िस्साबग़ैरह	हनुमानचालीसा	देवज्ञाभरण	मनुस्मृति
नानार्थनीसंग्रहावली	जनकपच्चीसी	ज्ञानरत्नोदय	विष्णुहारीत
ब्रह्मसार	हरिहरसगुणनिर्गुण०	रमलसार	महिम्नस्तोत्र
शिवसिंहसरोज	पदावली	इन्द्रजाल	व्रतार्क
भक्तमाल	वनयात्रा	संस्कृतकीपुस्तकें	याज्ञवल्क्यस्मृति
छन्दसभा	कायस्थवर्णनिर्णय	लघुकौमुदी	संस्कृतभाषाटी०
विक्रमविलास	विहारवृन्दावन	सिद्धान्तचन्द्रिका	अमरकोश
बैतालपच्चीसी	समरविहारवृन्दावन	अमरकोषटीकांक०स०	याज्ञवल्क्यस्मृति
पद्मावतीखण्ड	कल्पभाष्य	पञ्चमहायज्ञ	संध्यापद्धति
शुकबहत्तरी	सिंहासनबत्तीसी	निर्णयसिंधु	व्रतार्क
चकावलीसुमन	दरसी	संग्रहशिरोमणि	भगवद्गीताटी०ह०चं०
चहारदरवेश	अक्षरावली	भगवद्गीतासटीक	भगवद्गीताटी०ज्ञानि०
क़िस्साहातमताई	स्वयम्बोध	दुर्गापाठस०चमूल	गीतगोविंद

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
कथा सत्यनारायण	भोजप्रबन्धसार	किष्किन्धाकाण्ड	ऐक्टस्टाम्य अदालत
परमार्थसार	राजनीति	सुन्दरकाण्ड	२६ सन् १८६७ ई०
शार्ङ्गधरसंहिता	भाषालघुव्याकरण	लंकाकाण्ड	मजमूआ एक्टअवध
पाराशरीसटीक	२ भाग तथा २	उत्तरकाण्ड	लगान १९ सन् १८६८
शीघ्रबोधसटीक	भाषातत्वदीपिका	गुटका १भा० २व ३	ई०
लघुजातक	भाषाचंद्रोदय	हिदायतनामा मुदर्रि-	पुरज़ादारी २६ सन्
षटपञ्चाशिका	भूगोलतत्व	सान्	१८६६ ई० वग़ैरह
सामुद्रिक	भूगोलदर्पण	पशुचिकित्सा	ऐक्टस्टाम्य इस्तावे-
गरुड़पुराण	इतिहासतिमिरनाश-	पट्टाबरवत कैथी	ज़ात १८ सन् १८६९ ई०
रामविवाहोत्सव	क १भाग २व ३भा०	तथा क़बूलियत	ऐक्टनाल्यूकशारान्
सरिश्ते तालीमकी	अवधदेशीयभूगोल	रजिस्टरदारिवलखा-	मफ़रूज़ अवध २४
पुस्तकें	इंग्लिस्तानकाइतिहा-	रिज तुलबामदर्सा	सन् १८७० ई०
ऋजुपाठ १भा० २व ३	हितोपदिका	रजिस्टरहाज़िरीपाठशा-	ऐक्चोपायी का
धात्वर्थावं	बालाभूषण	कानून कैथी	मदारवलत बेजा १
नागरी कैथी	पद्यसंग्रह	पटवारियों के क़ायदे	सन् १८७७ ई०
वर्णमालाकैथी १व २भा०	भाषाकाव्यसंग्रह	उर्दू कैथी महाजनी	ऐक्टमजमूआ ज़ा-
तथा कैथी फ़ारसी	कविरत्नाकर १व २भा०	टिकटकेलाइसन्स	बिता फ़ौजदारी १०
नागरी	मंगलकोष	का ऐक्ट २ सन् १८७८	सन् १८७२ ई०
हरूफ़मुफ़ईदात	संकप्रकाश	ई०	ऐक्टमालगुज़ारी म-
अक्षरारम्भ	गणितप्रकाश १भा०	नागरी	ग़रबी व शिमाली
वर्णप्रकाशिका १व २भा०	तथा २भा० ३व ४	ऐक्टलगान मग़रबी	२९ सन् १८७३ ई०
सूरजपुरकी कहानी	गणितक्रिया	वशिमाली १० सन्	तरमीममजमूआ
धर्मसिंहका इत्तांत	क्षेत्रप्रकाश	१८५९ ई०	ज़ाबिता फ़ौजदारी
शिक्षावली	क्षेत्रचंद्रिका २भा०	इंडियनपिनलकोर्ट	११ सन् १८७४ ई०
शिशुबोध	सकीलदायरा	मजमूआ ज़ाबिता	तक़ावीकेक़ायदे
पत्रहितोपिणी	रेखागणित १व २भा०	फ़ौजदारी ऐक्ट २५	सवालवजवाब
पत्रदीपिका	बीजगणित १भाग	सन् १८६१ ई०	पुलिस
विद्याचक्र	रामायणतुलसीकृत	ऐक्टरजिस्टरी २०	अवधरुहेलखंड
विद्यांकुर	बालकाण्ड	सन् १८६६ ई०	रेलवे का दस्तूरुल
पदार्थविद्यासार	अयोध्याकाण्ड	ऐक्टस्टाम्य १ सन्	अमल
पदार्थज्ञानविटप	आरण्यकाण्ड	१८६२ ई०	इति

